ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ महाराजा रावण के अश्वमेध की चर्चा २९ १० १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, जो परमपिता परमात्मा इस ब्रह्माण्ड को स्थिर कर रहा है, अथवा अपने में धारण कर रहा है उसको वेद धारयामि कहता है क्योंकि वह धारण कर रहा है। हे परमपिता परमात्मन्! मानो आपकी महिमा विचित्र अनुपम मानी गई है जब हम विज्ञानमयी और आनन्दमयी ब्रह्माण्ड के ऊपर मनन करने लगते है तो उसमें आप ही दृष्टिपात, इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में एक आप ही हमें दृष्टिपात होते हैं। किसी भी लोक लोकान्तरों में रहने वाले प्राणी हो, परन्तु प्राणी मात्र आपकी महिमा का गुणगान गा रहा है। मानो तेरे ज्ञान और विज्ञान को एक-एक, कण-कण में वह प्रायः दृष्टिपात कर रहा है। हे परमात्मन्! मानो तेरी कोई स्थली ऐसी नहीं है, जहाँ तेरा वास नहीं है। तो प्रभु! हम कहाँ जाए, किस स्थली में पहुंचे। जहाँ तेरे से ओझल हो करके, मानो अपने में कुछ दूषित कर्म कर ले। परन्तु विचार आता है कि कोई भी स्थली तो ऐसी नहीं है।

आत्मा का आयतन

तो हे मानव! तू कौन-सी स्थली पर जा रहा है, तू पाप कर्म करने के लिए जा रहा है, परन्तु कौन-सा ऐसा निर्जन मानो वन है जहाँ वह परमात्मा नहीं है। जहाँ प्रभु! आपकी छठा, आपकी प्रतिभा नहीं है। परन्तु कोई भी स्थली ऐसी नहीं, तो हे मानव! तू पाप कर्म करने के लिए कहाँ तत्पर हो सकता है। मानो वेद का मन्त्र तो यह कहता है कि वायु की तरंग भी ऐसी नहीं है जो उसके बिना तरंगित हो रही हो, तो यह उसका सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक आयतन के रूप में है जैसे मानव का शरीर है। परन्तु आत्मा का आयतन माना गया है, हृदय प्रदेश में चले जाओ, इन्द्रियों के प्रदेश में चले जाओ, परन्तु जहाँ भी तुम जाना चाहते हो, वहीं पहुँचों परन्तु कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह चेतना न हो। जिस चेतना से बेटा! यह ब्रह्माण्ड चेतनित हो रहा है। तो मेरे प्यारे! हम उस महान अग्निमयी स्वरूप, जिसे वेद बेटा! ब्रह्माग्नि कहता है हे ब्रह्म! तू अग्नि है, हे ब्रह्मा! तू क्रिया है, हे ब्रह्मा! तेरी ही ज्ञानता है, और तू ज्ञान और विज्ञान का स्वरूप है। जितना भी ब्रह्मज्ञान है, यदि हम सर्वत्र एक-एक कण-कण को दृष्टिपात करने लगते है तो मानो वह सर्वत्र एक ज्ञान और विज्ञानमयी वर्णन करने वाली एक आभा है और वह आभा क्या, वह प्रभु आप हो। जो मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड को क्रियाशील बना रहे है। नाना लोक लोकान्तर, एक-एक लोक, ऐसा विचित्र है, जिसके ऊपर मानव बेटा! अनुसन्धान करता ही रहता है। परन्तु इसके कण-कण में कौन विद्यमान है, कौन, कण-कण में विद्यमान हो करके क्रिया दे रहा है और उसको क्रियाशील बना रहा है। मेरे प्यारे! उस क्रियामयी, आभामयी आनन्द के ऊपर हमें सदैव विचार-विनिमय करना चाहिए।

बेटा! राष्ट्रीय स्थलियों में, विद्यमान हो करके राजाओं ने, उस ब्रह्म को अश्व के रूप में दृष्टिपात किया है। हे अश्व! तू महान है, सर्वत्रता को अपने ऊपर धारण करके मानो तू गति कर रहा है जैसे अश्व नाम मानो पशु को माना गया है, उस पशु के ऊपर मानव विद्यमान हो करके मानो अपने को क्षत्रिय का स्वरूप धारण कर लेता है और वह क्षत्रिय बन करके, अश्व के ऊपर मानो वह संग्राम में विजयी बनता रहता है। इसी प्रकार वैदिक साहित्य में अश्व के नाना बेटा! यहाँ पर्यायवाची माने गएं है। जैसे अश्व नाम पशु का है, अश्व नाम सूर्य का है, जो नाना पृथ्वियों की धारण करने वाला है। मानो अश्व नाम राजा का है जो प्रजा के सुख के लिए,

आनन्द के लिए मानो राजा अपने में संलग्न रहता है तो राजा का नाम अश्व माना गया है। अश्वमेध नाम के याग भी होते रहे है। परन्तु अश्वमेध याग करने वाला बेटा! अश्वमेध यागी बन रहा है। यागां ब्रह्मा वश्वन्धनं ब्रह्मे मेरे प्यारे! अश्वमेध याग करने वाला राजा बेटा! देखो, प्रजा के सुखद के लिए, प्रजा के मानो पशुओं के लिए अपने राष्ट्र में सुख की स्थापना करने के लिए वह बेटा! अश्वमेध याग करता है। संसार का विजेता मानो कुछ राष्ट्रों की चुनौती दे करके वह मानो देखो, अश्वमेध याग कर रहा है। और कह रहा है हे राजाओं! आओ, हे प्रजाओ! आओ, हम अपने राष्ट्र में सुख के लिए, अश्वमेध याग करें। मेरे प्यारे! वह अश्वमेध याग करने के लिए तत्पर हो रहा है। प्रजा को एकत्रित कर रहा है, वह कहता है प्रारम्भ में, जब वेद का मन्त्र उच्चारण करता है हमारा सर्वत्र अंगमयी मानो यागमय हो जाएं। मेरे प्यारे! मानो प्रत्येक अंग-प्रत्यंग हमारा यागमयी बन जाए, याग में परिणत हो जाए, यागां स्वञ्जनं देवाः वेद की आख्यिका कहती है कि हम मानो देखो, याज्ञिक बने। हमारा पशु भी याज्ञिक हो। तो मेरे प्यारे! उस भाव को ले करके वह एक अश्व नाम का मेरे प्यारे! देखो, एक अश्वा गिद्ध एक समय बेटा! देखो, इसी सन्दर्भ में मुझे एक वार्त्ता स्मरण आ गई है।

रावण राष्ट्र में सभा

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा लंकेश पति रावण के हृदय में बेटा! यह आशंका उत्पन्न हुई क्या मुझे अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। अपने राष्ट्र को ऊँचा बना करके, मुझे एक अश्वमेध याग करना है उन्होंने बेटा! अपने विश्वविद्यालय में नाना बुद्धिमानों को, जो राष्ट्र में विवेकी पुरुष थे उनको एकत्रित किया, एकत्रित करके बेटा! मानो सभा में महाराजा कागभुषुण्ड जी को भी उन्होंने निमन्त्रित किया। क्योंकि कागभुषुण्ड जी उस काल के मानो देखो, एक विशिष्ठ व्यक्ति कहलाते थे मानो वह महान योगेश्वर कहलाते थे, उनके अंग संग रहने वाले महर्षि लोमश ऋषि, उन्हीं के निकटतम रहते थे। देखो, दोनों ऋषियों को निमन्त्रित किया और वे उस सभा में आ पहुंचे। परन्तु उन्होंने महाराजा शिव और महाराजा गणेश जी दोनों को निमंत्रित करके मानो देखो, सभा की सफलता के लिए उन्होंने निमन्त्रित किया और निमन्त्रित करने के पश्चात् मानो देखो, उस समय महाराजा शिव और ऋषि मुनि और उनके राष्ट्र में जितने वैज्ञानिक और सब कर्मकाण्डी मानो बुद्धिमान थे, महात्मा भुञ्जु और अश्विनी कुमार इत्यादि ऋषि-मुनियों की एक सभा हुई। परन्तु उस सभा में जब सर्वत्र विद्यमान हो गएं तो उस समय राजा रावण से यह कहा गया हे रावण! तुमने मानो इस सभा का आयोजन क्यों किया है?

अश्वमेध याग

महाराजा रावण ने कहा महाराज!ा शिव से, क्या महाराजा! मेरी एक ही इच्छा है कि मैं अपने राष्ट्र में, राष्ट्र के सुखद के लिए, मैं एक अश्वमेध याग करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा-बहुत प्रिय, परन्तु अश्वमेध याग के तो कुछ नियम होते हैं। उनका क्रियाकलाप भिन्न होता है तो उन्होंने कहा-प्रभु! उस क्रियाकलाप को मुझे वर्णन कराईए। मानो वह कौन-सा क्रियाकलाप है। उन्होंने कहा कि तुम्हारे राष्ट्र में मानो देखो, एक अश्व होना चाहिए देखो, राष्ट्र का, अश्वमेध याग करने वाला राजा मानो वह होता है जो स्वर्ण में गुथा हुआ, एक अश्वः नाम का पशु सर्वत्र राष्ट्रों में देखो, भ्रमण करके आ जाए और उसको कोई ग्रहण करने वाला न हो, अथवा कोई राजा उसे ग्रहण करने वाला न हो, ऐसा अश्व जब तुम्हारे राष्ट्र में आ जाए, तुम्हारे समीप आ जाए, उस समय तुम्हें यह निश्चय हो जाना चाहिए कि हमारा कोई शत्रु नहीं है, मानो हम अश्वमेध याग कर सकते है।

मेरे प्यारे! जब यह वाक् उन्होंने प्रगट किया, तो राजा रावण ने यह वाक् स्वीकार कर लिया। परन्तु उन्होंने कहा कि हे प्रभु! मेरी एक ही इच्छा है कि मेरा याग यदि बनने लगा, अश्वमेध याग होने लगा तो उसमें कौन-कौन उद्गाता बनेंगे कौन अध्वर्यु बनेगा मानो कौन उसमें हमारी प्रतिष्ठा का प्रतीक होगा। मेरे प्यारे! देखो,

उस समय महाराजा शिव ने यह कहा तुम्हारे राष्ट्र का यदि अश्वमेध याग बनता है तो यहाँ देखो, कागभुषुण्ड जी विद्यमान है यह अपना निर्णय दे सकते है। महर्षि लोमश है यह भी अपना निर्णय दे सकेंगे। तो मानो देखो, कागभुषुण्ड जी को उन्होंने संकेत किया, कि महाराज! आप उससे क्या सहायता प्रदान कर सकते हो? तो उस समय कागभुषुण्ड जी ने कहा कि महाराज! मानो देखो, मेरी तो एक ही कामना रहती है कि जब तुम याग का आयोजन करोगे, अश्वमेध याग करोगे, तो मुझे भी निमन्त्रित कर देना, जिसका तुम मुझे अधिकार दोगे, उसको मैं अपनाने के लिए तत्पर रहूँगा।

मेरे प्यारे! यह वाक् रावण ने स्वीकार कर लिया। महर्षि लोमश मुनि को संकेत किया कि महाराज! आप इस याग में क्या सहायता प्रदान कर सकते है? महर्षि लोमश ने कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो, परन्तु निमन्त्रण करके जो भी मुझे स्थली प्रदान करोगे, मैं उसका दायित्व अपने ऊपर धारयामि करता हुआ मानो उसको पूर्ण रूपेण करूंगा। मानो बेटा! यह वाक् स्वीकार कर लिया, परन्तु महाराजा शिव से कहा-हे प्रभु! आप हमारे राष्ट्रीय पूज्यपाद गुरुदेव है परन्तु हमारी ऐसी इच्छा है कि देखो, जो अश्वमेध याग होगा, वह आपके संरक्षण में होगा। परन्तु यह वाक् महाराजा शिव इत्यादियों ने भी स्वीकार कर लिया।

मेरे प्यारे! देखो, यह निर्णय होने के पश्चात् मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान की धारा में जाने वाले महाराजा कुम्भकरण ने कहा-हे राजन! आप जो यह याग कर रहे है आपका मानो देखो, तात्पर्य क्या है, क्या मन्तव्य है आपके याग करने का? महाराजा रावण ने कहा-हे भो अस्सुता मेरी मानो एक ही कामना रहती है कि हमारा राष्ट्र मानो देखो, प्रियतम बनें। हमारे राष्ट्र में महानता हो, विज्ञान की धाराएं ऊँची बनती रहे, जिन विज्ञान की धाराओं को अपना करके अपना जीवन एक महानता की वेदी पर परिणत हो जाए। परन्तु देखो, हमारी यह भी कामना रहती है कि हमारा यह राष्ट्र परम्परा से चला आ रहा है प्रजा में सब प्रकार का आनन्द है, ब्रह्मज्ञान भी है हमारे यहाँ विज्ञान भी पराकाष्ठा पर रहा है परन्तु विज्ञान की धाराओं में अपने याग का क्या महत्त्व माना गया है।

विज्ञान की धाराओं में याग

महाराजा कुम्भकरण ने जब रावण से शब्दार्थ प्राप्त किए तो उन्होंने प्रश्न किया, रावण ने कहा हे कुम्भकरण! विज्ञान में अश्वमेध याग का क्या महत्त्व है? इसका मानो देखो, पूर्व मुख है मुनिवरों! देखो, उस समय महाराजा कुम्भकरण ने यह कहा कि हे भगवन! यह विज्ञान की धारा है, विज्ञान यह कहता है, विज्ञान में याग का बड़ा महत्त्व माना गया है। मानो जिस भी काल में, वैज्ञानिक अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, जिस भी काल में वह चिन्तन करते है क्या वायुमण्डल का दूषित आरोपण हो रहा है इस दूषितता को कैसे समाप्त किया जाए? तो उस समय मानो देखो, प्रत्येक गृह में, मेरी प्यारी पुत्रियाँ प्रातःकालीन मानो देखो, याग में परिणत हो जाती है, उस समय सुगन्ध आती है, प्रत्येक गृह में जब याग की प्रतिभा वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ आने लगती है तो मानो देखो, वह साकल्य की सुगन्धि है और विचारों की पुट लग करके उसमें मानो देखो, एक सुन्दर विचारधारा, एक याग की प्रतिभा बन जाती है और वायुमण्डल के शोधन करने से दूषित परमाणु को समाप्त करने में मानो वह बड़ा सहकारितव होता है। और बड़ा एक महान देखो, उसमें महत्त्वतव होता है।

रावण राष्ट्र में रुग्ण

उन्होंने कहा कि हमने भी विज्ञान की धाराओं में, यह प्राप्त किया है। तुम्हें यह प्रतीत है हे रावण! हे विधाता! एक समय का आपको प्रतीत होगा क्या मानो देखो, भारद्वाज ब्रह्मवान देखो, ऋषि हमारे यहाँ आए थे, और उस समय हमारे राष्ट्र में, एक देवी प्रकोप हुआ था और वह देवी प्रकोप ऐसा था क्या मानो देखो, रूग्ण

आ गया था। राष्ट्र में जब रुग्ण आ गया और वह रुग्ण कैसा आया मानो देखो, नेत्रों से और नासिका से जलों की धाराएं आने लगी और देखो, उस समय जब प्राणी समाप्त होने लगे, मानो देखो, श्रोत्रों में भी सूक्ष्मता आ गई और वाणी के शब्दों को पूर्ण रूपेण नहीं उच्चारण कर सकते थे। जब इस प्रकार का रुग्ण आया तो मानो देखो, उस समय यह कहा गया वैज्ञानिकों से, कि हे वैज्ञानिकों! तुम विज्ञान की धाराओं से मानो देखो, ऐसा साकल्य एकत्रित करो, मानो जो अग्नि में, प्रवेश करते हुए यह जो दोषारोपण आ रहा है मानो देखो, प्रकृति का एक प्रकोप आ रहा है यह समाप्त होना चाहिए। तो उस समय जब ऐसा निश्चय किया गया तो भगवन! मानो आपने तो यह आज्ञा दी ही थी उस समय हमारे यहाँ वह साकल्य एकत्रित किया गया। तो कुछ मानो देखो, हमने समिधा एकत्रित की, उसमें चन्द्रणी और देखो, पीपल और आम्र श्वेतकेतु एक वृक्ष होता है, आम्रवाणी वृक्ष होता है परन्तु उन वृक्षों की समिधा ले करके और मानो देखो, मिष्ठान और गौ घृत्त को ले करके, गौ दुग्ध को ले करके और देखो, कुछ ध्वनियाँ उच्चारण हुई, परन्तु उन वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ महर्षि श्वेतकेतु ने मानो देखो, महात्मा भृगु ने, उस वेदज्ञ ध्वनि को स्वर ध्वनि में जब उच्चारण किया गया तो मानो देखो, दस दिवस के याग करने मात्र से मानो देखो, वह रुग्ण राष्ट्र से दूरी हो गया। देखो, उसका इतना प्रभाव हुआ, प्रत्येक गृह में उसी प्रकार का साकल्य बना, उसी प्रकार का मानो देखो, हमारे यहाँ याग विज्ञान की तरंगों में, विज्ञान में, ज्ञान वृत्तियों में मानो देखो, याग का बड़ा महत्त्व माना गया है।

राष्ट्र का अपराध

विचार क्या है, जब अश्वमेध होता है तो अश्वमेध याग का जो कर्मकाण्ड होता है, यज्ञमान की जो पवित्र भावना होती है मानो देखो, उसका राष्ट्र के ऊपर अस्तित्व रहता है, राष्ट्र उन वाक्यों को स्वीकार करता है और वह याग भव्य बन करके, राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। तो मानो देखो, पशु की आयु और मानव की आयु मानो विचित्र बनती है देखो, आज तुम्हें यह प्रतीत है, हमारे विज्ञान के युग में, विज्ञान की धाराओं में मानो देखो, पशु को हनन करना, हमारे राष्ट्रीय स्थलों पर एक अपराध है। मानो जैसे हमारे यहाँ दुग्ध देने वाला जो पशु है, उसको नष्ट करना, दूध देने वाला जो पशु है उसको अपनी रसना का स्वादन बना लेना, यह राष्ट्रीय मानो देखो, एक प्रकार का अपराध माना गया है। मानव कृतियों में एक पाप का मूलक बन करके रहता है। संसार में राजा के राष्ट्र में मानो यह विज्ञान ने सिद्ध किया, पुरातन काल में, राजा कुम्भकरण जैसे वैज्ञानिकों ने, क्या किसी भी राष्ट्र में जब मानो देखो, पशुओं की मानो देखो, किसी भी प्राणी को मानव का भोजन बनाया जाता है, भोज्य बनाया जाता है और स्वार्थ और राष्ट्र में जब व्यवसाय आता, उस व्यवसाय के आने पर मानो देखो, पशुओं को बलि बनाया जाता है स्वार्थ परता के कारण, रसना के कारण तो मानो देखो, उसका राष्ट्र भी दोषी होता है। राष्ट्र उसके ऊपर मानो देखो, दोषी होता है वह दूषित वायु मण्डल को जाता है। क्योंकि मानव पान करता है हिंसक आभा को, तो उसका मनोबल समाप्त हो जाता है, उसके मन की अच्छाईयाँ समाप्त हो जाती हैं, उससे दुराचार की तरंगे आ जाती है, परन्तु देखो, राजा जब व्यवसायी बन जाता है, तो प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला बनता तो वैभव को जब संग्रह करता है तो मानो देखो, राजा के राष्ट्र में, राजा के विचारों में मानो देखो, एक दूसरे के संग्रह करने की, द्रव्य एकत्रित करने की प्रवृत्ति राजा के राष्ट्र में आ जाना ही मानो यह राष्ट्र के लिए अपराध है मानो इस प्रकार का प्रजा में द्रव्य होना चाहिए, राष्ट्र में द्रव्य होना चाहिए, परन्तु राजा को व्यवसायी स्वतः नहीं बनना चाहिए, क्योंकि राजा जब व्यवसायी बन जाता है तो प्रजा में मानो देखो, अशान्ति आ जाती है। अशान्ति आ जाने के कारण मानो देखो, उदर की पूर्ति भी हो रही है सर्वत्र हो रहा है परन्तु देखो, अशान्ति उनकी स्थलियों में देखो, उसके शरीर में उसके मनों में स्थली बना लेती है। जब वह आश्रित हो जाता

है, उस आसन के स्थिर होने पर देखो, रक्त भरी, आभा में क्रान्ति का सन्देह बना रहता है। तो इस प्रकार की धाराएं, राजा के राष्ट्र में नहीं होनी चाहिए।

वायुमण्डल के शोधन के लिए याग

महाराजा कुम्भकरण ने कहा कि विज्ञान यह सिद्ध करता है कि तरंगों का जगत है। एक मानव मानव को हनन कर रहा है, उसकी तरंगे वायुमण्डल को दूषित कर रही है, जिस गृह में मानो देखो, उसका हनन होता है, उसी गृह में देखो, दूषित वायुमण्डल हो रहा है, उसको शान्त करने के लिए, प्रत्येक गृह में हमारे ऋषि-मुनियों ने याग का चलन किया है। विज्ञान भी इस वाक् को सिद्ध कर रहा है। क्योंकि विज्ञान अपनी स्थलियों में मानो देखो, प्रत्येक वस्तु का निर्णय करता रहता है, निर्णयात्मक जीवन को पाने के पश्चात् मानो देखो, राष्ट्रीयता की प्रतिभा एक विचित्र बन करके और समाज की बन जाती है। परन्तु रहा यह वाक् कि मानो देखो, सम्भवा देवत्याम महाराजा कुम्भकरण ने जब यह निर्णय दिया तो राजा रावण की अन्तरात्मा पवित्र होने लगा, अन्तरात्मा प्रसन्न युक्त हो करके, उन्होंने कहा धन्य है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ ऐसा माना गया है क्या अश्वमेध याग कर्म करने के लिए, राजा रावण तत्पर हो गये।

अश्व का भ्रमण

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सम्भवा कृताः अपने विधाता विभीषण को निमन्त्रित किया और विभीषण को उस सभा में लाया गया और उन्होंने कहा कि इस अश्व को स्वर्ण से लधा जाए और मथा जाए और मथ करके मानो उसको पृथ्वी पर त्यागा जाए, मानो उसके चयन करने पर, उससे संग्राम भी करेंगे। मेरे प्यारे! स्वर्ण के, आभूषणों से युक्त करते हुए, अश्वमेध याग के लिए, एक अश्व को मानो देखो, मेध के लिए अश्वमेध के लिए, अश्व को त्याग दिया गया। अश्व देखो, वह भ्रमण करने लगा मानो देखो, जब भ्रमण करने लगा, तो उनका पुत्र अक्षय कुमार मानो देखो, अश्व के पिछले विभाग में विद्यमान था। मुनिवरों! देखो, जिस राष्ट्र में जाता है उस राष्ट्र में उस अश्व का मान होता है। अश्व का आदर होता है, आदर युक्त उसे मानो उसका जो पोषक तत्त्व है उसे प्रदान किया जा रहा था। बेटा! कोई पृथ्वी पर ऐसा राष्ट्र नहीं रहा। जहाँ मानो देखो, अश्व न गया हो और अश्व का आदर न हुआ हो। मानो अश्व का स्वागत न हुआ हो। उसका स्वागत होता रहा, उसे आदरणीय बन्धु के नामों से उसको सम्बोधित किया गया।

तो मुनिवरों! देखो, एक समय सुत्ताम केतु महाराज के एक शिष्य मानो उसका नाम धुम्रकेतु था। धुम्रकेतु महाराज ने, उस अश्व को मानो देखो, उसको अपने में ग्रहण करने की चेष्टा प्रगट की, परन्तु उसी काल में, उनके गुरु ने यह कहा कि नहीं, यह रावण का अश्व है, वह अश्वमेध याग करना चाह रहा है। अश्वमेध याग करना चाहिए। मानो देखो, इसको किसी से मोह नहीं होना चाहिए। तो उन्होंने कहा-कि प्रभु! मेरी एक ही इच्छा है कि मैं इस अश्व को अपना वाहन बनाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा-नहीं, यह हमारा कर्तव्य नहीं है। यह हमारा कार्य नहीं है। हम राजा से संग्राम नहीं कर सकते। उन्होंने कहा जैसी इच्छा हो, तो मानो देखो, अश्व में अप्रत किया गया। तो मेरे प्यारे! अक्षय कुमार ने यह वाक् मानो देखो, यत्र में स्थिर कर लिए और मानो देखो, सर्वत्र पृथ्वी पर वह अश्व भ्रमण करके, मेरे प्यारे! हिमालय की कन्दराओं में पहुंचा, हिमालय की कन्दराओं में जा करके मानो देखो, शिकामकेतु ऋषि महाराज अपने आश्रम पर बेटा! उद्दालक गोत्रीय मानो वह अपने में याग कर रहे थे। जब वह याग कर रहे थे तो वहाँ अश्वमेध याग का एक शब्द उद्धृत हो रहा। जब उद्धृत हो रहा था तो मानो देखो, शब्द को श्रवण करके, शिकामकेतु ऋषि महाराज ने अपनी पत्नी से कहा-देवी! देखो, यह अश्व कितना महान, भव्य है। उन्होंने कहा-कि महाराज! आपको प्रतीत नहीं है, राजा रावण अश्वमेध याग कर रहा है।

पुलस्त्य ऋषि महाराज का वह पोत्र है, वह बलिष्ठ है मानो ब्रह्म जिज्ञासा में उसकी पिपासा जागरूक हो रही है। मानो देखो, यह वाक् जब उन्होंने श्रवण किया तो वहाँ ऋषि कहता है-देवी! अश्व तो बहुत ही प्रिय है। उन्होंने कहा-कि अश्व को हम ग्रहण नहीं कर सकते। अपने में ला नहीं सकते। क्योंकि बहुत से अश्व हमारे समीप है, मेरे प्यारे! देखो, यह वाक्, महाराज ने स्वीकार कर लिया। परन्तु देखो, अश्व सर्वत्र भू-मण्डल पर भ्रमण करने के पश्चात, उस लंका में प्रवेश हो गया।

लंका में प्रवेश होने के पश्चात् मुनिवरों! देखो, उन्होंने वहीं एक सभा प्रदान की। जिस सभा में मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी कवन्धी और मुनिवरों! देखो, महर्षि वैशम्पायन और मुनिवरों! देखो, कागभुषुण्ड जी, महर्षि लोमश और महाराजा शिव, महाराजा सम्पातुक ऋषि महाराज बेटा! देखा उन्होंने अपने विद्यालय में मुनिवरों! देखो, सभा हुई। इन वैज्ञानिकों में रावण के पुत्र नारायन्तक, अहिरावण, सुकेतवम और मुनिवरों! देखो, आयुर्वेद के महापण्डिता नारान्तक, सुधन्वा, अश्विनी कुमार और मुनिवरों! देखो, महात्मा दधीचि को भी निमन्त्रित किया। मानो जो सभा लंका में हुई, उस सभा में यह पुनः प्रश्न किया गया कि महाराज! हम एक अश्वमेध याग कर रहे है, इस अश्वमेध याग के लिए हमें क्या-क्या करना होगा?

साकल्य पर विचार

मेरे प्यारे! देखो, उस समय आयुर्वेद के आचार्यों ने मानो सुधन्वा ने और अश्विनी कुमारों ने एक पोथी आयुर्वेद की निर्माण थी, आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! उन पोथियों का एक नृत्त किया गया, एकत्रित की गई। उन्होंने कहा इस साकल्य के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! इसमें मानो गौ घृत, गौ दुग्ध, गौ गृहणिका और मुनिवरों! देखो, कान्तिका नाना उन औषधियों को एकत्रित किया, जिससे उन्होंने सोमकेतु एक औषध होती है मानो उसका क्वाथ श्वानकेतु उसके बीज इत्यादियों को, समिधाएं मानो उनको नियुक्त किया गया और उन्होंने और भी नाना प्रकार की औषधियों को, महात्मा दधीचि जी जो औषधियों के विशेषज्ञ थे, अश्विनी कुमार के गुरु थे, जिसको सोमभानु कहते थे। सोमभानु ऋषि महाराज जो अंगिरस गोत्रीय थे उनको निमन्त्रित किया गया वह मानो प्रत्येक औषधियों के गुणों को जानते थे। परन्तु देखो, उन्होंने कुछ औषधियों को नियुक्त किया, क्या इनके द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने उन औषधियों को एकत्रित करने के पश्चात्, मेरे प्यारे! उनका साकल्य, भयंकर वनों में से एकत्रित होने लगा।

मुझे स्मरण आता रहता है मानो देखो, वह जो सभा हुई, कागभुषुण्ड जी से कहा गया कि महाराज! अश्वमेध याग, को, क्योंकि आप कर्मकाण्डी है अश्वमेध याग का कोई कर्मकाण्डी बुद्धिमान ऋषि हो तो उसका निर्णय कराईए, उन्होंने कहा कि मैं लोमश जी को चाहता हूँ। यह मानो देखो, अश्वमेध याग के मर्म को जानते है। मानो इनके जो पूज्यपाद गुरुदेव है वह नाना प्रकार के यागों के विशेषज्ञ रहे है। इसी प्रकार इन्होंने जिन गुरुओं के चरणों में विद्यमान हो करके, इन्होंने देखो, अश्वमेध याग के कर्मकाण्ड को जाना है। वह कर्मकाण्ड मानो देखो, यह अपने में मंगलमयी कहलाते है, जिसके द्वारा यह याग होना चाहिए।

मेरे प्यारे! उन्होंने वह वाक् स्वीकार कर लिया और महर्षि लोमश इत्यादि और कागभुषुण्ड जी को, उस याग के लिए नियुक्त किया गया। तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मानो बहुत समय के पश्चात् यह वार्त्ता मुझे पुनः से स्मरण आ रही है, परन्तु देखो, उस याग में नाना ऋषियों को नियुक्त किया और मुनिवरों! देखो, उस सभा में आकृतियों में देखो, उस सभा में यह निर्णय हुआ कि हमारे यहाँ अश्वमेध याग होना है। परन्तु वैज्ञानिकों के द्वारा वैज्ञानिक एकत्रित करके देखो, महाराजा नारान्तक, महाराजा श्वेनकेतु और देखो, महाराजा कुम्भकरण और विभीषण मानो देखो, सबको एकत्रित करके जो वैज्ञानिक थे। उन वैज्ञानिकों को एकत्रित करके उन्होंने यह

कहा-कि भई! साकल्य के ऊपर अपना निर्णय दो। तो नारान्तक ने बहुत-सी औषधियों को एकत्रित किया, क्योंकि नारान्तक चन्द्रमा के विज्ञान के विशेषज्ञ थे और चन्द्रमा की कान्ति से ही औषधियों में रस आता है, औषधियों में तेज आता है। मानो देखो, उन औषधियों को एकत्रित किया, जो चन्द्रमा की कान्ति से, वह रसोमयी कहलाते थे। परन्तु देखो, आदि के वह मानो सूर्य विज्ञान के विशेषज्ञों को, सूर्य की किरण, कौन-कौन से माह पर कौन-कौन-सी औषधियों के ऊपर, कौन-कौन-सा प्रभाव और उसका खरल बनाने के पश्चात् अग्नि में तपा करके उनकी क्या-क्या प्रतिभा और कैसी तरंगों का प्रादुर्भाव होता है ऐसी मानो औषधियों को उन्होंने एकत्रित किया और औषधियों को एकत्रित करने के पश्चात् उसमें नाना प्रकार के विचारधाराओं की पवित्रता की योगियों की मानो उसमें विचारधारा परिणत हुई, तो उस समय बेटा! देखो, उन्होंने साकल्य के लिए निर्णय दिया और उस सभा में नाना प्रकार के वैज्ञानिक और देखो, उसमें जो वैद्यराज थे आयुर्वेदां ब्रहे मानो देखो, जो अश्विनी कुमार प्रीह्वीताम् मेरे पुत्रों! देखो, उसमें वैज्ञानिक आयुर्वेदाचार्य और मुनिवरों! देखो, उसमें ओर भी नाना जैसे दार्शनिक और विवेकी पुरुष मानो देखो, उस सभा में, अपना-अपना निर्णय, अपनी-अपनी प्रतिभा प्रगट करने लगे।

कर्तव्य

तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ ऐसा बेटा! अश्वमेध का, कल तुम्हें कर्म काण्ड इससे पूर्व काल में तुम्हें प्रगट करेंगे। आज का विचार तो हमारा इतना ही क्योंकि उनकी सभाओं में यह निर्णय हुआ। तो हमारे यहाँ अश्वमेध जो याग है, यह परम्परागतों से ही, विचित्र माना गया है। मैं अश्वमेध याग के ऊपर कल अपने-अपने विचार, अब इससे पूर्व काल में प्रगट करेंगे, क्योंकि अश्वमेध याग मानो कितना महत्त्वदायक होता है। अश्वमेध याग राजा क्यों करता है, यह सब बेटा! इसके ऊपर विवचना प्रगट करेंगे। आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है, अश्वमेध याग के ऊपर बेटा! हमारा विचार चल रहा था। अश्व नाम परमात्मा का है, जो अश्व, परमात्मा बन करके हमारा कल्याण कर रहा है, हमारा जो कल्याणकारी है। परमात्मा को अश्व कहते है, वह मेध की विद्या का, क्योंकि वह वेद, उसका ज्ञान है मानो देखो, वेद प्रकाश है, वह प्रकाश में सदैव रहने वाला है, वह जो प्रकाशक अश्व है, वह हमारे कल्याण के लिए, क्योंकि अश्व नाम सूर्य का है सूर्य उससे प्रकाश ले करके, वह प्रकाश देता रहता है। मानो जब भी हम कुछ प्राप्त करते रहते है, मानो जन जीवन की धाराओं में परिणत होते रहते है परन्तु देखो, अश्व नाम जहाँ सूर्य का है, वहाँ परमात्मा का नाम भी अश्व है, जो संसार को चेतना दे रहा है, लोक लोकान्तरों को माला बना करके धारण कर रहा है, प्रत्येक प्राणी मानो उसके सूत्र का वह मनका बना हुआ है, वह सूत्र के सदृश्य है हम सब उस परमपिता परमात्मा की उपासना करने वाले बनें। क्योंकि उसकी उपासना करना ही हमारी अन्तरात्मा को उज्ज्वल बनाना है, आत्मबल को पाना है, वह आत्मा के बल को देने वाला है। मुनिवरों! देखो, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में सदैव रत्त रहना ही हमारा कर्तव्य है।

यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या, हम अश्वमेध याग के सम्बन्ध में बेटा! अपनी विवेचना प्रगट कर रहे थे अश्वमेध याग का चलना, कर्मकाण्ड की चर्चा, तो हम कल ही प्रगट करेंगे इससे पूर्व शब्दों में, आज का विचार तो हमारा, क्योंकि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, मानो उस परमात्मा को अश्व स्वीकार करते हुए, हम सब उसी के ऊपर अश्वस्त हो रहे है, वह हमें धारण कर रहा है। बेटा! जैसे हम पृथ्वी को, अश्व नाम का पशु मानो धारण करता हुआ और वह अश्व को संग्राम में विजय

होता है इसी प्रकार अश्व नाम बेटा! विद्या को भी कहते है, परन्तु यहाँ अश्व नाम परमपिता परमात्मा की उपासना करना है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा, मैं शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करूंगा, आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः यं शना रथं ब्रह्मणा या ता गतं गताः मां ऋषि वरुणां प्रहा गतं आ पां मनो। ओ३म् प्रातः रथ यश्चना मा नां त्वाः रेवं आ भा रथं ब्रह्मणा। ओ३म् जनि गता मनो अश्वश्चमां रेवं आ पां मनो ब्रह्मणा। ओ३म् श्वञ्जन प्राता आत्मा रताः वरूणा यश्चम। ओ३म् ब्रह्मणा देवं मया रथं भद्राः। २९/१०/८२ न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली

२ धर्म का विश्लेषण 13 04 1988

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा। आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है। और वे यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं। मानो याग उसका आयतन है उसका गृह है, उसका सदन है, वे यज्ञोमयो स्वरूप कहलाते है।

यज्ञशाला रूपी संसार

तो मेरे प्यारे! आज मुझे कहीं से ये प्रेरणा प्राप्त हो रही है। कि याग के सम्बन्ध में कुछ विचार विनिमय किया जाए। आज मानो, देखो, यागा भविता ब्रह्मणां वृहि वत्तं देवाः मानो ये जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है मानो ये एक प्रकार की यज्ञशाला कहलाती है। जो भी प्राणी इस संसार में आया है वो याज्ञिक बनने के लिए आया है। यागां भवि वर्णस्सुता वेद का वाक् कहता है कि जैसे ये संसार एक यज्ञशाला है, इसी प्रकार मानो ये मानवीय शरीर भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। जब साधक इसके ऊपर अन्वेषण करते हैं, अनुसन्धान करते हैं तो मानो देखो, पांच ज्ञानेन्द्रियों को होता बनाते हैं और जब वह होता बनकर के आत्मिक याग किया जाता है। जिसमें आत्म ब्रह्मणां ब्रहे जिसमें मानो आत्मवान् बनता है तो आत्मवान बनने के लिए मानो उस प्रभु के समीप और अपने में रत्त होने लगता है तो विचार आता रहता है कि आत्म ब्रह्मणां ब्रहे ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है हमारा मानवीय शरीर भी, एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आ रहा है। यहाँ प्रत्येक मानव याज्ञिक बनकर के और वे परमपिता परमात्मा, जो यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। मुनिवरों! देखो, उसमें आभा नृत्त होती रहती है।

तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, यागों का वर्णन प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में होता रहता है जैसे मुनिवरों! नाना प्रकार के यागों में एक अश्वमेध याग है, एक अजामेध याग कहलाता है। एक गोमेध याग है। मुनिवरों! देखो, वाजपेयी, अग्निष्टोम याग भी माने गएं है जैसे देवी याग और कन्या याग का वर्णन आता रहता है। तो मुनिवरों! ये भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहता है। वैदिक साहित्य के ऊपर जब विचार अथवा गम्भीर मुद्रा में जब मानव मुद्रित होता है तो ये प्रतीत होता है कि ये भिन्न-भिन्न प्रकार का जो यज्ञोमयी स्वरूप वह जो परमपिता परमात्मा जो आनन्द का स्रोत है आनन्दमयी कहलाता है उसके ऊपर विचार विनिमय में करना चाहिए।

सुख के लिए याग

बेटा! मैंने कई काल में तुम्हें याग के सम्बन्ध में बड़े ऊर्ध्वा में विचार प्रकट किये। आज भी मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया। एक समय मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि वैशम्पायन अपने आसन पर विद्यमान थे। महाराजा अश्वपति के यहाँ से कुछ समय पूर्व ही वे याग सम्पन्न करा करके, जिसको वृष्टि याग कहते हैं। मानो राजाओं का ये कर्तव्य रहा था। हमारे यहाँ वेदोक्त, ब्रह्मणे कि राजा अपनी प्रजा के सुखद के लिए नाना प्रकार का क्रिया कलाप करता रहा है। उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन भी होता रहा है जैसे अश्वमेध याग है। अश्व कहते हैं राजा को, मेध कहते हैं प्रजा को, जो राजा और प्रजा दोनों सम्मिलित होकर के मानो देखो, जो याग करते हें उसको

अश्वमेध याग कहते हैं। मेरे प्यारे! भिन्न-भिन्न प्रकार के, जिससे प्रजा अपना सुखद अनुभव करती हो तो उसको हमारे यहाँ वृत्तम् देखो, अश्वमेध याग कहते है। एक हमारे यहाँ वृष्टि याग का वर्णन होता रहता है। याग करना और याग से वृष्टि हो जाना, मानो उसे वृष्टि याग कहते हैं। मैंने इससे पूर्वकाल में कहा था। एक पुत्रेष्टि याग होता है जहाँ देखो, मानो पुत्रं यागां ब्रह्मणे माता अपने में ये विचारती है कि मुझे पुत्र याग करना है तो उस समय मानो देखो, पुत्रेष्टि याग के लिए पुरोहित और आचार्यों को तपोमयी जो निष्ठ रहे हैं उनके द्वारा याग होना चाहिए, जो निष्पन्न हो, मानो देखो, तपो में जो अध्ययनशील हो।

पति का कर्तव्य

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं देना चाहता हूँ विचार केवल ये कि मुनिवरों! देखो, मैं ये उच्चारण कर रहा था सम्ब्रह्मे वाचं नमः श्रवणं ब्रह्मा लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, ये ब्रह्मणं वृत्ति देवाः कहलाता है। आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक गाथा के रूप में महात्मा अर्धभाग के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ। मुनिवरों! देखो, महर्षि अर्धभाग अप्रतम् अपने आसन पर विश्राम करते थे। परन्तु एक समय प्रकृति का ऐसा प्रकोप हुआ, ऐसी दैविक प्रवृत्ति आई मानो दैविक प्रकोप जब आए तो बेटा! अति वृष्टि हो गई। अतिवृष्टि हो जाने के कारण सर्वत्र अन्न समाप्त हो गया। मेरे प्यारे! भिक्षुक हो गए, अकाल अमृत में देखो, अन्न नही प्राप्त होता। क्योंकि तब सब जल मग्न हो गया। मेरे प्यारे! ब्रह्मणं ब्रह अब देखो, जब कई समय हो गये, तो अर्धभाग की धर्मदेवी मानो उनकी पत्नी के प्राणान्त होने लगे। देवी ने कहा-हे प्रभु! अब मैं संसार से जा रही हूँ, बिना अन्न के, आप मेरी रक्षा कीजिए, मानो मेरी रक्षा देवता जनों ने की है, पिता जनों ने की है और आप मेरे कुलेत्य पतिलोक को प्राप्त हो गई हूँ, तो मानो अब आप का कर्तव्य है, मेरी रक्षा करो।

मेरे प्यारे! गत्प्रमाणं मानो ब्रहे, हमारे यहाँ कन्या याग का जब वर्णन आता है तो उसमें यही आता है पुत्री पहले मानो देखो, कन्या देव लोक में रहती है, देवता रक्षा करते हैं जब मानो कुछ प्रबल होती हे तो पितर जन उसकी रक्षा करते रहते हैं और जब पितरों से मानो देखो, वह दूसरे कुल को प्राप्त होकर के पतिभ्यो नमः जब वह पतिलोक को गमन करती है तो उस समय पति उसकी रक्षा करते हैं। तो देवी ने कहा-प्रभु! मेरी रक्षा कीजिए। उन्होंने कहा-बहुत प्रियतम, दिव्या से मानो वहाँ से वे गमन करते हैं। भ्रमण करते हुए देखो, एक स्थली पर पहुँचे।

जहाँ एक हाथीवान मानो देखो, मा (माष) को पान कर रहा था वहाँ व्रतम् जिसे उड़द कहते है, उड़दों को पान कर रहा था। उन्होंने भिक्षामयी देही कहा तो उन्होंने बेटा! उनमें से उड़दों को, भिक्षा के रूप में प्रदान किया। तो वे उन्होंने स्वीकार कर लिए, महात्मा अर्धभाग से हाथीवान ने कहा कि-प्रभु! मैं जल भी लाऊँ, तो देखो, उन्होंने कहा-कि नही, तुम शुद्र संज्ञा में चले जाओगे, मानों तुम शूद्र हो। तुम मानं ब्रह्मे मानो जिस क्रिया कलाप को मैं स्वतः कर सकता हूँ, जो पर्याप्त है उससे मैं दूसरा का आश्रित क्यों बनूं, और तुम मुझे अपना आश्रित बनाना चाहते हो। क्योंकि जो मानव दूसरों को अपना आश्रित बनाना चाहता है उसको शूद्र संज्ञा प्रदान की गई है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये कहा, ये उच्चारण करके हाथीवान अपने विचारों में मौन ब्रह्मा वृत्ति, मेरे प्यारे! अपने में मौन हो गया। विचार आता रहता है सम्भूति ब्रह्मा लोकां वाचेह वाचां श्रवणं ब्रह्मण लोकाम् मेरे पुत्रो! देखो, वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए अपनी देवी से कहा-लीजिए, दिव्या से! तुम इसको पान करो, तुम्हारे प्राणों की रक्षा हो जाएगी। तो मेरे प्यारे! उन्होंने उसको पान किया मा का पान करके बेटा! वह वहाँ से गमनं ब्रहे उन्होंने कहा-देवी! मुझे एक निमन्त्रण आया है। महाराज अश्वपति के यहाँ एक मानो

वृष्टियाग हो रहा है और मैं उसमें उद्गाता बनूंगा। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा बहुत प्रिय!

अयोध्या में याग

अगला दिवस आया। उन्होंने वहाँ से गमन किया, भ्रमण करते हुए मुनिवरों! वे अयोध्या में पहुँचे, जहाँ मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति का राष्ट्र था। तो महाराज अश्वपति के यहाँ यज्ञशाला में पहुंचे। यज्ञशाला में भिन्न-भिन्न आसनों पर मानो भिन्नं बृहि, अब उद्गाता का आसन शून्य है। ऋषि ने जाकर के उस आसन को ग्रहण कर लिया और ग्रहण करने के पश्चात जब वे अपने में उदगं ब्रह्मा तो राजा ने कहा-हे ऋषिवर! तुमने ये आसन क्यों ग्रहण कर लिया है? उन्होंने कहा-प्रभु मैं उद्गाता हूँ। मैं उद्गाता होतरूपेण हूँ मानो मैं उद्गीत गाना जानता हूँ, इसलिए मैं उद्गाता बना हूँ। राजा ने कहा-हे ऋषिवर! तुमने ये आसन क्यों ग्रहण कर लिया है? उन्होंने कहा-मैं वेदों का गान गाने वाला हूँ और मैं स्वरों से गाता रहता हूँ और यज्ञमान की वाणी को मुझे पवित्र बनाना है इसलिए मैं उद्गाता हूँ। मेरे प्यारे! राजा ने पुनः कहा, यज्ञमान ने, कि तुम इस आसन पर क्यों विद्यमान हो गएं हो? उन्होंने कहा-मैं मानो देखो, आसन की महत्ता को जानता हूँ।

उद्गाता से सम्बन्धित देवता

यह आसन बड़ा महत्त्वदायक है। मैं इस पर उद्गीत गाने के लिए, मैं जटा पाठ में गान को जानता हूँ मानो देखो, माला पाठ भी मैं जानता रहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये उत्तर दिया तो राजा ने कहा हे ऋषिवर! मानो तुम देवता को जानते हो, जो उद्गाता से सम्बन्धित होता है? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं जानता हूँ। वह कौन-सा देवता है? उन्होंने कहा वह वायु देवता, जिसका रसना के अग्र भाग में समन्वय रहकर के अग्नि की मानो पुट लगाकर के जब मानव गान गाता है। तो मेरे प्यारे! जब ये वाक् उन्होंने कहा सम्भवः वाचन्नमं ब्रहे हे ऋषिवर! मानो तुम उस उद्गाता के स्वरूप के देवता को जानते हो, जो उद्गाता के अन्तर्हृदय में प्रवेश करता है। उन्होंने कहा-हाँ मैं जानता हूँ। वह उद्गीत गवाने वाला, ब्रह्मणां अदिति होता है। अदिति नाम सूर्य का कहलाता है ये सूर्य अग्रतं ब्रह्मा ये उदगान गाने के लिए मुझे प्रोत्साहन करता, मुझे तेज देता है, ऊर्ज्वा देता है और गान गाने के लिए रसना में समाहित होकर के मुझे बाध्य करता रहता है।

उद्गाता

मेरे प्यारे! देखो, उस समय राजा ने कहा-कि भगवन्! तुम उस उद्गाता, को जानते हो जो इस सूर्य के भी देवतव को धारण करने वाला है। उन्होंने कहा वह देवता जो सूर्य को अपने में धारण कर लेता, उसका नाम द्यौ कहलाता है। ये वाणी जितनी भी है ये सब द्यौ में ही तो प्रवेश कर जाती है। द्यौ में ही तो स्थिर हो जाती है। मेरे पुत्रो! ये वाक् भी उनके आंगन में आया, राजा मौन हो गये। देखो, मेरे पुत्रो! यज्ञमान दिव्यासे उपस्थित हुई और उन्होंने कहा-हे भगवन!। आप हमारे यज्ञ में उद्गाता बने हो, उद्गाता का महत्व क्या होता है? उद्गाता कौन होता है? उन्होंने कहा-उद्गाता वह होता है दिव्या से! जो उद्गीत गाता है, जो हृदय से गान गाता है, आत्मा से गाता है, जो मन और प्राण को एक सूत्र में स्थिर करके मानो उससे गान गाता है तो वह उद्गीत गाने वाला उद्गाता कहलाता है। उन्होंने कहा धन्यं ब्रह्मणा।

अन्तःकरण का प्रकाशक वेद

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि तुम उस देवता को जानते हो, जो उद्गाता की वाणी में प्रवेश करता है? हाँ, दिव्या! मैं जानता हूँ। तो वह कौन-सा देवता है? उन्होंने कहा-वह देवत्तं ब्रह्मा व्रते वेदां प्रकाशां भवितं ब्रह्मो मानो वह वेद रूपी प्रकाश है, जिस प्रकाश को मैं अपने में धारण करके आत्मा से गति की सहायता लेकर के, ज्ञान और प्रयत्न की प्रतिभा को लेकर मानो देखो, मैं उस देवता को इस रूप में मानता हूँ, स्वीकार

करता हूँ कि वह देवता हमारे अन्तर्हृदय में व्याप्त होकर के उद्गीत के रूप में वेदों का गान गाता है। वेदां प्रकाशां हृदयानि ब्रह्मे प्रकाशं ब्रह्वे वृत्तम् वह हृदय को प्रकाशित करने वाला है, जैसे नेत्रों का देवता सूर्य कहलाता है, वह प्रकाश देता है। ऐसे मानव के अन्तःकरण का जो प्रकाश है वह वेद रूपी प्रकाश कहलाता है मैं उस प्रकाश को इस रूप में स्वीकार करता रहता हूँ

मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान पत्नी प्रसन्न हो गयी, उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! मेरे प्यारे! एक प्रश्न उन्होंने और किया कि क्या तुम उस देवता को जानते हो जो आत्म याग और बाह्य याग दोनों को करता है?

उन्होंने कहा-मैं उस देवता को जानता हूँ कि वह देवता आत्मा है, वह देवता प्राणस्वरूप है, वह देवता मानो मनस्तव स्वरूप कहलाया जाता है वह देवता है जो आत्मा से गान गाना जानता है। बेटा! देखो, सर्पराज उसके चरणों की वन्दना करने लगते है, सिंह राज उसके चरणों की वन्दना करने लगते है मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, उन्होंने कहा प्रभु! धन्य है हे उद्गातं ब्रह्मे, हे उद्गाता! अस्सुत मानो देखो, तुम उस देवता को जानते हो जो सूर्य से सम्बन्धित होता है? उन्होंने कहा-सूर्य से सम्बन्धित द्यौ है और द्यौ से मानो देखो, महत्तत्व है। दोनों एक दूसरे में प्रतिष्ठित होते हुए, वही उद्गाता की वाणी में प्रवेश होकर के, वहीं यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाकर के स्वाहा उच्चारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उससे ही तो महान बनते है वह सूर्य है, चन्द्रमा से समन्वय मानो अमृतमय रहता है अमृत का और देखो, चन्द्रमा का, सूर्य का जब समन्वय होता है तो मेरे प्यारे! अमृत की तरंगों का जन्म होने लगता है। जिसको योगी जन अपने में समन्वय करते है।

तो आओ मेरे प्यारो! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, मैं कोई वेद की विवेचना देने नहीं आया हूँ विचार केवल ये बेटा! याग का प्रारम्भ हो गया। दिव्या ने कहा-धन्य है प्रभु! ऐसे अध्ययनशील प्राणियों के द्वारा जब याग होता है त्याग और तपस्या में मानव प्रवृत्ति प्रविष्ट हो जाती है मानो वहीं तो मानवीय जीवन कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, अप्रतं ब्रह्मा वह अपने यागां रुद्रं ब्रहे बेटा! याग देखो, समय तक चलता रहा। परन्तु याग सम्पन्न हो गया। सम्पन्न हो जाने के पश्चात देखो, यज्ञमान को दक्षिणां ब्रह्मा, मेरे प्यारे! देखो, राजा ने द्रव्य दिया और गौ इत्यादियाँ का पान कराया और अपने हृदय में जो त्रुटियाँ थी उसको दक्षिणा में समर्पित किया।

दक्षिणा का अभिप्राय

मेरे प्यारे! दक्षिणा का अभिप्राय केवल ये है कि यज्ञमान जो त्रुटि करने वाला है वह अपनी वाणी से, अन्तर्हृदय से जो उनको त्याग देता है वह उनको पुरोहित को प्रदान करता है वह वास्तविक दक्षिणा कहलाती है हमारा यहाँ दक्षिणा के रूप में, मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय कराया था, जब ऋषि एक दूसरे से प्रश्न करते है वे कहते है कि ये जो प्रजापति है बेटा! देखो, ये दक्षिणामय है और वह प्रजापति याग में है और याग दक्षिणा में है और दक्षिणा श्रद्धा में है, और श्रद्धा हृदय में है, मेरे प्यारे! देखो, हृदय ब्रह्मणां ब्रहे वह परमात्मा के हृदय का हृदय से समन्वय रहता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, इसीलिए दक्षिणा में यज्ञ है, देखो, त्रुटियों को त्यागना यागमयी दक्षिणां ब्रह्मे यज्ञमान अपनी दक्षिणा को पुरोहित को प्रदान कर देता है वह और त्रुटियों को त्याग करके अपने में महानता के लिए सदैव तत्पर हो जाता है आज का विचार, मैं विशेष देना नहीं चाहता हूँ। आज मेरे प्यारे महानन्द जी भी दो शब्द उच्चारण करें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् यशौ सर्वाणि भद्रं ब्रह्मणाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल। अभी-अभी मेरे पूज्यपाद याग के सम्बन्ध में बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ रहे थे, क्योंकि इनका जो मन्तव्य रहता है वह यह रहता है कि मानव एक दूसरे में पिरोया जाएं एक दूसरे में जैसे ये ब्रह्माण्ड पिरोया जा रहा है एक दूसरे में लोक लोकान्तरों की माला बन रही है इसी प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का ये मन्तव्य रहा है कि ये

समाज एक दूसरे में पिरोया हुआ रहना चाहिए, हमारा भी यही मन्तव्य रहा है। आज हमारी जो ये वाणी है, आकाशवाणी उस स्थली पर जा रही है जहाँ मानो एक याग सम्पन्न हुआ, उस याग को मानो मैं प्रायः दृष्टिपात करता रहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो प्रायः परम्परा और प्राचीनता की आभा में ले जाते है हमें उस काल में ले जाते है जिस काल में देखो, ऋषि मुनियों का हृदय बड़ा विचित्र और राजाओं का हृदय भी बड़ा विचित्र रहा है। परन्तु मैं तो इसी लोक की चर्चा कर रहा हूँ। मेरा अन्तरात्मा सदैव यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! मैंने तो कई कालों में वर्णन किया है कि ये तेरे जीवन का सौभाग्य और अखण्डता में परिणत रहे, अखण्डता तो प्राप्त होती रहे। ये मेरी सदैव कामना रहती है।

वाममार्ग का काल

परन्तु रहा ये कि आज देखो, पूज्यपाद गुरुदेव वाक् प्रगट कर रहे थे। और रहा यह कि इस संसार का जो, वर्तमान का काल चल रहा है मैं इसको मंगलम् देखो, यज्ञमान के लिए कहता हूँ कि यज्ञमान! तेरे जीवन का इस लिए सौभाग्य है क्योंकि आधुनिक काल में ये वाममार्ग का युग चल रहा है इसे मैं वाममाग कहता रहता हूँ वाममाग उसे कहते है जो मानो देखो, सत्य मार्ग को त्यागकर, असत्य के मार्ग को ही इस समाज ने अपनाना प्रारम्भ किया। मानो देखो, जो असत्य को अपनाता है वह वाममार्ग है। जो सत्य को अपनाता है। वह देवता कहलाता है।

तो इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये परिचय देना चाहता हूँ, ये परिचय देने के लिए आया हूँ कि हे पूज्यपाद! देखो, यज्ञं ब्रह्मां हे यज्ञमान! यागों का मध्यकाल में बहुत तिरस्कार हुआ है, उस तिरस्कार के कारण मानो देखो, वाममार्ग कहलाया गया। इसी प्रकार देखो, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न है। आधुनिक काल में देखो, राष्ट्रवेत्ता भी याग करते, अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाते रहे है। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी ये प्रगट कराया था कि अवश्मेघ याग, अजामेघ याग, गो-मेघ याग, वाजपेयी यागों का जो मानो चयन होता है वह राजा करता है क्योंकि राजा अपने राष्ट्र को उज्ज्वल बनाने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में परिणत हो जाता है। परन्तु राजा के राष्ट्र में रक्तमयी क्रान्ति नहीं आती। आज देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में ये प्रगट कराया था अमृतम् भारद्वाज की चर्चा भी इन्होंने प्रगट की, भारद्वाज मुनि ने ऋषि मुनियों के मध्य में ये कहा था कि ये जो रक्तमयी क्रान्ति आती है इसका मूल क्या है?

विज्ञान के दुरूपयोग का प्रभाव

तो महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के यन्त्रालय मानो देखो, विज्ञान की सामग्री बहुत होने के कारण, तो वे अपने में ये नृत्य करते रहते थे। कि मेरा राष्ट्र मेरा समाज ऊँचा बने तो ऋषि मुनि ये प्रश्न करते रहते थे। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने ये वर्णन कराया कि ये राष्ट्र कैसे ऊँचा बने और ये विज्ञान इतना मानो जान लेता है विज्ञान की जो उपलब्धि होती है इस विज्ञान का अन्तिम मूल क्या है?

तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो कई काल में वर्णन कराया था कि राष्ट्र उस काल में ऊँचा बनता है जब मानो राजा कर्तव्य का पालन करने के लिए तत्पर हो जाता है। जब तक राजा अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, प्रजा भी नहीं कर पाती अनधिकार चेष्टा प्रारम्भ हो जाती है विज्ञान जब बलवती हो जाता है तो मानो नाना प्रकार की चित्रावलियों निहित हो जाती। उन चित्रावलियों में मेरी पुत्रियों के नृत्य अश्लीलता में जब परिणत हो जाते है तो मानो देखो, समाज में अधिकार और उसकी आवश्यकता बलवती होती रहती है और बलवती होने के कारण, उसके पश्चात ब्रहे संधा पूज्यपाद गुरुदेव ने, भारद्वाज मुनि ने ये वर्णन किया कि विज्ञान का सदुपयोग होना जीवन है और विज्ञान का दुरूपयोग होना समाज की और राष्ट्र की मृत्यु कहलाती है।

पतन और उच्चता का कारण

तो देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे बहुत वर्णन कराया, इसी प्रकार देखो, चित्रावलियों में जहाँ ऋषि मुनियों के चरित्र, उनके कर्तव्यवाद के चित्र आते तो समाज ऊँचा बन जाता है। यदि इसी में अश्लीलता, मेरी पुत्रियों के नृत्य आने प्रारम्भ हो जाते है तो उसको छात्र और छात्रायें सभी दृष्टिपात करते है। मानो जब उसको पान करते है तो उसमें अश्लीलता हो जाती है। छात्र, छात्राओं के ब्रह्मचर्य दूषित होने पर आलस्य और प्रमाद बलवती हो जाते है। तो उस समय मानो कर्तव्य तो करता नहीं है केवल पुकार कर रहा है, देखो, अधिकार जब देखो, बलवती हो जाता है तो कोई राष्ट्र, किसी की आवश्यकता की पूर्ति नहीं करता, वे अधिकारों से पूर्ति नहीं कर सकता। जब राजा नहीं कर पाता, तो रक्तभरी क्रान्तियाँ आ जाती है। मानव, मानव का भक्षण करना, प्रारम्भ कर देता है। तो ये दशा, जो भारद्वाज मुनि ने मुझे वर्णन कराई। वह मैं आधिनिक काल में दृष्टिपात कर रहा हूँ। मानो एक दूसरे के रक्त का पान करने के लिए, मानव तत्पर है उसके मूल में उसका दोषारोपण है वह राष्ट्र के लिए होता है जब राजा स्वयं हिंसक हो जाता है तो अहिंसावादी कौन बनेगा।

धर्म का ऊर्ध्वा विश्लेषण

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आधुनिक जो वर्तमान का काल चल रहा है ये बड़ा मानो देखो, अग्रतम् ये वाममार्ग का काल है। जहाँ राजा और प्रजा देखो, सुरा और सुन्दरी में मानो देखो, मन को विशिष्टता में परिणत कर देते हैं। मैंने कई काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये परिचय कराया था कि राष्ट्र ये कहता है कि मैं इसका निम्बटारा नहीं कर सकता, रक्तमयी क्रान्ति जब इस प्रकार आ जाती है तो कोई न कोई अपने क्रियाकलापों में रक्त होकर के, राष्ट्र को विचारना है, ये समाज कैसे ऊँचा बनेगा। ये जो नाना प्रकार की धर्म के नामों पर, भिन्न-भिन्न प्रकार की जो रुढ़ियाँ बन गई है ये रूढ़ियाँ ही राष्ट्र के लिए देखो, अन्धकार में ले जाती है। हे राजन! तू अपने यहाँ मानो धर्म का, ऊर्ध्वा में विश्लेषण कर, क्योंकि धर्म एकोकी वचन है, बहुवचन नहीं है परन्तु देखो, अप्रतम एकोकी वचन का पालन करना है, देखो, धर्म को तुम्हें लाना है और वह एक ही वचन कहलाता है, नाना धर्म नहीं होते, धर्म एक होता है। देखो, नेत्रों का धर्म दृष्टिपात करना है, सुदृष्टिपात करना उसका धर्म है, कुदृष्टिपात करना उसका अधर्म है। ये संसार का प्रत्येक प्राणी इसको स्वीकार करता है।

देखो, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया जैसे पृथ्वी मण्डल पर क्रियाकलाप है ऐसे ही चन्द्रमा में भी क्रियाकलाप है, ऐसा ही मंगल में क्रियाकलाप माना गया है तो हे मेरे प्रम्मणां ब्रहे हे परम आचार्य जन्म ब्रह्मे, गुरुजनों! देखो, मैंने इस सम्बन्ध में कोई विशेषता क्योंकि आप तो सर्वज्ञ, जानते है। विचार केवल हमारा ये है कि जब राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्ति आती है, धर्म के नामों पर ऐसे धर्मों को देखो, वह नाना धर्मों में, उस रुढ़ि को एकाग्र करने के लिए राजा को प्रयत्न करना होगा, जिससे राष्ट्र में शान्ति की स्थापना हो जाएं। जिससे धर्म के ऊपर मानो अपने स्वार्थपरता में न आ जाएं यदि धर्म के ऊपर स्वार्थ परता आती है तो उसमें मानो देखो, राष्ट्र अपने में दोषारोपण कर रहा है।

तो विचार आता रहता है मेरे पूज्यपाद! राष्ट्र विचारता है कि इसका कोई समाधान होना चाहिए, परन्तु देखो, धर्म का समाधान हो जाएं तो इस समाज का भी समाधान हो सकता है। राष्ट्र की प्रणाली भी पवित्र बन सकती है। मानो देखो, जब समाधान ही प्राप्त न करना, चाहने वाला राष्ट्र केवल पदों की लोलुपता वाला हो तो ऐसा मानो देखो, मैं ये कहा करता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया, हे ब्रह्मवेत्ताओं! हे ब्राह्मणजनो! राजा को कहो, कि वह अपने कर्त्तव्य के पालन में सदैव तत्पर रहे। और धर्म और मर्यादा को ऊँचा बनाएं, वह धर्म देखो, रूढ़ियों को त्यागने वाला जब बन जाता है तो धर्मज्ञं ब्रह्मे राजा, राजा धर्म को लेकर के अग्रणीय

बन जाता है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन कराता हूँ कि आधुनिक जो वर्तमान का कल चल रहा है वह को विशिष्ट काल नहीं है, उस काल में देखो, रक्तमयी विचार धारा परिणत होती रहती है, उसके मूल में केवल देखो, मैं दृष्टिपात कर रहा हूँ। यहाँ कोई नानक के मानने वाला है, यहाँ कोई मोहम्मद के मानने वाला है, कोई ईसा के मानने वाला है। नाना प्रकार के रूढ़ियों को अपने में देखो, परिणत कर रहे है।

वास्तविक धर्म

विचार आता है कि एकोकीकरण कैसे हो? राजा ब्रह्मवेत्ता हो और प्रजा में देखो, जितने भी रूढ़िवाद है उन सबके धर्माचार्य होने चाहिए, वे धर्माचार्य देखो, विचार विनिमय हो, शास्त्रार्थ हो और राजा उसकी मध्यस्थता करें और विचार करता रहे कि ये रूढ़िवाद कैसे समाप्त हो सकता है। तो मानो देखो, रूढ़ि जहाँ ज्ञान, विज्ञान और दर्शन पर स्थिर हो जाएं मानो देखो, वही धर्म है, वही मानवता, उसे अपनाने में किसी को भी संकोच नहीं करना चाहिए। हे राजन! तू अपने राष्ट्र को यदि ऊँचा बनाना चाहता है, तो तेरे राष्ट्र में, इस प्रकार की नियमावली हो करके, सब देखो, जितने रूढ़िवाद है वो नष्ट होने चाहिए। परन्तु देखो, आधुनिक काल का जो राष्ट्र है वो रूढ़िवाद को शान्त करना नहीं चाहता। वो केवल उनको बलवती करना चाहता है, जिससे तेरे पद की लोलुपता बनी रहे, जो राष्ट्र (राजा) ब्रह्मवेत्ता होते है वे पद की लोलुपता में नही जाते है। पदों की लोलुपता में तो मानो एक संकीर्णता है, एक अपवाद है, एक वृत्तम् माना गया है। तो मानो देखो, इस प्रकार का विचार प्रायः होना चाहिए। मैं विशेषता में नहीं, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये परिचय देने जा रहा हूँ कि आधुनिक काल का जो जगत है, वह केवल पदों की लोलुपता में, ये संसार, प्रजा कहीं चली जाएं ऐसा राष्ट्र है।

परन्तु देखो, मैं धर्म के नामों पर जो रक्त की क्रान्ति आती है वो प्रियता नहीं होती है। वह मानो देखो, दर्शनशास्त्र के, दर्शनों के ऊपर एक कलंक होता है, वह कलंकित नहीं होना चाहिए। वह सदैव महान और पवित्रता में गमन करना चाहिए। आज देखो, यहाँ नाना प्रकार के मानने वालों को एकोकीकरण जब हो सकता है जब राजा बुद्धिमान हो, उनका विचार विनिमय हो। जो मानो दर्शन पर, क्रियाओं पर निहित हो जाएं वहीं अपनी संस्कृति है, वहीं मानो देखो, एकोकी धर्म है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराया कि धर्म इन्द्रियों में समाहित रहता है, इन्द्रियों के ऊपर, जितना संयम किया जाएं उतना ही मानव धर्म के मर्म को जानने वाला बनता है। धर्मज्ञ बन जाता है। तो इसलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण करता रहता हूँ हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ये जो जगत है, ये बड़ा विचित्र है। आज अपने वाक्यों को विराम देने से पूर्व भी यही कामना रहती है कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरी ये विद्या बनी रहे, जिससे आत्मविद्या को प्राप्त करके, मानव आत्मवान बनता है, देववान बनता है, विचित्रवान बन करके सागर से पार हो जाता है। ऐसा मानो जो मन्तव्य, वह बड़ा विचित्र है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा कि मुझे इतना ही पर्याप्त है, उच्चारण करने वाला, मेरे दो ही शब्द है मानव को अपने जीवन में क्रियात्मक होना चाहिए, जीवन की प्रतिभा को ऊँचा बनाना है।

अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा के अपने विचारों को विराम देने से पूर्व हे यज्ञमान! तुम मानो मेरी ये कामना रहती है कि तेरे गृह में सदैव मानो देखो, द्रव्य का सदुपयोग होता रहे और ये दानं ब्रह्मे यज्ञ इत्यादि क्रियाकलापों में सदैव उसकी देखो, प्रतिभा बनी रहे, ये मेरी कामना रहती है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, महानता की ज्योति में सदैव रत्त रहे और अपने मानवीयतव को ऊँचा बनाएं, ऐसी मेरी कामना रहती है अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी के हृदय में बड़ी एक विडम्बना रहती है और

विडम्बना ये कि राष्ट्र को कैसे ऊँचा बनाया जाएं। धर्म और मानवीय राष्ट्र को कैसे ऊँचा बनाया जाएं। धर्म और मानवीय राष्ट्र को किस प्रकार महान बनाया जाएं, इन्होंने एक बड़ा सुन्दर अपना वाक् प्रगट किया कि राजा को, जितनी रूढ़ियों के आचार्य है उन सबको एकत्रित करके उनका परस्पर विचार विनिमय हो राजा उसकी मध्यस्थर्ता करें और जो विज्ञान और मानव दर्शन पर स्थिर हो जाएं, वहीं तुम्हारा सार्थक रूप माना जाएं, तो ये विचारना बड़ा भव्य, बड़ा प्रसन्नचित हो रहा था। मेरे प्यारे महानन्द जी, जब इन शब्दों को उच्चारण कर रहे थे, अपनी विचित्रता का प्रावृत्त हो रहा था। तो ये आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है शेष चर्चाये कल प्रगट करेंगे, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है उसका गुणगान गाना उसकी आभा में रत्त रहना, ये है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चायें कल प्रगट करूँगा। ओ३म् देवाः यम भद्रा मा यशौ ग्राहणां त्वा मा नाः। ओ३म् यो सर्वाः मा नां त्वाः। अच्छा भगवन्!

दिनांक-१३-०४-१९८८-दिनकरपुर मु. नगर

३ प्रतिष्ठावाद 16 04 1988

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा। आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, परमपिता की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे महिमावादी है। और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वे परमपिता परमात्मा सदैव दृष्टिपात आते रहते है।

हमारे यहाँ दो प्रकार के जगतों की प्रायः विवेचना होती रही है, एक चैतन्य और एक जड़वत है, तो जितना भी ये जड़ जगत है, जितना भी, ये पिण्ड रूप है, ये सर्वत्र जड़वत माना गया है, जो नाना लोक लोकान्तरों के रूप में दृष्टिपात आ रहा है और जितना भी मानो उसमें ज्ञान और विज्ञान है वह अनुपमता की प्रतिभा में सदैव निहित रहता है परन्तु जितना भी चैतन्य जगत है, मानो जहाँ चेतना का प्रसंग आता है वहाँ परमपिता परमात्मा और आत्मवान होने के लिए वे चैतन्यवत के लिए मानो सदैव विवेचना में बद्ध रहे है। चेतना का अभिप्रायः जहाँ ज्ञान और प्रयत्न मानो जिसमें गति है उसको चैतन्यवत कहा जाता है, परन्तु गति जड़वत में भी मानी गई है। तो इसीलिए हमारे यहाँ वेदमन्त्र कहता है कि जितना भी ये जड़जगत अथवा चैतन्य जगत है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वे परमपिता परमात्मा सदैव दृष्टिपात आते रहे।

इन्द्र

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सन्दर्भ में, विशेषता में तुम्हें ले जाने के लिए नहीं आया हूँ केवल विचार यह कि हम अपने प्रभु की महिमा और उसकी उज्ज्वलता, उसका जो सृष्टि का कर्म है, मानो वह बड़ा विचित्र और महानता में सदैव निहित रहा है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें, कुछ हमारे वैदिक साहित्य में इस प्रकार की विवेचना प्रायः आती रहती है आज के हमारे वैदिक साहित्य में अथवा मन्त्रार्थ में उस परमपिता परमात्मा को एक उपाधिवत माना गया है। क्योंकि वे संसार की प्रतिभा में सदैव निहित रहने वाले है और ये जो मानवीय जगत है या ये जो मानव में एक उपाधि का संचार हो रहा है जैसे हमारे यहाँ इन्द्र है, शिव है, ब्रह्मा है और विष्णु रूप माना गया है मानो ये सर्वत्र एक उपाधि मानी गई है जैसे वशिष्ठ और हमारे यहाँ जैसे अश्वपति और इन्द्र का वर्णन आता रहता है तो इस मानवीय क्षेत्रों में एक उपाधि काल माना गया है, हमारे यहाँ जो एक सौ एक अश्वमेध याग करता है और इस पृथ्वी मण्डल के जितने प्राणी मात्र होते है, राजा होते है उनको जो विजय करने के पश्चात मानो देखो, अश्वमेध याग करता है वह एक सौ एक अश्वमेध याग करने के पश्चात उसे इन्द्र की उपाधि प्रदान की जाती, वह इन्द्र बनता है।

तो मुनिवरों! देखो, परम्परा से अश्वमेध याग का अभिप्रायः ये माना गया है कि जितना भी पृथ्वी मण्डल पर राजा है मानो सर्वत्र को वह विजय कर लेता है। हमारे यहाँ विजय करने की, वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचनाये है, परन्तु एक विवेचना ऐसी है कि प्रत्येक राजाओं का एक समाज एकत्रित होता है और उस समाज में, अपनी युक्तियों से और अहिंसा में अपने विचार को बनाकर के वह राजा मानो देखो, राजाओं के मनों को विजय कर लेता है और विजय करके उसे राजा प्रोत्साहन करते है, उसे प्रोत्साहन देते है कि आईए भगवन! आप याग कीजिए, हम आपका सहयोग करेंगे, हम सहयोगी बनकर के आपके चरणों की वन्दना करेंगे। तो इस प्रकार जब राजा को, राजा सम्बोधित करता है, प्रजा सम्बोधित करती है तो एक सौ एक अश्वमेध

याग करने वाला इन्द्र बनता है। मेरे प्यारे! इन्द्र क्या करता है?

इन्द्र के कार्य

हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आया है कि वह तपस्या के बल से और राजा, महाराजा जितने भी उनके क्रियाकलाप है उसको सुचारू रूप देना और त्याग और तपस्या की प्रतिभा में राष्ट्र को शिक्षा देना, ये राजा इन्द्र का कर्तव्य होता है तो मानो वह इन्द्र कहा जाता है। हमारे यहाँ राजा इतना ऊर्ध्व गति वाला होता है कि जैसे प्रजा इतने ऊर्ध्व विचारों वाली होती है जैसे मानो हिमालय ऊर्ध्वा में गमन करता है इस प्रकार के ऊँचे विचारों वाली प्रजा का स्वामी होता है उसे मानो शिव कहा जाता है। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की उपाधियाँ है, ये उपाधि सृष्टि के प्रारम्भ से ही जब मानव ने बेटा! राष्ट्र की प्रणाली का निर्माण किया, तो उसके पश्चात से ये प्रणालियाँ प्रारम्भ है और उसी काल से मानो शिवव्रत होता रहा है। तो विचार, मैं, विशेषता में नहीं, मानो जैसे विष्णु है, विष्णु को भी राजा के रूप में स्वीकार करते रहते है परन्तु परमात्मा के तो नाना प्रकार के गौणिक नामों का वर्णन है वह बड़ा विचित्र और महानता में परिणत रहा है।

वशिष्ठ

तो पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विचार देना नहीं चाहता हूँ। जैसे हमारे यहाँ वशिष्ठ की उपाधि है, और वशिष्ठ उसे कहते है जो ब्रह्म ज्ञानी होता है, ब्रह्म ज्ञान में जिसकी प्रतिष्ठा रहती है और ब्रह्मज्ञान में मानो देखो, जो पारायण हो जाता, विवेकी, जो न तो शोक में शोकातुर होता है और न मग्नता में विशेष मग्न होता है। न मानो शुक्ल पक्ष में हर्षित होता है और न वह कृष्ण पक्ष में मानो व्याकुल होता है। बेटा! वह सदैव एक ही रूप रहता है, एक ही रूप रहकर के उसे हमारे यहाँ वशिष्ठ की उपाधि दी गई। वशिष्ठ नाम बेटा! ब्रह्मवेत्ता का भी है और वशिष्ठ नाम राजा को भी कहा जाता है। जो मानो देखो, पंचजाया जो एक मानो देवी है उसके पांच पति है और उनका एक पुत्र है, जिसका नाम वशिष्ठ कहा जाता है। तो यहाँ राजा का वाची बन गया, स्वतः ही राजा का वाची इसलिए बन गया क्योंकि पंच जाया मानो पंच न्याय करने वाले न्यायाधीश होते है या पंच मानो देखो, ऋषि होते है और उनका निर्वाचन किया हुआ, एक राजा होता है एक देवी मानो देखो, जो राज सभा होती है उसका नाम देवी कहा जाता है और उसमें से जो सभासद मानो देखो, बुद्धिमान है और उसे जब पंचजाया चुनते है, निर्वाचित करते है तो उसका नाम वशिष्ठ कहा गया।

यागों की विभिन्नता

तो बेटा! ये तो वैदिक साहित्य की चर्चाएं है, मैं बेटा! तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊंगा, केवल विचार, मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ये तो बेटा! सूक्ष्म परिचय दिया, ये तो एक-एक मानो उपाधि की चर्चा करने लगूंगा, क्योंकि हमारे यहाँ जैसे वृष्टि याग है, कन्या याग का भी वर्णन आता रहा है मानो देखो, कन्या याग उसे कहते है जो कन्या देवाः लोकम् जो देवताजन उसकी रक्षा करते है। मेरे प्यारे! देखो, कन्या याग का भी वर्णन आता रहा है और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के जैसे पुत्रेष्टि यागों का वर्णन है, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, ऋषि मुनि मानो देखो, अप्रतम् पुत्रेष्टि यागों का वर्णन और वृष्टियाग का वर्णन भी आता रहा है। पुत्रेष्टि याग उसे कहते है जहाँ मानो यज्ञमान का निदान किया जाता है और निदान के पश्चात चरु बना करके, साकल्प बना करके, वेद मन्त्रों की ध्वनि के साथ जो याग होता है अग्न्याधान होता है, अग्नि में साकल्य प्रदान, जिससे देखो, परमाणुवाद की वृद्धि हो जाएं और वह मानो देखो, पुत्रेष्टि याग में अमृतीय बन जाते है। मुझे बेटा! बहुत समय ऐसा प्राप्त हुआ है जहाँ यागों में जाने का और विचार विनिमय करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। आज मैं देखो, बेटा! उस क्षेत्र में ले जाना नही चाहता हूँ, मैं केवल संक्षिप्त रूप से तुम्हें एक

परिचय देने के लिए आया हूँ।

ब्रह्मज्ञान

आओ मेरे पुत्रों! देखो, मैं तुम्हें, उस ऊर्ध्वा गति में ले जाने के लिए पुनः से मानों कटिबद्ध हूँ जहाँ ये विचार आता रहता है कि ध्रुवा और ऊर्ध्वा में जाना ही बेटा! देखो, ब्रह्मज्ञान कहलाता है। आओ मुनिवरों! देखो, मैं इससे पूर्व काल में बेटा! हम माता वसुन्धरा की याचना कर रहे थे, और माता वसुन्धरा की याचना करते हुए ये वर्णन कर रहे थे ब्रह्मणं ब्रह्मे लोकौ व्रत्ताः मेरे प्यारे! देखो, जैसे माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है मानो जैसे पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र में बेटा! उस परमपिता परमात्मा की गाथा गायी जा रही है, जिस भी वेदमन्त्र के ऊपर, अन्वेषण अथवा अनुसन्धान प्रारम्भ करोगें वही तुम्हें मानो देखो, उस प्रभु की प्रतिभा दृष्टिपात आती रहती है। तो आओ मेरे प्यारे! वह मनीषि है विचार कर्त्तां ब्रवृत्ति है।

आत्म बल की प्रभा

मेरे प्यारे! देखो, आओ मैं तुम्हें ऋषिमुनियों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि मुनि बेटा! अपने में बड़ा विचार विनिमय में करते रहे है, मुझे वो काल स्मरण आ रहा है जिस काल में बेटा! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज, अपनी तपस्या से उपरामता को प्राप्त हुए, ऐसा प्रतीत है बेटा! देखो, एक सौ पांच (१०५) वर्ष तक गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने बेटा! देखो, एक गाड़ी के नीचे अपने, जीवन को व्यतीत किया, वो तपस्या में सदैव तपोमयी रहते, जैसे परमपिता परमात्मा का उग्ररूप बनकर के और तपस्या में चर होकर के बेटा! संसार की रचना करते है इसी प्रकार ऋषि मुनि गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत करते हुए बेटा! वे ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करते रहे है। तपस्या में प्रभु को अपने में मानो देखो, आत्मवान बनते रहे है। तो आत्मवान बनना भी मानव को बहुत अनिवार्य है जहाँ संसार के नाना प्रकार के क्रियाकलापों में मानव सदैव तत्पर होता है यदि उससे आत्मवान बनने की, आत्मा का बल नहीं है तो बेटा! इस संसार की क्रियाकलापों को विशुद्ध रूप से वह पूर्ण नहीं कर पाता, आत्मबल, एक संसार में आत्मवान बनना, एक मानवीयता क्या वह परमात्मा की कृतिका में सदैव रत्त रहना है।

परमात्मा के गान से विवेक

तो आओ बेटा! मैं इस सन्दर्भ में जाना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल ये बेटा! देखो, आज हम गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की चर्चा कर रहे थे, गाड़ीवान रेवक मुनि के यहाँ एक समय बेटा! नाना ऋषि मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ था, जिससे बेटा! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेवक, महषि वैशम्पायन, महर्षि सोमकेतु, महर्षि दद्दड, महर्षि वृत्तिका और मुनिवरों! देखो, और भी नाना ऋषिवर विद्यमान थे। परन्तु उस सभा में एक प्रश्न उत्पन्न हुआ था, उस काल में, ये कहा गया था कि हे प्रभु! चाक्राणी गार्गी भी विद्यमान थी बेटा! और भी नाना ऋषिवर, परन्तु ये प्रश्न उत्पन्न हुआ, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज बड़े तपस्वी थे उन्होंने कहा-हे तपस्वी! हे दिव्या, ब्रह्मणे व्रत्तं हे ब्रह्म को जानने वाले, हम कुछ आपसे प्रश्न करना चाहते है? गाड़ीवान रेवक मुनि बोले-वृणयं ब्रह्मा परमणं ब्रहे सृष्टि न तपश्चं ब्रह्मा कृत लोकाः वेद का आचार्य कहता है हे ऋर्षियों! परमात्मा की सृष्टि में कोई महान नहीं है, परमात्मा की जो रचना है वो इतनी अनुपम है कि मानो उनका गुणगान गाना विवेक को उत्पन्न कर सकता है परन्तु महानता को प्राप्त नहीं कर सकता। मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक कहते है कि तुम अपना प्रश्न करो, क्या जानना चाहते हो? उन्होंने कहा-हे प्रभु! हम ये जानना चाहते है कि हम जब विद्यालयों में अध्ययन करते है, तो चन्द्रमा की बड़ी विशेषता और उसका वर्णन आता रहा, मानो उससे पूर्व हम इस आभा में लगे रहते है कि ये जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है ये नाना प्रकार

के लोक-लोकान्तरों वाला है, मानो ये नाना जड़वत व चैतन्य वह कला है और चारों प्रकार की सृष्टियों का निरुणा है मानो जैसे हमारे यहाँ अण्डज है, स्थावर है, जंगम है और श्वेदज है ये चारों प्रकार की सृष्टि कहलाती है परन्तु चारों प्रकार की सृष्टि में, ये, जितना भी प्राणी मात्र है, जातीयता इसमें सदैव निहित रहती है मानो देखो, कितने प्रकार के प्राणी है, कितना उनमें प्रकार है अण्डज सृष्टि के कितने प्राणी है मानो स्थान में कितने प्रकार के स्थावर है, बेटा! ये भयंकर वन है, जितना वनस्पतियों का वन है मानो ये अनुपमता में दृष्टिपात आता है।

मुझे वो काल स्मरण आता रहता है ऐसी ऐसी औषध विज्ञान है स्थावर सृष्टि में, मानव के कण्ठ के भाग को दूरी करने मात्र से मानो देखो, कुछ ऐसी औषधियाँ है उसको स्थिर करके और लेपन करने से मानो कण्ठ जो का त्यों स्थिर हो जाता है। ऐसा आयुर्वेद कहता है ये मानो देखो, इस प्रकार का वनस्पति विज्ञान है। वनस्पति विज्ञान में कितनी जातीयता है, अण्ड़ज सृष्टि कितनी योनियों मानो देखो, कितनी जातीयता विद्यमान है इसी प्रकार जंगम में प्राणी, मनुष्य भी आता है प्राणी मात्र आता है मानो देखो, पशुचर भी आते है। बेटा! ये कैसा अनुपम मेरे प्यारे प्रभु का ये जगत है इसकी गणना करने में भी मानव असमर्थ रहता है। मेरे प्यारे! देखो, सर्पराज है, कितने प्रकार की उसमें जातीयता है मानो गणना करता करता थकित हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, एक-एक अण्डज सृष्टि में बेटा! कितने प्रकार है मानो उसमें हिंसक भी है अहिंसा परमो धर्म के मानने वाले भी है परन्तु उसमें निहित रहने वाले भी है। तो विचार ये मुनिवरों! देखो, बड़ा विचित्र ये जगत है, सृष्टि है। तो ऋषि ने प्रश्न किया हे प्रभु! हम ये जानना चाहते है कि इनकी प्रतिष्ठा क्या कहलाती है ये कहाँ प्रतिष्ठित हो जाते है?

सृष्टि की पृथ्वी में प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, वेद के ऋषि ने, महर्षि शाकल तपस्वी ने ये उत्तर दिया, मेरे विचार में तो ये आता है कि जितना भी ये जगत है मानो प्राणी मात्र है, स्थावर और जंगम है मानो जितना भी सृष्टि व्रत दृष्टिपात आ रहा है इस सबकी प्रतिष्ठा मानो पृथ्वी में मानी गई है और पृथ्वी को पूर्व ही हम वसुन्धरा उच्चारण कर चुके है। बेटा! ये पृथ्वी वसुन्धरा है और इसमें मानो चारों प्रकार की सृष्टि है जो दृष्टिपात आ रही है इस सबकी प्रतिष्ठा मानो पृथ्वी में मानी गई है मानो पृथ्वी अपने में धारण कर रही है, अपने में मानो धारण करती हुई और उनको उसी प्रकार का द्रव्य पदार्थ प्रदान कर रही है जिससे मानो देखो, उनके उदर की पूर्ति होती है। माँ! तू कैसी भोली है मानो कैसा तेरा नृत्य हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, हे माँ! वसुन्धरा! तेरे में ही तो हम वशीभूत रहते है, तेरे में चारों प्रकार की सृष्टि की प्रतिष्ठा मानी गई है, मेरे प्यारे! जब ऋषि वे ये उत्तर दिया, तो उस समय महर्षि प्रवाहण, और महर्षि वैशम्पायन उपस्थित हुए ओर वैशम्पायन और प्रवाहण जी ने कहा कि प्रभु! ये तो वाक् हमने कई समय श्रवण किया है, माता-पिता भी हमें निर्णय कराते रहे है और गुरुजन भी निर्णय कराते रहे है हम ये जानना चाहते है प्रभु! इनकी प्रतिष्ठा क्या है? ये पृथ्वी कहा प्रतिष्ठित हो जाती है।

पृथ्वी की प्रतिष्ठा

उन्होंने हे विद्वं ब्रह्माव्रते, हे देवता जनों, देवतुल्यों! हे आत्मवान वालो! मानो देखो, ये जो पृथ्वी है, ये आपोमयी ज्योति में, मानो जल में प्रतिष्ठित हो जाती है आपोमयी ज्योति बन करके, उसमें प्रतिष्ठित हो जाती है। प्रतिष्ठां प्रतिष्ठां मानो प्रतिष्ठायाँ उसमें प्रतिष्ठित हो जाते है। मेरे प्यारे! देखो, जो उसमें प्रतिष्ठित हो जाते है, तो ये आपोमयी ज्योति, अपने में धारण करता रहता है ये आपोमयी ज्योति है। बेटा! देखो, कृषक की भूमि उकष गई है परन्तु जब इसमें आपोमयी ज्योति प्रवेश करती है तो पुनः प्राण सत्ता प्राप्त हो जाती है। मेरे प्यारे!

एक मानव देखो, क्षुधा से, पिपासा से, जल का पिपासी है वे पिपासा से व्याकुल हो रहा है परन्तु जब आपोमयी ज्योति उसे प्राप्त हो जाती है तो वो ज्योतिवान बन जाता है ज्योतिवान बनकर के प्राण को अपने में ग्रहण कर लेता है। मेरे पुत्रो! देखो, वह अप्रतं वह आपोमयी है जो माता के गर्भ में ही नहीं बेटा! देखो, पृथ्वी के गर्भ में भी विद्यमान हो करके तो मानो सूर्य की आकर्षण शक्ति से, जल को शक्तिशाली बना देते है वैज्ञानिकजन बेटा! इसको अपने में ग्रहण कर लेते है, और वैज्ञानिक जन मेरे प्यारे! देखो, उससे वाहनों में क्रियाकलाप ला देते है तो मुनिवरों! देखो, वही सूर्य की किरणें है स्वर्णमयी, आपोमयी, ज्योतिर्मयी, कृतिकामयी मानो देखो, उसमें ओतप्रोत होती है।

आपो की प्रतिष्ठा

तो मेरे पुत्रो! देखो, उस आभा में न जाता हुआ, ये तो बेटा! विशाल वन है इसकी विवेचना तो मेरे से की ही नहीं जाती। आज मैं एक-एक शब्द को उद्गीत गाने के लिए नहीं केवल विचार विनिमय करने के लिए, हम उपस्थित हुए है और विचार कर रहे है मानो आगे विचारवेत्ता प्रश्न करता है कि हे प्रभु! हम ये जानने के लिए आए है कि आपो की प्रतिष्ठा कहाँ है? ये आपो कहाँ प्रतिष्ठित रहता है?

उन्होंने कहा आपोमयी मानो ये अग्निमयी, अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है, अग्नि धारण करने लगती है, धारयामी बना देती है। मानो देखो, ये तेजोमयी ऊष्णा बनाने वाली है ये अग्निमयी ज्योति है, जो काष्ठ और दिव्यता में रहती है मानो यही दिव्य बनकर के मानो सूर्य की ऊर्ज्वा बनकर रहती है यही चन्द्रमा में प्रवेश करके बेटा! अमृतमयी बनकर के रहती है, यही ज्योतिवान बना करके मानव के नेत्रों में, मानव की वाणी में, मानव के श्रोत्रों में, मानो देखो, दिशा के रूप में परिणत रहती है। कैसा अनुपम अमृतं ब्रह्मणां व्रत्ते मेरे प्यारे! कैसा एक अनूठा, अनुपम, एक विचार है बेटा! जो एक ही रूप मानो देखो, अनन्य, नाना रूपों में दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणां व्रते अग्निः हे अग्नि! तू हमें अपने में धारण कर रही है, हे अग्निमयी! तू धारयामी बना करके, तू आपोयमी ज्योति बनकर के हमारा कल्याण कर रही है मेरे प्यारे! देखो, अग्नि अपने में ये ज्योतिवानं ब्रह्मा देखो, आपोमयी ज्योति अग्नि में प्रवेश हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि अपने में धारण करती हुई, अग्नि अपने में वृत्रिका बनकर के देखो, धारयामी बनकर के भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप में में रत्त रहती है।

अग्नि की प्रतिष्ठा

तो आओ मेरे प्यारे! विचार वेद का ऋषि कहता है संक्षिप्त करता हुआ कि हे प्रभु! हम जानना चाहते है कि अग्नि कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है? उन्होंने कहा-ये अग्नि वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है। मानो वायु अब्रत ब्रह्मा ये वायु ही, जहाँ अग्नि होती हे वहाँ वायु होती है, जहाँ वायु नहीं होती वहाँ अग्नि भी नहीं होती है। अब बेटा! वायु ही तो शब्दों को मानो द्यौ में प्रवेश करा देती है ये मानो देखो, अग्नि अब्रतमं एक दिव्य लोकों में प्रवेश करा देती है।

तो आओ मेरे प्यारे! ये प्राण सत्ता देती है, गति देती है और गतिवान बनाकर के मुनिवरों! देखो, अपने-अपने रूप में इन्हें स्थिर कर देती है। तो विचार क्या, मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्षं ब्रह्मा, उन्होंने कहा, ये वायु अन्तरिक्ष में गमन करती है मानो देखो, अवकाश यदि नहीं होगा तो गमन करने की स्थली उसे प्राप्त नहीं होगी। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है भगवन! हम ये जानना चाहते है, ये सर्वत्र कहाँ सिमट जाते है? उन्होंने कहा-ये महत्त्व में सिमट जाते है। तो मेरे प्यारे! एक दूसरे में लय होता हुआ, ये जगत हमें दृष्टिपात आता है एक दूसरे में प्रतिष्ठित होता हुआ दृष्टिपात आ रहा है बेटा! आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, आज

मैं तुम्हें इस क्षेत्र में ले जाने के लिए, ये तो बड़ा गम्भीरतम रहस्य माना गया है आओ मुनिवरों! देखो, विचार बेटा! कहता हे प्रभु! हम महत बिन्दु तक चले गएं है हम ये जानना चाहते, तो लय होने की चर्चा हुई, परन्तु इसका विकास कैसे होता है, ये अपने में कैसे उद्बुद्ध होते है? उस उद्बुद्ध को हम जानना चाहते है?

ऋषियों की विचित्र शैली

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि ये महत्त्व जो शून्यं ब्रहा ये चन्द्र देखो, लोकों में प्रतिष्ठित हो जाता है मानो ये चन्द्रमा ही तो अमृत को बहाने वाला है ये मानो चन्द्रमा में प्रतिष्ठित होता हुआ, अपने में, अपनेपन की, हमारे ऋषि मुनियों की एक बड़ी शैली रही है बेटा! ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में गमन करते रहे है। मानो ये बड़ी विचित्र एक शैली रही है ऋषि-मुनियों की तो बेटा! उस शैली के आधार पर ऋषि कहते है सम्भूति ब्रह्मणां लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे कृत लोकाम् मेरे पुत्रो! जब ऋषि इस प्रकार के वाक्, उद्गीत रूप में गाता है तो वह कहता है, ये चन्द्रमा मेरे प्यारे! चन्द्र लोकों में ओतप्रोत हो जाता है, ये चन्द्रमा अमृत को बहाता रहता है, ये चन्द्रमा की भांति मानो देखो, वह सूर्य से अपने को प्राप्त करता हुआ, मानो ये अपने दो रूपों में रहता है, एक शुक्ल पक्ष में रहता है, तो एक कृष्णापक्ष में रहता है।

शुक्ल पक्ष और कृष्णा पक्ष

मेरे प्यारे! देखो, कृष्णा पक्ष किसे कहते है? हमारे यहाँ कृष्णा पक्ष कहते है अन्धकार को, और शुक्ल पक्ष कहते है बेटा! देखो, प्रकाश को आनन्दम् देखो, जब चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त होता है तो उसे शुक्ल पक्ष कहते है और कृष्णा पक्ष कहते है जहाँ चन्द्रमा का एक भी मानो प्रकाश का, एक भी तन्तु नहीं होता, उसे अन्धकारमयी, कृष्णा पक्ष कहते है इन्हीं दोनों का सम्मिलन करते हुए, दोनों का समन्वय करते हुए बेटा! देखो, एक माह बनता है और मुनिवरों! देखो, एक माह को बारह रूपों में समन्वय करके बेटा! एक वर्ष बन जाता है और मुनिवरों! देखो, १०० वर्षों की आयु बन करके सहस्रों वर्ष बन जाते है और सहस्रों वर्ष बनकर के बेटा! ब्रह्मा का एक अहोरात्र इसी से बनता है बेटा! एक अहोरात्र बनता है एक रात्रि और एक दिवस को एक अहोरात्र कहते है। मेरे पुत्रो! देखो, इकहत्तर, चतुयुगियों का बेटा! देखो, एक अहोरात्र चतुर्युंगी देखो, एक हजार चतुर्युगियों का बेटा! एक अहोरात्र बन जाता है अहोरात्रि रात्राणि गच्छतं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणां कृतिलोकां वाचन्नमः वृत्ति ब्रह्मे उक्कृताः। मुनिवरों! देखो, इस प्रकार, ये शुक्लपक्ष और कृष्णापक्ष बन जाता है। हमारे यहाँ ये माना गया है कि मानो देखो, यदि महापुरुष बनना चाहता है तो वो इतना तपस्वी बन जाएं, इतना मनन शील बन जाएं, मेरे पुत्रो! देखो, वह ब्रह्मणे मानो अपने जीवन को शुक्ल पक्ष में ले जाएं, शुक्ल पक्ष कहते है बेटा! ज्ञान को, और कृष्णापक्ष कहते है अज्ञान को, अन्धकार को। मेरे प्यारे! देखो, जब ये शुक्ल पक्ष वाला प्राणी, जब ज्ञान और विवेक में प्रवेश करता हुआ मेरे पुत्रो! अपनी आभा में ज्ञान में परिणत हो जाता तो उसका शुक्ल पक्ष बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ ब्रह्मणं गौतम ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मे वेद का आचार्य कहता है कि हम अपने में मानो देखो, अपनेपन को धारण करते चले जाएं, उस आभा में रत्त होकर के हमारा जीवन वास्तव में एक महानता की ज्योति वाला बन जाएं।

चन्द्रमा की प्रतिष्ठा

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न करता हुआ, ये संक्षिप्त परिचय देने के लिए आया हूँ, तुम सर्वत्र जानते हो मानो अहोरात्रों को भी जानते हो, मानो मैं तो एक संक्षिप्त-सा विचार दे रहा हूँ, मुनिवरों! देखो, विचारवान आगे ये प्रश्न करता है कि प्रभु! ये चन्द्रमाः मानो देखो, ये शुक्ल पक्ष और कृष्णा पक्ष का द्यौतक, ये लौकिकता में माना गया है परन्तु ये जो चन्द्रम ब्रह्मा इस चन्द्रमा की भी तो कोई प्रतिष्ठा होती होगी? तो ऋषि

ने कहा कि ये चन्द्रमा मेरे पुत्रो! सूर्य लोकों में प्रतिष्ठित हो जाता है। ये सूर्य लोकों में ओतप्रोत हो जाता है, ये सूर्य मानो ऊर्ज्वा के देने वाला है, ये सूर्य ही मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार की जगत में, वनस्पतियों में, आपकी अपनी आभा प्रदान करता हुआ, किरणों के द्वारा बेटा! कहीं पृथ्वी के गर्भ में, कहीं मानो देखो, वायु के गर्भ में कही, मुनिवरों! देखो, आपो के गर्भ में प्रवेश होकर के, ये ऊर्ज्वा देकर के उन्हें तपापमान करके और मानो देखो, धातु पिपाद इत्यादियों से निर्माणित होने से कृतिका प्राप्त हो जाती है। मेरे पुत्रों! ये सूर्य अपने में मानो ऊर्ज्वा वाला, इसे अदिति कहते है और इसे उदयन कहते है इसको भिन्न-भिन्न रूपों से बेटा! माना गया है। विचार क्या, मेरे पुत्रो! ये सूर्य विष्णु के रूप में रहता है। जो पालन कर रहा है नाना प्रकार की किरणों के द्वारा ये पालना कर रहा है। अन्नाद को परिपक्क बनाता है, वनस्पतियों को परिपक्क बनाता है मुनिवरों! ये आभा में निहित करा देता है।

तो विचार क्या, ये द्यौ से प्रकाश लेकर के और ये प्रकाश मानो देखो, ऊर्ज्वा के रूप में बिखेर देता है और तीस लाख पृथ्वियों में बेटा! ये अपनी ऊर्ज्वा को बिखेरने वाला है। हमारे यहाँ ये माना गया है, विज्ञानवेत्ताओं ने ये माना था, बेटा! भारद्वाज जी की विज्ञानशाला में या महर्षि उद्दालक गोत्र में शिकामकेतु के विद्यालय में मानो देखो, उनकी विज्ञानशाला में ये माना गया है कि तीस लाख पृथ्वियों की माला बनकर के उसे अपने में, सूर्य धारण करता है। मेरे प्यारे! देखो, सबको ऊर्ज्वा देता है, उन्हें वृत्तियाँ बनाता है। तो विचार क्या उच्चारण करने का बेटा! ये सूर्य ऊर्ज्वा वाला है, इसमें चन्द्रमा प्रतिष्ठित हो जाते है और जब देखो, ऋषि ने ऐसा वर्णन किया तो प्रश्न किया बेटा! महर्षि प्रवाहण बोले कि हे प्रभु! जब हम विद्यालय में अध्ययन करते थे, तो आचार्य हमें इसी प्रकार वर्णन कराते रहते थे। आचार्यो ने हमें वर्णन कराया है हे प्रभु! हम ये जानना चाहते है कि सूर्यो की प्रतिष्ठा क्या है?

सूर्य की प्रतिष्ठा

उन्होंने कहा सूर्य की प्रतिष्ठा हमारे यहाँ गन्धर्व लोक माना गया है। गन्धर्व लोकः मुनिवरों! देखो, विशाल मण्डल है। हमारे यहाँ पर्यायवाची शब्दों में, गन्धर्व नाम बेटा! बुद्धि को भी कहा गया है, गन्धर्व नाम मुनिवरों! देखो, लोक का भी है। तो विचार ये मुनिवरों! देखो, लोक, लोकान्तरों की प्रतिभा नहीं, केवल मानो देखो, सूर्य उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है, उसमें प्रतिष्ठा प्राप्त करता रहता है।

गन्धर्व लोक की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि मुनि, इस ब्रह्माण्ड की कल्पना करते है अथवा विचारते रहते है तो सौर मण्डलों का अन्तिम मनका मानो देखो, गन्धर्व माना गया है। इस गन्धर्व में ही चन्द्रमा, सूर्य, ओतप्रोत, उसमें एक दूसरा एक-दूसरे में प्रतिष्ठित हो रहा है और वह अपने में प्रतिष्ठा पा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, इतने में ऋषि प्रवाहण ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! हम ये जानना चाहते है कि ये गन्धर्व कहा प्रतिष्ठित रहता है? उन्होंने कहा गन्धर्व, इन्द्र लोकों में ओत प्रोत हो जाता है।

तो बेटा! हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का है जो जगत का नियन्ता, निर्माण करने वाला है, इसे शासन में चलाने वाला, उसको इन्द्र कहते है। इन्द्र नाम लोकों का भी कहा गया है जो लोक-लोकान्तरों में अव्रत रमण करते है बेटा! वो जानते है कि इन्द्र एक लोक है। जिस इन्द्र में बेटा! बहुत से मानो मण्डल प्रतिष्ठा को प्राप्त होते रहते है और वह उनमें प्रतिष्ठित रहता है। तो इन्द्र में मानो देखो, ये गन्धर्व और सूर्य इत्यादि सब प्रतिष्ठित हो जाते है। मेरे प्यारे! देखो, गन्धर्व उसमें प्रतिष्ठा पाता है। इसीलिए इन्द्रों ब्रह्मे इन्द्र नाम आत्मा का भी है जो बेटा! इन्द्रियों को संयम में करने वाला, आत्मवान बनता है, उसे आत्मवेत्ता

कहते है। मेरे पुत्रो! वह इन्द्र है जो राजा के ऊपर अधिराज है, वो भी इन्द्र नाम का राजा है। इन्द्र नाम बेटा! हमारे यहाँ पर्यायवाची शब्दों में, बहुत से नामोकरण की उद्गीतता गायी जाती है।

इन्द्र की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! आगे वेद का ऋषि कहता है, प्रश्न करता है कि भगवन! यह इन्द्र कहा प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा-ये इन्द्र, प्रजापति में ओत-प्रोत हो जाता है, उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, इन्द्रो सम्ब्रवभ्रा वाचन्नमं ब्रह्मे कृतं ब्रहे प्रजा वसुन्धनं ब्रहे मेरे प्यारे! प्रजापति में ओतप्रोत होता है। प्रजापति नाम परमपिता परमात्मा का माना गया है। जो सब प्रजा का स्वामी है सबका नियन्ता, निर्माण करने वाला है।

मानो द्वितीय माता, माता प्रजावान बन जाती है माता देखो, प्रजावान बनकर के बेटा! अपने गर्भ से सन्तान को जन्म देकर के प्रजा का जन्म देकर के, वह प्रजावान बनती है। माता-पिता दोनों ही प्रजावान बनते है तो मेरे पुत्रो! देखो, उसमें इन्द्र इत्यादि ओतप्रोत हो जाते है, क्योंकि वे संयम, ऋतृता बनी रहती है। मानो वो प्रजावान बनकर के प्रजापति कहलाते है, और प्रजापति मेरे पुत्रो! इन्द्र को, इन्द्र अपने में बनने से, वो द्वितीय उपाधि प्रजापति की कहलाती है और वह प्रजापति, जो हमारा कल्याण करने वाला है मात-पितरजन! तुम मानो प्रजावान बनों। प्रजावान वे होते है जो प्रजा व्रत्तम् मानो प्रजा उसे कहते है जो एक दूसरे के वचनों को, पालना में रत्त रहते है उसे प्रजावान करके, उसे प्रजापति कहा जाता है। मानो प्रजापति तो वास्तव में परमपिता परमात्मा है, जो संसार का निर्माणवेत्ता है परन्तु माता-पिता का नाम भी प्रजावान है, वे भी प्रजावान बनते है, अपने में महान बनने के लिए, अपने को ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए, परन्तु अपने आप में तृप्ति के लिए बेटा! आत्मवान बनकर के, प्रजावान बनते है।

प्रजापति की प्रतिष्ठा

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ये प्रश्न किया कि महाराज! प्रजापति कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा, प्रजापति मानो याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। यागां ब्रह्मणे यागं वृत्त देवाः यागाः मेरे पुत्रो! प्रजापति याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। जितना भी संसार का क्रियाकलाप है और उसमें सु है, वही मुनिवरों! देखो, याग माना गया है। याग उसे कहते है जो मेरे प्यारे! जितने भी मानव के आत्मीय कर्म है जिससे आत्मवान, आत्मा जिस क्रियाकलाप को करने के पश्चात प्रसन्न होता है वही मुनिवरों! देखो, आत्म ब्रह्मणम्बन्दे सुताः वही तो मुनिवरों! देखो, आत्मवान बनकर के, याज्ञिक बना करता है जैसे याग में बेटा! अनुशासन होता है, इसी प्रकार मानव की प्रवृत्तियों में, मानो अनुशासन होता है और अनुशासन नम्र ब्रहे मानो अनुशासन ही तो मानव को ऊँचा और ऊर्ध्वा में पहुंचाता है अनुशासन हीनता ही मेरे प्यारे! उसको निकृष्ट बना देती है।

तो विचार विनिमय क्या बेटा! अन्तरात्मा की प्रेरणा है, उसी प्रेरणा के आधार पर जो सु क्रियाकलाप करता है वह याग कर रहा है और प्रजापति उस याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उस समय ऋषि ने विवेचना की प्रभु! ये याग मानो किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा याग दक्षिणा में ओत-प्रोत हो जाता है।

दक्षिणा का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, दक्षिणा देना बहुत अनिवार्य है, परन्तु दक्षिणा के स्वरूप को जान लेना चाहिए। हमारे ऋषि मुनियों का जो कथन रहा है, बड़ा विशिष्ट और महानता में रहा है। दक्षिणा उसे कहते है जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है और यज्ञशाला में विद्यमान होकर के वो दक्षिणा प्रदान करना चाहता है, वह जब दक्षिणा देता है तो दक्षिणा का अभिप्रायः ये कि यज्ञमान अपनी त्रुटियों को पुरोहित को प्रदान करता है मानो

उसके द्वारा जो धृष्टता है, उसके द्वारा आत्मवान बनने के लिए जो बाधक बनी हुई है, जो मानो उसमें एक कृतियों में रूढि बनी हुई है, उन सबको मुनिवरों! देखो, आचार्य को प्रदान करता है, और तपस्वी से कहता है कि हे प्रभु! मैं दक्षिणा समर्पित करना चाहता हूँ, आप दक्षिणा क्या चाहते है? वह पुरोहित कहता है जो त्रुटियाँ है उन्हें मुझे प्रदान कर। मेरे प्यारे! वह दक्षिणा उसे प्रदान करता है। याग सम्पन्न हो जाता है? यदि याग कर्म करने से मानव के हृदय की त्रुटियाँ समाप्त नहीं होती तो, वह याग नहीं कहलाता।

तो मेरे प्यारे! जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो आगे उन्होंने प्रश्न किया कि महाराज! ये याग कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा ये याग मानो श्रद्धा में ओत-प्रोत हो जाता है, ये श्रद्धा में प्रतिष्ठित हो जाता है। ये संसार सर्वत्र एक श्रद्धामयी माना गया है। माता है वो श्रद्धा में है, पितर है वो श्रद्धा में है, पुत्री है वो श्रद्धा में है, देखो, पुत्र है वह श्रद्धा में है, जितना भी ये जगत है ये श्रद्धामयी माना गया है और वह श्रद्धा मुनिवरों! मानव के अन्तर्हृदय में ओत-प्रोत रहती है। वे कहते है कि ये श्रद्धा मुनिवरों! देखो, मानव के हृदय से जन्म लेती है वह हृदय अगम्य बनकर के मुनिवरों! देखो, जैसे याग है, याग दक्षिणा में, दक्षिणा श्रद्धा में और श्रद्धा हृदय में प्रतिष्ठित रहती है मेरे पुत्रो! देखो, जितना भी ये जगत हैं सबकी प्रतिष्ठा मानव के हृदय में प्रतिष्ठित हो जाती है और मुनिवरों! देखो, उसी से मानव आत्मवृत्ति बनता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा-ये हृदय............ शेष अनुपलब्ध दिनांक-१६-०४-१९८८ मुजफ्फर नगर

४ तप की प्रभा ०८ ०८ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का, प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं। और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि हमारे यहाँ इस ब्रह्माण्ड को प्रायः दो प्रकार का माना जाता है। एक जड़वत् है, तो एक चैतन्यवत् कहा जाता है।

मानो देखो, चैतन्य वह कहलाता है जिसमें ज्ञान और प्रयत्न है। और जड़ वह कहलाता है जो पिण्डरूप है। जितना भी ये लोक लोकान्तरवाद है, जितना भी ये ब्रह्माण्ड है। प्रायः इसमें दो प्रकार की प्रतिभाओं का वर्णन होता रहा है। परम्परागतों से ही, ऋषि मुनियों ने, एकान्त स्थलियों में विराजमान हो करके एक-एक वाक् पर बड़ा अनुसन्धान किया, क्योंकि अनुसन्धान की प्रवृत्ति प्रायः हमारे यहाँ, सृष्टि के प्रारम्भ से ही गतिवान रही है। और अनुसन्धान करता रहता है और इस संसार को जानता रहता है। परन्तु अन्तिम चरण ये होता है कि बाह्य और आन्तरिक दोनों जगत को जान करके भी, वो उतना नहीं जान पाता, जिससे इस संसार के बाह्य जगत में, उसका वह उद्घोष कर सके। अथवा उसको वह प्रसारित कर सके। परन्तु वह रहस्यमयी बना रहता है। जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, चाहे वह भौतिक विज्ञान हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान हो। परन्तु उसको जानता रहता है, विचारता रहता है। योगीजन समाधिस्थ हो जाते है। परन्तु अन्तिम चरण ये होता है कि ये जो ब्रह्माण्ड की अन्तिम सीमा है या चरण है मानो वह रहस्यमयी बना रहता है।

संसार के दो प्रकार

तो इसीलिए हमारा वेदमन्त्र ये कह रहा है कि ये संसार दो प्रकार के रूपों में परिवर्तित होता रहा है एक जड़वत् है और एक चैतन्यवत् है। परन्तु दोनों के गर्भ में, दोनों के रूप में वे एक परमपिता परमात्मा विद्यमान है। मानो वो अनन्तमयी हैं, वे चेतना में रत्त रहने वाले है। मानो वही ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में सदैव निहित रहते हैं। तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में, कोई विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। आज का हमारा वेदमन्त्र नाना प्रकार की प्रतिभा में रत्त होता हुआ और नाना प्रकार के उद्घोष से हमें और प्रेरित कर रहा है। क्योंकि प्रत्येक प्राणी मात्र इस संसार में प्रेरणा का स्रोत है। और प्रेरणा को प्राप्त करता हुआ, मानव अपने में प्रेरित होता हुआ, नाना प्रकार की आभा में रत्त होता रहता है।

आओ बेटा! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनि बेटा! एक-एक वेद के मन्त्र को ले करके, अपने में अनुसन्धान करते रहे है और तपों में निहित रहे हैं। ये वाक्य मैंने कई कालों में तुम्हें पुनरुक्ति रूप में वर्णित किया है। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र भी उसी आभा में ले जा रहा है। वेदमन्त्र कहता, तपं हिरण्यं, तपं ब्रह्मेः वाचप्तपाः वेद का मन्त्र कहता है कि मानव को तपस्वी बनना चाहिए, यहाँ प्रत्येक प्राणी मानो तपस्या में निहित रहने वाला है।

तप में ब्रह्माण्ड

तो आओ मेरे प्यारे! इसी वेदमन्त्र को ले करके, ऋर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! देखो, ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान है। श्रोतागण भी विद्यमान हैं मानो देखो,

ईश्वर मिलन

प्रातःकालीन विद्यालय में बेटा! याग होता, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! प्रातःकालीन एक समय ब्रह्मचारियों के मध्य में अध्ययन कर रहे थे, वेद मन्त्रों का उद्घोष हो रहा था। और वेदमन्त्र ये कह रहे थे तपं ब्रह्मः तपः वाचप्रहा तपं दिव्यं गतं ब्रह्मा वायुः मानो वेदमन्त्र कह रहा था कि ये संसार तो मुझे, हे ब्रह्मचारियों! तपोमयी दृष्टिपात आता है। यहाँ प्रत्येक पदार्थ तप रहा है मानो देखो, ग्रीष्म ऋतु में, ये पृथ्वी तपायमान हो जाती है। और जब वर्षा काल आता है तो ये पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। परन्तु देखो, इसी प्रकार ब्रह्मचारी विद्यालय में तपायमान रहता है। और वो तप रहा है। परन्तु तपने के पश्चात वो आचार्यपद को प्राप्त हो जाता है। जैसे मेरी पुत्री मानो ब्रह्मचर्य रूप में, तपा करती है। तपने के पश्चात वे ममतामयी बन जाती है। इसी प्रकार ये सूर्य तपोमय है, और मानो ये ग्रीष्म ऋतु में, तपायमान क्या, ये सर्वत्रता में तप रहा है। देखो, मानव को ऊर्ज्वा दे रहा है, प्राणीमात्र मानो देखो, उसी की आभा में रत्त हैं। और उसी में वो तपोमय होती हुई अपनी-अपनी आभा को प्राप्त कर जाती है। वह सूर्य कहलाता है। द्यौ से प्रकाश लेता है। मानो देखो, अपनी नाना कान्तियों के द्वारा उसे बिखेर देते हैं। किरणों के द्वारा वो तपायमान हो जाता है। तो परिणाम ये कि मानो ये सूर्य अपने में तपायमान है।

विष्णु

आज के हमारे वेद के मन्त्रों में बेटा! विष्णु की विवेचना आ रही थी। हमारे यहाँ विष्णु नाम भी सूर्य को कहा जाता है। क्योंकि सूर्य पालन करने वाला है, प्रकाश के देने वाला हैं, अन्धकार को अपने में शमन करने वाला हैं। तो इसीलिए वह प्रकाशमयी होने से उसे हमारे यहाँ विष्णु कहा गया है। वह पालन करने वाला है, वह उदयन कहलाता है, जो उदय होता है। और उदय हो करके जो प्रकाश देता, जो ऊर्ज्वा देता है और मानव को देखो, जो विज्ञान के आंगन में प्रवेश करा देता है।

तो आओ मेरे पुत्रो! देखो, विचार ये कि यह मानो देखो, विष्णु है। कल्याण करने वाला है, तपोमय कहलाता है। इसलिए तपायमान है। तो मुनिवरों! देखो, तपं ब्रह्मणं, ब्रह्मा व्रतं तपो हिरण्यं रथा ब्रहे मानो देखो, ये संसार सर्वत्र तपोमय कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, चन्द्रमा तपता है तो वे अमृतमयी बनाता, अमृतमयी रूपों में परिणत करने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, ये संसार तपायमान है। नाना प्रकार के पदार्थों को ले करके, ये मानो देखो, पृथ्वी वसुन्धरा बन करके, तप रही है। ये तपायमान है।

तो आचार्य ने कहा-याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कि हे ब्रह्मचारियों! ये वेद का मन्त्र ये कहता है कि ये संसार तपायमान है। इसीलिए संसार में प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए। और तुम तपस्या में तत्पर हो जाओ। मेरे पुत्रो! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! आप तपोमयी तपं ब्रहे ब्रह्म आप तपिये और तपाइये। मेरे प्यारे! जब ब्रह्मचारियों ने ये कहा तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि मेरी इच्छा ये है कि मैं तपोमय, तप करने जा रहा हूँ। हे विद्यालयां ब्रह्मेः हे ब्रह्मचारियों! तुम विद्यालय को ऊर्ध्वा में ले जाओ। और मैं तपायमान मानो तप करने जा रहा हूँ। क्योंकि प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना है, इस संसार में। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! जैसी आपकी इच्छा! प्रभु आप तप करने के लिए जा रहे है तो हमारा बड़ा सौभाग्य हैं क्योंकि विद्यालय में, वही विद्यालय पवित्र होता है जिसमें आचार्य जन तपस्वी होते है। वो गृह पवित्र होता है, जहाँ माता-पिता तपस्वी होते हैं। और देखो, वह राष्ट्र ऊँचा होता है, वह राष्ट्र पवित्र होता है जिसके राष्ट्र में राजा तपस्वी होता है। ब्रह्मज्ञानी होता है। मानो देखो, ये संसार इसी प्रकार तपायमान रहता है, तो हे भगवन्! आप तप करने जाइये। हमारा विद्यालय उसी काल में ऊँचा बनेगा। जब आप आचार्यजन सब तपस्वी होंगे।

मेरे पुत्रो! देखो, ये वाक्य, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का सब ब्रह्मचारियों ने स्वीकार कर लिया। और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने आसन को और विद्यालय को त्याग कर उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों! हे आचार्यजनों! तुम विद्यालय को सुरक्षित और शिक्षा में पारायणता का हमें परिचय देना। मेरे पुत्रो! देखो, याज्ञवल्क्य ने आश्रम को त्याग दिया और त्याग करके जब वो भयंकर वन में पहुंचे, तो न्यौदा में मन्त्रों को उद्गीत रूप में गाने लगे और वे वेदमन्त्र गा रहे थे, प्रकाशां भविता ब्रह्मेः मनस्वं ब्रह्वा वाचन्नमं ब्रहे मनाः तो वेद का मन्त्र ये कह रहा था कि एक मानव तपस्या करने जा रहा है तो उसके मन से सम्बन्धित, जो घनिष्ट मित्रता होती है मानो देखो, उसके मन की तरंगें जब अन्तरिक्ष में गमन करती, तरंगों के द्वारा बेटा! उसके मन को प्रभावित करेंगी। तो याज्ञवल्क्य मुनि ने विचारा कि मेरी दो पत्नियाँ हैं, मुझे दोनों पत्नियों को सन्तुष्ट करना चाहिए। और उसके पश्चात तपोमय जाना चाहिए। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! भयंकर वन को त्याग करके और भ्रमण करते हुए अपने गृह में उन्होंने प्रवेश किया। मानो उनकी दो पत्नियाँ थी, एक का नाम कात्यायनी तथा दूसरी का नाम मैत्रेयी था।

पत्नी की इच्छा

बेटा! जब वे कात्यायनी के द्वार पर पहुँचे, तो कात्यायनी ने उन्हें आसन दिया और आसन दे करके चरणों को स्पर्श करके नमः हो करके बोली हे प्रभु! ये क्या कारण है जो बिना समय के मानो बिना सूचना के आश्रम में, तुम्हारा पदार्पण हुआ है। याज्ञवल्क्य मुनि बोले-हे देवी! हम आज प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में एक याग कर रहे थे। याग में जो मन्त्र आ रहे थे मानो वो तप के आ रहे थे। वेदमन्त्र कह रहे थे, तपं ब्रह्मा तपं हिरण्यं रथं ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रहे वृतः देवाः तपाः कि हम तप करने जा रहे हैं, ऐसा मानो तपोमय ब्रह्मचारियों से मैंने आज्ञा पाई, कि वेदमन्त्र कहता है कि तपना चाहिए प्राणी को, तो हे देवी! मैं तप करने जा रहा हूँ, तुम्हारी क्या इच्छा है? याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ऐसा कहा तो कात्यायनी बोली कि प्रभु! ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। हम तो बड़े सौभाग्यशाली है दोनों, क्योंकि जिस गृह में मानो पत्नी का पति तपस्वी होता है वह गृह तो भगवन्! तपायमान होता है। हे प्रभु! संसार में कोई पत्नी ये नहीं चाहती कि मेरे पति में किसी प्रकार का मानो दोषारोपण हो। सदैव पत्नी ये चाहती है कि मेरा पति ब्रह्मचारी, ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिए। मानो देखो, ब्रह्मनिष्ठ हो करके ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए, तपस्वी होना चाहिए और वह प्रतिष्ठित होना चाहिए। मानो प्रत्येक देवियों की प्रायः ये इच्छा होती है। प्रभु! ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है कि आप तप करने जा रहे हैं और हम भी यहाँ तप करेंगे। प्रभु! ये हमारा सौभाग्य है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कात्यायनी के वाक्य श्रवण करके अपने मन ही मन में हर्ष ध्वनि करने लगे और उन्होंने कहा-देवी! तुम्हें धन्य है। मानो देखो, वह उन्हें सन्तुष्ट करके उन्होंने कहा-देवी! तुम मेरे तप करने से सन्तुष्ट हो। उन्होंने कहा-प्रभु! आप तप करने जाइये।

मेरे प्यारे! देखो, वह दूसरी पत्नी के द्वारा पहुँचे, व द्वितीय पत्नी मानो मैत्रेयी अप्रतं ब्रह्मे मानो उन्होंने भी इसी प्रकार आसन दिया और आसन पर विराजमान हो गये। और विराजमान हो जाने के पश्चात उन्होंने कहा, कहो भगवन्! आज बिना सूचना के तुम्हारा आगमन् हुआ हैं, मैं इस कारण को नहीं जान सकी हूँ? उन्होंने कहा-देवी! आप तो महान् देखो, शास्त्रार्थ ब्रह्मवेत्ता है। मानो देखो, शास्त्रार्थ में, अपने में उज्ज्वलता को प्राप्त करने वाली हो। हे देवी! वेदमन्त्र कह रहा है तपं ब्रह्मणां ब्रहे तपं दिव्यां गतं ब्रह्माः तपं पृथ्वस्वभा वाचन्नमं ब्रह्मेः मानो देखो, तपः हे देवी! ये संसार तपोमय है। और ये तप कर रहा है। तपोमयी ये जगत माना गया है। तो मेरी इच्छा ये है कि देवी! मैं तप करने जा रहा हूँ। मैत्रेयी ने कहा-हे प्रभु! ये तो वाक्य आपका यथार्थ हैं परन्तु हमारा क्या बनेगा भगवन्! मानो देखो, पत्नी जो होती है वो पति अस्वस्तक होता है। हे भगवन्! आप तप करने

के लिए, देवं ब्रह्माः आप तप करने के लिए जा रहे है तो मेरा क्या बनेगा?

मधु विद्या

मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे देवी! तुम्हें ये प्रतीत, इस वाक्य को, चरण को अपने से दूरी कर गई हो। जब तुम्हारा मेरा ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मवाद में शास्त्रार्थ हुआ था और आत्मा परमात्मा के ऊपर विचार-विनिमय हुआ। परन्तु देखो, तुम उससे दूरी चली गई हो। ये क्या वाक्य उच्चारण कर रही हो। तुम्हें ये प्रतीत है कि मधु विद्या में ये आया है कि पत्नी जो होती है वो पति तक सीमित होती है। यदि वह स्वयं अपने लिए पत्नी बन जाएं, तो कल्याण हो जाए। हे देवी! देखो, पति जो होता है वो पत्नी तक सीमित होता है। स्वयं यदि वो मानो देखो, अपने में ही, वह पति बन जाए, इन्द्रियों पर संयम करने वाला बन जाए क्योंकि वास्तव में पति उसे कहते हैं जो अपनी इन्द्रियों पर संयम करने वाला होता है। अपनी इन्द्रियों पर अधिपथ्य करने वाला, तपोमयी बन जाता है। हे देवी! तुम्हें प्रतीत है पत्नी जो होती है वो पति तक सीमित है। मानो यदि पत्नी स्वयं अपने लिए पत्नी बन जाए तो वह भी उसी काल में पत्नी बनती है जब वह अपनी इन्द्रियों पर संयम करती हुई मानो स्वतः अपने में पत्नी बन जाती है अपने में पत्य ग्रहण कर लेती है। तो मानो देखो, मधुविद्या में ये आया है। जैसे पुत्री है, वह पुत्री पिता तक सीमित रहती है। परन्तु देखो, यदि वह अपने लिए पुत्री बन जाए तो मुनिवरों! देखो, अपने पिता, परमपिता परमात्मा की पुत्री बन जाए तो मानो ये जो संसार है, इससे उपराम हो करके, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में वो निहित हो जाती है। इसी प्रकार पुत्र जो होता है। वो माता तक सीमित होती है। परन्तु यदि वो स्वतः अपने लिए पुत्र बन जाए तो मानो देखो, ममता को त्याग करके, अपनी इन्द्रियों पर संयम करके स्वतः पुत्र बन जाए और ये स्वीकार कर ले कि मेरे शरीर में जितने अवयव है मानो जैसे मन है, बुद्धि है, बुद्धि भी चार प्रकार की कहलाती है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञा कहलाती है। मानो इसमें दो प्रकार के हृदय हैं, कहीं आज्ञा चक्र है, कहीं सूचना केन्द्र हैं। ये जो मानो सर्वत्र जितना भी ये जगत है। इसमें यदि वो संयमी बन जाए, इसको जानने लगे कि अपने पिता का वो पुत्र बन गया, क्योंकि वहीं तो निर्माण करने वाला है।

माता के गर्भ में निर्माणवेत्ता

माता के गर्भस्थल में जब एक बिन्दु होता है उस बिन्दु में शिशु होता है। और शिशु अप्रतम् देखो, देवतव उसकी पालना करने वाले हैं। मैंने इससे पूर्व काल में भी तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था कि चन्द्रमा उसे अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है, पृथ्वी गुरूतव देती है और मानो यह जल, आपोमयी ज्योति प्रदान करने वाला है, अग्नि उष्ण बनाने वाली है, वायु प्राण देता है, अन्तरिक्ष अवकाश देता है। हे देवी! ये कौन ऐसा वैज्ञानिक है, जो माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता बना हुआ है। मेरी भोली माता को तो ज्ञान नहीं होता, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। मानो देखो, ऐसा जो निर्माणवेत्ता है जो ब्रह्मचर कहलाता है। हम मानो देखो, उसी के पुत्र कहलाते हैं। मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं, पिता को ज्ञान नहीं है। परन्तु देखो, ७२ करोड़ ७२ लाख १० हजार २०२ नाड़ियों का निर्माण हुआ। तो मानो वो माता के ही तो गर्भस्थल में हुआ परन्तु मेरी भोली माता को तो ज्ञान नहीं, वह प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता हैं।

मानो हे प्रभु! तू कैसा विज्ञानवेत्ता है? कैसा आनन्दमयी स्रोत बना हुआ है? हे प्रभु! हे आनन्दवत! मानो जब पुत्र ये स्वीकार करता है कि हम तो उस प्रभु के पुत्र हैं मानो वही तो निर्माणकर्त्ता है। संसार को कोई ज्ञान नहीं होता। तो मानो हे देवी! वह अपने में पुत्र बन करके मानो देखो, वह प्रभु की गोद में चला जाता है। इसी प्रकार देखो, जो भी मानव संसार में क्रियाकलाप कर रहा है, चाहे वह मानो ब्रह्मणां ब्रहे चाहे वह अपने में देखो,

वित्त का इच्छुक बना हुआ है। वित्त को एकत्रित कर रहा है। वह अपनी आत्मा की तृप्ति के लिए कर रहा है। प्रीति कर रहा है वह आत्मतृप्ति के लिए कर रहा है। हे देवी! एक मानो देखो, याज्ञिक बना हुआ है। याग कर रहा है? आत्मप्रेरणा आ रही है। आत्मा की जब प्रेरणा आती है तो आत्मा की तृप्ति के लिए, संसार के भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में लगा हुआ है।

आत्म तृप्ति

तो मेरे प्यारे! देखो, जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार अपनी देवी को ये विद्या प्रदान की तो उन्होंने कहा ये विद्या वेद में मधुविद्या के नाम से प्रचलित है। ये मधुविद्या कहलाती है। जहाँ मानो देखो, अपनी आत्मा के लिए, तृप्ति के लिए, क्रियाकलाप कर रहा है। आत्मतत्व के लिए वो सदैव राष्ट्र का पालन कर रहा है। राष्ट्रवेत्ता बना हुआ है, मानो देखो, वह राष्ट्र में, ब्रह्मज्ञान को एकत्रित कर रहा है। ब्रह्मवेत्ता बन करके वो अश्वमेध याग कर रहा है, कहीं मानो देखो, अजामेघ याग कर रहा है, कहीं अग्निष्टोम याग कर रहा है, कहीं विष्णु याग कर रहा है। कहीं मानो देखो, वहीं रुद्र याग में लगा हुआ है। बेटा! यह कैसा अनुपम, आत्मा को तृप्त करना चाहता है। आत्मा के लिए भिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में लगा हुआ है।

तो आओ मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार, अपनी पत्नी को मानो शिक्षा दी, तो उस समय वे नम्र हो गई, उन्होंने कहा-धन्य हैं प्रभु! आपने मुझे ज्ञान के प्रकाश में पहुँचा दिया है। आपने मुझे अज्ञान से ज्ञान के क्षेत्र तक पहुँचा दिया है। आपको धन्य है प्रभु! आप तप करने के लिए जाइये। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले-हे देवी! यदि कोई और शंका हो तो तुम तृप्त हो जाओ। मानो जब तक तुम तृप्त नहीं होगी, तब तक मैं तपस्या के लिए नहीं जाऊँगा। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से, दिव्या ने कहा-हे भगवन! आप तप करने के लिए जाइये, हम भी तपस्वी बनेंगे। मेरे प्यारे! देखो, जब मैत्रेयी से ये कहा-महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा-देवी! तुम दोनों का बंटवारा किए देता हूँ द्रव्य का। उन्होंने कहा-प्रभु! आप तप करने के लिए जाइये। हम स्वतः अपना बंटवारा कर पायेंगे।

तप का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, वह ये वाक्य उच्चारण करके, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज दोनों पत्नियों को संतुष्ट करते हुए, उन्होंने भयंकर वनों को अपना गमन किया। और भ्रमण करते हुए वे भयंकर वनों में पहुँचे और वनों में जाकर बेटा! न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन करने लगे, वेदमन्त्र में आया बेटा! अन्नादं भूतं ब्रहो वाचन्नमं ब्रहा ब्रह्मा कुतो सम्भवाः मेरे प्यारे! देखो, वेदमन्त्र ये उद्गीत गा रहे थे, अन्नं मना व्रतेः तपस्यां ब्रह्मे व्रताः वेद के मन्त्रों में ये आया कि ये तप है क्या? मानो देखो, एक प्रश्न किया गया, वेद में, कि तप किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! जब तप की विवेचना आई कि तप किसे कहते हैं। तो उत्तर मिला, वेद की आख्यिका से उत्तर प्राप्त हुआ तपं मनः व्राण स्वतं बृहिः वेद का वाक्य उत्तर देता है? कि मन को पवित्र बनाने का नाम तप है। तो मेरे प्यारे! पुन प्रश्न आया कि ये मन कैसे पवित्र होगा? तो विचार आया अन्नादां भूतं बह्रे कृताम् वेद का वाक्य कहता है कि अन्न पवित्र होना चाहिए। अन्न के पवित्र होने पर, मन पवित्र होगा, क्योंकि मन की जो उत्पत्ति है वो अन्न के द्वारा है, इसलिए अन्न पवित्र होना चाहिए। और अन्न पवित्र होगा तो मन पवित्र होगा, मन पवित्र होगा तो इन्द्रियों को वो संयम में ला सकता है। इन्द्रियाँ संयम में होगी तो मानो देखो, वो पञ्च महाभूतों पर अधिपथ्य कर सकता है। और पंच महाभूतों पर अधिपथ्य करने से प्रकृति के ऊपर अधिपथ्य करने से चेतनमयी प्रभु की गोद में अथवा उसकी तरंगों में तरिंगत हो जाएगा।

अन्न कैसा हो

तो मेरे प्यारे! देखो, ये वाक्य उनके हृदय में समाहित हो गया कि अन्न कैसा होना चाहिए। तो बेटा! देखो, वेद मन्त्रों में बहुत से, अपने में ही समाधान है। वेदमन्त्र कहता है शिल्लो वर्णा कृतं अन्नादं भूतो प्रवाणं बृहि व्रणयां भवेत्तां बहे मेरे पुत्रो! देखो, वेदमन्त्र कुछ कह रहा है। और वेदमन्त्र कहता है कि अन्नं ब्रहे मानो देखो, वो अन्न होना चाहिए, जिस पर किसी का भी अधिकार न हो। मेरे प्यारे! उन्होंने विचारा कि ये जो शिलस्थ अन्न होता है इसको एकत्रित करना चाहिए, इस अन्न को पान करते हुए, मन पवित्र हो सकता है। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया, जो शिलस्थ अन्न कहलाता है। कृषक अपने गृह में अन्न ले जाते हैं, और जो अन्न रह जाता है उसको शिलस्थ अन्न कहते हैं। उस अन्न को उन्होंने एकत्रित किया और उसको पान करते थे।

मेरे प्यारे! देखो, बारह वर्ष इस प्रकार का उन्होंने तप किया। और बारह वर्ष के पश्चात उन्होंने बेटा! एक पोथी का निर्माण किया, जिस पोथी का नाम सतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। सत पथाः ब्राह्मण ब्रहे प्रहे मेरे प्यारे! देखो, सतपथ ब्राह्मण की रचना की, लेखनीबद्ध करते हुए उन्होंने बेटा! अपने में बड़ा ऊर्ध्ववाक् किया और उन्होंने तपस्या के पश्चात उनका बड़ा विचित्र रहा। तो बेटा! उन्होंने आख्यिका का वर्णन करते हुए, उन्होंने सबसे प्रथम यह प्रश्न किया कि ब्राह्मण कौन है? सतपथ के रचयिता याज्ञवल्क्य कहते हैं कि ब्राह्मण कौन है? तो वेद का एक ही शब्द कहता है ब्रह्मां ब्रहे वास्प्रहा देवम् मानो देखो, ब्राह्मण वो जो अपने देव को एक-एक कण-कण में स्वीकार करता है। उन्होंने द्वितीय प्रश्न किया कि ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा-ब्रह्मचारी वह, जो श्वानां तनं बृहि व्रहाः शुब्धे देखो, जो प्रत्येक श्वास के साथ में, प्रत्येक सूत्र, मनका बना करके ब्रह्म सूत्र में जो पिरो देता है, वही मानो देखो, ब्रह्मचारिष्यामि कहलाता है। उन्होंने तीसरा प्रश्न कि ब्रह्म को कौन चरने वाला है? उन्होंने उसका उत्तर भी वेद की आख्यिका में आया सम्भवे ब्रह्मां विज्ञाना तप ब्रहे वाचं ब्रह्मचरिष्यामि वेद का वाक्य कहता है कि मानो देखो, जो ब्रह्मचारी है, वही वैज्ञानिक है, और जो वैज्ञानिक है, वही ब्रह्म की चरी को चरने वाला हैं वही नाना प्रकार के उपकरणों में परिणत हो जाता है।

ब्राह्मण

मेरे प्यारे! देखो, इसकी विवेचना करते हुए, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज करते हैं कि ब्राह्मण वो कहलाता है जो एक-एक कण-कण में, ब्रह्म को स्वीकार करता है। मानो देखो, ब्राह्मण वह है जहाँ भी जिस भी स्थिति में वो रहता वहीं ब्रह्म की चर्चा करता है। वहीं ब्रह्म को स्वीकार करता है। मानो देखो, वह ब्रह्मचार ब्रहे वही तो ब्राह्मण है। ब्राह्मणोति ब्रह्मणः मानो देखो, जो एक-एक कण-कण में, चाहे वह इस मण्डल में हो, चाहे वह मानो चन्द्रमण्डल में हो, चाहे वह मंगल में हो, किसी भी लोक-लोकान्तरों में गमन करने वाला हो, वह ब्रह्म के स्वरूप को, साक्षात्कार को दृष्टिपात करने वाला है। मेरे प्यारे! वही तो ब्राह्मण कहलाता है।

ब्रह्मचारी

तो आओ मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है सम्भूति ब्रह्मणः व्रतं देवाः ब्रह्मचरिष्यामि हे ब्रह्मचारी! तू अपने में ब्रह्मचारी है। ब्रह्मचारी कौन है? बेटा! देखो, जो एक-एक श्वास को जो मानो ब्रह्मसूत्र में पिरोने वाला हो। ब्रह्म सूत्र किसे कहते हैं? ब्रह्मचारिष्यामि ब्रह्मणो वाचप्रहा बेटा! देखो, वही तो ब्रह्मचारी है। जो अपने एक-एक श्वास में जैसे एक माला है। और माला में एक सूत्र है मानो देखो, प्रत्येक प्रकार के जो मनके हैं वो एक सूत्र में पिरो देता है, तो वो माला बन जाती है। इसी प्रकार जो प्रत्येक श्वास की माला बना देता है और ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है। बेटा! वही तो ब्रह्मचारी कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! वेदमन्त्र कहता है ब्रह्मचारिष्यामि रुद्र भागाहं ब्रह्मणों देवः प्रह्वा मेरे प्यारे! देखो,

ब्रह्मचारिष्यामि कौन है? जो ब्रह्म को जानने वाला है। और चरी को जो जानने वाला बेटा! दो शब्दों से ब्रह्मचारी बनता है ब्रह्म और चरी। ब्रह्म कहते है परमपिता परमात्मा को, और चरी कहते हैं प्रकृति को, मानो जो दोनों को जानने वाला, अंग अपांगों से जानने वाला वहीं बेटा! ब्रह्मचारी कहलाता है, अपने श्वांस को ब्रह्मसूत्र में पिरो करके बेटा! वह ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म की चरी क्या है? जितना भी ये भौतिक विज्ञान है, आध्यात्मिक विज्ञान है। दोनों को जो एक सूत्र में लाने का प्रयास करता है, दोनों को जो एक सूत्र में पिरो देता है बेटा! वो ब्रह्म की चरी को चरने वाला है। मानो देखो, ब्रह्मचारिष्यामि व्रतं देवाः चरी कहते है प्रकृति को, ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को, मेरे प्यारे! जो दोनों को जान करके अपने में अपने को ही दृष्टिपात करता रहता है वही बेटा! ब्रह्म की चरी को चरने वाला है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष तुम्हें विवेचना देने नहीं आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने चला आता हूँ। और वह परिचय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानने का प्रयास करते रहें। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने तपश्चर करते हुए तपश्चरों में अपने को परिणत करते हुए अपने को वृत्तियों में रत्त कराते हुए बेटा! अपने को प्राप्त होते हैं। तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार, ये क्या कह रहा है। आज का विचार ये कह रहा है कि मेरे प्यारे! देखो, ऋषि तपस्या में परिणत हो करके, ब्रह्मचरी और ब्रह्म वृत्तियों में देवाः देवता प्रवृत्ति को धारण करते हुए, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! अनन्त कोटि तपस्या की और तपस्या करने के पश्चात उन्होंने बेटा! एक ही पोथी का निर्माण किया, जिस पोथी का नाम सतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। जो सत का पथिक है, सत को ग्रहण करने वाला। मेरे प्यारे! वही सत्य का पथिक बनता है।

तो मानो देखो, उसकी रचना करते हुए, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! देखो, वहाँ से गमन किया। और भ्रमण करते हुए वे मुनिवरों! देखो, अपने गृह में प्रवेश हो गये। देखो, जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का मन पवित्रता में मानो देखो, एक महान मैत्रेयी ने उनके चरणों की वन्दना की, उन्होंने कहा कहो भगवन्! तपस्या ब्रह्मा उन्होंने कहा-देवी तपो वाचप्रह्ने मनः जब ऐसा वाक्य उन्होंने कहा कि मेरा मन पवित्र बन गया है, मैंने तपस्या की है, अन्नाद को पवित्र बनाने का नाम ही तपस्या है। मनस्तव को जानना ही हमारी इन्द्रियों का व्रत है।

मानो इन्द्रियों को जानने के व्रत का नाम ही हमारे यहाँ प्रभु को प्राप्त हो जाना है। तो मेरे प्यारे! ये वाक्य उन्होंने प्रकट किया, तो वे बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! हे देव! आपको धन्य है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने धन्य-धन्य करते हुए, चरणों की वन्दना करते हुए, उन्होंने कहा-आप विद्यालय में जाएं। मेरे प्यारे! देखो, वे कात्यायनी के द्वार पर पहुँचे। कात्यायनी ने कहा-भगवान! आज तो आपका मनस्तव पवित्रे भवा सम्भवा मानो आपका मन बड़ा नम्रता में परिणत हो रहा है उन्होंने कहा-देवी। तुम यथार्थ उच्चारण कर रही हो। मानो देखो, तुम्हारा हृदय तो इससे स्वतः ही प्रफुल्लित हो रहा है। हे देवी! मैं विद्यालय में गमन कर रहा हूँ। उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! आप विद्यालय में प्रवेश कीजिए।

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने विद्यालय को गमन किया तो नाना ऋषियों से मिलन करते हुए, अपनी प्रतिभा को उद्गीत रूप में गाते हुए, वे विद्यालय में प्रवेश हुए। तो बेटा! विद्यालय में ब्रह्मचारी कबन्धी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी कृतिभानु मेरे प्यारे! नाना ब्रह्मचारियों ने ऋषि को दृष्टिपात करते हुए, उनके चरणों की वन्दना की, उन्होंने कहा-आइये भगवन्! मेरे प्यारे! देखो, जब वे विराजमान हो गये, तो ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! आपने तप करने से क्या वस्तु प्राप्त की है? मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारियों को

वो सतपथ नाम की पोथी, उन्होंने समर्पित कर दी। उन्होंने कहा कि मैंने अपनी अस्तियों को और मन को एकाग्र करते हुए इन्द्रियों की वृत्तियों से मानो देखो, अस्तियों के रस को मानो मैंने इस पोथी में निहित कर दिया है। और इसका तुम अध्ययन करो।

मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी बारी-बारी अध्ययन करने लगे। ब्रह्मचारी नतमस्तक हो गये, उन्होंने कहा -प्रभु! धन्य है। आपने तो सर्वत्र यागों का वर्णन किया है। आपने तो ब्रह्मचर्य याग का भी वर्णन किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या, मानव को तपस्वी बनना चाहिए। मुनिवरों! देखो, तपोमयी जो रहता है उसी का जीवन महान बनता है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज पुनः बेटा! पठन पाठन के क्रियाकलापों में तत्पर हो गये, ब्रह्मचारी अध्ययन करने लगे। और जिस ब्रह्मचारी को अपनी वाणी से वे उद्गीत गाते, वह उसके अन्तः करण में प्रवेश कर जाता। और देखो, जब ब्रह्मचारियों के हृदय परिवर्तित हो जाते हैं तो जानो कि विद्यालय में आचार्य तपोमयी कहलाता हैं, वो तपस्वी कहलाता है। जिस गृह में मानो देखो, माता-पिता अपने में संयमी और गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करते है, उनका पूजन, उनका तप उसी क्रियों में रत्त हो जाता है। जो माता ब्रह्मे मानो उद्गीत गाने के पश्चात उनके विचारों में तन्मय हो जाए।

मेरे प्यारे! देखो, ये आज का विचार क्या वह रहा है। कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, परमात्मा के मानो देखो, उस रूप और उसके विज्ञान को जानते हुए, हम इस सागर से पार हो जाएं। मेरे प्यारे! देखो, पार तब ही होंगे जब हमारा जीवन संयमी और तपोमयी बनता रहेगा, तपोमयी निष्ठ होता रहेगा। मेरे प्यारे! ऋषि मुनियों की बड़ी विचित्र देन रही है, कि उन्होंने ब्रह्माण्ड को, पिण्ड को दोनों को एक स्वरूप माना है। मानो देखो, पिण्डे ब्रह्माण्डे और ब्रह्मण्डे-पिण्डे इन दोनों को एक सूत्र में मानो इसकी कल्पना की है। ये चर्चा तो बेटा! मैं तुम्हें कल प्रकट कर सकूँगा।

आज का विचार क्या, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए और इस संसार को दो स्वरूप में स्वीकार करते हुए एक पिण्ड रूप है तो मानो देखो, एक चेतनामयी स्वरूप माना गया है। दोनों का समन्वय करना, दोनों को एक सूत्र में लाना प्रभु को जानना है, तो जान करके इस संसार की प्रतिभा में, व्यष्टि और समष्टि में प्रवेश करना है। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् क्या कह रहा है बेटा! आज मैंने ऋषि मुनियों की विचार धाराएं, अथवा उनके तपोमय ले जाते हुए कल बेटा! पिण्ड और ब्रह्मण्ड की कल्पना हम कल कर सकेंगे। आज का विचार ये समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म मा रथं आभ्यां देवाः यम भद्रा मनाः। ओ३म यशश्चां रेवं आभ्यां रुद्रा वा याः। ओ३म अग्नं रथप्रा वसु वाया गतं मां रेवा। अच्छा भगवन्! आनन्द हो। दिनांक-०८-०८-१९८८-नवीन नगर, सहारनपुर

५ वास्तविक प्रकाश ०९ ०८ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र, माता के गुणों का वर्णन करता रहता है, जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है, इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के गुणों का वर्णन करता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्त हैं, वे अनन्तवान होने से मानो प्रत्येक तरंगें उसकी महिमा का बखान कर रही हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहे।

विष्णु

आज का हमारा वेदमन्त्र उस विष्णु की याचना कर रहा था, जो विष्णु हमारा कल्याणकारी है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, विष्णु के भिन्न-भिन्न प्रकार के पर्यायवाची कहलाए जाते है। जैसे हमारे यहाँ विष्णु नाम परमपिता परमात्मा को कहा गया है। विष्णु का केवल एक ही स्वरूप बनता है, जो पालन करने वाला है अथवा जो रक्षक है। तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा को विष्णु कहते हैं। वह हमारा पालन करने वाला है और वह मानो देखो, हमारी पालना करता हुआ, सत्य में रत्त रहने वाला है। इसी प्रकार हमारे यहाँ वैदिकता में, विष्णु नाम माता को भी कहा जाता है। जो माता हमारा पालन कर रही है मानो देखो, पालनाति पालनं ब्रह्मे वर्णस्सुतं ब्रह्मः पालस्ते वेद की आख्यिका, यह वर्णन कर रही है कि जो पालन करने वाला, उसको माता कहते है, अथवा जो पालना विशेष करता, उसको हमारे यहाँ विष्णु कहते है। तो मेरे प्यारे! यहाँ वैदिक साहित्य में बेटा! विष्णु नाम जहाँ माता का है, वहाँ राजा का नाम भी विष्णु है। जो राजा, प्रजा के हित में लगा रहता है, पालना करने वाला, उसका नाम राजा है। और राजा ही नहीं मानो देखो, विष्णु नाम बेटा! आत्मा को भी करते हैं। क्योंकि आत्मा जब तक शरीर में रहता है, तब तक ये शरीर चेतनित बना रहता है परन्तु जब ये आत्मा इस शरीर से निकल जाता है तो ये मानो तब एक शून्य गति को प्राप्त हो जाता है।

रहस्यमयी जगत

तो मेरे प्यारे! हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, आत्मा का बड़ा विशेष वर्णन आता रहा है। आज हम आत्मा के सम्बन्ध में, कुछ विचार विनिमय प्रगट करना चाहते हैं। क्योंकि हमारे यहाँ दो प्रकार का विज्ञान, परम्परागतों से बेटा! ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में, सदैव नृत्य करता रहा है। एक विज्ञान जिसको हम भौतिक विज्ञान कहते हैं और दूसरा आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है। मेरे प्यारे! परम्परागतों से क्या, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक दोनों प्रकार के विज्ञान के ऊपर अन्वेषण किया जाता है। हमने इससे पूर्व काल में, ये वर्णन कराते हुए कहा था कि परम्परागतों से बेटा! ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में, मानों भौतिक विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करना, अणु और परमाणुओं के ऊपर विचार-विनिमय करते रहें। नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में रत्त होते है। परन्तु देखो, ये भौतिक विज्ञान मानवीय मस्तिष्कों में सदैव नृत्य करता रहा है। परमात्मा के सम्बन्ध में क्या, आत्मा के सम्बन्ध में क्या, परन्तु देखो, ये बड़ा एक रहस्यमयी जगत बना हुआ है। और रहस्यमयी चर्चा कर रहा है अन्त में मानव बेटा! मौन हो करके अपने में शान्त हो जाते हैं। विचारां ब्रह्म वृत्ता

बेटा! विचार वहाँ नृत्य करने लगता है और शून्य गति को प्रायः प्राप्त हो जाता है।

यागों के विभिन्न स्वरूप

आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ केवल ये बेटा! देखो, आत्म विज्ञान की चर्चाएं, हमारे यहाँ ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में सदैव मानो देखो, नृत्य करती रही है। आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक आसन पर ले जाना चाहता हूँ। मैं आज तुम्हें उस त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो, राजा जनक के यहाँ, नाना प्रकार के याग होते रहते थे। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चलन प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में होता रहता है। बेटा! देखो, हमारे यहाँ जिसे अग्नं ब्रह्मं ब्रते मानो देखो, जैसे आध्यात्मिक याग है, भौतिक याग है। भौतिक याग में भी बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार के भेदन माने गएं हैं। मानो देखो, इसी प्रकार जैसे अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है, अश्वमेध याग है और देखो, जैसे पुत्रेष्टि याग है, वाजपेयी याग है, अजामेघ याग है बेटा! भिन्न-भिन्न याग, जैसे कन्या याग का वर्णन आता रहता है। आज मैं इन यागों के सम्बन्ध में, तो तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, परन्तु विचार ये देने के लिए आया हूँ कि भिन्न-भिन्न प्रकार के याग होते रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, राजा जनक के यहाँ देखो, आध्यात्मिक याग, जिसे हम ब्रह्मयाग भी कहते रहते है, उनके यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार का याग होता रहता था।

आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता राजा

आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें, राजा जनक के गृह में ले जाना चाहता हूँ। मानो देखो, राजा अपने में ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। जिससे राजा अपने राष्ट्र को उन्नत बना सके। तो राजा जनक आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता थे। मानो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में आध्यात्मिक उड़ाने उड़ता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है एक समय महर्षि अर्धभाग राजा जनक के गृह में जा पहुँचे, उनकी पत्नी मानो देखो, रम्भेश्वरी देखो, अप्रतम् विश्राम गृह में विद्यमान थी। विचार-विनिमय हो रहा था। महर्षि अर्धभाग पहुँचे। अर्धभाग ने व्रणःवृत्तम् मेरे प्यारे! देखो, अर्धभाग का स्वागत किया। उन्होंने कहा कहो, ऋषिवर! आप कुशल है। उन्होंने कहा दिव्यां ब्रह्मणे प्रमस्ता। ऐसा वाक्य उच्चारण करके बेटा! वो मौन हो गये। और मौन हो करके उन्होंने कहा ब्रह्मे, कोई न्यौदा में मन्त्रों का उच्चारण कीजिए। तो बेटा! उन्होंने न्यौदा में मन्त्रों का उद्घोष किया। और उद्घोष गाकर वे मौन हो गये। और मौन होकर के वे भी निद्रा की गोद में चले गये। महर्षि अर्धभाग ने गृह को त्याग करके वे अपने विश्राम गृह में जा पहुँचे। परन्तु देखो, रात्रि छा गई, परन्तु मध्य रात्रि का जब अन्तिम चरण हुआ तो राजा जनक की पत्नी जागरुक हो गई, तो कुछ मन्त्र उन्हें स्मरण आने लगे। वेदमन्त्र ये कह रहे थे। प्रकाशां भवितां ब्रह्मणां ब्रहे वासप्रह्व वृत्तम्।

प्रकाश का द्यौतक सूर्य

वेद का वाक्य यह कह रहा था कि हमारे जो नेत्र हैं वे किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है? मानो प्रकाश की विवेचना होने लगी, और प्रकाश की जब चर्चा होने लगी तो वेदमन्त्र इसका उत्तर देता है। सूर्याणि गच्छतं प्रकाशा वेद का वाक्य कहता है कि सूर्य प्रकाश का दूत है। ये प्रकाश का द्यौतक कहलाता है। प्रकाश के देने वाला है। मेरे प्यारे! विचार-विनिमय करने लगी, रम्भेश्वरी को बेटा! देखो, रात्रि का अन्तिम चरण हो गया। ब्रह्म ब्रह्मणां ब्रहे विचार विनिमय करते हुए बेटा! द्वितीय चरण से, अन्तिम चरण हो गया, परन्तु विचारने लगी, अपने में कोई निबटारा नहीं कर पाई, तो उन्होंने कहा कि चलो, मैं पति के कक्ष में पहुँचू। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि के अन्तिम चरण में, जब वे राजा जनक के कक्ष में पहुँची, तो राजा जनक ने कहा-देवी! दिव्या से! तुम्हारा अन्तिम चरण में, आने का कारण क्या है मेरे कक्ष में। उन्होंने कहा भगवन्! आज मैं न्यौदा में मन्त्रों का

अध्ययन कर रही थी और न्यौदा में मन्त्र ये उच्चारण कर रहा था प्रकाशां भवितां ब्रह्मणां ब्रहे हे प्रभु! वेदमन्त्र कहता है हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है। उस प्रकाश के लिए मैं सदैव याचनिक बनी हुई हूँ।

मेरे प्यारे! राजा जनक ने कहा-देवी! विचार-विनिमय करना चाहिए। दोनों बेटा! विचार विनिमय करने लगे और विचार करते-करते वे भी अपने में कोई निबटारा नहीं कर सके। मेरे प्यारे! देखो, कहीं सूर्य आता है, कहीं चन्द्रमा आता है, कहीं अग्नि आती है, तो अपने में निबटारा नहीं हो सका। तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, मुनिवरों! देखो, अन्तिम चरण भी समाप्त हो गया। प्रातःकाल हो गया, प्रातःकाल में अपनी क्रियाओं से दोनों निवृत्त हो करके, मेरे प्यारे! देखो, अप्रतम् देखो, उनके यहाँ जहाँ प्रातः काल ब्रह्मयाग में परिणत रहते थे, उनके यहाँ देवयाग होता, तो वह बेटा! देखो, देवयाग में प्रवेश हो गएं और देवयाग में जब प्रणां ब्रहे बेटा! याग में परिणत हो गये। तो परिणत होकर, उन्होंने अग्नि को प्रदीप्त किया और अग्नि को प्रदीप्त करके राजा जनक और उनकी पत्नी ने देवयाग प्रारम्भ किया। उसमें साकल्य प्रदान किया। प्रदानं ब्रह्मे वाचं ब्रह्मः लोकाम् बेटा! जब वे मानो देखो, उनका काण्ड ब्रह्मेः वाचः समाप्त हो गया। समाप्त हो जाने के पश्चात राजा जनक की उस यज्ञशाला में बेटा! देखो, नाना ऋषि मुनियों की पक्तियाँ लगी हुई है। एक स्थली पर उनके पुरोहित महर्षि अश्वल विद्यमान हैं। सबसे ऊर्ध्व आसन पर महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यमान है। चाक्राणी है, मानो देखो, महर्षि अर्धभाग, महर्षि दिग्धः महर्षि श्वेत्ताश्वेतर और मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी कबन्धी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु और मेरे पुत्रो! देखो, इसमें महर्षि प्रवाहण और शिलक और दालभ्य भी विद्यमान थे। महर्षि वैशम्पायन भी विद्यमान थे और महर्षि श्वेत्ताम्ब्रीति ऋषि महाराज मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि विभाण्डक, जब ये सर्वत्र ऋषि विद्यमान थे, तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान ने अपनी यज्ञशाला में याग सम्पन्न किया, देवयाग किया, देवयाग के पश्चात याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का सबसे ऊर्ध्वा में आसन लगा हुआ था। उन्होंने कहा कि यज्ञमान! मेरे से कोई प्रश्न कर सकता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञमान और उनकी पत्नी मनं ब्रहे व्रतम् रम्भेश्वरी उपस्थित हो करके दोनों ने कहा, प्रभु! आज मैं प्रातःकाल क्या, मध्य रात्रि से चिन्तन में लगी हुई हूँ, मैं ये विचार नहीं पाई हूँ, कि हमारे जो नेत्र है, वह किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं, उनका प्रकाश कौन है, मैं उस प्रकाश को जानना चाहती हूँ? मेरे पुत्रों! देखो, वह अप्रतम् जब उन्होंने ये वाक्य श्रवण किया, याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे राजन! हे दिव्यासे! इसको प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक ब्रह्मचारी भी जानता है कि हमारे जो नेत्र हैं, वे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं, सूर्य हमारा प्रकाशक है प्रकाश के देने वाला है मानो वही तो प्रकाश का द्यौतक बना हुआ है। मेरे प्यारे! उन्होंने इसकी विवेचना करते हुए कहा, ये सूर्य प्रातःकाल से उदय होता है और ये सायं काल तक मानो देखो, ये ऊर्ज्वा देता रहता है, तपता रहता है, तपायमान है, और तपायमान होकर के ये सूर्य प्रकाशक बना हुआ है। हे देवी! सृष्टि के प्रारम्भ में मानो देखो, जब ये प्रातः कालीन सूर्य उदय होता है तो मानो देखो, माता भी अपने पुत्रों! को, बाल्य को जागरुक कर देती है। और कहती है आओ, हे बाल्य! यह सूर्य उदय हो गया है, प्रकाश आ गया है अपनी क्रियाकलापों में रत्त हो जाओ।

मेरे प्यारे! देखो, वही सूर्य है, भानु है, वही उदयन कहलाता है वही मानो भास्कर कहलाता है। वही वृख कहलाता है, वही अदिति कहलाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के नामों से उसका वर्णन किया जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि कहता है, हे देवी! मानो देखो, ये जो सूर्य है, ये प्रकाशक है मानो ये नेत्रों का प्रकाश है, ये नेत्रों को प्रकाशित करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि ये जो गो नाम का पशु है, इसकी रीढ़ के विभाग में एक मानो देखो, सूर्य ब्रह्मा सूर्यकेतु नाम की नाड़ी होती है जिसमें सूर्य, वह जो नाड़ी है वो चन्द्रमा

वृत्यमं क्या, मानो देखो, सूर्य की किरणों के साथ, जो स्वर्णमयी बह रहा है, उस मानों स्वर्ण के परमाणुओं को अपने में ग्रहण कर लेता है वो बेटा! इसीलिए गौ-घृत में मानो स्वर्ण की मात्रा कहलाती है। वह स्वर्णमयी कहलाता है तो इसीलिए वो नेत्रों का प्रकाशक है। आयुर्वेदाचार्यों के गृहों में वास करता रहता है। मेरे पुत्रों! नाना प्रकार की वनस्पतियों को परिपक्व बनाने वाला, वह सूर्य ही कहलाता है।

आओ मेरे प्यारे! जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की, उन्होंने कहा प्रभु! ये वाक्य तो मैं जब विद्यालय में अध्ययन करती थी, तो आचार्य मुझे इसका वर्णन कराते रहते थे। परन्तु मैं ये जानना चाहती हूँक कि जब ये सूर्य नहीं होता तो मानो हमारे नेत्र किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है? उन्होंने कहा हे दिव्या! हे राजन! जब मानो ये सूर्य नहीं होता, तो चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये चन्द्रमा हमारे प्रकाश का द्यौतक कहलाता है। मानो देखो, ये चन्द्रमा अमृत देता है अमृतमयी बना देता है मानो देखो, चन्द्रमा का सम्बन्ध समुद्रों से होता है। और समुद्रों में से ये जलों को अपने में ग्रहण करता है। और उसका अमृत बना करके बेटा! उससे वृष्टि कर देता है।

प्रभु की प्रतिभा

मेरे प्यारे! देखो, माता के, रसना के निचले विभाग में, जब हम जैसे प्यारे पुत्र माता के गर्भस्थल में होते हैं, तो मानो देखो, माता की रसना के निचले विभाग में, एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। मानो देखो, वह नाड़ी, उस चन्द्रमा से देखो, अमृतमयी ग्रहण कर लेती है। उस नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय, माता की लोरियों से होता है। और लोरियों से पंचम नाड़ी बनकर चलती है। वे मानो अमृत को ले करके और वे हम जैसे पुत्र, बाल्य, माता के गर्भस्थल में विद्यमान है, बेटा! माता की नाभि का, और बाल्य की नाभि का एक ही समन्वय होता है। परन्तु देखो, उस नाभि के द्वारा अमृतमयी ग्रहण किया जाता है। वाह रे, मेरे प्रभु, तू कितना विज्ञानवेत्ता है। आज मैं जब तेरे विज्ञान के गुणों का गुणवादन करने लगता हूँ, तेरे विज्ञान में रत्त हो जाऊँ, तो मुझे कोई मार्ग प्राप्त नहीं होता, प्रभु! हे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। माता को प्रतीत नहीं है, कौन-सी पुरातत नाम की नाड़ी है परन्तु देखो, कैसे निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, आज मैं विचार विनिमय ये केवल चन्द्रमा अमृत के देने वाला है।

बेटा! जब कृषक मानो कृषि के गर्भस्थल में, बीज की स्थापना कर देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा अमृत भरण कर देता है। कृषि उपजने लगती है मानो वनस्पति उपजने लगती है। ये मानव बड़ा प्रसन्न होता है। और कहता है मेरी कृषि बड़ी सुन्दर उपज रही है। तो मानो बेटा! वह कौन है, वह चन्द्रमा है। अरे पूर्णिमा के दिवस, ये चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओं से, षोडश कलाओं से सम्पन्न हो जाता है और ये अमृत ही देता रहता है। तो मुनिवरों! देखो, ये चन्द्रमा कितना महान विचित्र है। मेरे प्यारे प्रभु की ये प्रतिभा कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, इतने में माँ रम्भेश्वरी ने ऋषि से कहा प्रभु! जब मैं आचार्य के द्वारा अध्ययन करती थी तो मानो देखो, इस विज्ञान का मैंने अध्ययन किया है। प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ, जब ये चन्द्रमा भी नहीं होता तो कौन प्रकाश का द्यौतक है। मेरे प्यारे! देखो, जब रम्भेश्वरी ने ये वाक्य, ये प्रश्न किया तो ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे देवी! जब ये मानो देखो, चन्द्रमा नहीं होता, तो हम तारामण्डल के प्रकाश से प्रकाशमान हो जाते है। इन तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आ रहा है। उस प्रकाश को, हम ग्रहण कर रहे है और नेत्र उसी प्रकाश से अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेते है। और मार्ग के पथिक बन जाते हैं। ये मार्ग, पथिक वाला बन जाता है। तो मानो देखो, मानव जब पथ दर्शक बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, ये तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश, मेरे प्यारे प्रभु का तो ये अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है। मैंने तुम्हें कई काल में

वर्णन कराते हुए कहा था कि भौतिक विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते हुए कि मानो देखो, ये जो पृथ्वी मण्डल है ये मानो देखो, जैसा तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है ऐसी-ऐसी तीस लाख पृथ्वियाँ मानो महर्षि शिकामकेतु उद्दालक की विज्ञानशाला में बेटा! प्रायः हमें दृष्टिपात आती रही।

ब्रह्माण्ड की माला

तो मेरे प्यारे! देखो, ये विज्ञान, अपने में, बड़ा अनुठा बन करके रहा है। मानो देखो, इन नाना पृथ्वियों की देखो, माला बनी। और पृथ्वियों की जब ये माला बनी, इस माला को धारण करने वाला बेटा! सूर्य बन गया। मेरे प्यारे! देखो, जब सूर्य ने, तीस लाख पृथ्वियों को अपने में धारण कर लिया तो विचार आया कि इतना विशाल, ये सूर्य मण्डल है। क्या मानो देखो, सूर्यमण्डल में, तीस लाख पृथ्वियाँ समाहित हो जाती है। मेरे प्यारे! जब मैं प्रभु के विज्ञान या ब्रह्माण्ड के आंगन में प्रवेश करता हूँ तो मुझे ये ब्रह्माण्ड ऐसा स्पष्टीकरण आने लगता है कि ये बड़ा विचित्र दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहते हैं, अनुसन्धान करने वालों ने कहा है कि तीस लाख पृथ्वियों को, जो सूर्य धारण कर रहा है, एक सहस्र सूर्यों को धारण करने वाला बृहस्पति कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, इतना विशाल, ये बृहस्पति माना गया है। परन्तु देखो, विज्ञानवेत्ता को अपने में शान्ति स्थापित नहीं हुआ करती है। बेटा! आगे इसके ऊपर अन्वेषण करने लगा तो आगे मानो देखो, आरुणि मण्डल दृष्टिपात आने लगा। बेटा! देखो, ब्रह्मणां ब्रह्मे एक सहस्र बृहस्पति मण्डलों को धारण करने वाला, उसकी माला बन करके बेटा! उसको आरुणि मण्डल, अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, एक सहस्र आरुणि मण्डलों की माला बनी तो उस माला को धारण करने वाला बेटा! ध्रुव मण्डल बन गया। एक सहस्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी, तो उसको बेटा! स्वाति मण्डल अपने में धारण करने लगा। एक सहस्र स्वाति नक्षत्रों की माला बनी, तो बेटा! उस माला को धारण करने वाला मेरे पुत्रो! देखो, मूल नक्षत्र बन गया। एक सहस्र मूल नक्षत्रों की माला बनी तो पुत्रो! देखो, उस माला को धारण करने वाला, मेरे प्यारे! देखो, जब पुष्प नक्षत्रों की माला बनी तो इसको बेटा! अचंग मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र अचंग मण्डलों की माला बनी तो मेरे प्यारे! उसको कृतिकाभानु मण्डल अपने में धारण कर गया। एक सहस्र कृतिका मण्डलों की माला बनी, तो उसको मेरे प्यारे! देखो, गन्धर्व मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। मेरे प्यारे! देखो, एक माला बन गई है। कैसी विचित्र माला है प्रभु के राष्ट्र की, मेरे प्यारे! जब मैं इस आभा में परिणत होने लगता हूँ, तो मुझे ये ब्रह्माण्ड अनन्तमयी दृष्टिपात आता है।

हे मेरे देवत्यां मानो देखो, इतने मण्डलों का, इतनी मालाओं का एक सौर मण्डल बन गया है। बेटा! एक अरब, ९५ करोड़, ७९ लाख, ९१ हजार और देखो, ५६१ के लगभग बेटा! इतने सौर मण्डलों की एक आकाशगंगा बनी। मेरे प्यारे! देखो, एक आकाशगंगा कितनी विचित्र बन गई है। कितना मण्डल है, कितना ब्रह्माण्ड है। मानो गणना में नहीं ला सकेगा, बेटा! मेरे प्यारे! देखो, आगे वेद का ऋषि कहता, अनुसन्धान करने वाला मुनिवरों! देखो, एक अरब ९१ करोड़ ७९ लाख और ६१ हजार ५५२ के लगभग बेटा! इतनी आकाशगंगा की बेटा! देखो, एक निहारिका बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो, दो अरब के लगभग निहारिकाओं की एक अवन्तिका बन जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, विज्ञानवेत्ता यहाँ आ करके मौन हो जाता है। अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है प्रभु का, आज मैं प्रभु के ब्रह्माण्ड में जाना नहीं चाहता हूँ। आज मैं बेटा! विज्ञान के क्षेत्र में भी तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ केवल ये कि मुनिवरों! देखो, वेद का ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज इसका वर्णन करते हुए कहते हैं कि ये जो तारामण्डलों का धीमा-धीमा प्रकाश आ रहा है इसके प्रकाश से हम प्रकाशमान हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उस समय देवी ने उपस्थित हो करके और राजा ने कहा प्रभु! जब ये तारामण्डल नहीं होता

तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है।

उन्होंने कहा हे दिव्यासे! जब ये तारामण्डल नहीं होता तो हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये अग्नि मानो अपने में प्रकाशमान हैं अग्नि मानो देखो, कोई गृहपथ्य नाम की अग्नि बन करके रहती है कोई वैश्वानर नाम की अग्नि है कोई गाहर्पथ्य नाम की अग्नि है। कोई अग्नि काष्ठ में रहने वाली है। मानो देखो, अग्नि के अवान्तर भेदन माने गएं हैं। यही अग्नि जब आयुर्वेदाचार्यों के गृह में प्रवेश करती है तो मानो देखो, ये ८५ प्रकार की अग्नि कहलाती है। परन्तु देखो, जब ये अग्नि विज्ञानवेत्ताओं के गृह में प्रवेश करती है, तो विज्ञानवेत्ताओं ने बेटा! देखो, ८१ प्रकार की अग्नि के ऊपर अन्वेषण किया तो अरबों खरबों प्रकार की अग्नि का जन्म हो जाता है। तरंगें उत्पन्न हो जाती है।

स्वर्ग-गृह

मेरे पुत्रो! देखो, वही अणु और परमाणु के रूप में परिणत हो करके देखो, बेटा! वैज्ञानिक अपने यन्त्रों का निर्माण करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, अग्नि विशाल कहलाती है। ये अग्नि कहीं ब्रह्माग्नि बन करके रहती है, कहीं गृहपथ्य नाम की अग्नि बन करके रहती है। प्रत्येक माता ये चाहती है कि मेरा गृह स्वर्ग बन जाए। पिता भी यही चाहते है कि हमारा गृह स्वर्ग बन जाए। परन्तु माता-पिता जब गृहपथ्य नाम की अग्नि का चयन करते है, गृहपथ्य नाम की अग्नि में जब मानो देखो, ब्रह्माग्नि का चयन करते हैं तो उसी के अनुसार बाल्य, बालिका अपने में ग्रहण करने लगते है तो बेटा! गृह स्वर्ग बन जाता है। राष्ट्रवेत्ता, जब ब्रह्मज्ञानी होता है राजा, तो राजा जब ब्रह्मयाग में, यागों में परिणत होता हुआ मानो ब्रह्मवेत्ता बन करके, अपने में क्रियात्मक जीवन को बनाता है तो राष्ट्र भी मानो स्वर्ग बन जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ, ये तो विचारों का वन है बेटा! मैं वन में जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये कि अग्नि हमें प्रकाश के देने वाला है। मानो देखो, माता इस अग्नि के प्रकाश से गृह में प्रकाश कर लेती है। और मानव अपनी क्रियाओं में रत्त हो जाता है।

आध्यात्मिक ब्रह्म

मेरे प्यारे! देखो, इतने में राजा जनक और उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! हमने तो ये सब अध्ययन किया है। हम ये जानना चाहते है कि जब ये अग्नि भी नहीं होती तो प्रभु! हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते है? उन्होंने कहा, अग्नं ब्रह्माः अग्नं दूतं ब्रह्मणेः शब्दव्रहे लोकाम् ऋषि ने कहा हे दिव्या! मानो जब ये अग्नि नहीं होती, तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये शब्द ही तो प्रकाश के देने वाला है। अन्धकार में मानो एक गमन कर रहा है, मार्ग से कुमार्ग में चला जाता है। वह कहता है अरे, है कोई मार्ग चेताने वाला भयंकर वन में विद्यमान हो करके, वह उद्घोष कर रहा है। परन्तु एक मानव मार्ग में स्थिर है, वह कह रहा है। अरे, आ जाओ, मैं मार्ग में स्थित हूँ। बेटा! देखो, इसी शब्द के प्रकाश से, वह भयंकर वनों से अन्धकार को त्याग करके वो प्रकाश को चला जाता है। वह प्रकाश का पथिक बन जाता है। मार्ग का, सुमार्ग का पथिक बन करके अपने में बेटा! शब्द एक ध्वनि है। वही शब्द है बेटा! जिन शब्दों से राष्ट्र के राष्ट्र अग्नि के मुखारबिन्दों में परिणत हो जाते हैं। वही शब्द होता है, जिन शब्दों से बेटा! मानव मानव बन जाता है। ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। ब्रह्मवादी बन जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, शब्द अपने में ध्वनित हो रहा है, वही ध्वनित होनेवाला, ध्वनित होता हुआ बेटा! देखो, शब्द आ रहा है। वह ध्वनि आ रही है। अन्तरिक्ष लोक लोकान्तरों के संघर्ष से भी मानो ध्वनि उत्पन्न हो रही है। बेटा! उस ध्वनि को श्रवण करने वाला विज्ञानवेत्ता क्या, आध्यात्मिकवेत्ता अपने में आध्यात्मिक उड़ाने उड़ने

लगता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा, ब्रह्मणं ब्रहे वही शब्द है। अरे, वही तो ध्वनि है जो ध्वनि चित्रों के सहित गमन कर रही है। अन्तरिक्ष में, जिसका वास रहता है। वही शब्दायमान रहती है। मुनिवरों! देखो, उस शब्द को हमें ग्रहण करना है। वही शब्द है बेटा! जो आचार्य और ब्रह्मचारी दोनों विद्यमान हो करके, शब्दों के कारण ब्रह्मवेत्ता बन जाते हैं। उन्हीं शब्दों के कारण विज्ञानवेत्ता बन जाते हैं। शब्दों के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभा में रत्त हो जाते हैं। वही पाण्डित्य ग्रहण करने लगते हैं। तो मेरे प्यारे! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ। मुनिवरों! देखो, विचार क्या, ये आध्यात्मिक ब्रह्म है। मेरे प्यारे! देखो, राजा जनक और उनकी पत्नी ने कहा हे प्रभु! जब ये शब्द नहीं होता, तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं?

आत्मा का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य ने कहा हे राजन! हे दिव्या! मानो देखो, ब्रह्मणे जब ये शब्द नहीं होता, तो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। ये आत्मा हमारे शरीर में भास रहा है। चेतना बन करके भास रहा है। ज्ञान और देखो, प्रयत्न के रूप में भास रहा है। ये आत्मा ही मानो देखो, ज्ञान का केन्द्र है। ये आत्मा ही मानो देखो, प्रकाश का द्यौतक है, यही प्रकाश के देने वाला है। इसलिए हमें प्रकाश को जानना चाहिए। वह प्रकाशक कौन है? वह आत्मा है। मेरे प्यारे! देखो, जिस समय यह आत्मा शरीर से निकल जाता है। अरे, उस समय ये सूर्य भी प्रकाश दे रहा है। अरे, मानो शरीर में आत्मा नहीं है। क्यों नहीं, प्रकाशमान हो जाते, अरे, चन्द्रमा अमृत बिखेर रहा है, अमृत दे रहा है अरे, शरीर में आत्मा नहीं है क्यों नहीं अमृत को ग्रहण करक लेते? अरे मानव! मानो देखो, यह ब्रह्मणाम् अपने में अग्नि प्रकाश दे रही हैं। तारामण्डलों का प्रकाश चल रहा है। परन्तु देखो, शरीर में आत्मा नहीं है। क्यों नहीं, प्रकाशमान हो जाते। मेरे प्यारे! देखो, शब्द अपने में शब्दायमान है। ध्वनि कर रहा है। ध्वनित हो रहा है। वेद ध्वनि आ रही हैं। मेरे पुत्रों! देखो, शरीर में आत्मा नहीं हैं अरे, मानव! तू क्यों नहीं प्रकाशमान हो जाता। और प्रकाश के देने वाला शरीर में आत्मा है। आत्मा को जानने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है आत्मां ब्रह्मणे व्रतं देवाः आत्मा। ये आत्मा ही तो प्रकाश के देने वाला है। अरे, आत्मा को जानने वाला मानव बेटा! अन्धकार को प्राप्त नहीं हुआ करता है।

तो आओ मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है कि हे राजन! हे दिव्यासे! मानो तुम अपनी अन्तरात्मा से प्रकाश को जानो, अरे, वही प्रकाश के देने वाला है। अरे, जहाँ से आध्यात्मिवाद का प्रारम्भ हुआ है और भौतिक विज्ञान समाप्त हुआ करता है ये जो भौतिक विज्ञान है। अणु, परमाणु का विज्ञान है, अरे, जहाँ ये समाप्त होता है वहाँ से आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ हुआ करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार ऋषि ने, जब अपने वाक्य प्रकट करते हुए कहा तो मुनिवरों! देखो, दोनों अपने में प्रसन्न हो गएं और राजा ने कहा धन्य हैं प्रभु! प्रकाशां रुद्रो भागं ब्रह्मणां लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है सम्भूति ब्रह्माः सम्भूति लोकां सम्भवः ब्रह्मेः वाचप्रह्वा मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है। आचार्य कहता है? हे दिव्यां ब्रह्मणाः तुम्हारे विचार में आ गया होगा कौन प्रकाशक है।

मेरे प्यारे! राजा जनक और रम्भेश्वरी ने, ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और ये कहा, धन्य है प्रभु! आपको धन्य है, हमें, आपने अन्धकार से प्रकाश में पहुँचाया है। हम आपके बड़े आभारी है। मानो आपने हमें प्रकाश में पहुँचा दिया है। हम अपने में बड़ा धन्य स्वीकार करते है। मेरे प्यारे! देखो, रम्भेश्वरी अपने में, ज्ञान के अश्रुपात आने लगे। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! मैं तो एक ही वेदमन्त्र में लगी हुई थी कि प्रकाश कहाँ से आता है? तो प्रभु! आपने मेरे अन्धकार को नष्ट कर दिया है। हे प्रभु! आपको नमः है। मैं आपके चरणों की वन्दना

कर रही हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, दोनों आसन पर विद्यमान हो गये, मेरे पुत्रो! देखो, विचार-विनिमय क्या है आज के हमारे वाक्यों का, बेटा! ये आत्मा प्रकाश के देने वाला है। मानव को प्रकाशवान बनना चाहिए। और बनेगा तभी, जब कि सर्वज्ञ विज्ञान की प्रतिभा को जान करके आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह कौन रक्षक है? वे परमपिता परमात्मा रक्षक विष्णु है, कल्याण करने वाला है, आत्मा प्रकाश के देने वाला है। जहाँ ज्ञान और प्रयत्न होते हैं वहीं आत्मा का लक्षण माना गया है।

ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करते रहे। विचार विनिमय करते रहे और इस संसार सागर से पार हो जाएं। जो संसार बेटा! मान और अपमान वाला, जो संसार है इससे हम उपरामता को प्राप्त हो करके, प्रकाश में रत्त हो जाएं। ये है बेटा! आज का वाक्। कल मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रकट करूंगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म देवाः यं रथं मानं वायु रथाः। ओ३म यशश्चाहं गताः मां ऋषि वरुणाः गतं आभ्यां देवाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा दिनांक-०९-०८-१९८८-नवीन नगर सहारनपुर

६ आचरण की पवित्रता ०४ ०९ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि यह जो ज्ञान है, ज्ञान की जो कुँजी है उसको हमारे यहाँ सरस्वती कहा जाता है। वैदिक साहित्य यह कहता है विश्वां ब्रह्मणां विष्णु व्रतं देवाः मानो यह जो जगत है यह विष्णु रूप है और इसमें रमण करने वाली, एक चेतना है और अपने में क्रियाकलाप हो रहा है, आनन्दित हो रहा है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता, प्रायः हमें उसमें दृष्टिपात आती रहती है। जिस प्रकार एक विज्ञानवेत्ता, अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, वह अपने में सन्तुष्ट हो जाता है और अपने में मौन रहने की उसकी महान प्रवृत्ति बन जाती है। परन्तु वे परमपिता परमात्मा की, जो महती और अनन्तता है, उसके ऊपर गम्भीरता से मनन करता है।

माता सरस्वती

तो आओ मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र, उस महान माता सरस्वती की याचना कर रहा है, जो सरस्वती मानव की स्मरण शक्ति में विद्यमान रहती है। वहीं शक्ति जब मानव गान गाता है, तो सामगान में उसमें निष्ठा हो जाती है। परन्तु उद्गीत गाने वाला उद्गीत गाता रहता है। उद्गीतों में एक महानता की अनुपम एक ज्योति होती है, जिसको धारण करके वह ज्योतिर्वान बन करके ज्योतिर्मयी अपने को स्वीकार करता है। तो मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ, विचार यह है कि आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में, मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे बारम्बार बाध्य करते रहते है कि याग के सम्बन्ध में कुछ विचार विनिमय दिया जाए। याजागां ब्रह्मणां याजागां रूद्रो भगब्रह्माणां यागाः इस परमात्मा की सृष्टि में वास्तव में जो कोई जागरूक रहता है वही संसार में, अपने में सम्पन्नता को प्राप्त होता है। क्योंकि साकल्य को प्राप्त करने के लिए मानव, नाना प्रकार के अनुष्ठान करता है और नाना प्रकार की आभाओं में रत्त रहता है। कहीं तो वह ऐसा अनुपम है, ऐसी एक अनूठी धाराएँ है, जिसके ऊपर हम, परम्परागतों से अन्वेषण और अनुसन्धान करते चले आये। तो मेरे प्यारे! हमारा वेद का मन्त्र क्या कह रहा है, वेदां अमृतां दिव्यां देवो ब्रह्मणा मानो जो धारण करने वाला, वह ब्रह्मा है, ब्रह्म रूप कहा जाता है। हम उस परमपिता परमात्मा की महती को जानने वाले बने। परन्तु यह संसार की जो प्रतिभा है यह परम्परागतों से इसी प्रकार कटिबद्ध है। इसमें कहीं रजोगुण प्रधान है, तो कहीं तमोगुण, अपनी सीमा में है और जब रजोगुण, सतोगुण मानो बलवती हो जाते है, तो उनकी बलवती, उनको ऊर्ध्वा में पहुँचा देती है और महानता का दर्शन दे देती है।

तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा है, विचार यह प्रारम्भ हो रहा है कि हम उस परमपिता परमात्मा को अपना साथी स्वीकार करते हुए, इस सागर से पार होने का, प्रायः मानव प्रयत्न करता रहा है। तो आओ, बेटा! देखो, विचार विनिमय क्या प्रारम्भ हो रहा था, विचारवेत्ता कौन-कौन-सी वार्त्ता प्रगट करता है, जिससे मानव का जीवन, महान और पवित्र बनने के लिए तत्पर हो जाता है। आओ बेटा! मैं तुम्हें, उद्दालक गोत्र के ऋषियों के द्वार पर ले जाने के लिए तत्पर रहता हूँ और यह कहा करता हूँ कि ब्रह्मणे ब्रहे कासं ब्रीहि वर्णा सिद्धं ब्रहे वाचप्रमाणां मेरे पुत्रों! देखो, हमें अपने में ही अपनेपन का भान होना चाहिए। पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों की एक ही कल्पना मानी गई है, या तो जड़वत् है या चैतन्यवत् है। मानो उन परमाणुओं के ऊपर हमारा

अधिपथ्य होना चाहिए, परमाणु विज्ञान, अपने में परमाणु विज्ञान, धारा को ले करके, मानव के समीप आने के लिए तत्पर हो जाता है। बेटा! आज का हमारा विशेष वाक् नहीं है, यह वाक् मैंने कई काल में प्रगट भी किया। जो मुझे प्रगट करना है।

माता-पिता की इच्छा

मेरे पुत्रों! देखो, कोई मानव यह नहीं चाहता कि मेरे पुत्र में किसी प्रकार का दोषारोपण हो, माता-पिता सदैव यह चाहते है कि हमारा पुत्र महान हो, हमारे पुत्र में सर्वत्र प्रकार की जीवन सत्ता हो। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार वह याचक बना रहता है। परन्तु समय-समय पर अब उसका क्रियाकलाप भी, एक दूसरे रूप में परिणत होता रहा है। परन्तु रहा यह वाक् सम्भो वर्णा ब्रह्मा वायु सम्भव ब्रह्मणे लोकाम् बेटा! वह जो ब्राह्मण है जो लोक लोकान्तरों में गमन करने वाला, पाठयक्रम है। मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ जा करके, वह मानो भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनाओं में रत्त हो जाता है और वही कल्पना बेटा! देखो, आवावृत्तियों में, मूल रूप में मानी गई है।

तो मुनिवरों! आज मैं विशेषता में न ले जाता हुआ केवल यह प्रारम्भ हो रहा है कि मुनिवरों! देखो, यह अपने में अपनी आभा ब्रह्मणे लोकां वायु सर्वाणि गच्छतं ब्रह्मे वाचप्रमाणं ब्रहो तो एकां वसु रन्धनं ब्रह्मे यज्ञमानाः। आज मुनिवरों! देखो, वेद का मन्त्र यह कहता है कि हम अपनी महान, तरंगे, देवी को जागरूक बनाने में लगे रहे। जैसे सरस्वती को जागरूक बनाया जाता है, वही सरस्वती बन करके जटा पाठ में गायी जाती है, वही घन पाठ और उदात्त गान में भी उसका उद्घोष, जन्म लेता है। उद्घोषी बन जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह कैसा विचित्र प्रभु का एक अनुपम, देव का यह जगत है। जहाँ बेटा! मानव-मानव के लिए तत्पर न रह करके मानो अपने जीवन की आभा में, अभ्योदय रहता है। तो हम इस प्रकार अपने जीवन को बनाने के लिए तत्पर रहे।

परमात्मा की मध्यस्थता

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार, हमारा वेद का मन्त्र कुछ कह रहा है, वेद का मन्त्र कहता है सम्भवा घ्रणं रुद्रो भागब्रह्मणे वाचा। मेरे प्यारे! वे परमपिता परमात्मा रूद्र है, जो दुर्गणों को नष्ट करने वाला है। वह मानो विष्णु के रूप में विद्यमान है उसकी आभा, उसकी अपनी ही कोई आनन्दमयी एक दशा है जिसके ऊपर वह विचार विनिमय करता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार यह आता रहता है कि हम अपनेपन में ही अपनेपन का जब दर्शन करने लगते है तो परमात्मा हमारे मध्य, हमारे जीवन की मध्यस्थता करना प्रारम्भ कर देता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह क्या विचार चल रहा है, हम अपनी आभा में आभायित होने के लिए आए है, हे माता! तू हमारा कल्याण करने वाली है, हे माता! तेरे ही गर्भ में हम सर्वत्र मानो ओतप्रोत रहे है। तू सब संसार को अपनी आभा में ले जाने के लिए तत्पर रहती है जिससे देखो, जीवन में विकृतता न आ जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारा जीवन विकृति से रहित होना चाहिए।

आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें किसी ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि मुनि परम्परागतो से अन्वेषण और अनुसन्धान करते रहे है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वह अपने में कृतियों में रत्त रहने वाला, एक अनुपम जगत है, जिस जगत के लिए ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा! अनुसन्धान करते चले आए है। तो आओ मुनिवरों! देखो, विचार यह चल रहा है कि मुनिवरों! देखो, हमारे ऋषि मुनि, अपने में बड़ी भव्यता के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे है। तो आओ मेरे प्यारे! हमारा वेद का मन्त्र कुछ कह रहा है, वेद का मन्त्र हमें प्रेरित कर रहा है यज्ञं ब्रह्मणे यागां रुद्र भागाः हे मानव! तू याज्ञिक बन, मानो उसी से तेरे जीवन में, कल्याण की एक

दशा का जन्म होता है। हे मानव! तू अपने में याज्ञिक बन, जिससे याग करने के पश्चात, मानव के हृदय के, हृदयग्राही उसको प्राप्त हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, मन्तव्य यही रहा है कि इस सागर से पार हो जाना चाहिए, यह बड़ा विचित्र एक सागर है, जिस सागर के लिए प्रत्येक मानव ऊँची से ऊँची कल्पना करने के लिए आया है।

तो मेरे प्यारे! आओ, आज मैं तुम्हें ऋषि-मुनियों के उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ हमें मानो देखो, हमारी दशा उसके दूसरे रूप में परिवर्तित कर दी। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का जीवन अपने में धारयामि बनाना, हमारा कर्त्तव्य, हमारी मानवीयता का एक अनुपम श्रोत्रितम माना गया है। आओ मेरे प्यारे! मैंने कई कालो में यह चर्चाएं की, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, अपने आसन पर विद्यमान है, ब्रह्मचारियों के मध्य में बेटा! वह कुछ प्रश्न कर रहे है ब्रह्मचारियों से, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने प्रातःकालीन बेटा! याग कर्म करने के पश्चात क्रियाकलापों से निवृत्त हो जाने के पश्चात, ब्रह्मचारी एक रूपक बना करके और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के समीप आए। जब आ पहुँचे तो उन्होंने कहा-कहो भगवन! हे पितर! क्या आज्ञा है? उन्होंने कहा-आज्ञां ब्रह्मणे योगां ब्रीहि ब्रह्मचारियों में एक यज्ञमान बना, एक प्रश्नकर्त्ता बन गया। और उन्होंने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया कि महाराज! यह यज्ञमान विद्यमान है यह याग करना चाहता है, कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए?

याग में होता

तो मुनिवरों! महर्षि याज्ञवल्क्य बोले कि चौबीस होताओं के द्वारा याग करो। मुनिवरों! देखो, चौबीस होता याग में होने चाहिए। उससे याग सम्पन्न होता है। मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय, महर्षि प्रवाहण ने कहा-प्रभु! हम यह जानना चाहते है कि यज्ञमान याग करना चाहता है, तो उस यज्ञशाला में कितने होता गण होने चाहिए? उन्होंने कहा-कि उस यज्ञशाला में मानो देखो, ब्रह्मणे व्रतो सम्भवः मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि भगवन! चौबीस अक्षरों ब्रहे चौबीस मानो तत्त्वों के द्वारा याग होना चाहिए। परन्तु ऋषि ने पुनः प्रश्न किया कि-महाराज! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हो? उन्होंने कहा कि-इसमें सत्रह होता होने चाहिए। सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। पुनः प्रश्न किया कि महाराज! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हो? उन्होंने कहा-ग्यारह से हूत करना चाहिए। उन्होंने कहा-कि यदि मानो हूतं ब्रह्मा हूतं रुद्र भागं ब्रह्मणा व्राते देवाः पूतं पोतां वाचा कृतं देवाः ब्रह्मचारियों ने कहा-प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता है, उन्होंने कहा-सत्राणि ब्रह्मो कृतो देवाः उन्होंने पुनः कहा-कि भगवन! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हो? उन्होंने कहा-नौ होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। पुनः प्रश्न किया कि महाराज! यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता हो? उन्होंने कहा-सप्त होतां ब्रह्मणे सप्तम् यह सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने कहा-भगवन! यज्ञमान याग करना चाहता है कितने होता हो? उन्होंने कहा-पंच होता हो। पुनः जब प्रश्न किया कि महाराज! यज्ञमान याग करना चाहता है तो कितने होता? उन्होंने कहा-तीन होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। उन्होंने कहा-कि महाराज! यज्ञमान याग करना चाहता है तो कितने होता हो? उन्होंने कहा-दो होता होने चाहिए। पुनः प्रश्न किया कि कितने होता हो? उन्होंने कहा-कि एक होता से याग होता है। एक श्रोत्रीय याग कहलाया जाता है।

चौबीस होता

मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी नतमस्तिष्क हो करके बोले-कि प्रभु! आप ने तो बड़ा विचित्र हमारे समीप एक ब्रह्माण्ड को निहित कर दिया है। परन्तु यह चौबीस होता क्यों होने चाहिए? उन्होंने कहा-हमारा जो मानव जीवन है, वह ब्रह्माण्ड से कटिबद्ध रहता है। मानो देखो, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और दस प्राण, मन, बुद्धि,

चित्त और अहंकार यह चौबीस होता कहलाते है। जो इस ब्रह्माण्ड को स्थिर किए हुए है और हमारे मानो शरीर रूपी यज्ञशाला में भी विद्यमान है।

सत्रह होता

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, तो उन्होंने कहा प्रभु! सत्रह क्यों होने चाहिए? उन्होंने कहा-कि सत्रह मानो देखो, दस प्राण, पंच प्रकृति की तन्मात्राएं मन और बुद्धि मानो यह सत्रह होता कहलाते है, सत्रह तत्त्व कहलाते है। मेरे प्यारे! देखो, इन्हीं सत्रह में कारण, स्थूल और सूक्ष्म मुनिवरों! देखो, इसी में कटिबद्ध रहता है। यह मानव का शरीर है, बाह्य जगत में भी सत्रह होता होने चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, वह जो आन्तरिक जगत है, जिसमें नाना प्रकार की प्रवृत्तियों से मानव कटिबद्ध रहता है, उसी में निहित रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह सत्रह तत्त्वों की तो बड़ी विचित्र एक विवेचना है। मुनिवरों! देखो, सत्रह होता है सबसे प्रथम देखो, दस प्राण है, इन प्राणों से ही मानव का शरीर मानो क्रियाशील रहता है। ब्राह्मण्ड भी प्राण से ही क्रियाशील रहता है। ये दस प्राण है, बेटा! प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, देवदत्त, धनंजय, कुरु, कृकल यह दस प्राण कहलाते हैं। पंच तन्मात्राएं है, मुनिवरों! जो इनमें निहित है, मन और बुद्धि है जिससे ये सत्रह तत्त्व बन जाते है। इनको जानने वाला मानो बेटा! देखो, कारण शरीर में निहित हो जाता है। कारण शरीर, जहाँ ज्ञान और प्रयत्न दोनों विद्यमान है। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि कहता है सत्रह होताओं वाली यज्ञशाला है इसमें याग करो।

ग्यारह होता

मेरे प्यारे! महर्षियों ने आगे प्रश्न किया-महाराज! आपने ग्यारह होताओं को कहा, यह ग्यारह होता कौन? उन्होंने कहा-मुनिवरों! पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, ग्यारवाँ मनस्तव है, मन है, जो इनको स्थिर करके बेटा! योगसिद्ध आत्मा बन जाता है। वह योग में प्रवेश कर जाता है। योग में रमण कर जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ज्ञानेन्द्रियों को, कर्मेन्द्रियों को स्थिर करता हुआ, वह मेरे प्यारे! देखो, मन विवेक से उनको अपने में मानो देखो, इनको संयमी बना रहा है। तो इसलिए दस इन्द्रियाँ और ग्यारहवाँ मन है। मन और देखो, ये एकादशों बन जाते है एकादशों से यज्ञमान याग करें। ग्यारह होता विद्यमान हो करके बाह्य जगत को रचाते है।

नौ होता

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा-प्रभु! आपने नौ होता कहा है। उन्होंने कहा-हमारे शरीर में, जब सृष्टि के पिता ने, इस शरीर की, ब्रह्माण्ड की रचना की, तो नौ पदार्थ दिए है। और नौ पदार्थों में मुनिवरों! मेरे प्यारे! देखो, अप्रतं ब्रहे अस्सुताम् और आत्मा प्रोहस्तत है। संसार की जितनी गणना है वह नौ तक निहित रहती है, अंक भी नौ ही कहलाते है नौ बृहे श्वन्धनम् मेरे पुत्रों! देखो, यह भी आगे गमन करने का, एक विचित्र अवसर है, स्वाति है, धनमन्धन है वाचनोति, कृतिभा धेनु है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है यह नौ तत्त्व मानो ब्रह्माण्ड में स्थिर है। मानो ब्रह्माण्ड के खम्ब बन करके, इसको स्थिर किए हुए है और शरीर को भी, तो मुनिवरों! देखो, यह मंगलम् देखो, नौ द्वार कहलाते है शरीर में, बेटा! देखो, दो चक्षु है, दो घ्राण है, दो श्रोत्र है, एक मानो वाणी है और मुनिवरों! देखो, त्वचा, गुह्य और उपस्थ ये नौ द्वार कहलाते है। इन नौ द्वारों वाला यह शरीर है। मेरे प्यारे! देखो, जैसे नौ पदार्थ है, ऐसे ही नौ द्वार है, उन द्वारों पर एक-एक देवता विद्यमान है। मुनिवरों! कहीं पर कश्यप है, कहीं गौतम विद्यमान है, कहीं पर अत्रि है, कहीं भारद्वाज, जमदग्नि है, मुनिवरों! देखो, यह देवता भी ऋषिवर विद्यमान रहते हैं।

सप्त होता

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने पुनः कहा-हे प्रभु! यह भी हमने जान लिया, परन्तु यज्ञमान यज्ञ में यह चाहता है कि सप्त होता कौन से है? उन्होंने कहा-सात होता होने चाहिए। मेरे प्यारे! सप्त होता ही तो इस याग को ऊँचा बनाते है। सप्त होता के पश्चात पंच महाभूत है बेटा! पंच महाभूतों का यह याग हो रहा है। जिसमें बेटा! जल, तेज, अग्नि, वायु, पृथ्वी इत्यादि विद्यमान रहते है। इन्हीं के द्वारा तो याग हो रहा है।

तीन होता

परन्तु देखो, जब त्रैतवाद आता है, तीन कौन है? बेटा! रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण। यह तीन गुणाधानम् है। यही गुणों में वरत रहे है यही मानो तीन प्रकार के गुण है। मेरे प्यारे! देखो, वही रजोगुण है, वही सतोगुण है, वही तमोगुण है। मेरे प्यारे! देखो, यदि उनके पिछले भाग में उद्देश्य है तो गुण उसमें व्याप्त है। मुनिवरों! देखो, सतोगुण में पालना है, रजोगुण में शासन है, तमोगुण में उत्पति का मूल है। मेरे प्यारे! यह तीन मनके एक ही माला के, तीन मनके वह एक ही सूत्र में पिरोएं जाते है कहीं उत्पति हो रही है, तो कही पालना हो रही है, कहीं राजस्ता में अनुशासन हो रहा है। तो मुनिवरों! यह तीनों गुण कहलाते है। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण।

दो होता

बेटा! तीनों से जो उपराम होता है, वह दो के द्वारा याग करता है। बेटा! प्रकृति और ब्रह्म को ही दृष्टिपात करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, जब एकोकीकरण आ जाता है, एक चेतना में, चेतना का भान करने लगता है वे परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है। बेटा! यह जो याग है यह एक होता के द्वारा मानो संकल्पोमयी याग हो रहा है।

तो बेटा! विचार आता रहता है यागां रूद्र भागां ब्रह्मे यागां देवं ब्रह्मा मेरे प्यारे! यह याग है, यह अपने में बड़ा विचित्र है। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के द्वारा, जब ब्रह्मचारियों ने इस प्रकार प्रश्न किए और इन्होंने इसका उत्तर दिया तो बेटा! वह बड़े प्रश्न हुए और चरणों की वन्दना करने लगे। उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! आप तो महान हैं आप तो विचित्र है, आप तो मानो अखण्ड ब्रीहि व्रताः तो मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी अपने में सन्तुष्ट हो गएं और मौन हो गये। तो यह है बेटा! आज का हमारा वाक्, अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जी- ओ३म् देवाः रथं ब्रह्मणं वाचन्नाः देवत्यां रथाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, मानो अपने विचारों में, वह गागर में सागर, उसमें दोनों का समन्वय कर रहे थे। उनके विचारों के ऊपर टिप्पणी करना तो हमारे लिए शोभनीय नहीं है। क्योंकि उनका विचार तो बड़ा गम्भीर और दर्शनों से गुथा हुआ और आत्मा, परमात्मा से गुथा हुआ रहता है। परन्तु हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं भी आपको कुछ परिचय कराने के लिए चला आता हूँ। आप मुझे आज्ञा देते है तो मैं कुछ परिचय दे देता हूँ। आज मैं विशेषता में तो नहीं, जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ मैं एक याग का दर्शन कर रहा हूँ। मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है और मैं यह कहा करता हूँ यह जो इस समय काल चल रहा है, इस काल को मैं वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ।

वाममार्ग

वास्तव में तो परमात्मा के जगत में नाना प्रकार के क्रियाकलाप होते रहते है। परन्तु यह जो वर्तमान का काल चल रहा है, यह वाममार्ग का काल है। वाममार्ग उसे कहते हैं, जो उल्टे मार्ग पर गमन करने वाला हो। जो शुद्ध मार्ग को त्याग करके, अशुद्धता को ग्रहण कर लेता हो। जो आहार मानव के पाने के योग्य नहीं,

उसको पान करता है। तो ऐसा यह वाममार्ग कहा जाता है। जहाँ राष्ट्रीयता में मानो अराष्ट्रीयता विद्यमान रहती है, जहाँ मानो पद की और द्रव्य की लोलुपता में मानव को उसकी अन्तरात्मा का पथ समाप्त हो रहा है, कर्त्तव्यवाद न रहने से ही, मैं यह कहा करता हूँ कि यह वाममार्ग का युग है। यह वाममार्ग इसलिए कि मानव का आहार और व्यवहार दोनों ही अशुद्ध हो गएं है। दोनों ही मानव के जीवन की प्रतिभा कहलाते है।

परन्तु देखो, मैं वाममार्ग के युग में भी अपने यज्ञमान को, मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है-हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मेरी सदैव यह कामना रहती है और मैं अपने यज्ञमान को यह कहता रहता हूँ हे यज्ञमान! अपने मानवीय जीवन को पवित्र बनाता हुआ, अपनी आभा को ऊर्ध्वा में ले जाता चल। जिससे जीवन में वाममार्ग न रहे, आहार, व्यवहार दोनों ही पवित्र बने रहे और विचार भी पवित्र बने रहे, ऐसी मेरी कामना रहती है।

रूढियों से समाज की मृत्यु

परन्तु जब मैं आधुनिक काल के, इस जगत के राष्ट्रवाद और रूढ़िवाद को दृष्टिपात करता हूँ तो मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में कहा था-प्रभु! समाज में से रूढ़ियाँ समाप्त हो जानी चाहिए, क्योंकि रूढ़ियाँ राष्ट्र की मृत्यु बन करके रहती है एक काल में, इसीलिए धर्म, मर्यादा, मानवीयता, कर्त्तव्यवाद, मानव के समीप होना चाहिए। पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई काल में, अपने विचारों में व्यक्त होते हुए कहा था कि यह संसार पवित्रता की वेदी पर होना चाहिए। मानो देखो, राजा ब्रह्मवेत्ता हो, जब राजा ब्रह्मवेत्ता होता है तो बुद्धिजीवी प्राणी राष्ट्र में होते है। और बुद्धिजीवी प्राणी जितने भी होते है उतना राष्ट्र पवित्र बन जाता है। बुद्धिजीवी का अभिप्रायः यह है जिससे आध्यात्मिकवाद, अपनी मानवीयता के ऊपर मानव दर्शन को जो स्थिर करने वाला हो, वही तो हमारे यहाँ देखो, मानवीयता को लाता है।

भगवान कृष्ण का दिव्य यन्त्र

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था, पूज्यपाद गुरुदेव ने राम के काल की बहुत-सी चर्चाएं की और भगवान कृष्ण के जीवन के सम्बन्ध में, मुझे स्मरण आता रहता है। भगवान कृष्ण का जीवन मानो देखो, वह अपने में, विज्ञान में कितने रत्त रहते थे, विज्ञान उनकी एक सम्पदा कहलाई गई। एक वाक् मुझे स्मरण आता रहता है उनका, जिस समय देखो, महाभारत का संग्राम हो रहा था, महाभारत के संग्राम में, जब अर्जुन ने अपने पुत्र की, ममता में, मोह में परिणत हो करके अग्नि पर शव-आसन पर विराजमान हो गएं थे, कि अब मैं अपने प्राणों को त्याग दूंगा। अग्नि में समर्पित हो जाऊँगा। तो तब मानो देखो, वह सूर्यं अमृतम् भगवान कृष्ण ने अपनी पत्नी से मानो दूरभाष में यह कहा कि अग्नो सम्भो व्राताः देखो, यन्त्र का, उन्होंने प्रहार किया। सम्भोति याता यन्त्र और उस यन्त्र से देखो, रात्रि छा गई, सूर्य अस्त होने को हो गया। तो उस समय उन्होंने कहा-हे अर्जुन! देखो, अब यह सायंकाल हो गया है, जागरूक हो जाओ और देखो, तुम मृत्यु को जाना चाहते थे तो, तत्पर हो जाओ। तो उन्होंने मृत्यु की शैय्या पर स्थिर हो गये। कौरव और पाण्डव दोनों पक्ष के प्राणी मानो देखो, वीर, वहाँ उस भूमि पर आ गये। अन्तिम समय दर्शन करने के लिए, परन्तु जब जयद्रथ भी आ गये, जिन्हें उन्हें मृत्यु को पहुँचाना था। उसी समय उन्होंने दूरभाष से देवी से कहा-सोवाग्रहाताह वाचा सूर्याणि व्रतं देवाः उन्होंने देखो, यन्त्र के लिए, देवी से कहा-कि उस यन्त्र को, सूर्य वृत्तियों को, यन्त्रों को प्रहारित कर दो। मानो देखो, यन्त्र को छा दिया, यन्त्र ने अन्धकार को निगल लिया और सूर्य उदय हो गया। उन्होंने कहा-हे अर्जुन अमृतम् देखो, सूर्य बहुत है तुम्हारे समीप, तुम्हारा शत्रु विद्यमान है। उन्होंने उसे नष्ट कर दिया। परन्तु उसके कण्ठ का जो ऊपरला भाग था वह पिता के आंचल में जा पहुँचा। पिता की भी मृत्यु हो गई, पुत्र की भी

हो गई।

भगवान कृष्ण का जीवन

तो विचार क्या, ऐसे-ऐसे विज्ञान उनके समीप रहते थे। यह वैज्ञानिक यन्त्र हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, मानवीय मस्तिष्कों में नृत्त होते रहे है। देखो, यहाँ भगवान कृष्ण का जीवन, जब मैं यह स्वीकार करता हूँ, वे विज्ञानवेत्ता ही नहीं थे, वे आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी थे, वे तपस्वी भी थे। मानो कैसा तप करते, वह प्रातःकालीन जब सूर्य उदय नहीं होता था तो अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके, और प्रातःकालीन गायत्री छन्दों का और उनका अध्ययन करते हुए आत्मा, परमात्मा का चिन्तन और कर्त्तव्यवाद के ऊपर मनन करना और मनन करते हुए देखो, अपने में प्रातःकालीन याग करना, अग्निहोत्र करते, सुगन्धि कराना, यह उनका कर्त्तव्य था। पति-पत्नी दोनों विद्यमान हो करके अपनी क्रियाओं से निवृत्त होते रहते। उसके पश्चात वह विज्ञान में रत्त रहते, उसके पश्चात राष्ट्र के क्रियाकलापों में रत्त रहते, परन्तु उनका जीवन कैसा, नैतिकता में परिणत था, उनके जीवन में, किसी प्रकार की मानो पद की लोलुपता नहीं थी, मानो कर्त्तव्यवाद की भावना थी।

आहार से मन की पवित्रता

आज देखो, विचार आता है, आज जब भगवान कृष्ण के जो अनुयायी बने हुए है, परन्तु वह मांस भक्षण करने वाले है, परन्तु देखो, वह शुद्ध, पवित्र आहार करते थे। आहारों में परिणत ब्रहे, अपनी आत्मों को ऊँचा बनाया। आहार से ही तो मन पवित्र बनता है। परन्तु आधुनिक समाज को मैं इसलिए वाममार्ग कहता हूँ क्योंकि देखो, सुरापान, सुन्दरी और देखो, मांसाहारों में देखो, द्रव्य की लोलुपता में, मानव तत्पर हो रहा है। विचार आता रहता है, मैं इस सम्बन्ध में, इस सन्दर्भ में भी ले जाने के लिए नहीं आया हूँ कि मैं इस प्रकार की चर्चाएं करूं। परन्तु मैं यह कहता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से-हे प्रभु! यह जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ है ईश्वर के नाम पर, यह समाप्त होनी चाहिए, राजा का यही कर्त्तव्य होता है और जब तक राजा को ब्रह्मज्ञान नहीं होता, वेद का ज्ञान नहीं होता, तब तक वह इन रूढ़ियों को समाप्त नहीं कर सकता। क्योंकि रूढ़ियाँ तो ज्ञानी ही समाप्त करता है। रूढ़ि तो तपस्वी ही समाप्त करता है, रूढ़ि तो कर्त्तव्यवादी ही समाप्त करता है, रूढ़िवाद वैसे समाप्त नहीं हुआ करता। रूढ़िवाद अपनी निष्ठा से ऊँचा बनता है।

जब मैं यह विचारता रहता हूँ रूढ़ि कैसे समाप्त हो? भगवान राम ने देखो, रूढ़ियाँ समाप्त कर दी, निषाद के राष्ट्र से रूढ़ियाँ समाप्त हुई, और देखो, रावण को नष्ट करके वहाँ रूढ़ियाँ समाप्त कर दी। परिणाम यह कि नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बिना ब्रह्मज्ञान और तपस्वी के, उन्हें कोई मानव अपने से दूरी नहीं कर सकता। मैं विशेष विवेचना देने नहीं, केवल मेरा तो एक ही विचार रहता है कि देखो, जब मैं आधुनिक जगत में दृष्टिपात करता हूँ, भगवान कृष्ण को मानो देखो, ब्रह्म और प्रभु की उपाधि प्रदान करते रहते है। हम देखो, इसमें बड़े प्रसन्न रहते है। परन्तु देखो, उनके आचरणों का हमारा मानना यही है कि उनके आचरणों को, आधार पर, अपने आचरण बनाए, अपनी प्रतिभा को ऊँचा बना करके, उसी प्रकार बुद्धिजीवी बने और कर्त्तव्यवादी बने।

यह आज का विचार, अपने पूज्यपाद गुरुदेव ने कुछ समय प्रदान किया और मैं यही कहता रहता हूँ कि हे यज्ञमान! ऐसा यह काल है, उसे स्वीकार कर रहे, परन्तु उसके अनुकूल अपने जीवन को नहीं बना रहे, यह बड़ा एक वाममार्ग का एक काल कहलाता है। परन्तु देखो, मैं इसलिए इसे वाममार्ग कहता हूँ क्योंकि इसमें धर्मं ब्रहे धर्म केवल नाम मात्र रह गया है। राजा ब्रह्मज्ञानी न होने से, राजा में देखो, नाना प्रकार की आहारिक त्रुटियाँ होने से, व्यवहारिक त्रुटि होने से ही देखो, यह रूढ़िवाद पनप रहा है। यह अज्ञान आ रहा है। तो यह आज का विचार मैं विशेषता में न ले जाता हुआ, पूज्यपाद गुरुदेव से अपनी वेदना मैंने प्रगट की है और वह

वेदना यह है कि मैं पुनः से हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखरण्ड बना रहे, तेरा जीवन महान बना रहे, ऐसी मेरी कामना रहती है ऐसा मेरा मन्तव्य रहता है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेव- मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने, अभी-अभी अपने विचार व्यक्त किए, इनके विचारों में एक दाह है, एक विडम्बना है, परन्तु एक तीव्र इच्छा है। यह समय आता रहेगा, राष्ट्रवाद के लिए, यह संसार, अपने कर्त्तव्यवाद में भी रत्त होता रहेगा। सभी प्रकार के प्राणी संसार में, प्रभु के राष्ट्र में, प्रायः बसते रहते है। परन्तु समय-समय पर आ करके अपनी क्रियाओं में रत्त रहते है। तो यह आज का विचार क्या कह रहा है, क्या, हम अपने में महान बन करके, और यज्ञमान अपनी आभा में रत्त हो करके, और अपने में ही अपनेपन का दर्शन करते रहे, यह महान है, ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा है, यह आज का विचार, अब समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् ब्रह्मा मा रथं आभ्यां देवाः यं रथश्चाहं आ पा रेवम्। ओ३म् आभ्यां दघि वाचन्नमा रयि मां रेवा। अच्छा, आज्ञा भगवन्!। दिनांक-०४-०९-१९८८-बन्दा बहादुर अपार्टमेंट सेक्टर-१४, राहिणी, दिल्ली

७ प्रभु का ब्रह्माण्ड १६ ०९ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन मनोहर वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं है, और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। हमारे यहाँ दो प्रकार का जगत माना गया है। एक चैतन्यवत् है तो एक जड़वत्, चेतना की मीमांसा करते हुए, आचार्यो ने अपना मन्तव्य प्रगट किया और उन्होंने कहा है कि चैतन्य जो जगत है, वह ज्ञान और प्रयत्न से निहीत है और जहाँ द्वितीय जो जड़वत है, वह पिण्ड रूप है, जो ज्ञान से शून्य रहता है।

जगत के दो प्रकार

तो हमारे यहाँ दो प्रकार के जगत की विवेचना, प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आती रही है क्योंकि वेदमन्त्र अपने में गुणगान गाता रहता है। परमपिता-परमात्मा की महती का वर्णन करता रहता है। क्योंकि परमपिता-परमात्मा का यह जगत बड़ा अनूठा है, और अनन्तमयी है। और उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान से निहित, जब हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और उसके विज्ञान में रत्त होते है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्मा का यह कितना भव्य जगत है और यह कैसा विज्ञान से रत्त है। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के विज्ञान और ज्ञान की चर्चाएं, सृष्टि के प्रारम्भ से होती रही है। और विचारते रहे है, एक-एक वाक्य का विचार विनिमय करना, हमारा कर्तव्य रहा और उन्होंने एक ही मन्तव्य दिया और यह पिण्ड और ब्रह्माण्ड की विवेचना दी। क्योंकि पिण्ड को ब्रह्माण्ड में और ब्रह्माण्ड को पिण्ड में उन्होंने मानो निहित किया और उसकी विवेचना की।

ऋषियो के वैज्ञानिक अनुसन्धान

तो आओ मुनिवरों! मैं इस सम्बन्ध में तो कोई विचार देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह है कि हमारा वेद का मन्त्रा, परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान की विवेचना कर रहा है। एक एक वेदमन्त्र बेटा! उसकी गाथा गा रहा है और ब्रह्मणो व्रातं प्रमाणं लोकां वायुः मानो देखो, परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान एक-एक कण-कण में दृष्टिपात आता रहा है। मुझे वह कल स्मरण आता रहा है, जब महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धी दोनो अपने में अनुसन्धान कर रहे थे। तो उन्होंने बेटा! एक समय अपनी विज्ञानशाला में एक परमाणु का विभाजन किया। परन्तु उस परमाणु के विभक्त होते ही सर्वत्र ब्रह्माण्ड, उस परमाणु में दृष्टिपात आने लगा। तो मेरे पुत्रो! विचार यह कि एक-एक परमाणु में, सर्वत्र ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आता रहा है। तो आज मैं इस विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश करना नहीं चाहता हूँ। विचार ये कि परमात्मा का ये विज्ञान कितना अनूठा है, कितना महान है। मानव उसको जानता रहता है, विचारता रहता है परन्तु उसके पश्चात भी अनन्तता की प्रतिभा बनी ही रहती है। तो आओ मेरे पुत्रो! विचार यह चल रहा था, कि हमारा वेदमन्त्र बेटा! एक-दुसरे में गाथा में युक्त हो रहा है।

वसुन्धरा

जैसे मुनिवरों! देखो, अभी-अभी एक वेदमन्त्र आ रहा था, उस वेदमन्त्र में वसुन्धरा का वर्णन है। मैंने कई

काल में तुम्हें वसुन्धरा की विवेचना की आज भी मुझे स्मरण आ रहा है कि ये वसुन्धरा कैसा उज्ज्वल, एक महान शब्द है, जिसकी सर्वत्रता विद्यमान रहती है। हमारे यहाँ वसुन्धरा के, वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द आते रहते है। वसुन्धरा नाम बेटा! उस माता को कहा गया है, जो जननी माता है। जिसके गर्भ स्थल में हम जैसे पुत्र मानो बसते है, वह अपने में बसाने वाली है, उसका नाम वसुन्धरा है। मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणः व्रते वही तो उस गाथा गाता रहता है। क्योंकि पुत्र ही माता की गाथा गाता रहता है, क्योंकि माता पुत्र के कारण ही ममतामयी बनी रहती है। इसी प्रकार बेटा! जब विचारते है कि माता के गर्भ स्थल में, हम जैसे पुत्र वशीभूत रहते है। माता के गर्भस्थल में बेटा! एक बिन्दु है, उस बिन्दु में शिशु है, और जैसे ही शिशु प्रवेश करता है सर्वत्र देवता बेटा! देखो, उसके जागरुक हो जाते है। मुनिवरों! देखो, जैसे चन्द्रमा अमृत देता रहता है, और सूर्य प्रकाश देता है अग्नि उष्ण बनाने लगती है, पृथ्वी गुरूतव देती है, और मुनिवरों! देखो, आपो उसके ओढ़न और आसन बने हुए है। मेरे पुत्रो! देखो, कैसा उस मेरे देव का विज्ञान है, कैसी महानता से परिपूर्ण है। आज जब उस विज्ञान के ऊपर विचारते है कि वायु प्राण देता है, अन्तरिक्ष अवकाश देता है और पुत्रो! देखो, निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। हे मेरी भोली माता! तू उस निर्माणवेत्ता से वंचित रहती है। तू नहीं जानती कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। मेरे पुत्रो! कितना अनूठा विज्ञान है प्रभु का।

सूर्य मानो देखो, समुद्रो से, चन्द्रमा अपने में अमृत को लेता है और उसे अमृतां ब्रह्मणाः अमृत वना, करके वह मुनिवरों! देखो, देता है। पृथ्वी के गर्भ में क्या, माता के गर्भ मे क्या, सब में ओत-प्रोत करा देता है वह अमृतमयी कहलाता है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, यह सूर्य द्यौ से प्रकाश लेता है और द्यौ अपने में कितना भव्यतम् है, मुनिवरों! देखो, प्रकाश लेता है, ऊर्ज्वा लेता है, और संसार में बिखेर देता है। कैसा प्रकाश है, मेरे प्यारे! कितना उज्ज्वल विज्ञान है, जिसके ऊपर मानव अन्वेषण करता रहता है, विचारता रहता है। वाहन भी गतिवान बन जाते है उनकी नाना प्रकार की किरणों के द्वारा। तो मेरे पुत्रो! देखो, वह प्रभु कितना अनन्तमयी है विचारने से प्रतीत होता है परन्तु देखो, वहीं अग्नि है, जो उष्ण बनाती है। मुनिवरों! देखो, ताप उतना ही प्रदान करती है और वह आपो ही बेटा! देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु होते है तो बेटा! देखो, जल ही आसन है, जल ही ओढ़न है और मुनिवरों! वही पांशे बने हुए है। उसमें निहित रहता है, नाना प्रकार की नस नाड़ियों का समन्वय मानो माता की नाभि से बालक की नाभि का समन्वय होता है। तो बेटा! अमृत को पान करता रहता है।

प्राण के दस विभाग

आओ मेरे प्यारे! देखो, अग्नं अब्रहा मानो देखो, वायु प्राण देती है, प्राण भी बेटा! यहाँ दस प्रकार के प्राणों का अवधान है। जैसे प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत, धनंजय, कुरू और कृकल मुनिवरों! देवदत इत्यादि यह दस प्राण माने गएं है। एक ही वायु के दस प्राण बन जाते है। दस प्रकार की विभक्त क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। मेरे प्यारे! वह प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। आज मानव यह कहता है ब्रह्मणं व्रते मंगलं ब्रीहि परमात्मा के राष्ट्र में बेटा! न तो कोई बुद्धिमान है, न प्रभु के राष्ट्र में विज्ञानवेत्ता है क्योंकि वह प्रभु अनन्तमयी है और वह ऐसा विज्ञानवेत्ता है, ऐसा मानो ज्ञानवान है मुनिवरों! देखो, कोई वैज्ञानिक उसको सीमाबद्ध नहीं कर सका, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके नाना विज्ञानवेत्ता हुए है मानो देखो, योगेश्वर हुए है कोई ऐसा विज्ञानवेत्ता नहीं हुआ बेटा! जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, वे सीमा से रहित है। सीमा में आने वाला नहीं है। तो मेरे पुत्रो! देखो, विचार आता है वह कितना विज्ञानवेत्ता है।

आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें प्रगट कराने के लिए नहीं आया हूँ। माता के गर्भ

स्थल से जब वही शिशु, अपने में पूर्णता को प्राप्त करके बेटा! पृथ्वी की गोद में आ जाता है, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाता है, तो ये पृथ्वी मुनिवरों! देखो, उसमें जब वह बस जाता है यह नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ प्रदान कर देती है। नाना प्रकार का खाद्यान्न पनप रहा है, खनिज पनप रहा है। मेरे प्यारे! खाद्यान्न से मानो अपनेपन में ही इसको दृष्टिपात करता रहता है और जब विज्ञानवेत्ता बेटा! मानो इस खनिज पदार्थ को जानने लगते है, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करते है, तो मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार का विज्ञान हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। वैज्ञानिकों ने नाना प्रकार के विज्ञान को जाना, इसके गर्भ में प्रवेश हो करके, कहीं स्वर्ण के परमाणुओं का आवागमन हो रहा है, कहीं रतनों की धातु का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, जो वाहनों में क्रियाकलाप करते रहते है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, वह प्रभु का विज्ञान है। हे माता! तुझे वेद ने वसुन्धरा कहा है मानो देखो, जननी माता के गर्भ से पृथक् हो करके, यह पृथ्वी की गोद में आ जाते है, ये नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान कर रही है क्या नहीं है, माता वसुन्धरा के गर्भ में, बेटा! जब मानो विचारने लगता है तो मुनिवरों! वह मौन हो जाता है। अन्तिम में, विचारां ब्रह्मण व्रते जब माता के गर्भस्थल से पृथक् होता है, पृथ्वी के गर्भ से भी पृथक् हो जाता है तो यही मुनिवरों! देखो, मानप्रहा ये परमपिता परमात्मा की गोद में आ जाता है। हे वसुन्धरा! तू अपने में धारण करने वाली है, मानो देखो, परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा के रूप में वर्णन किया है, उसी की आभा में प्रत्येक मानव अपने में अभ्योदय होता रहा है। आओ मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, ये चर्चाएं, मैंने इससे पूर्व काल में भी तुम्हें प्रगट कराई है, आज भी मुनिवरों! देखो, पुनः इसकी पुनरुक्ति करते हुए इन विचारो को, हृदय में उल्लास और हृदय मानो हर्षित हो रहा है। और अपने में यह स्वीकार करते रहते है कि परमात्मा का विज्ञान, परमात्मा की प्रतिभा कितनी महानता में रत्त रही है।

महर्षि रेवक और ऋषियो की चर्चाएं

आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें ऋषि-मुनियो के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। राजा जनक की सभा में भी प्रायः ऐसे विचार होते रहते थे, परन्तु ऋषि-मुनि अपने आसनो पर विद्यमान हो करके इस प्रकार के विचारों में रत्त होते रहते। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है जिस समय महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज अपने में अध्ययन करते थे और एक सौ पाँच वर्ष तक अपने जीवन को उन्होंने गाड़ी के नीचे व्यतीत किया। तपस्या में रत्त रहते। मेरे पुत्रो! ऐसा स्मरण है, कुछ ऋषि-मुनियों का एक समाज, इनके समीप पहुँचा। जिन ऋषि मुनियो में महर्षि विभाण्डक, महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, देवर्षि नारद, सोमकेतु वर्णोस्सुता मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु इत्यादि ऋषि-मुनियो का इनमें बेटा! सुनीति मुनि महाराज भी उस सभा में विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनियो ने, आचार्य से यह प्रश्न किया हे प्रभु! हम आपके समीप आए है, आपसे कुछ प्रश्न करना चाहते है। गाड़ीवान रेवक मुनि ने कहा भई! तुम प्रश्न करो और जितना मैं जानता हूँगा, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे सकूँगा। यदि मैं जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर अवश्य तुम्हें प्राप्त होगा।

जगत की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि प्रवाहण उपस्थित हो करके बोले प्रभु! हम यह जानना चाहते है कि यह जो हमें दृष्टिपात आने वाला जगत है, जो हमें दृष्टिपात आ रहा है मानो देखो, यह चारों प्रकार की सृष्टि वाला जगत है। इसमें सबसे प्रथम स्थावर है, अण्डज है, जंगम है, और स्वेदज है। ये चार प्रकार की सृष्टि कहलाती है। हे

प्रभु! चारों प्रकार की सृष्टि में अवान्तर भेदन माने गएं है। परन्तु हम यह जानना चाहते है कि हे प्रभु! इनकी प्रतिष्ठा क्या है? ये कहाँ प्रतिष्ठित हो जाते है, कहा यह मानो अपने में लय होते दृष्टिपात आते है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज, ऋषि-मुनियों के प्रश्नों को पान करके उन्होंने उत्तर देना प्रारम्भ किया हे ऋषिवर! ये सर्वत्र प्राणी जानते है, कि तुम सब ब्रह्मवेत्ता हो, ब्रह्म जिज्ञासु हो, परन्तु कोई तुममें ब्रह्मचारी है, कोई नैष्ठिक ब्रह्मचारी है, कोई मानो तपश्चर में गमन कर रहा है। मेरा अन्तरात्मा तुम्हें दृष्टिपात करके, बड़ा उल्लास और हर्ष ध्वनि कर रहा है। परन्तु देखो, इसका उत्तर हमारे आचार्या और वैदिक साहित्य में वेद मन्त्रों में इस प्रकार आया है, कि यह जो जगत है, जो हमें दृष्टिपात आ रहा है, नाना प्रकार का जो भेदन दृष्टिपात आ रहा है यह चारों प्रकार की सृष्टियों में निहित रहता है। परन्तु देखो, इसकी प्रतिष्ठा जानना चाहते हो तो इस सर्वत्र जगत की प्रतिष्ठा मानो पृथ्वी में मानी गई है। ये पृथ्वी अपने में धारण करती रहती है, ये पृथ्वी मानो उद्बुद्ध करती है, यही अपने में इसे समेट लेती है मानो, ये जो पृथ्वी है ये अपने में बड़ी विचित्र है यह अश्वसुंद्रं ब्रह्मा कृत लोकाम् यह वसुन्धरा के रूप में विद्यमान रहती है। परन्तु देखो, ये वसुन्धरा अपने में, अपनेपन में इन्हें प्रतिष्ठा प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठा मानो इसमें प्रतिष्ठित हो जाती है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इतना उत्तर दिया, तो उस समय महर्षि शिलक उपस्थित हुए, और शिलक जी ने कहा कि हे भगवान! ऋषिवर, जब हम आचार्य के द्वारा अध्ययन करते थे तो मानो प्रायः आचार्य हमें वर्णन कराते रहते थे इनका अध्यापन कार्य मानो उनकी चर्चाएं, हमारे मस्तिष्कों में विद्यमान रही है। तो प्रभु! हम यह जानना चाहते है ये पृथ्वी कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है? यह पृथ्वी कहाँ ओत-प्रोत हो जाती है? तो ऋषि ने उत्तर देना प्रारम्भ किया हे ऋषिवर! यह जो पृथ्वी, हमें दृष्टिपात आ रही है ये पृथ्वी मानो देखो, आपो में प्रतिष्ठित हो जाती है। आपो में लय हो जाती है और ये पृथ्वी मानो देखो, इस संसार को समेट करके, अपने में धारण करती है और पृथ्वी मानो देखो, अपने में धारण करके और पृथ्वी आपो में लय हो जाती है। आपो में प्रतिष्ठित हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने ऐसा कहा, कि यह पृथ्वी जल में ओत-प्रोत हो जाती है, जल में प्रतिष्ठित हो जाती है इसी में प्रतिकृतियों को प्राप्त कर लेती है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, तो उस समय उपस्थित हो करके ऋषि दालभ्य ने कहा हे प्रभु! जब हम आचार्य के द्वारा अध्ययन करते थे, तो आचार्य हमें इस प्रकार की भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचना करते रहते थे, हम विवेचना जानना नहीं चाहते है, उसको हम जानते है। परन्तु हम यह जानना चाहते है प्रभु, हे भगवन! मानो जब यह आपो यह अप्रतं ब्रहे यह आपो कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है, आपो को और जानना चाहते है?

आपो की प्रतिष्ठा

तो महर्षि ने वर्णन किया, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कि यह जो आपो है, यह अग्नि में ओत-प्रोत ही जाता है, अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह अग्नि भिन्न-भिन्न प्रकार की अग्नि है, जो इसे अपने में समेट लेती है। मानो यहीं अग्नि हैं जो काष्ठ में रहने वाली है, यही अग्नि है जो आपो में रहने वाली है, यही अग्नि है मानो जो वैश्वानर बन करके रहती है, जो ब्रह्मचारियों को तपाती है। यही अग्नि है जो गृहर्पथ्य नाम की बन करके रहती है मानो देखो, जो गृह को ऊंचा बनती है, मानो गृहपथ्य नाम की अग्नि, जब अपने में प्रदीप्त होती है तो गृह पवित्र होते चले जाते है और जब गृहपथ्य नाम की अग्नि मानो अपने में अग्न्याधानं और अपने में प्रदीप्त होती है तो वह विद्यालय को ऊँचा बनाती रहती है और विद्यालय अपने में पवित्र बनते रहते है मानो देखो, आचार्य की प्रतिभा से, आचार्य तपा हुआ, महान और विचित्र होना चाहिएर्। मेरे प्यारे! देखो, वह गृहपथ्य

नाम की अग्नि कहलाती है, एक वैश्वानार की अग्नि जिसमें, मानो देखो, राष्ट्र और मानव समाज तपता रहता है।

अग्नि की प्रतिष्ठा

तो मुनिवरों! देखो, इस सन्दर्भ में मैं विशेष विवेचना नहीं, ऋषि ने कहा है कि मानो अग्नि में आपो प्रतिष्ठित हो जाता है, प्रतिष्ठायाम् इसमें ओत-प्रोत हो जाता है, इसी में लय हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार विभाण्डक मुनि महाराज उपस्थित हुए और विभाण्डक ने कहा हे प्रभु! यह वाक्य हम आचार्य कुल में और माता के द्वार पर अध्ययन करते रहे है क्योंकि माता लोरियों का पान कराती रहती थी, इस प्रकार की हमें शिक्षा प्रदान कराती रहती थी, हम यह जानना चाहते है कि यह जो अग्नि है, यह कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है। उन्होंने कहा यह जो अग्नि है यह मानो देखो, वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है। जहाँ वायु है वहाँ अग्नि है। जहाँ वायु नहीं होती, वहाँ अग्नि भी नहीं होती। मानो देखो, अग्नि ही अब्रणां ब्रह्मः जब विचार आता रहता है, हे ऋषिवर! एक समय हम देखो, शिकामकेतु उद्दालक मुनि के गृह में पहुंच गएं थे जहाँ बेटा! एक अनुसन्धानशाला थी, उस अनुसन्धानशाला में पति-पत्नी दोनों उनकी पत्नी शंकुतका और महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज याग कर रहे थे जब याग हो रहा था, तो हम एक पंक्ति लगा करके विद्यमान हो गये, तो मानो वह यज्ञ में स्वाहा उच्चारण कर रहे थे, जब स्वाहा उच्चारण कर रहे थे तो उनके शब्द मानो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, द्यौ लोक को जाते दृष्टिपात हुए, उनके यन्त्रा में उनकी विज्ञानशाला में मानो देखो, उनके चित्र दृष्टिपात आने लगे, उनके पिता, महापिता, पडपिता उनके भी चित्र दृष्टिपात आने लगे, तो मेरे प्यारे! देखो, हमने ऐसा दृष्टिपात किया, उन यन्त्रों के माध्यम से कि वे यन्त्र मानो उनके महापिता क्या, पच्चीसवें महापिता, पचासवें महापिता के दर्शन, उनके क्रियाकलाप, यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे। मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान हो करके वह द्यौ में समाहित हो जाता है, वह द्यौ से, यन्त्रों के द्वारा जिस काल में लाना चाहते उस काल में ला सकते है। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक बोले हे ऋषिवरों! मानो देखो, ब्रह्मणं प्रमाणं ब्रह्वे कृतं लोकां वाचप्रमाणं वृत्ति वेद का आचार्य कहता है, वेद का मन्त्र कहता है कि मुनिवरों! देखो, यह तो अप्रतम् यह जो अग्नि है अग्नि की धाराओं पर अग्नि की तरंगों पर शब्द गमन करता है, और वह द्यौ लोग में प्रविष्ठ हो ओत-प्रोत हो जाता है। वह द्यौ में उनकी प्रतिष्ठा मानी गई है। यह अग्नि मानो देखो, वायु में प्रतिष्ठित हो जाती है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब ऐसा वर्णन किया तो मुनिवरों! इतने में महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज उपस्थित हुए और पिप्पलाद ने कहा हे प्रभु! हम यह जानना चाहते है कि यह जो वायु है, यह कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है? कहाँ ओत-प्रोत हो जाती है? तो उस समय गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा हे भगवन! मैं इतना जानता हूँ, कि यह जो वायु है, यह अन्तरिक्ष में प्रतिष्ठित हो जाती है। क्योंकि अन्तरिक्ष में ही देखो, ब्रह्मणे विज्ञान, वेद का विज्ञान कहता है, वेद का मन्त्र कहता है कि तीन परमाणु है, उन तीनों प्रकार के परमाणुओं को गति देने वाली वायु है, और जहाँ वह समाहित होते है, गमन करते है वह अवकाश ब्रह्मे क्योंकि बिना अवकाश के भ्रमण नहीं होता, तो वह अन्तरिक्ष कहलाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, यह वाक्य उनके हृदय में समाहित हुआ उन्होंने कहा धन्य है प्रभु तो ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा कि यह जो वायु है, यह अन्तरिक्ष में लय हो जाती है। अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाती है। तो हम द्यौ यं ब्रह्मे ऋहो सम्भवाः वेद का वाक् कहता है कि एक दूसरे से समाहित होता हुआ, बेटा! अन्तरिक्ष में सर्वत्रता में प्रतिष्ठित हो गया है वेद के ऋषियों ने कहा प्रभु! हम यह जानना और चाहते है कि जब यह अवकाश अन्तरिक्ष में लय हो गया, तो यह कहाँ प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। उन्होंने कहा यह महत्तत्व में प्रतिष्ठित हो जाता है। उसी में ओत-प्रोत हो जाता है। मानो उसी में

समाहित होता हुआ, जगत को अपने में समाहित कर लेता है।

महतत्व की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि यहाँ आ करके मौन हो गएं और उन्होंने कहा प्रभु! धन्य है। परन्तु देखो, जैसे मौन हुए, तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से ब्रह्मचारी सुकेता ने और ब्रह्मचारी कवन्धी दोनों ने नतमस्तक हो करके कहा प्रभु! यह ऋषि, मुनि सब मौन हो गये, आपके उत्तर देने से, कि महत्तत्व पर जा करके सब मौन हो गएं है। हे प्रभु! हमने कुछ और ही प्राप्त किया। एक समय हम मानो देखो, मग्ध राष्ट्र में, पूज्यपाद गुरुदेव, भारद्वाज मुनि के साथ, हम श्वेत्ताश्वेतर के साथ में, एक राष्ट्र में पहुँचे, तो वहाँ एक कात्यायन के गृह में हमारा वास हुआ और कात्यायन ने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया था कि यह जो महत्तत्व है यह कहाँ प्रतिष्ठित होता है? इसकी प्रतिष्ठा का उन्होंने प्रश्न किया। तो पूज्यपाद गुरुदेव उस समय मौन हो गये, परन्तु हम तो जानते नहीं थे, बाल्यकाल था। हे प्रभु! वह प्रश्न हमारे मस्तिष्कों में बना ही रहा है। उस प्रश्न का और उत्तर जानना चाहते है? तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियो की शैली बड़ी विचित्र रही है। बेटा! उच्चारण करने की शैली बड़ी विचित्र और महानता में गमन करती रही है। विचार आता रहता है, जब उन्होंने यह प्रश्न किया कि यह महत्तत्व कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? तो ऋषि मुनियो की शैली रही है, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में गतिवान बनाने की।

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने उसे ध्रुवा में ले जाना प्रारम्भ किया उन्होंने कहा कि यह जो महत्तत्व है इसकी प्रतिष्ठा चन्द्रमा में प्रतिष्ठित हो जाती है। यह चन्द्रमा मानो देखो, अमृत का पुंज बना हुआ है, यह सोम कहलाता है। वेद में इसे सोम कहा है। यह सोम के देने वाला है। मानो देखो, कृषि में जाओ, पृथ्वी के गर्भ में जाओ, माता के गर्भ में जाओ, संसार में जो भी गर्भ में वस्तु विकृत होने मानो देखो, स्थिर रहने वाली उसी में देखो, विकृतता में और स्थिरता में भी यह सोम अपने में ही रत्त होता रहता है। यह सोम कहलाता है। तो यह मानो देखो, महत्तत्व सोम में लय हो जाता है। तो यह मानो देखो, ध्रुवा से ऊर्ध्वा में, ऊर्ध्वा से ध्रुवा में गमन कराना है। तो मुनिवरों! देखो, आगे ऋषि कहता है सम्भवब्रह्वे कृतं वाचन्नमं ब्रह्वे व्रताः वेद का मन्त्र कहता है, हे ऋषिवर! हे ब्रह्माणा! हे ब्रह्मचारियों! हे कवन्धि! मानो देखो, ऋषि कहता है कि यह चन्द्रमा मानो देखो, महत्तत्व चन्द्रमा में ओत-प्रोत हो जाता है।

चन्द्रमा की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! देखो, इतने में भी ऋषिवर अपने में उपस्थित हुए, और ब्रह्मणां ब्रहे वाचप्रमाणां ब्रहे ब्रह्मचारी मेरे प्यारे! देखो, इतने में महर्षि सोमकेतु उपस्थित हो करके बोले, कि प्रभु! यह चन्द्रमा कहाँ प्रतिष्ठित होता है? चन्द्रमा कहाँ ओत-प्रोत हो जाता है? तो मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा को ले करके, अपनी आभा में रत्त हो गएं और चन्द्रमां ब्रह्मणा उन्होंने कहा यह चन्द्रमा सूर्य में रत्त हो जाता है। सूर्य से प्रतिष्ठा पाता है, सूर्य में ही मानो यह प्रतिष्ठित हो जाता है। उसी में लय हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, सूर्य को हमारे वैदिक साहित्य में कही उदेन कहा है, कहीं भास्कर कहा है, कहीं वृषभ कहा है, कहीं मेरे प्यारे! अदिति कहा है, कहीं इसको अपने रूपों में मुनिवरों! देखो, अस्सुतम् कहा है, यह अपने में बेटा! बड़ा विचित्र है, आदित्य कहलाता है। तो ये चन्द्रमा, आज मैं सूर्य की विवेचना देने नहीं आया हूँ, यह केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ व्याख्यान देने के लिए नहीं आया, एक परिचय कराना हमारा कर्तव्य है।

सूर्य की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! देखो, यह चन्द्रमा सूर्य में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह सूर्य अपने में महान है। यह सूर्य द्यौ

अम्ब्रह्मे कहलाता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा यह द्यौ से प्रकाश लेता है और द्यौ से प्रकाश ले करके ये चन्द्रमा को देता है तो उसी प्रकाश को। यह अमृत बनाता है और सूर्य उसी प्रकाश को बिखेर करके, प्रकाश रूप बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार विवेचना दी तो मुनिवरों! देखो, अप्रतम महर्षि वैशम्पायन उपस्थित हुए, और वैशम्पायन ने कहा प्रभु! जब हम आचार्यो के द्वारा, अध्ययन करते रहे तो मानो वे यह वाक्य भी वर्णन कराते रहे, हम यह जानना चाहते है यह सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह जो सूर्य है, यह गन्धर्व लोकों में ओत-प्रोत हो जाता है यह गन्धर्व लोक है, जिसमें ये सूर्य समाहित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने बड़ी ऊर्ध्व चर्चाएं की है, यह मुनिवरों! देखो, सौर मण्डल का अन्तिम मनका होता है। अन्तिम मानो देखो, सूत्र में जब सूत्रित किए जाते है, सब मण्डल, तो अन्तिम मानो देखो, वह अंगगृत कहा गया है। तो मेरे पुत्रो! देखो, कैसा मेरे प्रभु का ब्रह्माण्ड है। आज मैं माला बनाने लगू तो बड़ा विचित्र दृष्टिपात होने लगेगा, हमारे विज्ञानवेत्ता बेटा! जब एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके मनन करते रहे है और उसको समाधि के द्वारा उसका अध्ययन और उसको अपने अन्तर्हृदय में, परमात्मा के हृदय से मिलन करते रहे, तो उसका ब्रह्माण्ड में स्पष्टीकरण होने लगता है।

मण्डलो की निहारिका

मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहता है, भारद्वाज की विज्ञानशाला में और महर्षि शिकामकेतु उद्दालक की विज्ञानशाला, दोनों विज्ञानशाला बड़ी विचित्र रही है अपने काल में, मानो देखो, भारद्वाज मुनि के यहाँ जब वैज्ञानिक जन अपने में अनुसन्धान करने लगे तो माला को एक समय अपने में धारण करने लगे, माला को जानने लगे कि एक दूसरी माला कैसे एक दूसरे में पिरोयी जाती है, मेरे पुत्रो! उन्होंने सबसे प्रथम पृथ्वियों को गणना में लाना प्रारम्भ किया, पृथ्वियों को जब गणना में लाने लगे तो ऋषियों ने बेटा! देखो, तीस लाख पृथ्वियों को जाना, तीस लाख पृथ्वियाँ होती है। तीस लाख पृथ्वियों की माला बन जाती है। और उस माला को कोई न कोई धारण करता है। मेरे प्यारे, देखो, उस माला को धारण करने वाला सूर्य है, सूर्य इतना विशाल मण्डल है जिसमें तीस लाख पृथ्वियाँ समाहित हो जाती है। मेरे पुत्रो! देखो, जब सूर्यो की माला बनने लगी, ऋषि मुनि एकान्त विद्यमान हो करके, अपनी प्रवृत्तियों को जब लघु मस्तिष्क में ले गये, ब्रह्मरन्ध्र में ले गएं मेरे प्यारे! देखो, उसको क्रिया में लाना प्रारम्भ किया, तो सूर्य की जब गणना प्रारम्भ होने लगी तो बेटा! एक सहस्र सूर्यो की गणना की, एक सहस्र सूर्यो की माला बनी बेटा! उसको मानो देखो, बृहस्पति ने अपने में धारण कर लिया। बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है, जिसमें बेटा! एक सहस्र सूर्य समाहित हो जाते है। मेरे प्यारे, देखो, एक सहस्र बृहस्पतियों की माला बनी, उसको आरूणि मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, बेटा! देखो, एक सहस्र आरूणि मण्डलों की माला बनी, तो उसको ध्रुव मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र ध्रुव मण्डलों की माला बनी, तो उसको मूल नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र मूल नक्षत्रों की माला बनी बेटा! उसको देखो, अव्रतम स्वाति मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र स्वाति मण्डलों की माला बनी तो उसे अचंग मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र अचंग मण्डलों की माला बनी तो उसको रोहिणीकेतु मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र रोहिणीकेतु मण्डलों की माला बनी तो जिसको मेरे पुत्रो! देखो, स्वाम्भूत (सोमकेतु) मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, सोमभूत एक सहस्र मण्डलों की माला बनी तो बेटा! देखो, एक सहस्र मण्डलों को धारण करने वाला बेटा! देखो, वह गन्धर्व मण्डल बना है, वह गन्धर्व मण्डलं ब्रह्मणे इसीलिए एक दूसरे में लय होना उन्होंने स्वीकार किया। मेरे प्यारे! देखो, इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बनता है और मुनिवरों! देखो, एक अरब पिचानवें करोड़ नवासी लाख उन्नचस

हजार पाँच सौ इक्सठ के लगभग इतने सौर मण्डलों की प्रतिभां ब्रह्मणां व्रते इतने सौर मण्डलों की बेटा! एक आकाश गंगा का निर्माण हो गया। मेरे प्यारे प्रभु ने कितना विचित्र इस जगत को रचा है, जब विचार आता है तो बेटा! देखो, मस्तिकां शान्तं ब्रह्मणां कृताः विचार शान्त हो जाता है। मेरे प्यारे! आगे ऋषि शान्त नहीं रहे, ब्रह्माण्ड को गणनान्त में लाते ही चले गये, उन्होंने एक अरब छियानवें करोड़ और मुनिवरों! इक्यासी लाख इकतालीस हजार और पाँच सौ बावन के लगभग इतनी आकाश गंगाओं की एक अवन्तिका बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो, पौने दो अरब के लगभग अवन्तिकाओं की एक निहारिका बन जाती है यहाँ आ करके ऋषि मौन हो जाते है।

मेरे प्यारे! देखो, अनन्तमयी ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने वाला जब एक दूसरे को माला में पिरोना प्रारम्भ कर जाता है तो मुनिवरों! देखो, वह इतना जिज्ञासु इतना यथार्थी बन जाता है कि उसे प्रभु का ब्रह्माण्ड ही उसके समीप आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, वह कितना अनूठा विज्ञान है, मेरे प्यारे प्रभु का, कैसा यह अमूल्य जगत है। परन्तु देखो, ऋषि मुनि जब यह निर्णय देने लगे, गाड़ीवान रेवक मुनि ने जब यह निर्णय दिया तो मुनिवरों! देखो, इतने में देखो, महर्षि नारद मुनि महाराज उपस्थित हुए और देवर्षि नारद ने कहा प्रभु! यह ब्रह्माण्ड की चर्चा तो हम सर्वत्र अध्ययन और समाधिष्ट और ब्रह्माण्ड की आभा दृष्टिपात करते रहते है। हम यह जानना चाहते है यह गन्धर्व कहाँ समाहित होता है?

गन्धर्व की प्रतिष्ठा

उन्होंने कहा यह गन्धर्व, इन्द्र लोकों में समाहित हो जाता है। हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! देखो, इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का है, इन्द्र नाम राजा का है, इन्द्र नाम बेटा! सूर्य का है, इन्द्र नाम आत्मा का है, इन्द्र नाम मुनिवरों! देखो, इस विद्युत को भी कहते है। मानो देखो, इन्द्रो भवस्रम्ब्रह्मा इन्द्र के बहुत से पर्यायवाची शब्द है, आज इन पर्यायवाचियों में न जा करके केवल यह कि इन्द्र, इन्द्र लोक को भी कहते है जिसमें ये लोक समाहित हो जाते है।

इन्द्र की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा प्रभु! यह वाक्य तो आपका यथार्थ है परन्तु हम यह जानना चाहते है कि यह इन्द्र कहाँ समाहित होता है, उन्होंने कहा इन्द्र प्रजापति में समाहित होता है। प्रजां ब्रह्मणां प्रजापते मेरे प्यारे! प्रजापति परमपिता परमात्मा को कहते है। जो इसको रचाने वाला है। प्रजापति। माता और पितर को भी प्रजापति कहते है और राजा को भी प्रजापति कहते है, प्रजां भवितं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, ये प्रजापति इन्द्र में समाहित हो जाता है। इन्द्र हमारे यहाँ सोम को भी कहा गया है। सोमां ब्रह्मणां इन्द्रो भवसम्बद्धे मेरे प्यारे! इन्द्र में समाहित होता हुआ, यह संसार ही दृष्टिपात आता है और इन्द्र मानो प्रजापति में, क्योंकि प्रजापति देखो, सोम को पान करके प्रजा को उत्पन्न करता है। प्रजामयी बन जाता है जगत, एक दूसरा प्रजामयी बन करके मुनिवरों! देखो, अपने में रत्त हो जाता है।

प्रजापति की प्रतिष्ठा

विचार आने लगा, इसकी विवेचना देना नहीं चाहता हूँ, पुत्रो! विचार केवल यह कि ऋषि ने पुनः प्रश्न किया कि हे प्रभु! यह प्रजापति कहाँ समाहित हो जाता है, यह कहाँ प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है? उन्होंने कहा यही प्रजापति है जो मानो देखो, यज्ञ में प्रतिष्ठित हो जाता है। याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। यागां रुद्रो भागं ब्रह्मणा यागा क्योंकि यह संसार, जितना भी है, यह भी एक याग हो रहा है। जितना मानो सुक्रियाकलाप है, वह सर्वत्र एक प्रकार का याग है। उस याग में प्रजा ओत-प्रोत हो जाती है। यह प्रजापति उसी में प्रतिष्ठित हो जाता

है। मानो देखो, याग हमारे यहाँ यज्ञं ब्रह्मे देखो, जहाँ पुरोहित विद्यमान हो, ब्रह्मा, उद्गाता, अध्वर्यु विद्यमान हो मानो देखो, उस स्थली को याग कहा जाता है। तो मुनिवरों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की तो उन्होंने कहा कि महाराज! याग कहा प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा याग दक्षिणा में ओत-प्रोत हो जाता है। याग में देखो, जब यज्ञमान अपने पुरोहित को दक्षिणा प्रदान करता है तो द्रव्य देने का नाम दक्षिणा नहीं है। दक्षिणा का अभिप्राय यह कि हे यज्ञं ब्रह्मे हे यज्ञमान! तू मुझे दक्षिणा प्रदान कर। वह दक्षिणा क्या है?

माता कौशल्या की प्रतिष्ठा

मुनिवरों! देखो, दक्षिणा कहते है कि जितनी भी तेरे हृदय में त्रुटिया है उनकी दक्षिणा मुझे प्रदान कर, दक्षिणा रूप में मुझे प्रदान कर, जिससे मैं दक्षिणावान बन जाऊ और याग में सफलता आ जाए, जैसे मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है जब देखो, माता कौशल्या ने दक्षिणा प्रदान की तो आचार्य ने यही कहा, पूज्य गुरुओं ने, कि तुम मुझे यह दक्षिणा दो कि अपने गर्भ से एक महान सन्तान को मुझे जन्म देना है। तो वह उन्हें प्रदान की, और राष्ट्र के अन्न का संकल्प कराया और यह कहा कि राष्ट्र का अन्न जो होता है वह रजोगुण, तमोगुण से सना हुआ होता है इसलिए उसे पान नहीं करना। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण है कौशल्या ने प्रतिज्ञा की और प्रतिज्ञाबद्ध हो करके उन्होंने राष्ट्र का अन्न ग्रहण नहीं किया। इसी प्रकार देखो, यज्ञमान जब दक्षिणा देता है, तो कहता है कि मेरी दक्षिणा को आप स्वीकार करो। मुनिवरों! देखो, जितनी त्रुटियाँ होती है, उनको देने का वह संकल्प करता है और वह उन्हें प्रदान कर देता है, आचार्य उन्हें स्वीकार कर लेता है।

दक्षिणा की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, इसका नाम दक्षिणा है। तो ऋषि ने कहा प्रभु! यह दक्षिणा कहा ओत प्रोत होती है, उन्होंने कहा देखो, यह दक्षिणा श्रद्धा में, श्रद्धामयी संसार है, सर्वत्र जगत एक श्रद्धा में ओत-प्रोत रहने वाला है। यह दक्षिणा भी श्रद्धा में रहती है श्रद्धा से ही मानव इसे प्रदान करता रहता है। मेरे पुत्रो! नारद जी ने कहा हे प्रभु! यह श्रद्धा कहाँ रहती है? उन्होंने कहा श्रद्धा हृदयं ब्रह्मणां व्रते देवाः यह हृदय में ओत-प्रोत हो जाती है, हृदय में ही तो मानो देखो, श्रद्धा की उपलब्धि होती है। हे हृदय ग्राही! तुम हृदय को स्वच्छ बनाना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो, यही वाक्यं ब्रहे व्रतम् ऋषि मुनि देखो, इसकी चर्चाएं करते रहे है और ये जो हृदय है यह मुनिवरों! देखो, परमात्मा के हृदय से समावेश हो जाता है। मुनिवरों! देखो, साधक को मोक्ष की पगडंडी प्राप्त हो जाती है।

तो मेरे प्यारे! विचार क्या, विचार आता रहता है यह हृदय परमात्मा के हृदय से इसका समन्वय होना चाहिए। जब हृदय का परमात्मा के हृदय से समन्यव हो जाता है तो ब्रह्माण्ड उसके लिए खिलवाड़ बन जाता है। ब्रह्माण्ड अपने में वृत्तियों में रत्त रह जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! ऋषि कहता है गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज, मुनिवरों! देखो, इस वाक् का उत्तर देते, नारद जी मौन हो गये, शान्त हो करके अपनी स्थली पर विद्यमान हो गये। उन्होंने कहा कि परमात्मा का हृदय, मानव का हृदय, मुनिवरों! देखो, हृदय से हृदय की प्रतिभा का जन्म होता है। हृदय मानो देखो, हृदय से श्रद्धा, श्रद्धा से दक्षिणा, दक्षिणा से याग, याग से प्रजापति, प्रजापति से इन्द्र, इन्द्र से मुनिवरों! गन्धर्व और गन्धर्व से सूर्य और सूर्य से चन्द्रमा तो यह मानो देखो, ऊर्ध्वा से ध्रुवा में और वहाँ ब्रह्मणे ब्रहे देखो, ध्रुवा से ऊर्ध्वा को। ऊर्ध्वा क्या है? मानो देखो, यह जगत पृथ्वी आपो में, आपो अग्नि में और अग्नि वायु में और वायु अन्तरिक्ष में अन्तरिक्ष महतत्व में।

ऋषि मुनियो की शैली

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों के विचार विनिमय करने की जो शैली रही है वह बड़ी विचित्र रही है

और वह विचित्र क्या? मानो ध्रुवा से ऊर्ध्वा में, उर्ध्वा से ध्रुवा में इस जगत को जानने का उन्होंने प्रयास किया।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, विचार क्या, हे माता वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है, यहाँ बेटा! परमपिता परमात्मा के गर्भ में सब विद्यमान है इसीलिए माता के गर्भ से उपराम हुआ, पृथ्वी माता के गर्भ में आ गए और जब पृथ्वी माता के गर्भ से उपराम हुआ तो वह जो मेरी प्यारी माता चैतन्य प्रभु है, जो देवतव है मानो देखो, उसी में यह मानव खिलवाड़ करने वाला है, अपने आनन्द में आनन्दित हो जाता है। तो विचार क्या, मुनिवरों! यह तीन प्रकार की वसुन्धरा कहलाती है। हे वसुन्धरा! जननी वसुन्धरा है, पृथ्वी वसुन्धरा है, और परमपिता परमात्मा वसुन्धरा है, जिसके गर्भ में हम सब रत्त रहते है। उसी से चेतना को पान करके विज्ञान में रत्त रहते है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं, कल प्रकट करूँगा, आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हमें वसुन्धरा के गर्भ में मानो देखो, उसके गर्भ को विचारना चाहिए, उस विज्ञानवेत्ता के मानो विज्ञान को अपने में लाने का प्रयास करना चाहिए, विज्ञानवेत्ता कितना महान है। आओ मेरे प्यारे! आज का विचार, अब समाप्त, समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रकट करेंगे आज का वाक् समाप्त, अब वेदो का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः यं बृवरुणा रथं आ पा रेवं भद्रा। ओ३म् यशश्राम............ । दिनांक-१६-०९-८८-गजरौला,मुरादाबाद

८ विष्णु राजा के चतुर्भुज १७ ०९ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, जो देवतव है, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे थे, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है और कोई स्थली ऐसी नहीं है, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो मानो समुद्रों की कोई भी तरंग ऐसी नहीं है और पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नहीं, जहाँ वे विद्यमान न हो। तो इसीलिए जब हम परमपिता परमात्मा को सर्वज्ञ और एक-एक कण कण में स्वीकार करते है, तो हमारा मानवीयतव और मानवता पवित्रता की आभा में रत्त होने लगती है, इसीलिए हमारे यहाँ वेद के साहित्य में, वेद मन्त्रों में, उस परमपिता परमात्मा को सर्वज्ञ और महानता में उसे परिणत किया गया है।

विष्णु के पर्यायवाची

तो आओ, आज का हमारा वेदमन्त्र जहाँ परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन और उसकी महिमा का वर्णन करता है वहाँ वे परमपिता परमात्मा पालन करने वाला है? विष्णु ध्रुवा रथस्सुतम् मानो वह विष्णु ध्रुवा है और वह पालन करने वाला है, जो पालन करता है वह नम्र और उसकी जो वृत्तियाँ हैं वे ध्रुवा है, गमन करने लगती है। जैसे माता का नाम विष्णु है मानो वह ध्रुवा में रहती है वह अपने को नम्र बना लेती है इसी प्रकार परमपिता परमात्मा जो विष्णु है जो हम सबका कल्याणकारी है और विष्णु का एक ही स्वरूप है कि वह सत्य है मानो वह पालन करने वाला है। जो पालना करता है वहीं तो महान देवत्यां रेवं विष्णु वह ध्रुवा में गमन करने लगता है। हमारे यहाँ पर्यायवाची शब्दों में, परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है जहाँ परमात्मा का नाम विष्णु है वहाँ माता का नाम भी विष्णु कहलाता है। जहाँ माता का नाम विष्णु है, वहाँ आत्मा का नाम भी विष्णु है। जहाँ मुनिवरों! देखो, अव्रतम् आत्मा का नाम विष्णु, वहाँ यज्ञोमयी विष्णु है, जहाँ यज्ञोमयी विष्णु है, वहाँ सूर्य भी नाना रूपों में विष्णु की आभाएँ हमें प्रगट होती रहती है, अथवा हम उनका अनुसरण करते रहते है।

पालक विष्णु

तो विचार विनिमय क्या, परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है। वहाँ राजा का नाम भी विष्णु माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ विष्णु की बहुत-सी विवेचनाएं आती रहती है, परन्तु विष्णु नाम माता का है जो पालना करने वाली है। हे माता! तुझे वेद विष्णु कहता है और विष्णु का अभिप्रायः यह है कि जो पालन करती है। माता पालन कर रही है, वह विष्णु है। मेरे प्यारे! देखो, बालक का पालन कर रही है, वही शासन कर रही है, वही तमोगुण में उत्पत्ति के मूल में विद्यमान है। बेटा! एक सूत्र है, उस सूत्र में तीन मनके पिरोएं हुए है और उन मनको का नाम है सत, रज और तम मानो देखो, ये तीन गुण कहलाते है गुणाधानं गुणं ब्रह्मण व्रता देवत्वं गुणाः मेरे प्यारे! देखा, अपने-अपने गुणों में जो बरतने वाले है। जैसे सत्य में पालना है, रजोगुण में ही मुनिवरों! देखो, शासन है और तमोगुण में उत्पत्ति का मूल विद्यमान है। तो इसको हमारे यहाँ विष्णु की विवेचना मानी गई है।

तो आज का हमारा वेदमन्त्र विष्णु रुद्र भागं ब्रह्मणं लोका वाचा वायुः सम्भवाः मेरे प्यारे! देखो, उस परमपिता परमात्मा का नामोकरण विष्णु के रूप में विद्यमान रहता है। हे विष्णु! तू महान और पवित्रता की वेदी

पर विद्यमान रहता है, जिस आभा में अभ्योदय और मानवीयता का मुनिवरों! देखो, वृत्त माना गया है। आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विष्णु की विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, विचार विनिमय यह कि आज जब हम विष्णु की विवेचना में प्रवेश करते है हे ममत्वां ब्रह्मणं व्राताः देवं रथाः वायु सम्भवं लोकां वायुं रेवं ब्रह्मणा लोका वृत्ति देवाः मेरे प्यारे! हमारे यहाँ विष्णु की बड़ी विशेष महिमा का वर्णन आता रहता है। हे विष्णु! तू महान और वित्तं ब्रह्मा आत्मा है। आत्मा मानो देखो, विष्णु को कहा गया है। मुनिवरों! देखो, उस विष्णु का नाम आत्मा है जो हमारे शरीरों में व्याप्त रहता है। जब तक मुनिवरों! देखो, ये अमृतं ब्रह्मलोकां वायु रथं ललितं ब्रह्मणा कृताः आत्मा यह आत्मा का नाम विष्णु है। जो हमारा कल्याणकारी है। जब तक इस मानव के शरीर में वह गमन करता है, मानव के शरीर में रहता है तब तक मानव का शरीर चेतनित बना रहता है और जब यह आत्मा निकल जाता है आत्मा गमन कर जाता है तो मानव शून्य गति को प्राप्त हो जाता है।

तो इसीलिए हमारे यहाँ वैदिक साहित्य वालो ने बेटा! आत्मा का नाम विष्णु माना है। हे विष्णु! तू कल्याकारी है और जहाँ आत्मा का नाम विष्णु है, वहाँ राजा का नाम भी विष्णु माना गया है और सूर्य का नाम भी विष्णु है जो ऊर्ज्वा देने वाला है, प्रकाश के देने वाला है। जो प्रकाशमयी कहलाता है उसका नाम मुनिवरों! देखो, विष्णु माना गया है। हे विष्णु! तू कल्याण कारक है, राजन्नं ब्रह्म लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भगवान राम के यहाँ प्रातःकालीन बेटा! याग होता रहता था और विष्णु अपने राष्ट्रवेत्ताओं को उपदेश देते रहते थे और अपनी आभा में, अपने उग्र रूप में धारण कराते रहते थे।

भगवान राम का यज्ञ पर उपदेश

तो मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है, जिस काल में भगवान राम प्रातःकालीन बेटा! याग में परिणत रहते थे यागां भवितां रुद्रं भागं वायु सम्भवं लोकां वायु रेवाकृति लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, राम का यह उपदेश रहा, राष्ट्रवेत्ताओं से, राष्ट्र कर्मवेत्ताओं से देखो, यज्ञ प्रारम्भ किया, यज्ञ के पश्चात उनका उपदेश प्रारम्भ हुआ और उपदेश में विष्णु की विवेचना करने लगे और राम बोले कि हम सब मानो एक यज्ञशाला में विद्यमान है, उन्होंने कहा यज्ञोमयी विष्णु मानो देखो, यज्ञ एक प्रकार का विष्णु है, जो कल्याण कारक है मानो जो वायु मण्डल का शोधन करता है, प्रदूषण को जो समाप्त करने वाला है वह मानो देखो, यज्ञोमयी विष्णु कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, याग, राष्ट्र, समाज और वायु मण्डल को पवित्र बनाता रहता है क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख कहा गया है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु में एक मानव हूत कर रहा है, प्रहूत कर रहा है और वह कहता है यज्ञोमयी विष्णु।

याग से वायुमण्डल का शोधन

मेरे प्यारे! वह मानो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी विष्णु कहलाता है। जो हमारा वृत्तं देवत्वं ब्रह्मणाः जो वायुमण्डल को शोधन कर देता है। हमारे ऋषि-मुनियों का परम्परागतों से ही, यह चयन रहा है, कि वह जिस भी स्थली पर विद्यमान होते है मानो अपने वायुमण्डल को बनाने के लिए, दूषित वायुमण्डल को समाप्त करने के लिए वह मानो याग कर्म करते रहे और याग से वायु मण्डल का शोधन हो जाता है। उससे बेटा! देखो, वह तपस्या के लिए परिणत होते है हमारे यहाँ कागभुषुण्ड जी की चर्चाएँ आती रहती है। महर्षि लोमश मुनि का जीवन भी इसी प्रकार रहा है।

देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी अपने आसन पर विद्यमान हो करके याग करते थे। एक समय बारह वर्ष का उन्होंने अनुष्ठान किया और उसके पश्चात याग सम्पन्न करके वह मौन-याग में लग गये, आत्म याग में

परिणत हो गये, साधना करने लगे। तो मेरे पुत्रो! देखो, वह साधना का एक नृत्त है।

स्वर्ग तुल्य गृह

परन्तु देखो, भगवान राम ने कहा हे राष्ट्रवेत्ताओं! जहाँ मानो देखो, याग का नाम विष्णु है, जिससे हमारा कल्याण होता है जैसे एक स्थान है और द्वितीय स्थान है। एक स्थान पर मानव दर्शनों की चर्चा कर रहा है, याग कर रहा है, विष्णु की उपासना कर रहा है और एक स्थली पर उसी के द्वितीय भाग में मानो कलह रहता है तो मुनिवरों! देखो, कलह वाला गृह नारकिक कहलाता है और जहाँ दर्शनों का, याग इत्यादियों का क्रियाकलाप होता हो, मुनिवरों! देखो, वह गृह स्वर्गतुल्य कहलाता है। वह स्वर्गश्च कहलाता है। तो विचार क्या मुनिवरों! इसीलिए हमारे यहाँ याग को विष्णु कहा है जो पवित्र है, महान है, पवित्रता में रत्त रहने वाला है।

विष्णु राष्ट्र

तो मेरे प्यारे! भगवान राम की, अपने राष्ट्रवेत्ताओं से, याग के पश्चात उपदेश मंजरी प्रारम्भ हुई। उन्होंने कहा कि हम अपने राष्ट्र को ऊंचा बना सकते है। तो राष्ट्र उस काल में ऊँचा बनता है जब मानो देखो, राष्ट्र, में विष्णु-राष्ट्र की स्थापना हो जाए। मेरे पुत्रो! देखो, विष्णु किसे कहते है राजन्नं ब्रह्मा विष्णुः वेद की एक आख्यिका कहती है कि राजा का नाम विष्णु है और जिस राजा के चार भुज है और जो चार भुज वाला राजा है, वह विष्णु कहलाता है। इसीलिए विष्णु के चार भुज कहलाते है, चार भुजों वाला विष्णु है। तो मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने कहा अपनी उपदेश मंजरी में, यज्ञशाला के मध्य में विद्यमान हो करके राष्ट्रवेत्ताओं के मध्य में, उनमें दार्शनिक और देखो, यज्ञवेत्ता और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ता भी विद्यमान थे।

मेरे प्यारे! राम का उपदेश प्रारम्भ होने लगा, उन्होंने कहा-हे राष्ट्रवेत्ताओं! अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना हो तो राष्ट्र में पंचीकरण होना चाहिए। पंचीकरण उसे कहते है जहाँ पाँच यागों का मानो विधान हो और पंच प्रकार के याग अपने यहाँ होने चाहिए। प्रत्येक गृह में, कोई भी मानव एक दूसरे का ऋणी न रहे। माता-पिता पुत्र के ऋणी न रहे और पुत्र मुनिवरों! देखो, माता-पिता का ऋणी न रहे। ऐसा ऋणाधानं ब्रह्मणे मेरे प्यारे! कोई भी एक-दूसरे का ऋणी न रहे। तो हमारा राष्ट्र और सामाजिक जीवन तब ही ऊँचा बनता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक मानव का कर्तव्य है, प्रातःकालीन ब्रह्म का चिन्तन करना, उसके पश्चात देव पूजा करना, हवि प्रदान करना, अग्नि के मुखारबिन्दु में, उसके पश्चात हूत अहूतां ब्रह्मणांह्रे मेरे प्यारे! देखो, वह देवां अतिथ्यप्रह्वा अतिथि सेवा होनी चाहिए मानो देखो, बलिवैश्व और मुनिवरों! देखो, अमृतं ब्रह्मणा वायु सम्भव ब्रह्मे देवताओं की आभा में मानव को रत्त रहना चाहिए। मैं इसकी मीमांसा करने नहीं जा रहा हूँ, केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए और मुनिवरों! देखो, उसकी आभा में विशेष जाने के लिए नहीं, केवल विचार यह कि पंचीकरण, राम का यह उपदेश रहा है, अपने राष्ट्र में कि प्रत्येक गृह में प्रातःकालीन सुगन्धि होनी चाहिए, कहीं वेद मन्त्रों की ध्वनियाँ हो, मानो अग्न्याधान करते हुए साकल्य की सुगन्धि हो, तो मानो देखो, वह विष्णु-राष्ट्र कहलाएगा।

राजा विष्णु के चार भुज

राजा के राष्ट्र में मानो चार भुज कहलाते है। सबसे प्रथम भुज में पद्म होता है राजा के राष्ट्र में चरित्र और मानवीयता होनी चाहिए। जब राजा के राष्ट्र में बेटा! चरित्र ऊँचा होता है तो पवित्रता छा जाती है और वह विष्णु राष्ट्र कहलाता है। हे विष्णु! तू कल्याण कारक है, हे विष्णु! तू आ, हमारे राष्ट्र में देखो, ओत-प्रोत हो करके प्रजा को महान बना। मेरे प्यारे! देखो, वह विष्णु राजन्नं ब्रहे उसके प्रथम भुज में मानो देखो, पद्म होना चाहिए, चरित्र और मुनिवरों! देखो, मानवीयता, पवित्रता में गमन करनी चाहिए और द्वितीय भुज में गदा होनी चाहिए। राजा का कर्तव्य है देखो, कोई आततायी प्राणी हो जाए, तो बेटा! उसको शिक्षा देनी चाहिए, यदि वह

ज्ञान से स्वीकार न कर सके तो आगे गमन करते हुए उसको दण्डित करना चाहिए। गदा का अभिप्रायः यही है कि राष्ट्र के प्रहरी ऊँचे हो और चरित्रवान बन करके अपने राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाने वाले हो।

गदा

मानो देखो, राजा के राष्ट्र में एक मानवीयता का प्रसार होना चाहिए। गदा का अभिप्राय यही है कि गदा से आक्रमण करना नहीं है, गदा से दमन करना नहीं है, उसे ज्ञान से शिक्षित बनाना है और ज्ञान से यदि स्वीकार न करें तो उसको दमन प्रवृत्ति भी अपनानी चाहिए, जिससे देखो, राष्ट्र में शुद्धिकरण हो जाए। राष्ट्र में शुद्धिकरण तब हो जाता है जब आततायियों को दण्डित किया जाए। चाहे वह ज्ञान के द्वारा, चाहे वह दण्ड के द्वारा, महापुरुषों की महानताओं की रक्षा होनी चाहिए। मानवता की रक्षा, और आततायी को दण्डित करना, यह गद्दा का अभिप्राय कहलाता है।

चक्र

परन्तु तृतीय भुज में हमारे यहाँ चक्र होना चाहिए। चक्र का अभिप्राय यह है मुनिवरों! देखो, राजा के राष्ट्र में अपनी संस्कृति, अपना विधान होना चाहिए। जिससे उसका इतना ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप राष्ट्र के सम्बन्ध में, अपने जीवन के सम्बन्ध में, इतना विचित्र होना चाहिए जिससे देखो, द्वितीय राष्ट्र उसका अनुसरण करने वाले हो और द्वितीय राष्ट्र जब अनुसरण करते है तो राष्ट्र में मानो जो चक्र ध्वनि है, जो चक्रिका है वह सर्वत्र राष्ट्रों में मान्य हो जाती है जैसे राजा प्रातःकालीन सूर्य उदय होने से पूर्व तारा मण्डलों की छाया में, जब अपने आसन को त्याग देता है अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके मानो देखो, वह अपने में परमपिता परमात्मा को ध्यानावस्थित हो जाता है और वह याग कर्म करने के पश्चात राष्ट्र में मानो शिक्षा दे करके और अपने पुरोहितों की आज्ञा पा करके, ब्रह्मवेत्ताओं की आज्ञा पा करके जब वह राष्ट्र के क्रियाकलाप में परिणत हो जाता है तो उसका शुद्धिकरण हो जाता है। हे राजन! तेरे तप की जो महिमा है, तेरे तप का जो उग्र रूप है वही तो मानो देखो, समाज में प्रसारित हो जाता है वहीं जगत में प्रसारित हो करके महानता को गतिवान बनाता है।

चक्र संस्कृति का वाहक

मेरे प्यारे! देखो, यह वाक्य जब भगवान राम ने कहा कि चक्र होना चाहिए, तुम्हें प्रतीत होगा, मुझे महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे आज्ञा दी कि मानो तुम्हारे भुज में चक्र होना चाहिए। तो मैंने मानो देखो, उस चक्र को अपनाया, जिस चक्र को अपना करके देखो, सर्वत्र राष्ट्रों में भ्रमण किया और आततायी को दण्डित किया और अपनी संस्कृति का प्रसार किया। जब संस्कृति का प्रसार किया जाता है निषाद को मानो अपनी संस्कृति का प्रसार कराया, पातालपुरी में अहिरावण को नष्ट करके वहाँ हनुमान के पुत्र मकरध्वज को वहाँ का धिराज बनाया और अपनी संस्कृति का प्रसार किया। वह जो लंकापुरी कहलाती मानो देखो, राजा रावण को नष्ट करके, विभीषण को वहाँ का राज दे करके, अपने चक्र, संस्कृति का प्रसार किया। परन्तु देखो, नारान्तक को नष्ट करके वहाँ के राजवेत्ताओं को देखो, वहाँ सुनेतकेतु नाम के राजा को राज सभा का सभापति बनाया, राजा बनाया और अपनी संस्कृति का प्रसार किया मानो देखो, यहाँ इन्द्रपुरी को विजय करने वाले सर्वत्र नष्ट करके अपनी संस्कृति का ओजस्तव में प्रसार किया।

तो प्रसार करने का अभिप्राय यह कि अपनी संस्कृति होनी चाहिए, चक्र का अभिप्राय यही होता है, चक्र उसी को कहते है जहां मानो देखो, संस्कृति, अपनी मानवीयता हो, अपने जो सात्त्विक क्रियाकलाप है उनको अपने में धारण करने वाले हो, समुद्र के तटों पर देखो, सुरसा रहती थी। सुरसा को नष्ट करा करके वहाँ अपनी संस्कृति का प्रसार किया। तो परिणाम यह कि मानो देखो, राजा के तृतीय भुज में चक्र होना चाहिए। भगवान

विष्णु के मानो देखो, तृतीय भुज में चक्र होता है। प्राण रूपी चक्र होता है। इसी प्रकार राजा के यहाँ अपने विचारो का, अपनी सुसज्जिता का मानो चक्र होना चाहिए। वही चक्र है जो मानो देखो, राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाने वाला हो।

संस्कृति से राष्ट्र

मेरे प्यारे! भगवान राम ने कहा-हे राष्ट्रवेत्ताओं! राष्ट्र को तुम उसी काल में बना सकते हो जबकि तुम्हारी संस्कृति, महानता में गमन करने वाली हो और महान गमन करते हुए उसी में रत्त रहने वाला, समाज हो। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या है कि हम मुनिवरों! देखो, चक्र को अपनाए, अपनी संस्कृति, अपनी मानवीयता को मानो नष्ट न हो पाए ऐसे द्वितीय राष्ट्र के प्रभाव में न परिणत हो जाए, जिससे आगे आने वाला समाज मानो समाप्त हो जाए, और राष्ट्र की प्रणाली समाप्त हो जाए। अपनी प्रणाली पवित्रता में गमन करने वाली है। मेरे प्यारे! देखो, वास्तव में अपनी प्रणाली कोई नहीं होती, जो क्रियाकलाप पवित्र होते है तो उसको संसार अपनाने के लिए तत्पर हो जाता है।

भगवान राम द्वारा संस्कृति का प्रसारण

तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम ने कहा-हे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम्हें तो प्रतीत ही है देखो, मैंने अपने वर्णतं ब्रह्मा, मुझे राम कहते हैं, परन्तु मैं अपने प्रभु की आज्ञा पा करके और अपने मानो देखो, विष्णु की आभा में, वेद के मन्त्रों के आधार पर, पूज्यपाद गुरुदेव के आदेशानुसार मैंने माता-पिता की आज्ञा का पालन किया। मैंने चक्र को इस संसार में और पृथ्वी मण्डल पर प्रसारित किया।

मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा कि चतुर्थ जो स्थल है, वह भुज है विष्णु का, मेरे प्यारे! देखो, वह ध्वनि ब्रह्मणां सम्तं ब्रहा, वह शंख ध्वनि कहलाती है। शंख ध्वनि जिस राजा के राष्ट्र में होती है उस राजा का राष्ट्र पवित्र होता है, वह विष्णु राष्ट्र कहलाता है। विष्णु के चतुर्थ भुज में मानो शंख होता है। शंख कहते है ध्वनि को, वेद के पठन-पाठन को, जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, राजा राजन्नं देखो, राजा के राष्ट्र में शंख ध्वनि होती है, बुद्धिजीवी प्राणी होते है, पांडित्व होते है, वह शंख ध्वनि को ले करके ध्वनित होते है।

बेटा! ध्वनि उसे कहते है जैसे हमारे यहाँ जब वेद का पठन-पाठन किया जाता है तो वेद में कहीं जटा पाठ, कहीं माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त, अनुदात्त में बेटा! देखो, वेदों का गान गाया जाता है। जहाँ गान गाया जाता हो, जिस गृह में, वह गृह कितना भव्य है, जिस राजा के राष्ट्र में पांडित्व इतना ऊर्ध्वा में गमन करने वाला हो कि वह जब गान गाता हो तो मानो देखो, उस राजा के राष्ट्र में मल्हार गान गाने से, साम गान गाने से, मल्हारता की प्रतिभा, ओत-प्रोत हो जाती है और वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। हे राजन! तेरे राष्ट्र में जब मानो विष्णु राष्ट्र की स्थापना की जाती है, जब गान गाया जाता है माला पाठ में और प्राण के सानिध्य से जब प्राण को एकाग्र और अपान को एक सूत्र में ला करके जब गान गाया जाता है तो दीपावली बन जाती है। मानो दीपक राग की एक विद्या हमें प्राप्त हो जाती है। तो मुनिवरों! देखो, जब गान गाने वाला, गान गाता है तो मुनिवरों! देखो, पक्षी गण भी मौन हो जाते है, जब विसर्ग पाठ वाला, जब गान गाता है, माला पाठ में, घन पाठ, जटा पाठ और विसर्ग पाठ में जब गान गाता है तो बेटा! हिंसक प्राणी भी, मोहे जाते है, वे हिंसा को त्याग करके, अहिंसा में परिणत हो जाते है। मानो उनका परिवर्तन हो जाता है।

तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, राम ने कहा कि गान गाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, गान गाने से, हमारा जीवन पवित्र बनता है। गान गाने से, हम देखो, जलचर प्राणियों को, हिंसक प्राणियों को और प्रकृति के ऊपर अपना दमन कर लेते है। पर विचार आता है, राम ने कहा-हे राष्ट्रवेत्ताओं! हमारे राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी

होने चाहिए। भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्या को अपने में धारण करने वाला हो, अपने में गमन करने वाला हो, जिससे देखो, वेद की विद्या का प्रसार हो करके, हम वेद की आभा में रमण करके मानो देखो, उससे पार हो जाए।

वैदिक साहित्य में विभिन्न विद्याएं

आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया, यह तो बड़ा एक विचारों का वृत्त कहलाता है जिसके जानने से, हमारा जीवन पवित्रता की वेदों पर निहित हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, यह गान विद्याएं, मल्हार विद्याएं, सुरों की विद्याएं मानो देखो, मोहनी विद्याएं वे श्वेतकेतु विद्याएं, ये भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्याएं, हमारे वैदिक साहित्य में प्राप्त होती है। परन्तु जिन विद्याओं को धारण करने से, हमारा राष्ट्र और समाज ऊँचा बनता है ऐसी राष्ट्र विद्या को ग्रहण करने के लिए राजा को अपने में तत्पर रहना चाहिए।

बुद्धिजीवी पुत्रों का जन्म

तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहता है आचार्यो ने कहा है मुनिवरों! देखो, गान गाने वाली मेरी माताएं है, जो अपने गर्भ स्थल में, अपने पुत्र को मानो नाना प्रकार की विद्या प्रदान कर देती है जैसे माता मलदाल्सा का जीवन आता रहा है। जब माता मलदाल्सा के गर्भ में बाल्य था तो वह गान गाती रहती थी, वह साम गान गाती रहती, जटा पाठ में, माला पाठ में और ब्रह्म विद्या का अध्ययन करती रहती, उसका गान गाने से बुद्धिजीवी पुत्रों! का जन्म होता है। मेरे पुत्रो! देखो, मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

राम ने कहा कि देखो, यदि हमें विष्णु राष्ट्र बनाना है तो यह चतुर्भुज, बनना है। चार प्रकार के नियम होने चाहिए। उन चार प्रकार के नियमों में और भी नाना प्रकार की वेद में नियमावलियाँ हुआ करती है। परन्तु नियम चार ही होते है। मुनिवरों! देखो, चरित्र, मानवता, गदा और मुनिवरों! देखो, गदं ब्रह्मणे व्रता चक्रा और देखो, यह शंख ध्वनि इसके नाना प्रकार के रूप है, भेदन है, उन भेदनों में देखो, अपने में वृत्तियों में प्राप्त करता रहता है।

तो विचार आता रहता है मेरे पुत्रो! आज मैं विशेषता में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ, विचार यह मुनिवरों! देखो, राम ने कहा-हे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम्हारे राष्ट्र में गान गाने वाला होना चाहिए, और जो निस्वार्थ मानो जो कपट से तपस्या करता है, उस पांडित्व का कर्तव्य है कि वह राष्ट्रीय प्रणाली से ऐसे स्वार्थी को, निःस्वार्थी बनाना चाहिए। स्वार्थवाद का, तपस्या चर, राजा के राष्ट्र को मानो अग्नि के रूपों में न ले जा करके वह तपस्था में परिणत कर देता है।

याग के चतुर्थ प्रकार

तो आओ मेरे पुत्रो! देखो, विचार यह प्रारम्भ हो रहा है, कि राम की उपदेश मंजरी यज्ञशाला में विद्यमान है। इसीलिए उन्होंने कहा कि याग के भी चतुर्थ प्रकार के स्वरूप माने जाते है। यज्ञमान, होता, अध्वर्यु उद्गाता और मुनिवरों! देखो, पुरोहित जन, ये ब्रह्मा इत्यादि अपने यहाँ अभ्योदय अभ्युं ब्रह्मणा लोकां वायु सम्भवं ब्रह्मे लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, यह सर्वत्र, एक अपने में अभ्योदय होता रहता है, जिससे मानवीय समाज, पवित्र और महानता की वेदी में परिणत हो जाता है।

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वाक्य क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, वेद कहता है, राजा का नाम विष्णु है और विष्णु नाम सूर्य का है जो बेटा! ऊर्ज्वा देता रहता है। विष्णु नाम आत्मा का है, जिसके चले जाने पर यह शरीर शून्य गति को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम यह कि विष्णु कहते है जो पालन करने वाला है, हमारी पालना कर

रहा है, ऊर्ध्वा में हमें पहुंचा रहा है। तो मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाए।

दीपावली गान

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? वेदमन्त्र यह कहता है हे राजन! तू अपने राष्ट्र में, विष्णु राष्ट्र की स्थापना कर और विष्णु राष्ट्र होना चाहिए, प्रत्येक जन-समूह में देखो, शान्ति, मानवीयता, चरित्रता, अभ्योदय, पांडित्व मानो देखो, अपने में गान गाने वाला हो और पुत्रो! देखो, यह वाक्य मुझे बहुत पुरातन, काल के शब्द स्मरण आते रहते है बेटा! महर्षि कागभुषुण्ड जी भी अपने में जब तपस्या करते थे तो एक समय उन्होंने बारह वर्ष का अनुष्ठान किया और उन्होंने मुनिवरों! देखो, दीपावली गान गाने की विद्या का अध्ययन किया। वेदमन्त्र का अध्ययन करते रहते प्राण और अपान को, अपान को प्राण में, प्राण को अपान में, अपान को उदान में और उदान को व्यान में और व्यान को समान में प्रवेश करके बेटा! जब गान गाया जाता है प्राणायाम के द्वारा, खेचरी मुद्रा के द्वारा, तो मुनिवरों! देखो, वह दीपावली गान बन जाता है। मानो दीपावली उसे कहते है, जहाँ दीपक प्राण की सत्ता से मानव के मुखारबिन्दु से, उस अग्नि से ही देखो, दीपों की दीपावली बन जाए।

तो विचार विनिमय क्या बेटा! यह हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्या का अध्ययन, परम्परागतों से होता रहा है। यह है बेटा! आज का वाक्, मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि वे परमपिता-परमात्मा सर्वज्ञ है, वे परमपिता-परमात्मा महान है कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वे परमपिता-परमात्मा न हो मानो उसी का ये नृत्य हो रहा है। हे राष्ट्रवेत्ताओं! आओ तुम अपने में गान गाने वाले बनो, अपने में उद्गीत गाते हुए तुम परमात्मा को प्राप्त हो जाओ। यह है बेटा! आज का वाक्, समय मिलेगा बेटा! मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः द्यौ सर्वा रथं मानां त्वाः। ओ३म् जनिता रथं ब्रह्मणश्चाहं आ पा रेवं भद्रां म ना। अच्छा भगवन्! आज्ञा दिनांक-१७-०९-१९८८-गजरौला, मुरादाबाद

९ वसुन्धरा के तीन प्रकार २६ ०९ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, परमपिता परमात्मा की वाणी का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और जितना भी ये जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। हमारे आचार्यों ने, और वैदिक मन्त्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचनाएं होती रही हैं। हमारे यहाँ जड़ और चेतनता की जब चर्चाएं आती है और उसके ऊपर जब अन्वेषण करना प्रारम्भ करते हैं तो मानो ये जो जितना भी यह ब्रह्माण्ड, हमें दृष्टिपात आ रहा है यह जड़ और चेतनता में ही दृष्टिपात आ रहा है और यह प्रतीत होता है कि वे परमपिता परमात्मा दोनों जड़ और चेतनता में निहित रहने वाले है मानो देखो, चेतना उसे कहते हैं, जिसमें ज्ञान और प्रयत्न विद्यमान रहता है। वह चैतन्य जगत है और जिस जगत में मानो ज्ञान और क्रियाओं से, प्रयत्न से शून्य रहता है मानो वह जड़वत कहा जाता है।

परमात्मा की महती

तो इसलिए परमपिता परमात्मा जो अनन्तमयी है मानो वह दोनों प्रकार के जगत में विद्यमान रहते हं और दोनों प्रकार का जगत मानो देखो, उसी से ओत-प्रोत रहता है। इसलिए हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। जब हम यह विचारते हैं कि जितना भी ज्ञान और विज्ञान है, इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में, ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में, वही परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके, क्योंकि वह अनन्त है, उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा की उपासना और वेदमन्त्र बेटा! उसकी गाथा का वर्णन करता रहता है। क्योंकि जिस भी वेदमन्त्र के गर्भ में, तुम प्रवेश हो जाओगे, उसी वेदमन्त्र के गर्भ में बेटा! परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता हमें दृष्टिपात आने लगती है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है और जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है उसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन है।

वसुन्धरा

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में माता वसुन्धरा का वर्णन आ रहा है। हे माता वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है। वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि जिसके गर्भ स्थल में, हम सब वशीभूत रहते हैं उस माता का नाम वसुन्धरा है। तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ जननी माता को वसुन्धरा कहा गया है, जब हम वैदिक साहित्य में प्रवेश करते हैं, वेद मन्त्रों के गर्भ में चले जाते हैं, तो मानो देखो, हमें यह ब्रह्माण्ड ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह माता के गर्भ में विद्यमान हो। मेरे प्यारे! देखो, माता का जैसे अवृतं ब्रह्मणां लोकां वायु सम्भवं ब्रहे मेरे पुत्रो! देखो, वेद का मन्त्र यह कहता है, माता के गर्भ स्थल में मुनिवरों! देखो, जब हम जैसे शिशु पनपते रहते हैं तो मुनिवरों! देखो, माता के गर्भ स्थल में ही तो बस रहे हैं। इसलिए उस माता का नाम वसुन्धरा कहलाता है।

शिशु का निर्माण

मेरे पुत्रो! देखो, एक शिशु है और जैसे शिशु के अप्रतम् शिशु एक बिन्दु है, बिन्दु में शिशु है जैसे माता के गर्भस्थल में प्रवेश होता है तो बेटा! सर्वत्र देवता उस शिशु की रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मुझे बेटा! वे वेदमन्त्र स्मरण आते रहते हैं, ऋषि-मुनियों की वे विचारधाराएं स्मरण आती रहती है जहाँ मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में, परमात्मा का सर्वत्र विज्ञान विद्यमान रहता है।

मुनिवरों! माता के गर्भ स्थल में जैसे शिशु का प्रवेश हुआ, तो बेटा! चन्द्रमा अमृत देने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है और मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वी गुरूतव देना प्रारम्भ कर देती है और आपोमयी ज्योति, मेरे प्यारे! देखो, आपो ही जो आसन बना हुआ है आपो ही आसन है, आपो ही ओढ़न है, आपो ही पाँसे बने हुए है। तो मनिवरो! देखो, उस माता के गर्भ स्थल में हम जैसे शिशु पनप रहे है मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं हो रहा है, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। बेटा! अग्नि उष्ण बना रही है और वायु प्राण दे रहा है देखो, अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है, कैसा मेरे प्यारे प्रभु का यह विज्ञान है। जब इस विज्ञान के ऊपर मानव विचार विनिमय प्रारम्भ करता है तो बेटा! देखो, एक अस्वतं ब्रह्मा वह मौन हो जाता है, चिन्तन करता हुआ मौन हो जाता है, कि चन्द्रमा समुद्रों से प्रकाशां भवितां ब्रह्मण व्रते देवाः वह मानो देखो, एक आभा ले करके

और उसको ऊर्ज्वा के रूप में क्या, अमृतमयी बना करके बेटा! देखो, उसे बिखेर देता है, सूर्य ऊर्ज्वा बना करके, द्यौ से प्रकाश लेता है, वह प्रकाश को बिखेर देता है। और मुनिवरों! देखो, आपोमयी, तेजोमयी बन करके वह अपने में ऊर्ध्वा को प्राप्त हो रहा है।

हृदय के दो प्रकार

मेरे पुत्रो! जब निर्माणवेत्ता निर्माण करता है तो मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है। चार प्रकार की बुद्धियों का निर्माण हो रहा है बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा कहलाती है। तो मुनिवरों! देखो, यह चारों प्रकार की बुद्धियाँ है सम्भवं दो हृदय माने गएं हैं, एक लघुमस्तिष्क में एक मानो देखो, हृदय स्थली के आंगन में, ये दो प्रकार के हृदयों की आभा उत्पन्न हो रही है। जब प्रभु निर्माण करता है, माता के गर्भस्थल में तो बेटा! बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण हो जाता है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना अनन्तमयी विज्ञानवेत्ता है। इस संसार में कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ, जो उस ज्ञान को सीमा बद्ध कर सके, विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके।

मेरे पुत्रो! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जहाँ ऋषि-मुनि इन वाक्यों के ऊपर, विचार-विनिमय करते रहते, माता वसुन्धरा के गर्भ से, जब यह मानव पृथक् हो जाता है तो यह पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है, ये नाना प्रकार को खाद्य और खनिज को प्रदान कर रही है उसी से मानव अपने जीवन का मानो देखो, प्रवीण कर रहा है जिससे मानो देखो, वह जीवन की आभा को प्राप्त होता रहता है।

वसुन्धरा

तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता। हे पृथ्वीं माँ! तू कैसी वसुन्धरा है तेरे गर्भ में जो खाद्य पनप रहा है कहीं मानो देखो, खनिज पनप रहा है, स्वर्ण के परमाणुओं का आदान-प्रदान किया जा रहा है, कहीं धातु का निर्माण हो रहा है कहीं तेरे गर्भ स्थल में मानो देखो, जल को शोधित किया जा रहा है, जो वाहनों में क्रिया प्रदान कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, इसके गर्भ में क्या नहीं है, हे माँ! तेरी प्रार्थना करते हुए, हम यही उच्चारण करते है। हे माँ! तेरे गर्भस्थल में क्या नहीं है। मेरे प्यारे! देखो, जब पृथ्वी माता के गर्भ से भी मानव पृथक् हो जाता है तो वह जो मेरी प्यारी माँ वसुन्धरा चैतन्य प्रभु है, अनन्तमयी जो ममतव को धारण करने वाली है, विचित्रता में रत्त रहने वाली है मानो उस माता के गर्भ में प्रवेश कर जाते है। मेरे पुत्रो! देखो, वह जो चैतन्य देव हैं, वह महादेव हैं और वह ममतामयी भी कहलाता है। वेद का मन्त्र उसे वसुन्धरा के नाम से वर्णन कर रहा है। हे माँ वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है मेरे पुत्रो! देखो, चैतन्य प्रभु को ममता के रूप में परिणत किया गया है।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, केवल तुम्हें सूक्ष्म सा परिचय देने आया हूँ। क्योंकि परमात्मा का जितना भी यह ज्ञान और विज्ञान है उसका मानव परिचय ही दे सकता है। मानव उसको व्याख्या रूप में वर्णन नहीं कर सकता। केवल उसका परिचय यही है कि वे परमपिता परमात्मा माता वसुन्धरा है, कल्याण करने वाली है। तो आओ मेरे प्यारे! जहाँ माता वसुन्धरा का वर्णन आता है वहाँ आओ, बेटा! मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि अपने आसन पर विद्यमान हो करके बड़ी ऊर्ध्वा में, अपनी उड़ाने उड़ते रहे हैं और विचित्र उड़ाने उड़ते रहे हैं।

मेरे पुत्रो! देखो, एक समय महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ, जिन ऋषि-मुनियों में बेटा! ब्रह्मचारी कबन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, महर्षि प्रवाहण, महर्षि दालभ्य, महर्षि श्वेतकेतु और देखो, महर्षि विभाण्डक और मुनिवरों! देखो, वेतु ऋषि महाराज और सोमकेतु मुनि

इत्यादि मुनियों का बेटा! एक समाज एकत्रित हुआ। और महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज को बेटा! एक सौ पांच वर्ष हो गएं थे, गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत कर रहे थे। उनके पास ऋषि-मुनियों का बेटा! एक समूह पहुंचा, जिसमें महर्षि वैशम्पायन भी विद्यमान थे। तो मेरे पुत्रो! देखो, जब एक सभा, ब्रह्मणा ब्रहे कृतम् आसन पर जब विद्यमान हो गएं तो मुनिवरों! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज नमः करते हुए बोले कि हे ऋषिवरो! आज तुम्हारा कैसे आगमन हुआ है? हम इस कारण को नहीं जान सके कि तुम इस समय मेरे आश्रम में पधारे हो, इसका कारण क्या है? तो मुनिवरों! देखो, उस समय महर्षि प्रवाहण जी उपस्थित हुए और प्रवाहण ने यह कहा कि हे प्रभु! हम आप से कुछ प्रसन्न करना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि उच्चारण करो। उन्होंने कहा यह वसुन्धरा क्या है? उन्होंने कहा यह जो वसुन्धरा है यह मानो देखो, इसके गर्भ में, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड क्रीड़ा कर रहा है, ओत-प्रोत हो रहा है। वही मानो देखो, माता वसुन्धरा कहलाती है।

ऋषियो का चिन्तन

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने यह उत्तर दिया तो वह ऋषि मौन हो गये। इतने में महर्षि दालभ्य जी ने, महर्षि वैशम्पायन को कहा प्रभु! आप प्रश्न कीजिए? तो मुनिवरों! देखो, सम्भवं ब्रह्मे वैशम्पायन ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि यह जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है यह मानो देखो, चारों प्रकार की सृष्टि है, इसमें सबसे प्रथम सृष्टि का नामोकरण मानो देखो, स्थावर कहा जाता है, दूसरी अण्डज कहा जाता है और तीसरी जंगम कहा जाता है, और चतुर्थ जो है वह उद्भिज कहा जाता है। हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं यह जो सृष्टि हमें दृष्टिपात आ रही है और यह पृथ्वी-मण्डल पर नहीं, ऐसी सृष्टि सर्वत्र मण्डलों में प्रायः हमें दृष्टिपात आती है। जब हम समाधि के द्वारा मानो इंगला, पिंगला सुषुम्णा के द्वारा और उसे मानो देखो, त्रिवेणी से एक अमृत होकर ब्रह्मरन्ध में जब अनुभव करते हैं तो प्रायः यह पृथ्वी मण्डल पर ही नहीं और भी अन्य लोकों में भी इस प्रकार की सृष्टि हमें दृष्टिपात आती है, हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि यह जो दृष्टिपात आने वाला जगत है, इसमें मानो प्रसारण, आंकुचन, ध्रुवा, ऊर्ध्वा और इसमें मानो गति जो दृष्टिपात आती है हे प्रभु! इसकी प्रतिष्ठा क्या है? हम इस प्रतिष्ठा को जानना चाहते हैं।

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज बोले कि हे ऋषि जनो! तुम तो सब ब्रह्मवेत्ता हो, प्रश्नों की झड़ी लगाते रहोगे। परन्तु मेरा तो एक ही मन्तव्य है कि जितना मैं जानता हूँ, उतना तुम्हें उत्तर दे सकूंगा। उन्होंने कहा प्रभु! जितना जानते हैं, उतना ही उत्तर जानना चाहते हैं।

तो मुनिवरों! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा कि मेरे विचार में तो जितना मैंने जाना है जितना दृष्टिपात आता है, कि सबसे प्रथम सृष्टि का नाम स्थावर कहा जाता है और द्वितीय अण्डज, तृतीय जंगम और उद्भिज, ये जो चारों प्रकार की सृष्टि है। ये पृथ्वी में प्रतिष्ठित हो जाती है। मानो पृथ्वी ही इसकी प्रतिष्ठा में अकुतं ब्रह्मे कृताम् वेद का मन्त्र कहता है सम्भव ब्रह्मे देवां पृथिवी वसुन्धरं ब्रह्मा कृत लोका वाचाः उन्होंने कहा कि ये वसुन्धरा के रूप में वर्णित रहती है। परन्तु देखो! इसी में यह ब्रह्माण्ड सर्वत्र समाहित हो जाता है, इसी में ओत-प्रोत हो जाता है और इसी में प्रतिष्ठित हो करके, प्रतिष्ठा को प्राप्त हो जाता है। तो मुनिवरों! इतने में महर्षि रेवक उपस्थित हुए रेवकां ब्रह्मणे व्रतं देवाः रेवकानि कंचतं ब्रह्मे कृतोः देवाः रेवक मुनि ने कहा कि मैंने तो अब तक इतना जाना है।

इतने में मुनिवरों! देखो, महर्षि दालभ्य जी उपस्थित हुए और दालभ्य ने कहा हे प्रभु! हे रेवकां ब्रहे मानो हम यह जानना चाहते हैं कि यह जो पृथ्वी है, यह कहाँ प्रतिष्ठित होती है? पृथ्वी की भी तो कोई प्रतिष्ठा होगी? तो उन्होने कहा कि ये जो पृथ्वी है यह मानो देखो, ब्रह्मणां वृत्ति आपां देवां सम्भवाः यह आपो में ओत-

प्रोत हो जाती है, यह आपो में प्रतिष्ठित हो जाती है, आपो में प्राण प्रतिष्ठित हो जाता है और यह उसी में लय हो जाती है। तो मुनिवरों! देखो, इतने में उन्होंने कहा प्रभु! हम आपसे व्याख्या नहीं चाहते हैं, हम यह जानना चाहते है कि यह जो पृथ्वी जब आपों में लय हो जाती है, यह आपो कहाँ प्रतिष्ठित हो जाती है?

आपो की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि बोले कि यह जो आपो है, यह अग्नि में ओत प्रोत हो जाता है, अग्नि में प्रतिष्ठित हो जाता है, यह अग्नि बड़ी विचित्र अग्नि है। मानो यही अग्नि है जो जल को शीतल बना देती है, जो जल का पिण्ड बना देती है, और यही अग्नि है जो पिण्ड को मानो जल रूप बना देती है, आपो रूप बना देती है, तरल रूप बना देती है, और देखो, अग्नं यह जो अग्नि है यही काष्ठ में रहने वाली अग्नि है, यही अग्नि माता के गर्भस्थल में, जब शिशु तपायमान होता है तो यही अग्नि उष्णता से, उसे तपायमान बना देती है, वह अखण्ड अग्नि कहलाती है। और वही अग्नि है जो गृहपथ्य नाम की अग्नि बन करके रहती है। गृह में मानो देखो, अग्नि प्रचण्ड है, गृह स्वामी और गृह स्वामिनी यह चाहते हैं कि मेरा गृह स्वर्ग बन जाए, तो मुनिवरों! देखो, वह स्वर्गश्च प्रमाणाः वह गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करते हैं और गृहपथ्य नाम की अग्नि वह कहलाती है जिसको माता-पिता प्रदीप्त करते हैं, माता-पिता जिस आचरण को करते हैं उसी को गृह में बाल्य करते है, उसी के अनुसार, ऊर्ध्वा में यदि इनका क्रियाकलाप है तो बाल्य भी ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो करके अपने गृह को स्वर्ग बना देते हैं।

स्वर्ग गृह

तो मुनिवरों! उस अग्नि का नाम गृहपथ्य है, वह अग्नि कौन-सी है? वह ज्ञानाग्नि है। वह जो गृह में प्रदीप्त रहती है। मेरे प्यारे! प्रातःकाल माता-पिता जब अपने आसन को त्यागते हैं तो वे मुनिवरों! प्रभु का स्मरण करते हुए, अपने नित्यप्रति जो क्रियाकलाप है, वैदिक साहित्य के अनुकूल मानो जब उसमें परिणत हो जाते हैं तो बाल्य, बालिका उसका अनुसरण करते हैं और अनुसरण करके बेटा! देखो, वह गृह स्वर्ग बन जाता है। आज कोई भी मानव अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है तो विचार रूपी जो अग्नि है, वह जो गृहपथ्य नाम की जो अग्नि है उसको मानो देखो, जानने लगो, उसको क्रिया में लाने लगो। जैसे राजा को अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो राजा स्वयं ब्रह्मवेत्ता बन करके, अपने में क्रियाकलाप और तपस्या में परिणत हो करके अपने में क्रियाकलाप और तपस्या से राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है।

याग मे प्राण

मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है। रेवक ने कहा कि प्रभु! एक समय मैं, महाराजा सुखमंजस के यहाँ पहुंचा, महाराजा सागर उनके पिता थे, वहाँ एक अश्वमेध याग हो रहा था। उस अश्वमेध याग में राजा सुखमंजस अपने आसन पर विद्यमान है उनकी पत्नी रेणुका उनके समीप विद्यमान है और महर्षि कपिल मुनि महाराज की अध्यक्षता में, वह याग हुआ। तो उस समय यह प्रश्न किया गया, हमने यह प्रश्न किया कि प्रभु! आप यह क्रियाकलाप क्यों कर रहे हैं? अश्वमेध याम क्यों कर रहे हैं। देखो, महाराजा सागर ने उसका उत्तर यह दिया कि हम याग इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि बिना याग के हमारा राष्ट्र ऊँचा नहीं बनेगा, क्योंकि याग जो है यह देवताओं का सबसे प्रथम पूजन है और देवताओं की हम यदि, उपयोगिता को नहीं जानेंगे और उसको जान करके उसको सुगन्धि नहीं देंगे, तो हम अपने राष्ट्र को ऊँचा नहीं बना सकेंगे। क्योंकि राष्ट्र का जो प्राण कहलाता है वह याग है। और याग तब बनता है जब चरित्र से बनता है, और यदि चरित्र नहीं है और याग भी नहीं है तो राजा का राष्ट्र मानो देखो, शून्य गति को प्राप्त हो जाएगा। शून्यता में चला जाएगा और यह अन्धकार

ही अन्धकार छा जाएगा।

ब्रह्मग्नि का पूजन

तो मुनिवरों! देखो, राजा सागर ने इसका उत्तर दिया तो महर्षि प्रवाहण जी ने कहा यदि राजा को अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो उसे मानो अग्नि का पूजन करना होगा। वह ब्रह्माग्नि का पूजन करता है, अपने को ब्रह्मवेत्ता बनाए और अपने राष्ट्र को महानता में ले जाने के लिए अश्वमेध इत्यादि क्रियाकलापों में लग जाना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, व्याख्यान देना नहीं है, परिचय देना है, और वह परिचय क्या है? मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा कि यह जो अग्नि है यही अग्नि काष्ठ में रहती है, इस अग्नि के द्वारा जब मानो देखो, वैज्ञानिकजन अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, अग्नियों का विभाजन करते हैं, आयुर्वेदाचार्य जब अग्नि का विभाजन करते हैं तो मानो आयुर्वेद में पिचासी प्रकार की अग्नियों का चयन किया गया। जब यही अग्नि वैज्ञानिकों के मध्य में पहुंची, तो वैज्ञानिकों ने इस अग्नि का जब विभाजन करना प्रारम्भ किया तो बेटा! यह मानो देखो, अरबों-खरबों प्रकार की तरंगों वाली अग्नि बन गई। यही अणु के रूप में विद्यमान रही।

एक-एक परमाणु मे ब्रह्माण्ड

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि दालभ्य ऋषि महाराज ने, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ एक परमाणु का विभाजन किया तो बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड उस एक ही परमाणु में दृष्टिपात आ गया। तो बेटा! यह संसार मानो देखो, यह जो अग्नि है, यह बड़ी विचित्र है, अग्नि ही मुनिवरों! देखो, अरबों-खरबों प्रकार की तरंगें बन करके, वैज्ञानिकों के मध्य में बेटा! नाना प्रकार के यन्त्रों के आविष्कारों में, वैज्ञानिक प्रवेश कर जाता है। यही है जो बेटा! अग्नि का आश्रय ले करके, द्यौ में प्रवेश करता है और द्यौ के परमाणु को जब वह विभक्त करता हुआ बेटा! सूर्य की किरणों के साथ, अन्तरिक्ष में गमन कर जाता है। तो ऐसे ऐसे यन्त्रों का निर्माण हमारे यहाँ प्रायः होता रहा है जो एक परमाणु की आवृत्तियों में ले करके बेटा! यन्त्र का निर्माण किया और वह सूर्य की किरणों के साथ बेटा! गमन करता हुआ सूर्य की परिक्रमा करता रहा।

तो बेटा! मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, यह तो विशाल वन है, इस वन में जाना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल इतना है कि बेटा! यह जो अग्नि है, यह अग्नि कितने प्रकार की अग्नि है, यही अग्नि है जो गृहपथ्य मानो माता अपने इसी के प्रकाश से, अपने व्यापार में परिणत हो जाती हैं, यही अग्नि है जो अणु, परमाणु के रूप में परिणत रहती है। मेरे पुत्रो! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, इसी अग्नि की धाराओं पर मुनिवरों! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने बेटा! देखो, अपनी विज्ञानशाला में मुनिवरों! देखो, अग्नि की धाराओं के ऊपर, अपने शब्दों के ऊपर अनुसन्धान किया, अपने पूर्वजों के शब्द, जो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, वह द्यौ लोक में प्रवेश कर गएं थे। तो मेरे प्यारे! महर्षि शिकायकेतु उद्दालक के यहाँ बेटा! पचासवें महापिता के दर्शन उनके यन्त्रों के द्वारा किया करते थे। तो बेटा! अग्नि की धाराओं पर, शब्द गमन करता है अन्तरिक्ष में, बेटा! देखो, वह सिमट जाता है, वह स्थिर हो जाता है अपनी वृत्तियों में रत्त हो जाता है।

ब्रह्म और चरी

तो मेरे प्यारे! मैं शिकामकेतु उद्दालक के गृह में जाना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल मुनिवरों! हमारा यह कि हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? वेद का ऋषि क्या कह रहा है। मुनिवरों! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उन्हें यह उत्तर दिया कि इस अग्नि का पूजन करना, अग्नि का पूजन करने वाला ब्रह्मचारी जब

विद्यालय में प्रवेश करता है तो यही अग्नि है जो मानो गाहर्पथ्य नाम की अग्नि बन करके क्रियाकलापों में परिणत हो जाता है। ब्रह्मचारी अपने ब्रह्म का पूजन करता हुआ, चरी को जानता हुआ मुनिवरों! देखो, गम्भीर अध्ययन करता हुआ, प्रभु को कण-कण में दृष्टिपात करता हुआ, अपने को ब्रह्मचरिष्यामि बना लेता है। मेरे प्यारे! देखो, दो ही शब्द हैं संसार में, ब्रह्म और चरी, चरी कहते हैं प्रकृति को, और ब्रह्म कहते है परमपिता परमात्मा को, दोनों के ऊपर सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक बेटा! अनुसन्धान होता रहा है, अन्वेषण होता रहा है परन्तु देखो, अन्त में अन्वेषण करने वाले मौन होते रहें हैं।

तो विचार क्या, मुनिवरों! विचार यह हो रहा है सम्भवं ब्रह्माः सम्भवं रुद्राः सम्भवं विष्णुः मेरे प्यारे! देखो, ऋषि नाना प्रकार की लोकोक्तियाँ प्रगट कर रहा है। तो महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मण ब्रहे, हे ऋषियों! देखो, यह अग्नि है यह कितने प्रकार की अग्नि कहलाती है। ये अग्नि अपने में मानो अद्वितीय कहलाती है।

अग्नि की प्रतिष्ठा

मेरे प्यारे देखो, ऋषि ने उपस्थित हो करके, महर्षि प्रवाहण ने यह प्रश्न किया प्रभु! जब हम आचार्य के कुल में अध्ययन किया करते थे, तो आचार्य हमें इस प्रकार की युक्तियाँ प्रगट कराते रहे है। हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं मानो ये जो अग्नि है इसकी प्रतिष्ठा कहाँ है? उन्होंने कहा यह मंगलं ब्रह्वे व्रतम् मानो अग्नि की प्रतिष्ठा वायु है, ये वायु में सिमट जाती है, और वायु में ही मानो ये प्रतिष्ठा को प्राप्त हो जाती है।

मेरे पुत्रो! देखो, वायु ही तो प्राणवर्धक है, यही तो प्राण देने वाली है। मेरे प्यारे! मानव के शरीर में बेटा! इस वायु के दस भाग रहते हैं, जिसको प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, नाग, देवदत्त, धनंजय, कुरू और कृकल बेटा! ये दस रूपों में, इस शरीर में मानो वायु व्याप्ति रहती है। वायु अपने में प्रवीण है, अब्रुत है। मानो देखो, यह विश्वभान कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, अग्नि उसी में प्रतिष्ठित हो जाती है और प्रतिष्ठित हो करके अपने में अपनेपन का भान करने लगती है तो विचारने से प्रतीत होता है कि यह वायु में ही प्रवेश कर जाती है जहाँ वायु है वही अग्नि है, जहाँ वायु नहीं है, वहाँ अग्नि नहीं रह पाती, अग्नि शून्यता को प्राप्त हो जाती है। इसलिए एक-दूसरे में प्रतिष्ठित हो रहे हैं। एक-दूसरे में प्रतिष्ठा को प्राप्त हो रहे हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार का उनको उत्तर दिया, तो उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! उन्होंने कहा यह वायु ही है जो अग्नि की धाराओं पर, शब्द को अन्तरिक्ष में प्रविष्ट करा देती है मानो, देखो, ये वायु ही है अग्नं ब्रह्मणा व्रतम् देखो, जो अग्नि को ले करके अपने में लय कर देती है, अपने में समाहित कर लेती है तो इसलिए इसको विचारना हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, इतने में महर्षि दालभ्य ऋषि महाराज ने यह प्रश्न किया प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि वायु कहाँ सिमट जाती है? मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा कि यह जो वायु है अप्रतं ब्रह्मणां व्रतं देवां मंगलं वृत्ति अस्सुतो अंतरिक्षाः उन्होंने कहा यह जो अन्तरिक्ष है इसमें यह सिमट जाती है। इसी में मानो देखो, यह गति व्रतम् शान्त हो जाती है।

पंचीकरण

मेरे प्यारे! देखो, यह जो परमाणु है ये तीन प्रकार के परमाणु कहलाते हैं मानो देखो, स्थ्ब्रहे मुनिवरों! गुरूतव तरलतव और तेजोमयी, वायु इन तीन प्रकार के परमाणुओं को गति देती है और अन्तरिक्ष में ये गमन करते रहते हैं। ये गतिवान होते रहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, यह पंचीकरण कहलाता है। दूसरे में एक-दूसरा मानो प्रविष्ट हो रहा है मुनिवरों! देखो, हम यह निर्णय कर पा सकते, कोई भी मानव देखो, इसका अब तक निर्णय नहीं कर सका। एक दूसरे के गुणों का गुणा, अब्रते शांत नहीं कर सकता। मेरे प्यारे! देखो, सम्बन्धं ब्रहे

ऋषि कहता है कि प्रभु! यह अन्तरिक्ष कहाँ सिमट जाता है? उन्होंने कहा यह शून्य बिन्दु में सिमट जाता है मानो जिसको महत्तत्व कहते हैं। तो बेटा! देखो, ऋषि अपने में मौन हो गये, तो ऋषियों की बड़ी ऊर्ध्वा में शैली रही है और यह शैली बड़ी विचित्र है मानो ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा को ध्रुवा में ये दो प्रकार की शैली हमारे यहाँ परम्परागतो से मानी गई है। ये यौगिक परम्परा में भी ये दो ही प्रकार की शैली रही है।

मेरे पुत्रो! देखो, ये ध्रुवा से ऊर्ध्वा को गमन किया गया। शून्य बिन्दु पर जा करके ऋषिवर मौन हो गएं और महर्षि प्रवाहण जी ने यह कहा प्रभु! आप तो धन्य हैं। आप ने हमें कुछ प्रकाश में पहुँचाया मानो जिसको अनुसन्धान में और अनुसन्धान करते रहते थे, यन्त्रों में दृष्टिपात करना चाहते थे मानो देखो, यह विषय तो किसी काल में आयेगा, परन्तु आज तो केवल कि ब्रह्मणं ब्रह्वा सम्भव लोकां वायु रथं ब्रह्म कृत्त लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, एक-दूसरे में एक-दूसरा समाहित हो करके, रथ बन करके, द्यौ बन जाता है और वह द्यौ महत्तत्व के रूप में परिणत हो जाता है।

यौगिकता

तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या, मुनिवरों! देखो, पृथ्वी माता वसुन्धरा कहलाती है, उस वसुन्धरा के गर्भ से जब मानव पृथक् होता है तो परमात्मा के, वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! देखो, शून्य बिन्दु, वह परमात्मा का गर्भाशय कहलाता है, जहाँ यह संसार सिमट जाता है मानो जहाँ लय हो जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, हमारे यहाँ वेद का मन्त्र कहता है हे वसुन्धरं ब्रह्मा वसुन्धरं रुद्राः ममत्वां ब्रह्मणे लोकां वसुन्धरा प्रथम ब्रह्वे कृत लोकाम। मेरे पुत्रो! देखो, वसुन्धरा कितने रूपों में है। हे माता! जननी माता वसुन्धरा कहलाती है, पृथ्वी माता वसुन्धरा है, और मुनिवरों! देखो, चैतन्य देव वसुन्धरा है। ये तीन प्रकार की वसुन्धराओं का वर्णन हमारे यहाँ वैदिक मन्त्रों में, नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों में विवेचना होती रहती है। नाना प्रकार के शब्दों की आभाएं सदैव रमण करती रहती है जिसको हम जान करके, इस संसार सागर से पार हो जाएं। बेटा! देखो, आज तो मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने आया हूँ, विचार केवल इतना है कि हम परमपिता परमात्मा के इस ब्रह्माण्ड को जान करके इसमें मानो देखो, अपने में लय हो करके अपनेपन का हमें भान होना चाहिए और अपने में अपनेपन को जब दृष्टिपात करता है मानव तो यौगिकता में प्रवेश हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल तुम्हें यह विचार प्रगट करने के लिए आया कि हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है मुनिवरों! देखो, यह ध्रुवा से ऊर्ध्वा को, योगी ने गमन किया। कल मुझे समय मिलेगा तो मुनिवरों! देखो, कल इसके आगे देखो, ऊर्ध्वा से जो ध्रुवा में गमन किया जाता है ये चर्चाएं मुनिवरों! देखो, हम कल प्रगट कर सकेंगे। आज के विचारों का अभिप्रायः क्या, हम मुनिवरों! देखो, एक-दूसरे में एक दूसरे को लय होता हुआ, अपना यह संसार एक कुटुम्ब के तुल्य कहलाता है मानो यह कुटुम्ब है, एक-दूसरे में प्रविष्ट हो रहा है इसको जब हम इस प्रकार दृष्टिपात करते हैं और परमपिता परमात्मा, वसुन्धरा के रूप में और जड़ और चेतन के रूप में वे परमपिता परमात्मा निहित रहता है, दोनों में दृष्टिपात आ रहा है। ये चर्चाएं मुनिवरों! देखो, हम कल प्रगट कर सकेंगे आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा।

आओ मेरे प्यारे! आज हम उस माता वसुन्धरा का वर्णन कर रहे थे जिसके गर्भ में ये संसार मानो देखो, विराजमान है, उसी में ओत-प्रोत है, उसी की विवेचना में हमें रत्त रहना चाहिए। कल समय मिलेगा तो बेटा! शून्य बिन्दु से संसार का विकास कैसे होता है, कल मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ कुछ वेदमन्त्र आ रहे हैं इनकी चर्चाएं कल प्रगट करेंगे, आज का वाक् अब हमारा समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः

आभ्यां रथं मा रेवं गायन्त्वाः। ओ३म् जनिता रथं ब्रह्मः आभ्यां रथं मा नाः वाचन्नमः रथप्राणाः गतं मां रेवा। अच्छा भगवन्! दिनांक-२६-०९-१९८८-आर्य समाज मुरादनगर, गाजियाबाद

१० मोक्ष की पगडण्डी २७ ०९ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरो, आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं, कोई वस्तु ऐसी नहीं है जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो, मानो वह तरंगों में भी रत्त रहने वाले हैं। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके गुणों का वर्णन करते हुए, हमें उसकी उपासना करनी चाहिए। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्त है, मानो वे परमाणु में भी निहित रहने वाले हैं परमपिता परमात्मा महान और इस संसार का नियन्ता निब्रबहा कृत लोकाम् मानो इस ब्रह्माण्ड का निर्माण करने वाले और वे नियन्ता है मानो वही इसके मूल में सर्वत्र विद्यमान रहते हैं।

वेद मन्त्रों मे ब्रह्माण्ड

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मन्त्रों में नाना प्रकार की विवेचनाएं होती रहती हैं, जब हम वैदिक साहित्य में अथवा वेद के मन्त्र के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ करते हैं, तो मानो ये ब्रह्माण्ड हमें ऐसा प्रतीत होने लगता है जैसे वे वेद के एक-एक मन्त्र में मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड बेटा! निहित हो गया।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो देता ही नहीं हूँ, क्योंकि परिचय देना हमारा कर्तव्य है। मानो व्याख्यान देना नही है, केवल परिचय देना है। हमने इससे पूर्व काल में, कई कालों में वर्णन करते हुए कहा था कि संसार में जितना भी मानव अपनी विचारधारा, अपनी मानवीयतव में रत्त होता रहता है अपने मानवीयतव का परिचय देता रहता है जैसे एक विज्ञानवेत्ता है वह विज्ञानवेत्ता माता वसुन्धरा की गोद में परिणत हो जाता है और माता वसुन्धरा के गर्भ में जब विद्यमान होता है, तो नाना प्रकार के जड़वत और चैतन्यवत् की आभा में परिणत हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, वह अपने में जब अपनेपन का ही दर्शन करने लगता है तो वह मानव महान और पवित्र बन जाता है और परमपिता परमात्मा की महती में वह रत्त हो जाता है।

पंचीकरण मे ब्रह्माण्ड

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें नहीं प्रगट करने आया हूँ, विचार केवल यह कि मुनिवरों! हमारे ऋषि-मुनियों की विचार विनिमय करने की एक बड़ी विचित्र शैली रही है कि ब्रह्माण्ड को पिण्ड में और पिण्ड को ब्रह्माण्ड में निहित कर दिया है। मानो देखो, उन्होंने गागर में सागर की कल्पनाएं की हैं। मेरे पुत्रो! जब मैंने बहुत पुरातन काल में एक ऋषि से यह प्रश्न किया कि हे भगवन! यह जो दृष्टिपात आने वाला जगत है इसकी कितनी गतियाँ हैं? तो मुनिवरों! देखो, ऋषि मौन हो गये। परन्तु मौन होते ही संसार की प्रसारण गति, ध्रुवा, ऊर्ध्वा और आंकुचन ये पांच प्रकार की गतियाँ उन्होंने निहित की और यह कहा कि यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड पंचीकरण है, यह मानवत्व भी पंचीकरण कहलाता है। क्योंकि जितना धर्म है, मानवता है, जितना भी सात्विकवाद है वह मानव की पांच ज्ञानेन्द्रियों में समाहित हो रहा है। इसी प्रकार जितना संसार का विज्ञान है, चाहे वह अणुवाद है, चाहे परमाणुवाद है किसी भी प्रकार का विज्ञान हो, परन्तु पांच गतियों में निहित हो रहा है।

तीन प्रकार के परमाणु

मेरे प्यारे! जब मैं इससे और ऊर्ध्वा में गमन करता हूँ, यह पंचीकरण जो हमने इससे पूर्व काल में वर्णन कराया, मेरे प्यारे! देखो, गुरूतव, तरलतव और तेजोमयी ये तीन प्रकार के परमाणु होते हैं। वायु इन परमाणुओं को गति देता है और अन्तरिक्ष में वे परमाणु गमन करते रहते हैं, भ्रमण करते रहते हैं। क्योंकि उन्हें हमारे यहाँ अवकाश कहते हैं। तो मेरे प्यारे! जब इन तीनों परमाणुओं का एकोकीकरण हो जाता है, वायु का अन्तरिक्ष में, एकोकीकरण हो करके ये शून्यता को प्राप्त हो करके बेटा! उसे महत्तत्व की आभा निहित और उसका महत्तत्व के नामों से वर्णन किया गया। तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें गम्भीर क्षेत्रों में नहीं ले जा रहा हूँ, केवल विचार तो बड़े गम्भीर हैं, जब वेद के एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर चिन्तन और मनन करना प्रारम्भ करते हैं तो बेटा! आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान उसमें निहित रहता है। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों ने इस संसार को आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का एकोकीकरण किया है एकोकी आभा में लाने का प्रयास किया है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं द्वितीय उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जैसा इससे पूर्व काल में हमने प्रगट किया था कि ऋषि मुनियों की शैली बड़ी विचित्र रही है।

ऋषियो की चिन्तन शैली

ध्रुवा से ऊर्ध्वा में, और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में चिन्तन करने की बड़ी विचित्र शैली रहती है। जैसे मानो एक विज्ञानवेत्ता अपनी विज्ञानशाला में एक परमाणु के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है और अनुसन्धान करता हुआ एक परमाणु का जब वह विभाजन करता है तो उसमें ब्रह्माण्ड का चित्रा दृष्टिपात करता रहता है मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड, लोक-लोकान्तर आकाश गंगाएं, निहारिकाएँ, अवन्तिकाएं बेटा! सर्वत्र उसमें दृष्टिपात आने लगती है। ऐसा मेरे प्यारे प्रभु का अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है। सृष्टि के प्रारम्भ से बेटा! ये अन्वेषण-प्रवृत्ति मानवीय जन-समूह में बेटा! निहित रही है। यह कोई नवीन वाक् नही है क्योंकि संसार में कोई भी वस्तु नवीन नहीं है सदैव मानो उसका परिवर्तन होता रहता है, अनुसन्धान करने की प्रवृत्ति अणु परमाणु में जाने की प्रवृत्ति, यह सर्वत्र सृष्टि के प्रारम्भ से बेटा! गतिवान होती रही है और मानव के मस्तिष्कों में यह सदैव निहित रही है क्योंकि परमपिता परमात्मा ने जब इस मानव शरीर की रचना की तो ऐसी विचित्र रचना की है कि वह सूक्ष्म रूप में है। परन्तु परमात्मा के जब ब्रह्माण्डमयी स्वरूप का वर्णन होने लगता है तो वह विशाल बन करके मानव के समीप आती रही है।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं उसी ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ बेटा! महर्षि रेवक मुनि महाराज के आश्रम में जहाँ ऋषि मुनि अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं, जिस ऋषि के आसन पर महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेवक, महर्षि वैशम्पायन, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता और देखो, देवर्षि वृत्तिका मुनि और मुनिवरों! महर्षि विभाण्डक, अव्रेतु ऋषि महाराज, सोमकेतु दद्दड़ गोत्राय और भी नाना ऋषि-मुनियों का बेटा! एक समाज एकत्रित हुआ जिसमें चाक्राणी गार्गी भी विद्यमान है। तो मुनिवरों! देखो, बारी-बारी ऋषि से प्रश्न हो रहे हैं, वे यथोचित मानो उसका उत्तर दे रहे हैं, क्योंकि गाड़ीवान ऋषि महाराज, उस समय बड़े महान तपस्वी थे। एक सौ पांच वर्ष तक, वह एक ही गाड़ी के नीचे मानो आसन पर विद्यमान हो करके मानो तपस्या कर रहे थे।

तपस्वी

बेटा! तपस्या का अभिप्राय क्या है? जब तपस्या का प्रसंग आता है कि तपस्या किसे कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, पांच ज्ञानेन्दियों के रहस्यों को जानने वाला, विचारक कहलाता है और उन विचारों का साकल्य बना करके हृदय रूपी यज्ञशाला में, ज्ञान-रूपी अग्नि में बेटा! उन्हें प्रवेश कर देता है। मेरे प्यारे! देखो, मनस्तव

पवित्र होता हुआ, वह मानव तपस्वी कहलाता है। हमारे यहाँ तपस्या का प्रसंग पुनः बना ही रहता है। तो ऋषि कहते हैं कि तपस्या किसे कहते हैं? बेटा! तपस्या उसे कहते हैं, जो मन को पवित्र बना लेता है। मन के पिछले विभाग में, मन को स्थिर होना, इन्द्रियों का स्थिर होना जब इन्द्रियाँ और मन एकोदशी बन जाती है तो मुनिवरों! देखो, मानव के नौ द्वारों पर संयम हो जाता है। जब नौ द्वारों पर संयम हुआ तो सप्त ऋषि बेटा! आहुति देना प्रारम्भ कर देते हैं जब सप्त ऋषि आहुति देते हैं तो बेटा! देखो, यह पंचीकरण बन जाता है और पंचीकरण बन करके रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण को एक सूत्र में ला करके बेटा! सतोगुण और रजोगुण से भी उपराम हो करके प्रभु के आंगन में प्रवेश कर जाता है बेटा! वह तपस्वी कहलाता है।

अग्नि का अभिप्रायः

आओ मेरे प्यारे! तपस्या की विवेचना तो नाना प्रकार की मानी गई है। याज्ञवल्क्य मुनि आश्रम में बेटा! तपस्या की नाना प्रकार की विवेचनाएं हैं जैसे ब्रह्मचारी विद्यालय में अध्ययन करता है, तो वह बेटा! गाहर्पथ्य नाम की अग्नि की पूजा करता है। अग्नि का अभिप्रायः यह है कि जिस विचारों से, जिन महत्व से, वह अपनी विद्या का अध्ययन करता है और उस विद्या के ऊपर अपना आचरण करता है और अपने को उसके अनुकूल बनाता है बेटा! वह ब्रह्मचारी, ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है। वह देवतव को प्राप्त हो जाता है, वह प्रकृति को जान करके बेटा! वह ब्रह्म में समावेश हो जाता है।

अनुशासन मे तपस्या

तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, तपस्या के बहुत से अभिप्रायः है तपस्यां ब्रह्मणां अस्सुते वेद का वाक् कहता है कि अनुशासन में होना ही तपस्वी कहलाता है। जब राजा तपस्वी होता है, जो राजा अपनी प्रजा को, राष्ट्र में रहने वाले को, पुत्र के तुल्य स्वीकार करता है और वह स्वयं पितर बन करके मुनिवरों! अपने को तपस्वी बनाता है कि यह मेरा समूह है, मेरा समाज है, मानो देखो, इसमें मुझे रत्त रहना है और वह क्रियाकलाप करना है जिससे मेरा राष्ट्र भ्रष्ट न हो जाए, मेरा राष्ट्र पथ से कुपथ में न चला जाए, तो वह राजा बेटा! तपस्वी होता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह कि मुनिवरों! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से यह प्रश्न किया गया कि भगवन्! यह जो आपने शून्य बिन्दु की हमें चर्चाएं की हैं, जब हम आचार्य कुल में अध्ययन करते थे तो, आचार्यजन हमें इसका अनुसरण कराते रहते थे, अनुवृत्तियों में रत्त होते रहते थे, तो मानो देखो, आचार्यों का तो यह कर्तव्य है। माता भी कहीं कहीं, हमें इस प्रकार की विचारधाराएं प्रगट कराती रही हैं। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि यह जो महत्तत्व है इसकी कहाँ प्रतिष्ठा होती है, यह कहाँ प्रतिष्ठित होता है? कहाँ यह सोम को ग्रहण करता है? तो यहाँ आ करके बेटा! ऋषियों की शैली में मानो देखो, ध्रुवा से ऊर्ध्वा को गमन और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में गमन करता है। अब वह ध्रुवा में गमन करते हैं महर्षि ने वर्णन करते हुए यह कहा कि प्रभु! हम यही जानने के लिए तत्पर रहते हैं।

चन्द्रमा मे सोम

परन्तु गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा हे भगवन! हे ऋषिवर! मंगलं ब्रह्े सम्भव प्रह्ा मानो ये जो महत्तत्व है चन्द्रमा को हमारे यहाँ सोम कहते हैं, ये चन्द्रमा में प्रतिष्ठित हो जाता है, जितनी भी नाना प्रकार की वनस्पतियाँ हैं चन्द्रमा उन वनस्पतियों को ही रस देने वाला है और रसों से ही मानो ओज और तेज की उत्पत्ति होती है। वह चन्द्रमा सोम है, वह चन्द्रमा समुद्रों से सोम ले करके बेटा! उसे बिखेर देता है, और सूर्य से वह ऊर्ज्वा लेता है और मुनिवरों! देखो, वनस्पतियों से सोम लेता है, उस सोम का रेतस् बनता है और वही रेतस्

माता-पिता के शरीरों में, प्रवाह से गमन करता है। मेरे प्यारे! देखो, वह सोम कहलाता है, वह चन्द्रमा में, वह महत्तत्व जो बिन्दु रूप है वह उसी में निहित हो जाता है, उसी में प्रतिष्ठित हो जाता है।

चन्द्रमा की प्रतिष्ठा

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषियों ने यह वाक् श्रवण कर लिया तो महर्षि प्रवाहण ने उन्हें पुनः प्रश्न किया कि प्रभु! एक समय हम अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा मगध राष्ट्र में चले गएं थे और मगध राष्ट्र में कात्यायन के गृह में हमारा विश्राम हुआ, तो कात्यायन के गृह में, उनकी गृहणी ने यह प्रश्न किया कि यह जो चन्द्रमा है, यह सोम है। यह अमृत को बिखेरने वाला, परन्तु इसकी भी तो कोई प्रतिष्ठा कहलाती है, ये कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? तो उन्होंने कहा सम्भंव प्रमाण सूर्याणि गच्छतम् ऋषिं कहता है अमृतम् जब उनकी गृहणी ने यह प्रश्न किया तो उत्तर नहीं दे सके। तो वह प्रश्न सदैव हमारे अन्तर्हृदयों में बना ही रहता है, प्रभु! हम आज यह जानना चाहते हैं कि चन्द्रमा की प्रतिष्ठा क्या है? उन्होंने कहा चन्द्रमा की प्रतिष्ठा सूर्य कहलाता है। क्योंकि सूर्य ऊर्ज्वा के देने वाला है, द्यौ से प्रकाश लेता है, द्यौ से ऊर्ज्वा लेता है और वह ऊर्ज्वा को पृथ्वी पर नाना रूपों में बेटा! उसे बिखेर देता है। और यह अमृतां ब्रह्मणाम् उसी से चन्द्रमा अमृत का स्वामित्व करता है, रात्रि उसी के गर्भ में प्रवेश कर जाती है, अन्धकार का क्षय हो जाता है, यही सूर्य मानो देखो, इसको वेद ने अदिति कहा है, भास्कर कहा है, इसी को उदयन कहा है, इसी को मुनिवरों! देखो, वृख के रूप में इसका वर्णन किया गया है।

सुर्य किरणो से यन्त्र का निर्माण

तो विचार यह आता है कि यह जो सूर्य है यह मानो देखो, चन्द्रमा इस सूर्य में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। सूर्य में समाहित हो जाते हैं। इसलिए सोम का समन्वय देखो, द्यौ से रहता है। और घौ से ही प्रकाश ले करके यह ऊर्ज्वा के रूप में बिखेर देता है। मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिक जन मानो देखो, सूर्य की किरणों के साथ, कुछ यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं तो वह निर्माण यन्त्रों का करते, तो सूर्य की किरणों के साथ, यन्त्र बन करके बेटा! देखो, वह सूर्य की परिक्रमा भी करता रहा है, तो विज्ञान भी बड़ा महान और अद्वितीय रहा है तो विज्ञान भी इसी की आभा में रत्त होता रहा है। मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ और महर्षि शिकामकेतु, उद्दालक के यहाँ, एक यन्त्र का निर्माण हुआ था। जिस यन्त्र में मानो देखो, महर्षि पनपेतु ऋषि महाराज विद्यमान हो करके बेटा! छह छः माह तक सूर्य की किरणों के साथ यन्त्र गमन कर रहा है और वह सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, सूर्य की परिधि से वह यन्त्र मानो दूरी भी चला गया।

सूर्य की प्रतिष्ठा

तो विचार आता रहता है कि ये विज्ञान अपनी स्थली में बड़ा अद्वितीय रहा है। मैं तुम्हें विज्ञान में ले जाना नहीं चाहता हूँ मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन किया, तो वैशम्पायन उपस्थित हुए और महर्षि वैशम्पायन ने कहा हे प्रभु! मैं जब माता की लोरियों का पान करता था तो हमारे यहाँ, हमारे गृह में, महर्षि सोमकेतु मुनि महाराज देखो, वृत्तिका मुनि, हमारे गृह में पधारते थे, तो मेरी माता उनसे यह प्रश्न करती रहती थी कि प्रभु! यह जो सूर्य है यह कहाँ प्रतिष्ठित रहता है, यह सूर्य बड़ी ऊर्ज्वा वाला है, देखो, यह नाना प्रकार की कलाओं वाला है, रात्रि को गर्भ में धारण कर लेता है, चन्द्रमा को भी अपने में धारण कर लेता है, हे प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ कि इस सूर्य की प्रतिष्ठा क्या है, यह सूर्य कहाँ समाहित होता है? तो मुनिवरों! देखो, ऋषि कहता है कि भगवन! माता ने मुझे यह वर्णन कराया। वह प्रश्न बना का बना रहा, अब हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि यह सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित होता है?

मण्डलों की माला

तो मेरे पुत्रो! देखो, गाडीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा कि यह जो सूर्य है? यह अमृतं ब्रह्मणं व्रते देवाः यह गन्धर्व लोकों में ओत-प्रोत हो जाता है। क्योंकि गन्धर्व सौर मण्डल का मानो देखो, अन्तिम मनका कहा जाता है। ऋषि बेटा! परिचय देता हुआ कहता है, कि तुमने अनुसन्धान शालाओं में, अपने जीवन में दृष्टिपात किया होगा और यह जाना भी है दर्शनों की मीमांसावादियों से कि यह मानो देखो, एक दूसरे में ब्रह्माण्ड कैसे ओत-प्रोत हो रहा है, कैसे रत्त हो रहा है? ऋषि कहता है कि यह जो मानो पृथ्वी मण्डल है जैसा यह पृथ्वी मण्डल है, ऐसी ऐसी तीस लाख पृथ्वियाँ हैं, जो मानो देखो, सूर्य मण्डल में समाहित हो जाती हैं। तुम्हें यह तो प्रतीत ही है, मैंने तुम्हें कई काल में इसका वर्णन कराते हुए कहा, परन्तु ऋषि-मुनि यही शान्त नहीं हो जाते, वह समाधिष्ट हो करके, मेरे प्यारे! ब्रह्मरन्ध्र में अपनी अन्तरात्मा को ले जा करके और वहाँ अन्वेषण करते हैं। मेरे पुत्रो! वहाँ उन्हें यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है।

मेरे प्यारे! देखो, एक सहस्र सूर्यो की माला बनी बेटा! और उस माला को धारण करने वाला बृहस्पति कहलाता है। मेरे प्यारे! अनन्तमयी यह ब्रह्माण्ड है, आज मैं इसका वर्णन विशेष करने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह, इसकी व्याख्या नहीं, मानो देखो, एक सहस्र बृहस्पतियों की माला बनी, जिसको बेटा! आरुणि मण्डल ने बेटा! अपने में धारण कर लिया। एक सहस्र आरूणि मण्डलों की माला बनी बेटा! उसको ध्रुव ने अपने में धारण कर लिया। ध्रुव इतना विशाल मण्डल है बेटा! मेरे प्यारे! देखो, मानव विचारता ही रहता है, उसके ऊपर अन्वेषण ही करता रहता है। मुनिवरों! देखो, ऋषि ने जब और मालाओं की गणना कराई, तो एक सहस्र ध्रुवः मण्डलों की माला बनी, बेटा! और उन मालाओं को धारण करने वाला बेटा! यह पुष्य नक्षत्रा बन गया एक सहस्र पुष्य नक्षत्रों की माला बनी, तो उसको मूल नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र मूल नक्षत्रों की माला बनी, तो मेरे प्यारे! देखो, उसको रेणकेतु मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र रेणकेतु मण्डलों की माला बनी, तो मेरे पुत्रो! देखो, उसको म्रेचकेतु मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र म्रेचकेतु मण्डलों की माला बनी, तो अचंग मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र अचंग मण्डलों की माला बनी तो बेटा! उसको म्रेतमृतु मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र म्रेतमृतु मण्डल की माला बनी तो बेटा! उसको गन्धर्व ने अपने में धारण कर लिया मेरे प्यारे! देखो, इतनी मालाओं का एक सौर मण्डल बन गया।

ब्रह्माण्ड की विशालता

मेरे पुत्रो! देखो, जब इतनी मालाओं का एक सौर मण्डल बन गया तो ऋषि मौन नहीं रह सके। ऋषियों ने अन्तरात्मा में ध्यानवस्थित हो करके, बह्माण्ड और पिण्ड का मिलान किया। मेरे पुत्रो! देखो, उसका जब मिलान करने लगे, तो निर्णय देने लगे, अपना अपना व्रत्यं ब्रह्मा वह कहते हैं कि इतने सौर मण्डल जब एकं ब्रह्मा वत्यम् जब एक सौर मण्डल बन गया तो मुनिवरों! देखो, एक अरब, छियानवे करोड़, उनत्तीस लाख, उन्नचस हजार, पांच सौ इक्सठ के लगभग बेटा! इतने सौर मण्डलों की बेटा! एक आकशगंगा बनी। मेरे प्यारे! एक आकाशगंगा बन गई है। इस आकाश गंगा की एक माला बन गई। आकाशां भवितां ब्रह्मणे लोकाम् वेद का वाक् कहता है, वेद का शब्द कहता है कि ऋषि-मुनियों ने गम्भीरता से वेद का चिन्तन किया और मनन करके उन्होंने कहा कि लगभग देखो, एक अरब, उन्नासी करोड़, उन्नचस लाख और मुनिवरों! दो हजार पांच सौ इक्सठ के लगभग इतनी मुनिवरों! देखो, एक आकाश गंगा की एक अवन्तिका बनी। मुनिवरों! देखो, पौने दो अरब अवन्तिकाओं की एक निहारिका बन गई। तो मुनिवरों! देखो, ऋषिवर मौन हो गएं और यह कहा कि यह तो अनन्तमयी बह्माण्ड है, अनन्तमयी प्रभु का ब्रह्माण्ड है। मेरे पुत्रो! देखो, जो विज्ञानवेत्ता, जो आध्यात्मिक

विज्ञान और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करने वाले हैं उन्होंने अपना निर्णय दे करके बेटा! मौन हो गये।

तो विचारने से यह प्रतीत हुआ कि यह जो सौर मण्डल है इसका अन्तिम मनका है गन्धर्व मण्डल, उसमें सूर्य प्रतिष्ठित हो जाता है। सूर्य उसमें ओत-प्रोत हो गया। बेटा! और यह नाना प्रकार के मण्डलों का अनन्तमयी जगत माना गया है।

इन्द्र का स्वरूप

आओ मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ, मैं तो केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए आता हूँ क्योंकि परिचय देना ही हमारा कर्तव्य, व्याख्या देना हमारा कर्तव्य नहीं है। तो मेरे पुत्रो! देखो, वर्णं ब्रह्मा लोकां वाचन्नमः वायु सम्भवं ब्रह्माः मुनिवरों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार उत्तर दिया तो महर्षि सोमकेतु दद्दड़ उपस्थित हुए और उन्होंने कहा हे प्रभु! आपका उत्तर यथार्थ बन गया है। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं प्रभु! यह जो गन्धर्व है इसकी प्रतिष्ठा क्या है? यह कहा प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा, यह इन्द्र लोकों में प्रतिष्ठित हो जाता है। इन्द्रो भवं ब्रह्मा प्रतिष्ठां वाचं ब्रह्मे कृतं बृह्वि व्रताः मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि इसमें प्रतिष्ठित हो जाता है यह मानो देखो, इन्द्र है। हमारे यहाँ इन्द्र नाम विद्युत को भी कहा गया है, और इन्द्र नाम राजा का भी है, इन्द्र नाम आत्मा का भी है, इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का भी है और इन्द्र सूर्य को भी कहते है और यहाँ बेटा! प्रकरण की दृष्टि से इन्द्र नाम विद्युत को, और मण्डलों की आभा में रत्त रहने वाले को कहा है।

ब्रह्माण्ड का सूत्र

तो मुनिवरों! देखो, यह गन्धर्व उसमें ओत-प्रोत हो जाता है यह इन्द्र कहलाता है यही बेटा! देखो, इस ब्रह्माण्ड का सूत्रा बना हुआ है जैसे माला में भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके है परन्तु देखो, एक सूत्र है उसमें भिन्न-भिन्न मनके पिरोएं हुए होने से वह माला कहलाती है, वह माला बन जाती है। इसी प्रकार यह माला है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब उत्तर यथार्थ पाया, उन्होंने कहा प्रभु! यह जो इन्द्र है, यह कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा यह जो इन्द्र है ये प्रजापति में ओत-प्रोत हो जाता है। हमारे यहाँ प्रजापति की विवेचना करने वाले ऋषि-मुनियों ने कहा है कि प्रजापति नाम बेटा! परमपिता परमात्मा को, जो संसार का सृजन करने वाला है, प्रजापति नाम माता-पिता का भी है और प्रजापति नाम बेटा! देखो, यहाँ अप्रतं राजा को भी कहते हैं। तो प्रजापति की विवेचना करते हुए कहा कि परमपिता परमात्मा को प्रजापति कहते हैं, माता-पिता को भी कहते हैं कि वह प्रजावान बनते हैं। वह प्रजावान बन करके मुनिवरों! देखो, पितर और देवतव को प्राप्त होते रहे है। तो मुनिवरों! देखो, प्रजापति में ये ओतप्रोत हो जाता है। ये प्रजापति है जो मानो देखो, सोम को कहाँ ले गया है, चन्द्रमा से सोम को एक दूसरी प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठत करा दिया है तो वह सोम बन गया है, सोम से प्रजावान बनता है और वह प्रजापति कहलाता है।

देवताओ का मुख

तो मेरे पुत्रो! देखो, प्रजां ब्रह्मणे प्रजापति में ओत-प्रोत हो जाते हैं। ऋषि ने कहा हे प्रभु! यह भी हमने स्वीकार कर लिया। परन्तु हम जानना चाहते हैं यह प्रजापति कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है? उन्होंने कहा ये जो प्रजापति है, यह याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। मेरे प्यारे! यागां ब्रह्मणां व्रतं यागां रुद्रो भागं ब्रह्मा यागां रुद्रवेतु सम्भवाः मेरे प्यारे! देखो, याग में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह जो याग है यज्ञमान अपनी स्थली पर विद्यमान है याग कर रहा है, साकल्य को अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत कर रहा है। वह अग्नि देवताओं का मुख है, देवता उससे प्रसन्न होते है।

याग का स्वरूप

तो मेरे प्यारे! जहाँ देवता प्रसन्न रहते हों, उसी का नाम याग कहा जाता है। हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा सृष्टि के प्रारम्भ में बेटा! इस संसार को एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में परिणत किया है और वह यज्ञशाला है और यह ब्रह्माण्ड भी एक प्रकार की यज्ञशाला है भिन्न-भिन्न होता आहुति दे रहे है यह संसार चल रहा है। एक दूसरे में लोकलोकान्तर ओत-प्रोत हो रहे हैं एक-दूसरे में प्रतिष्ठा को पा रहे हैं यह जगत चल रहा है, ब्रह्माण्ड चल रहा है देखो, संसार रूपी यज्ञशाला विस्तार पूर्वक अपने में गतिवान हो रही है इसी प्रकार यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यज्ञमान बेटा! याग कर रहा है। हे यागां हे रूद्रो सम्भवं ब्रह्मे यागाः हे याज्ञिक! तू आ अग्नि के मुखारबिन्दु में उसे परिणत कर। तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान याग कर रहा है। आओ मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान की आभा ब्रह्मणां ब्रह्मे वेद का आचार्य कहता है, प्रश्न करता हुआ प्रभु! यह तो व्याख्या हमारी माता, आचार्य जन वर्णन करते रहे हैं हम यह जानना चाहते हैं कि यह याग किसमें प्रतिष्ठित हो जाता है?

वास्तविक दक्षिणा

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार प्रश्न किया, तो महर्षि गाड़ीवान रेवक ने कहा हे प्रभु! यह जो याग है यह दक्षिणा में ओतप्रोत हो जाता है मानो दक्षिणा में ही यह अप्रतम् याग का प्राण है। तो मुनिवरों! देखो, दक्षिणा क्या है? मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है इस दक्षिणा की विवेचना करने वाला ऋषि कहता है कि दक्षिणा मानो द्रव्य देने का नाम दक्षिणा नहीं, यह तो द्रव्य है, उदर की पूर्ति के लिए दिया ही जाता है। परन्तु दक्षिणा का अभिप्राय यह है कि यज्ञमान के अन्तर्हृदय में जो त्रुटियाँ हैं जो मानो देखो, ग्लानियाँ है, उन्हें आचार्य को, दक्षिणा के रूप में प्रदान कर देता है, तो वह उसकी वास्तविक दक्षिणा कही गई है। तो मेरे प्यारे! दक्षिणा का अभिप्राय यह कि यज्ञमान तू अपनी त्रुटियों को त्याग करके, संकल्पवादी बन करके, जैसे याग चहुमुखी है यह सबको सुगन्धित देता है ऐसे ही तेरे जीवन से सुगन्धि उत्पन्न हो जाए, और वही सुगन्धि तेरी अन्तरात्मा, बाह्य और आन्तरिक जगत में प्रवेश हो करके तू देवदत्त बन जाए मानो देखो, इस प्रकार यह दक्षिणा का स्वरूप माना गया है। परन्तु आचार्य ने कहा प्रभु! यह दक्षिणा कहा रहती है? उन्होंने कहा दक्षिणा श्रद्धा में रहती है।

श्रद्धा

यह संसार सर्वत्र एक प्रकार की श्रद्धामयी ओत-प्रोत है। श्रद्धा से ही मुनिवरों! देखो, माता है, श्रद्धा से पितर है, श्रद्धा से पति और पत्नी है, श्रद्धा से ही आचार्य कुल में बेटा! आचार्य और ब्रह्मचारी है। यह सर्वत्र मानो देखो, श्रद्धामयी जगत ओत-प्रोत कहलाता है। यह श्रद्धा में मानो दक्षिणा विद्यमान होती है। त्यागी तब ही बनता है जब उसके अन्तर्हृदय में श्रद्धा जागरुक हो जाती है। वह पवित्र वेदी है, वह पवित्र बन करके मानव को उल्लास में परिणत कर देती है। वह त्यागी और तपस्वी बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहते हैं, प्रभु! यह भी जान लिया। परन्तु देखो, यह श्रद्धा कहाँ रहती है? उन्होंने कहा श्रद्धा मानव के हृदय में रहती है। मेरे प्यारे! देखो, श्रद्धां ब्रह्मणा श्रद्धां रुद्रो मुनिवरों! देखो, श्रद्धा हृदय में ओत-प्रोत हो जाती है। यह हृदय ही है बेटा! सर्वत्र देखो, नाना तरंगों में तरंगो आती रहती हैं, हृदय में ओत-प्रोत होती रहती है। इन्हीं हृदयों का समन्वय मेरे प्यारे! परमपिता परमात्मा के हृदय से होता है और इन सबको जानता हुआ, मानव जब हृदय का हृदय से मिलान होता है उसी को मेरे प्यारे! देखो, मोक्ष की पगडंडी कहते हैं। वही मोक्ष की पगडंडी है जब परमात्मा का हृदय और मानव का हृदय मानो देखो, एक रस हो जाए और वह उसमें समावेश हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करने वाला बन जाए, तो वह हृदय अगम्य कहलाता है।

तो विचार आता रहता है, ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा कि हृदय मानो देखो, परमात्मा का हृदय, मानव का हृदय और हृदय से श्रद्धा, श्रद्धा से दक्षिणा, दक्षिणा से याग, याग से प्रजापति, प्रजापति से इन्द्र, इन्द्र से गन्धर्व और गन्धर्व से सूर्य, और सूर्य से चन्द्रमा बेटा! देखो, यह ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा की चर्चाएं बेटा! इससे पूर्व काल में प्रगट की।

परमात्मा की गोद

आज का विचार विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को विचारते हुए, मानो उसके ब्रह्माण्ड को विचारते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। हमारा एक ही लक्ष्य है कि इन वार्त्ताओं के उद्गीत गाने का, इन उद्गीतों को अपने में धारण करने का एक ही मन्तव्य रहा कि हम इस सागर से पार हो जाएं, मान अपमान से दूरी चले जाएं, हम नम्र बन करके क्योंकि परमात्मा नम्र है, इसलिए हमें नम्र बनना चाहिए। परमात्मा निरभिमानी है निरभिमानी बनना चाहिए परमात्मा मानो देखो, सर्वज्ञ है तो सर्वज्ञ कर्त्ताओं को विचारना चाहिए। तो बेटा! हम परमपिता परमात्मा की महती को जान सकते हैं और सागर से पार हो जाएं, यही हमारा मन्तव्य रहा है।

यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि यह दृष्टिपात आने वाला जगत, पृथ्वी में और पृथ्वी आपों में, आपो अग्नि में और अग्नि वायु में और वायु मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में एक दूसरे में कैसा मानो कटिबद्ध हो रहा है यह जगत, जब इसके ऊपर चिन्तन करना प्रारम्भ करते हैं, मनन करते हैं तो मेरे पुत्रो! ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हम परमपिता परमात्मा की अनुपम, उसकी छत्रा छाया में विद्यमान हो करके उसी की गोद में विद्यमान है। जैसे माता का प्रिय पुत्र क्षुधा से जब पीड़ित हो जाता है तो माता अपनी लोरियों का पान करा देती है, उसकी क्षुधा शान्त हो जाती है। इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो, परमात्मा के इस संसार को जानते चले, जाओ, जानते-जानते मुनिवरों! देखो, परमात्मा की गोद में चले जाओगे। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! मृत्यु के सम्बन्ध में दो विचार प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः यं रथं मां गताः वायु इदं आभ्यां देवाः। ओ३म् यशश्चां रथं आ पा रेवं गा याः। अच्छा भगवन्! दिनांक-२७-०९-१९८८-आर्य समाज मुरादनगर, गाजियाबाद

११ प्रकाश का वरण ०३ ०३ १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और जितना भी यह जगत मानो जड़ और चेतनता में हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में वह दृष्टिपात आता रहता है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर, सदैव विचार विनिमय करते रहे हैं, क्योंकि हमारे यहाँ, परमपिता परमात्मा की महिमा और उसकी महानता के ऊपर प्रायः हमारा अन्वेषण होता रहा है। क्योंकि प्रत्येक मानव अपने में महान बनना चाहता है और प्रकाश में रत्त रहना चाहता है।

तो इसीलिए जब हम वेद मन्त्रों की प्रतिभा अथवा वेद मत्रों के ऊपर जब विचार-विनिमय प्रारम्भ करते है तो मानो उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर प्रायः हम विचार-विनिमय करते रहते है और यह विचारते है कि वे परमपिता परमात्मा अनुपम है और उस परब्रह्म परमात्मा का जो यह जगत है यह अनन्तता में सदैव गमन करता रहता है। क्योंकि प्रत्येक परमाणु, अपनी अपनी आभा में गमन करता रहता है और एक-एक जो तरंगे हैं, उन तरंगों में मानव तरंगित रहता है। तो हम अपने में बेटा! तरंगित होते हुए और उस परमपिता परमात्मा की महती को सदैव विचार-विनिमय करते रहें। क्योंकि आज का हमारा वेद मन्त्र, हमें यह उद्गीत गा रहा है, हमें मानो देखो, उद्गान गाता हुआ कह रहा है-हे मानव! तू अपनी मानवीयता को ऊँचा बना और मानवीय दर्शनों को अपनी आभा में रत्त करता हुआ, तू इस संसार सागर से पार होता चल। मानो ऐसा हमारा वेदमन्त्र कहता है।

परन्तु हमारे वैदिक आचार्यों ने एक वाक् बेटा! बहुत पूर्व में कहा है। उन्होंने कहा है-कि संसार में मानव को प्रकाश में रत्त रहना चाहिए और अन्धकार से उसे रहित होना चाहिए। तो प्रत्येक मानव बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक यह अन्वेषण करता रहा है, विचारता रहा है कि हमें प्रकाश में जाना है और अन्धकार को त्यागना है। हमारे ऋषि मुनि बेटा! जितने भी अनुष्ठान है, अथवा जितने भी क्रियाकलाप है चाहे, वह प्राण विद्या हो, चाहे, वह मुनिवरों! देखो, आत्मा की आभा में, परमात्मा से मिलान करने का उसका नृत्त हो। परन्तु सर्वत्र आभा के गर्भ में, उसके मूल में एक ही वाक् रहा है कि हम प्रकाश में चले और अन्धकार को त्यागने का प्रयास करें। मेरे प्यारे! अन्धकार क्या है, और प्रकाश क्या है?

अन्धकार, प्रकाश की मीमांसा

तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ अन्धकार और प्रकाश की मीमांसा करने वालो ने, मीमांसाकारों ने कहा है कि हमारे यहाँ देखो, अन्धकारं ब्रह्मणां जानाति रूद्राः कि मानव को ज्ञान के मार्ग पर गमन करना चाहिए। और अज्ञान को सदैव त्याग देना चाहिए, तो मेरे पुत्रों! देखो, ज्ञान का नाम प्रकाश है, और अज्ञान का नाम अन्धकार माना गया है। तो इसीलिए हमें अन्धकार को, अज्ञान को त्यागना है और प्रकाश के मार्ग पर, ज्ञानी हो करके गमन करना है। मेरे पुत्रों! देखो, ज्ञान किसे कहते है? जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! विचार विनिमय करता रहा है और अन्वेषण करता रहा है और यह विचारता रहा है कि हम मानो देखो, उस प्रकाश में चले, जहाँ ऋषि-मुनियों का एक पवित्र मार्ग रहा है, और उसी मार्ग में हमें गमन करना है।

तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना, प्रायः तुम्हें देना नहीं चाहता हूँ, आज का हमारा वेद मन्त्र, हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है। वेदमन्त्र कहता है ब्रह्मणां ब्रहा कृत्यं लोकां वायु सम्भव ब्रह्म मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र यह कहता है कि मानव को, अपने जीवन में एक सु-वृत्तियों में रत्त रहना चाहिए। जिससे बेटा! देखो, याज्ञिक पुरुषों ने बड़ा अन्वेषण किया है, अनुसन्धान किया है। उस अनुसन्धान में हमें रत्त रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, ऋषि-मुनियों का वह जीवन, उनके जो क्रियाकलाप है अथवा उनके जो विचार विनिमय करने का एक माध्यम रहा है, वह बड़ा विचित्र रहा है। आओ, बेटा! आज मैं तुम्हें, उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! देखो, महर्षि वैशम्पायन अपने आसन पर विद्यमान थे और वह आसन पर बेटा! विचार-विनिमय करते रहते थे प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर अन्वेषण होता रहता।

मानव का चित्रण

एक समय बेटा! मध्य रात्रि का काल था, और मध्य रात्रि के काल में एक वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आया और वह वेदमन्त्र यह कह रहा था चित्रं रथं ब्रह्वा सम्भवं ब्रह्वे द्यौ लोकां वायु सम्भवत्प्रह्वे यज्ञमानाः बेटा! वेदमन्त्र यह कह रहा है कि यहाँ प्रत्येक मानव का चित्रण होता रहता है। जो भी अग्नि के समीप विद्यमान हो करके, याज्ञिक बनता है और सु क्रियाओं में, अपने जीवन को ले जाता है, तो मुनिवरों! देखो, वह अपने में महान और मानो देखो, अपने को द्यौ लोक में दृष्टिपात करता है।

ऐसा बेटा! वेद का मन्त्र कहता है। परन्तु इसके ऊपर महर्षि वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज दोनों अपने में विचार विनिमय करते रहते थे और उनके विचार विनिमय करने के लिए बेटा! अपने में विचारं तं प्रह्वे व्रतं देवाः आत्मा, मेरे पुत्रों! आत्मतत्त्व से उसको विचार-विनिमय करने लगे, तो बेटा! विचार आया कि हम, अपने में इस वाक् को चिन्तन करने में अधूरेपन में ही, अपने को स्वीकार करते है। परन्तु हमारा विचार यह है कि आज तो हम यहाँ से गमन करें, और ऋषियों के मध्य में विद्यमान हो करके इसका विचार-विनिमय हो। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन ने जब ऐसा कहा तो महर्षि विभाण्डक मुनि बोले कि-महाराज! आप तो मानो देखो, अपने में हिरण्दन देवाः आप अपने में मौन न होईए, परन्तु इसके ऊपर चिन्तन तो करना ही चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, चिन्तन करते हुए, वह अग्नि की तरंगों पर जा पहुँचे। मेरे प्यारे! देखो, अग्निष्टोम पर जा पहुँचे, परन्तु देखो, अपने में निमटारा नहीं कर सके, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज और महर्षि वैशम्पायन दोनों ऋषियों ने बेटा! अपना एक कर्म बनाया, कि आज हम चलो, महर्षि उद्दालक गोत्र में गमन करेंगे और उद्दालक गोत्र से इन वाक्यों का निर्णय करेंगे, कि हमारा जो रथं ब्रह्मा हमारे जीवन का रथ कैसे बन सकता है।

द्यौ गामी रथ

तो मेरे प्यारे! देखो, उसी आभा को ले करके, वेदमन्त्र की प्रतिभा को ले करके, वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए बेटा! वह मानो दण्डक वनों में पहुँचे और दण्डक वनों में महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि बेटा! वास करते थे, और वहाँ उनकी अपनी एक सूक्ष्म-सी एक विज्ञानशाला थी, मानो उस विज्ञानशाला में वह विद्यमान थे। जो विज्ञानमयी अपने जीवन को बनाना, विज्ञानमयी अपनी धाराओं को बनाना, यह प्रायः उनका कर्त्तव्य रहा। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि कहते है सम्भूति अभ्यं ब्रह्मा लोकाम् मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि वैशम्पायन और देखो, विभाण्डक दोनों मुनि बेटा! देखो, जब ऋषि के द्वार पर पहुँचे तो पति और पत्नी दोनों अपने आसन पर विद्यमान थे और शान्त मुद्रा में देखो, मध्यदिवस था और मध्यदिवस में जब वह उनके

समीप पहुँचे तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने उनका स्वागत किया और स्वागत करने के पश्चात ब्रह्मणा ब्रहे सम्भव ब्रहे मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा-आओ, भगवन! विराजो। वह विराजमान हो गये। और विराजमान हो जाने के पश्चात्, उन्होंने कहा-कहो, भगवन! आज आपका कैस गमन हुआ है? उन्होंने कहा-हे भगवन! हम इसलिए तुम्हारे द्वार पर आए है कि हम मानो कुछ वेद मन्त्रों के ऊपर विचार विनिमय कर रहे है और वेदमन्त्र हमारा यह कह रहा है सम्भवं ब्रह्मा सम्भवं ब्रीहि कृतं देवाः रेवसुताः हे प्रभु! एक वेदमन्त्र है और यह चिन्तन कर रहे है कि यज्ञमान का रथ बन करके यह कैसे द्यौ लोक में गमन करता है, हम उस रथ को साक्षात्कार दृष्टिपात कराना चाहते है।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि बोले-कि महाराज! हमने इस वाक् के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया है, आप विराजिए, कुछ कन्दमूल इत्यादि मानो अतिथि, हमारा स्वीकार कीजिए। दोनों ब्रह्मवेत्ताओं ने बेटा! उनका अतिथि स्वीकार किया और स्वीकार करने के पश्चात् उन्होंने कहा-भगवन! अब विराजिए, अब आपको क्या उद्गीत गाना है? वेदमन्त्र क्या उद्गीतं ब्रह्मे वेदमन्त्र क्या कह रहा है? तो बेटा! देखो, उन्होंने कहा-कि वेदमन्त्र कहता है कि यज्ञमान प्रमाणं प्रहे देवाः अग्नं धविरस्तुतं ब्रीही ब्रहा देवत्वां द्यौ लोकाः हे प्रभु! वेदमन्त्र यह कहता है कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है, मैं उस द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ? मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन और भी नाना मुनिवरों! देखो, अपनी आभा में रत्त हो करके, शान्त मुद्रा में मुद्रित हो गएं और उन्होंने कहा-हे प्रभु! आओ, मैंने जो भी कुछ अब तक जाना है, मैं उसका तुम्हें निर्णय करा सकता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि बड़े विचित्र और मानो देखो, विज्ञान में रमण करने वाले थे।

वृत्तिका मण्डल

मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा-कि प्रभु! आओ, यह मेरी विज्ञानशाला है, मैं अपनी विज्ञानशाला में अपने पूर्वजों का दर्शन करता रहा हूँ। हे प्रभु! मैं विज्ञान की धाराओं में, अग्नि की तरंगों पर, अपने विचारों को ले करके मानो देखो, गमन करता रहा हूँ। मानो देखो, जैसे यज्ञशाला है, उसका आकार बना हुआ है और जितने आकार का वह बना हुआ है उतना ही मानो देखो, अध्वर्यु उद्गाता विराजमान हो करके वह बेटा! देखो, उनका रथ बन करके अग्नि की धाराओं पर मानो द्यौ लोग में प्रवेश हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, वही तो द्यौ लोक कहलाता है। द्यौ लोक से ऊर्ध्वा में भी गमन करने वाला, वृत्तिका एक मण्डल कहलाता है। मुनिवरों! देखो, जहाँ उदान प्राण की प्रतिभा निहित रहती है उसी आभा में बेटा! देखो, वह गमन करने वाला शब्द है।

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन कराया, शिकामकेतु उद्दालक और उनकी पत्नी ने कहा-आईए, भगवान्! आप हमारी इस विज्ञानशाला को, यज्ञशाला को दृष्टिपात कीजिए। मेरे पुत्रों! देखो, जब वह उनकी विज्ञानशाला में पहुँचे, तो यन्त्रों में बेटा! देखो, उनके पिता, महापिता, पह्विता मानो देखो, वह अप्रतं ब्रहे वह चित्रों में मुनिवरों! देखो, दृष्टिपात आ रहे थे। नाना चित्रावलियों में उनके पूर्वज और उनके क्रियाकलाप, मेरे पुत्रों! देखो, पचासवें महापिता, उनके क्रियाकलाप उन्हें स्मरण आ रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने कहा-हे प्रभु! हमारे यहाँ, यह स्वीकार किया गया है, वेदमन्त्र भी यही कहता है सम्भूति ब्रह्मणा व्रते देवाः क्या, अग्नि की धाराओं पर मानो यह शब्द विद्यमान हो जाता है।

अग्नियाँ

हमारे यहाँ कई प्रकार की अग्नि, स्वीकार की गई है। अग्नियों की धारा में बेटा! देखो, एक गार्हपथ्य नाम की अग्नि होती है। जिस गार्हपथ्य नाम की अग्नि में विराजमान होने वाला ब्रह्मचारी का एक विचार उसमें निहित होता है। वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहलाती है। जहाँ बेटा! देखो, ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करता हुआ,

बेटा! देखो, अपने को सजातीय बनाता है। विद्या में सजातीय बनाता हुआ, अपने को महान बनाता है, प्रभु को प्राप्त कर लेता है। तो मानो देखो, एक वह अग्नि कहलाता है, जिसको हम गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहते है और द्वितीय अग्नि का नाम मानो देखो, गृहपथ्य नाम की अग्नि कहा जाता है। जब गृह में प्रवेश करते है, माता-पिता विद्यमान होते है और माता-पिता देखो, उन क्रियाकलापों को दृष्टिपात करते है, जिससे हमारे गृह में प्रकाश हो जाए, हमारे गृह में अन्धकार न आ जाएं, हमारे बाल्य-बालिका सब दर्शनों की आभा में रत्त होने वाले हो। और दर्शनों का अध्ययन करने वाले हो। प्रकाश की महिमा को अपने में धारयामि बनाने वाले हो।

अग्नि की पूजा

तो मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, ऋषि शिकामकेतु उद्दालक ने वर्णन कराया कि हमारे जो पूर्वज थे, वह कैसे थे, तो बेटा! उन्होंने अग्नि की धाराओं पर, जो शब्द मानो अन्तरिक्ष में विद्यमान था, उनके जो पैतालीसवें महापिता थे, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करते थे। मेरे पुत्रों! देखो, दर्शनों का अध्ययन करते थे और अग्नि की पूजा का अभिप्रायः यह कि अग्नि का सदुपयोग करते थे। मेरे प्यारे! देखो, यन्त्रों में उन्होंने उन ऋषियों को दृष्टिपात कराया कि यह मेरे पिता है, मानो ये पैंतालीसवे महापिता है मानो देखो, इनके बाल्य है, बालिका है और देखो, इनकी धर्म वृत्तियाँ, हमारी महामाता है। मानो देखो, ये अग्नि की पूजा कर रहे हैं, अग्नि का अभिप्रायः यह है कि हम बाह्य अग्नि और आन्तरिक अग्नि दोनों का मिलान कर रहे है, और उसे गृहपथ्य नाम की अग्नि कहा जाता है, जो गृहों में प्रदीप्त रहती है, जो गृहों को ऊँचा बनाती है। मेरे पुत्रों! देखो, जिस प्रकार विद्यालयों में, आचार्यों के जो अनुपम विचार होते है, वे मानो देखो, ब्रह्मचारी को सजातीय बना देते है। इसी प्रकार बाल्यकाल में, माता-पिता के अनुपम जो विचार होते है, उनकी जो धारा होती है, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि के रूप में आ करके बेटा! देखो, गृह को स्वर्ग बना देती है।

तो मेरे प्यारे! ऋषि कहता है हे भगवन! विभाण्डक! तुमने यह जान लिया होगा, जो मैं निर्णय करा रहा हूँ। हमारे यहाँ मानो देखो, ये मेरे पिता है और महापिताओं के चित्र यन्त्रों में आ रहे हैं और वे संसार में नहीं है, परन्तु जो अग्नि की धाराओं पर जो शब्द, जो उनकी तरंगे मानो देखो, अन्तरिक्ष में विद्यमान है, वे मानो देखो, हमारे यन्त्रों में दृष्टिपात आ रही है। मैंने, एक नहीं, दो नहीं, अपने पचासवें महापिता का दर्शन किया है। उनके क्रियाकलाप उनका मानो देखो, जितना भी नृत्त होता रहा है, उस सर्वत्र को अपने यन्त्रों के द्वारा दृष्टिपात करता रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन कराया तो दोनों वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक मुनि बोले-कि हे प्रभु! आपको धन्य है। मैंने यह श्रवण किया है और वेद में अध्ययन किया है कि जो इन्द्र है, इन्द्र के यहाँ एक अध्वर्यु होता है, अध्वर्यु किसे कहते है भगवन!

अध्वर्यु

मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने कहा कि अध्वर्यु उसे कहते है, जो मानो देखो, अहिंसा में रमण करने वाला हो। जो हिंसा से रहित हो, और अहिंसा में परिणत होने वाला हो, क्योंकि राजा को और आचार्य दोनो को देखो, हमारे यहाँ अध्वर्यु कहा जाता है। यज्ञशाला में भी एक स्थान पर, अध्वर्यु विराजमान होता है, जो अपने में हिंसा नहीं करने वाला हो, जो मानो देखो, हिंसा से रहित होने वाला हो, जो अनुपम विचार देता है, उसका नाम अध्वर्यु होता है। महाराजा इन्द्र के यहाँ एक अध्वर्यु होता है, जो राष्ट्रीय सभा में बेटा! देखो, विराजमान होता है और वह मुनिवरों! देखो, हिंसा से रहित होता है, इसी प्रकार विज्ञानशाला में भी मानो देखो, एक अध्वर्यु होता है, वह अध्वर्यु अग्नि कहलाता है। वह अग्नि अध्वर्यु बन करके, मेरे प्यारे! देखो, हिंसा से रहित, जो अग्नि की तरंगे है, उन पर देखो, विराजमान हो करके अपनी धाराओं में सदैव रत्त होता रहा है।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, इस सम्बन्ध में केवल यह कि शिकामकेतु उद्दालक मुनि के यहाँ बेटा! नित्यप्रति अनुसन्धान होता रहा है और उनकी अनुसन्धान की जो अनुपम शैली है, वह बड़ी विचित्र रही है मुनिवरों! देखो, उनकी शैली ऐसी अमृतां ब्रह्मे वह अमृत को पान करते थे, मेरे प्यारे! अपने पूर्वजों के मानो सौवें महापिता का भी उन्होंने दर्शन किया। मेरे पुत्रों! देखो, जो उसकी अन्तरिक्ष में अग्नि की धाराओं पर, उनके शब्द, उनके क्रियाकलाप और उनके मुनिवरों! देखो, चित्र विद्यमान रहते थे, वही चित्रं रथं ब्रह्मा, मेरे प्यारे! देखो, वही तो ब्रह्मणां कहलाते है, जो चित्र बन करके अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत रहते है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह कहा तो शिकामकेतु से उन्होंने एक प्रश्न किया कि महाराज! आपका विज्ञान तो बड़ा अनुपम है, प्रभु! आपको यह प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई है? क्योंकि उद्दालक गोत्र में तो सब ब्रह्मवेत्ता ऋषि हुए है, आपको यह प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई है कि मैं विज्ञान में जा करके नाना प्रकार के चित्रों का दर्शन करूं, उनका निर्माण करूं और अपने पूर्वजों का दर्शन कर पाऊं। तो भगवन! यह प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई?

चेतनामयी जगत

उन्होंने कहा-हे भगवन! यह जो मेरी दिव्या पत्नी विद्यमान है मानो देखो, इसका नाम रम्भेश्वरी कहलाता है। और यह रम्भेश्वरी मानो जब मेरे गृह में इनका आवास हुआ, इनका जो जन्म है वह दद्दड़ीय गोत्र में हुआ मानो देखो, जब यह मेरे गृह में प्रवेश हुई, तो वह याग करती थी, यह ब्रह्मयाग में और देव याग में, दोनों में सदैव यह देखो, पारायण रहती। जब वह प्रातःकालीन ब्रह्म का चिन्तन करने लगी, ब्रह्मयाग होने लगा, तो प्रभु! की महिमा को दृष्टिपात करता हुआ बेटा! देखो, मानव अपने में अपना ही चिन्तन करने लगता है। बेटा! जैसे हमारे यहाँ वेद के मन्त्रों में आता है कि जड़ जगत और चैतन्य जगत, ये दो प्रकार का जगत् कहलाता है। मानो देखो, जड़ जगत की तो यह प्रतिभा है कि जो ज्ञान और प्रयत्न से शून्य रहता है, वह जितना भी जगत है वह जड़वत् कहलाया जाता है। परन्तु देखो, चेतनामयी जो जगत है, वह चेतनामयी जगत वह है जिसमें ज्ञान और प्रयत्न निहित रहता है। और जहाँ ज्ञान और प्रयत्न निहित रहता है, वह चेतनामयी जगत कहलाया गया है। परन्तु विशेषता यह है कि दोनों ही जगत में, वे परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। बेटा! जड़वत में भी और चैतन्यवत् में भी, वे निहित रहते हैं। परन्तु देखो, ज्ञान और प्रयत्न के माध्यम से अपने जीवन की आभा को ऊर्ध्वा में गमन कराते रहते है।

ज्ञान

तो आओ, मेरे प्यारे! जब ऋषि ने इस प्रकार निर्णय दिया कि जड़ और चैतन्य दो प्रकार का जगत है, जितना भी पिण्ड रूप में यह जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है यह बेटा! एक अनुपमता का एक स्रोत माना गया है मानो जितना भी चेतनामयी जगत है, वह आत्मा का प्रतीक माना गया है, वह आत्मा का मानो देखो, मौलिक जगत माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो, दोनों प्रकार के जगत को जानना, यह हमारा कर्त्तव्य माना गया है। और दोनों प्रकार के जगत में प्रवेश हो करके, मुनिवरों! देखो, ज्ञान और विज्ञान के रत्त होना चाहिए, क्योंकि दो प्रकार का ज्ञान और विज्ञान हमारे यहाँ नृत्त करता रहता है, एक बेटा! देखो, आध्यात्मिकवाद कहलाता है और द्वितीय भौतिक विज्ञान कहलाता है। तो भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों का जब समन्वय हो जाता है, तो मुनिवरों! देखो, विज्ञान का सदुपयोग हो जाता है और जब विज्ञान का मानो देखो, विज्ञान अपनी आभा में नृत्त करता हुआ, दोनों का समन्वय नहीं होता, तो मुनिवरों! देखो, विज्ञान का दुरूपयोग हो करके, यह समाज मानो देखो, अन्धकार में चला जाता है। अन्धकार में जाना ही, आत्मतत्त्व को न जानना ही मुनिवरों!

देखो, अन्धकार में जाना है और आत्मतत्त्व को जानना मानो देखो, ब्रह्म को जानना, ब्रह्म की सृष्टि को जानना और जान करके उसके ऊपर आरूढ़ हो जाने का नाम मेरे पुत्रों! देखो, ज्ञान कहा जाता है।

द्यौ गामी जगत

तो आओ मुनिवरों! देखो, महर्षि शिकाकेतु उद्दालक ने अपने उद्गार दिए और उन्होंने उद्गारों में यह प्रगट किया कि हम सदैव अपने पूर्वजों का दर्शन करते रहे, जिससे हमारा जीवन मानो पवित्रता में गमन करता रहे। ऐसा मुनिवरों! देखो, ऋषि ने जब यह वर्णन कराया, तो उस वर्णावृत्ति मेरे पुत्रों! देखो, वे दोनों ऋषि बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा-प्रभु! हम इस वेदमन्त्र के लिए विचार विनिमय कर रहे थे, कि यज्ञमान का रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है और द्यौ लोक वाले रथ को हम गमनता में दृष्टिपात करना चाहते थे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा-आओ, भगवन! मुनिवरों! देखो, वे दोनों जब याग करते थे, शिकामकेतु उद्दालक और उनकी पत्नी, कामधेनु के घृत के द्वारा याग करते थे, तो बेटा! देखो, जैसे अग्नि में देखो, उनका समन्वय करते और शुद्ध हृदय से जब वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते तो बेटा! देखो, उनके चित्र मानो देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे। हे ऋषिवर! यह यन्त्र विद्यमान है, इस यन्त्र में मानो देखो, इनके चित्र द्यौ लोक को जाते हुए दृष्टिपात आ रहे हैं। मानो देखो, यह आकार यज्ञशाला का है, यह आकार मानो देखो, स्थली का है, जहाँ अध्वर्यु, उद्गाता और यज्ञमान विद्यमान हो करके गमन कर रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह द्यौ लोक को जाता हुआ, जगत दृष्टिपात आने लगा।

मानव की इच्छा

मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक बेटा! बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! आप को धन्य है, हम तो मानो देखो, इसका दर्शनों में अध्ययन करते रहते थे, मानो पोथियों में अध्ययन करते थे, आज हमने इसको दृष्टिपात किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि शिकामकेतु कहते है, कि हमारा यह जो विज्ञान उत्पन्न हो करके मानो देखो, हमारे यहाँ ब्रह्मणं ब्रहे यह गृहपथ्य नाम की अग्नि से उत्पन्न होता है, इसीलिए हमें गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करना चाहिए और गृहपथ्य नाम की अग्नि को अपने में धारयामि बनाते हुए बेटा! इस सागर से पार होना चाहिए। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं बेटा! अपने विचारों को बहुत दूरी ले गया हूँ। विचार केवल यह कि मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव यह चाहता है कि हमारा हृदय, हमारा मानवीयतव यह प्रकाश में चला जाएं और अन्धकार को त्यागने वाले बनें। मेरे पुत्रों! देखो, जो विज्ञानवेत्ता होते है, आध्यात्मिकवाद का शमन करने वाले होते हैं वे बेटा! प्रकाश में चले जाते है, वह प्रकाश में, ज्ञान में रत्त हो जाते है और जो इससे विमुख हो जाते है, वह अज्ञान में चले जाते है।

उपाधियाँ

तो बेटा! देखो, ज्ञान और अज्ञान दोनों को अपने में धारण करना है, अपने में चिन्तन में लाना है क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, बेटा! वर्तमान के काल तक, इसके ऊपर अनुसन्धान होता रहा है। विचार विनिमय होता रहा है, नाना ऋषिवर अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, विचार करते रहे है। बेटा! राष्ट्रीय विचारों में भी इस प्रकार के विचार आते रहे है और जैसे देखो, हमारे यहाँ मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था, कि यह जो उपाधियाँ बनती है यह भी केवल ज्ञान और अज्ञान के ऊपर बनती है जैसे एक इन्द्र उपाधि है, देवताओं का राजा इन्द्र है और उसे इन्द्र कहते है जो बेटा! एक सौ एक अश्वमेध याग कर लेता है। अश्व कहते है राजा को, और मेध कहते है प्रजा को, जो प्रजा और राजा दोनों में मानो देखो, प्रकाश आ जाता है और उनमें देखो, एक दूसरे में मिलन होने की क्षमता हो जाती है, वह मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ

अश्वमेध याग करते रहे है। और मुनिवरों! देखो, वह अग्नि मानो एक सौ एक अश्वमेध याग में रमण करने वाले, पृथ्वी के राजाओं को एक सूत्र में लाने वाला, वह इन्द्र कहलाता है। मानो देखो, इसीलिए हमारे यहाँ इन्द्रियों का स्वामीतव करने वाला, जो इन्द्रियों पर संयम करने वाला है, वह इन्द्र है। तो मुनिवरों! देखो, हमें इन्द्र उपाधि को प्राप्त करना चाहिए। इसी प्रकार ब्रह्मा उपाधि है, इसी प्रकार विष्णु उपाधि है।

मेरे पुत्रों! देखो, इनकी विवेचना तो मैं इससे पूर्व काल में दूंगा आज तो केवल यह कि मुनिवरों! देखो, हमारे वेदमन्त्र उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि मुनिवरों! वेदमन्त्र कहता है ऋषियों का मत कहता है कि प्रकाश में चलो और अन्धकार को त्यागने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो, प्रकाश किसे कहते है, प्रत्येक ज्ञान और विज्ञान को अपने में समन्वय करना, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश होना, मेरे पुत्रों! अपने पूर्वजों के हमें विचार ले करके, गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करते हुए ब्रह्मवर्चोसि बन करके मुनिवरों! इस सागर से पार हो जाए, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चाएं कल प्रकट करेंगे।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह, कि हमें परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए और ज्ञान अपनी आभा में बड़ा विचित्र बन करके रहा है, ऋषि-मुनियों ने प्रत्येक आभा में बेटा! बहुत अनुसन्धान किया और उन्होंने गम्भीरता में मनन किया है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या, मुनिवरों! देखो, गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करने वाला ब्रह्मचारी, छात्र होना चाहिए और गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला बेटा! देखो, गृह स्वामी और गृह स्वामिनी होने चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, जो अग्नं ब्रह्मा और अग्नि को जानना चाहते हो तो बेटा! वह विज्ञान है, वह यन्त्रशाला है नाना प्रकार की चित्रावलियों का निर्माण किया जाता है। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मनुः वाचन्नमः। ओ३म् दधिरथप्राणा वायु गतं मनु आभ्यां गत्प्रा यशो आपाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा ०३.०३.१९८९ मालवीय नगर

१२ याग की अनिवार्यता ०४ ०३ १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की, महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और जितना भी यह जगत, हमें दृष्टिपात आ रहा है यह सर्वत्र यज्ञोमयी स्वरूप है। इसीलिए वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं है, याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास करता रहता है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसका ज्ञान और विज्ञान इतना नितान्त माना गया है मानो उसके ऊपर नाना ऋषिवर परम्परागतों से अन्वेषण करते रहे है, परन्तु वह इतना विशाल है, मानो उसकी इतनी ऊर्ध्वा में गमनता रहती है जिससे मानव उससे शान्त रहता है।

ब्रह्मयाग

तो हमारा वेद का मन्त्र हमें क्या कह रहा है, वेद का मन्त्र कहता है कि वे परमपिता परमात्मा पुरोहित है और वे पराविद्या को जानने वाले हैं, मानो वे यज्ञोमयी स्वरूप में ही रत्त रहने वाले हैं। हमारे यहाँ यागों के कर्मकाण्ड में, उस परमपिता परमात्मा की बड़ी महत्ता रही है और उसकी अलौकिकता मानो अन्तं ब्रह्मा इस प्रकृति के कण-कण में ओत-प्रोत है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर विचार-विनिमय करते रहते है। हमारे यहाँ, कर्मकाण्ड में मानो हमारी वृत्तियों में बेटा! पाँच प्रकार का वर्णन आता है। सबसे प्रथम याग का नाम ब्रह्मयाग कहा जाता है। जिस ब्रह्मयाग की हम चर्चा कर रहे है और वह ब्रह्मयाग कैसा है? मानो प्रातःकालीन ब्रह्मयाग कैसा है? मानो प्रातःकालीन ब्रह्म का चिन्तन करना और परमपिता परमात्मा को सर्वज्ञता में दृष्टिपात करना है। हमारे अंग-संग रहने वाला एक-एक परमाणुवाद में जो गमन करने वाला है, वे परमपिता परमात्मा है। मानो उसकी जो रचना है, मानो एक-एक, कण-कण में उसकी रचना दृष्टिपात आती रहती है, उस परमपिता परमात्मा का जो उग्रमयी स्वरूप है वह भी मानो देखो, जब मानव अन्तर्मुखी हो करके चिन्तन करता है तो प्रायः उसे वह दृष्टिपात आता है कि यह तो ब्रह्म का ही मानो उस परमपिता परमात्मा की महती है और अनन्तता है। तो मुनिवरों! देखो, जब प्रभु की रचना के ऊपर, विचार-विनिमय प्रारम्भ करता है, तो वह ब्रह्मयागी कहलाता है क्योंकि ब्रह्म का चिन्तन करना, यह हमारा कर्त्तव्य है।

देवपूजा

द्वितीय जो याग है उसे हम देव पूजा के रूप में परिणत करते रहते है। तो हमारे यहाँ देखो, देवता कौन है? मानो दो प्रकार के देवता हमारे वैदिक साहित्य में माने जाते है। एक जड़ देवता है तो एक चैतन्य देवता कहलाता है। मानो वह जो जड़ देवता है उनमें पंचीकरण हो रहा है, उसमें बेटा! देखो, जैसे पृथ्वी है, आपोमयी जलप्रहा आपोमयी, अग्नि, वायु और अवकाश बेटा! वह पंचीकरण हो रहा है, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक पंचीकरण में विद्यमान रहता है। जब माता के गर्भ स्थल में, हम जैसे शिशु विद्यमान होते है तो इन्हीं पंच महाभूतों को ले करके बेटा! देखो, वे परमपिता परमात्मा रचना करता है और वह कैसा भव्य रचनाकार है, बेटा! उसकी रचना बड़ी अलौकिक और महानता में गमन करती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, किसी को यह प्रतीत नहीं होता, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है।

तो बेटा! देव पूजा, जो हमें निर्माणित कर रहा है, वह हमारा देव है। हम उस देव के समीप जा करके,

देवता का पूजन करें। बेटा! देखो, जहाँ अग्नि का पूजन है, पूजा का अभिप्रायः यह है कि उसका हमें सदुपयोग करना है। जैसे अग्नि की हमें पूजा करनी है, तो अग्नि तेजोमयी है अग्नि मानो देखो, उष्णा बनाने वाली है। इसलिए हमें भी तेजोमयी बन जाना चाहिए। बेटा! देखो, यह आपोमयी अमृत मानो यह प्राणसत्ता को बलवती करने वाला है, यह प्राणेश्वर कहलाता है। बेटा! देखो, आपो की हमें उपासना करनी है, अथवा उसका सदुपयोग करना है जैसे पृथ्वी हमें गुणाधानं ब्रह्मे बेटा! पृथ्वी सर्वत्रता को अपने में समेट लेती है, तो हमें पृथ्वी की उपासना करनी है। और उपासना का अभिप्रायः यह कि पृथ्वी में जो गुण है, उन्हें अपने में धारण करने का नाम मानो देखो, गुणाधानम् कहा गया है, वह देव पूजा है। पंच महाभूतों की मानो देखो, हम अपने में धारयामि बना करके बेटा! यह जड़ देवता है। एक चैतन्य देवता कहलाते है और वह चैतन्य देवता वह है जैसे परमपिता परमात्मा का नामोकरण तो होता है जैसे माता है, पितर है, आचार्यजन है, पुरोहित जन है बेटा! राजा है, यह सर्वत्र मानो देखो, हमारे जड़ देवता कहलाते है। वे जड़ देवता मानो जड़ं ब्रह्मा जड़ं वृत्ति मानो देखो, यह चेतनता में गमन करने वाले है, जड़ से सम्पर्क करते हुए चेतना में प्रवेश हो जाते। बेटा! वही चेतना मानो देखो, चैतन्य देवता बन करके बेटा! आज जिनमें ज्ञान है और प्रयत्न है वह चैतन्य देवता कहलाते है।

बेटा! चेतना का अभिप्रायः क्या है, हमने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया, क्या चेतना का स्वरूप, जब हमारे समीप आता है तो बेटा! चेतना कहते है सम्भूति ब्रह्मणा लोकां वायु सम्भवाः मेरे प्यारे! देखो, चेतना के गर्भ में रत्त रहता ही हमारा कर्त्तव्य माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ पितर-जन है, मातृ-जन है मुनिवरों! देखो, जब माता-पिता हमें शिक्षा देते है। मैंने कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, कि माता वह देवता है, जो देवतव को अपने में धारण करने वाली, अपने गर्भ में जो शिशु पनप रहा है बेटा! अपने शिशु से वह वार्त्ता प्रगट करती है।

माता का देवता रूप

मुझे स्मरण आता रहता है माता मलदाल्सा के गर्भ में बेटा! जब आत्मा का, शिशु का प्रवेश होता तो माता मानो देखो, उसमें रत्त रह करके और माता उसके अन्तर्मुखी, उसके अन्तर्वृत्तियों में रत्त हो करके बेटा! उससे वार्त्ता प्रगट करती है। तो माता वह कहलाती है जो प्राण विद्या को जानने वाली हो, बेटा! प्राण विद्या को, प्राण और अपान में रत्त रह करके बेटा! शिशु से वार्त्ता प्रगट करने वाली हो। वह माता चेतना में रत्त है। वह हमारा चैतन्य देवता है, जो हमें शिक्षा दे करके, हमें मानो देखो, महान बना देती है। मेरे पुत्रों! देखो, द्वितीय ब्रह्मा देवता पितर-जन कहलाते है वह पितर कौन है? बेटा! हमारे पितरों की बहुत प्रकार की कौटियाँ मानी गई है, एक पितर वह कहलाते है जो मानो देखो, हमें अपने संरक्षण में निहित करने वाले है। एक मुनिवरों! देखो, पितर वह कहलाते है जिन्हें हम पितर कहते है। हमारे पिता, महापिता, पडपिता भी हमारे पितर कहलाते है। क्योंकि उनका रक्त हमारे शरीरों में गमन कर रहा है, उनके न प्रति कौन-सा संस्कार हमारे समीप आ करके हमें ओजस्वी बना सकता है। तो बेटा! वह पितर-जन कहलाते है। हे पितर-जनों! आओ, तुम मेरी बुद्धि को पवित्र बना जाओ।

पितर-याग

तो मानो देखो, इस प्रकार वह उपासना करता है। पितर-जन मानो देखो, आचार्य भी वह पितरों की कौटि में आता है। आचार्य एक होता है, पितर अनेक हो जाते है। परन्तु देखो, एक गुरु, आचार्य कहलाता है जिसके संरक्षण में विद्यमान हो करके, हमारे ऊपर बेटा! जो पितरों का और देखो, आचार्यों का जो ऋण है उससे अवऋण होना है। तो बेटा! देखो, उनका क्या ऋण है? जिन ऋषि-मुनियों ने बेटा! अपने जीवन का मानो

देखो, मन्थन किया है और मन्थन करने के पश्चात् बेटा! उन्होंने हमें विचार दिये, उन्होंने हमें दर्शन दिया है उन्होंने हमें बेटा! देखो, वैशेषिक इत्यादि देखो, ऋषि-मुनियों की आभा प्रदान की है। तो मानो देखो, उनकी आज्ञा का पालन करना और मानो देखो, उन साहित्यों को अपने समीप लाना, यह हमारे पितरों का, आचार्यों का ऋण कहलाता है, इससे हमें अवऋण होना चाहिए।

मेरे पुत्रों! देखो, यागां ब्रह्मणा यह पितर याग कहलाता है। पितरों का अभिप्रायः मानो याग का अभिप्रायः यह है कि हमें याज्ञिक रहना चाहिए। याग का अभिप्राय यह है कि हमें सुगन्धित रहना चाहिए। क्योंकि पितरों का याग करने वाला बेटा! पितर -लोक को प्राप्त हो जाता है। वह पितरों को प्राप्त हो जाता है। तो इसलिए हमें बेटा! देखो, पितर-यागी बनना चाहिए और मातृ-यागी बनना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, यह देव पूजा कहलाती है। देव पूजा का अभिप्रायः यह कि हम उसका सदुपयोग करें, जो उनके क्रियाकलाप है जो उनके क्रिया वृत्तियों में रत्त रहने वाले है उन्हें अपने में धारयामि धारण करके बेटा! हमें प्रायः देखो, उनका पालन करना चाहिए। तो मुनिवरों! देखो, यह देव पूजा हुई, द्वितीयं ब्रह्मा देखो, देवताओं के संरक्षण में रहना, देवताओं की आज्ञा का पालन करना, उसके पश्चात् हमारे यहाँ पितर-यागी का वर्णन आता है। मेरे प्यारे! देखो, पितर-याग का वर्णन यह है कि मुनिवरों! देखो, पितरों को अन्नाद देना और पश्चात् आप अन्नाद को पान करना, यह पितर-याग है। मेरे प्यारे! देखो, पितर-जन जब अपने गृह में आते है तो बेटा! देखो, पितर-जन ही तो ऊँचा बनाते है।

महर्षि शिकामकेतु का पितर-याग

मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज ने बेटा! देखो, एक समय पितर-याग किया था और पितरों के याग करने के पश्चात् मेरे पुत्रों! देखो, पितर-जन एक पंक्ति में विद्यमान हैं, वह कहते है शिकामकेतु ने उद्दालकां ब्रह्मणे बेटा! देखो, यहाँ रेंगणी भारद्वाज मुनि के यहाँ भी पितरयाग हुआ। बेटा! जब वह रेंगणी भारद्वाज मुनि के यहाँ पितरयाग हुआ, तो बेटा! देखो, पितरजन को निमन्त्रण दिया, पितर वह कहलाते है, जो मेरे प्यारे! देखो, संसार में विद्यमान है। मेरे प्यारे! पिता, महापिता, पडपिता ये सर्वत्र पिता कहलाते है। तो बेटा! जब उन्हें निमन्त्रित किया गया और निमन्त्रित करके एक पंक्ति में विद्यमान हो गये, भोज कराने लगे, भोज के पश्चात् आचार्य, पुत्र, प्रो ब्रहे हे पितरजनों! मुझे कोई उपदेश दो। तो मुनिवरों! देखो, आचार्यजन मानो पितरजन उपदेश देते हैं। हे व्रते हे गृहस्वामी! मानो देखो, जिस मार्ग से तुम्हारे पितर चले गएं है, उसी मार्ग से तुम्हें गमन करना है। और मानो देखो, पितरों का अभिप्रायः यह है कि जिनसे हमारी परम्परा बनी रहे, और परम्परा को स्थिर करने के लिए हम मानो देखो, पितर-जनों की सेवा और उनकी आज्ञा का, उनका भोज कराना यह तुम्हारा एक कर्त्तव्य माना गया है। तो बेटा! देखो, शिकां अमृतां ब्रह्म लोकाम् रेंगणी भारद्वाज मुनि महाराज ने यह वाक् स्वीकार किया।

बलिवैश्य याग

तो मेरे प्यारे! देखो, उसके पश्चात् बलिवैश्व आता है। बलि वैश्व कहते है कि जैसे हमारे यहाँ राष्ट्रपिता है, राजा के यहाँ मानो सर्वत्र प्राणियों का बेटा! देखो, एक पालन होना चाहिए। क्योंकि राजा को अध्वर्यु कहते है, राजा अध्वर्यु कहलाता है। और राजा के राष्ट्र में हिंसा नहीं होनी चाहिए। मानो यदि हिंसा होती है, तो उसका मानो देखो, बलिवैश्व याग सम्पन्न नहीं हो सकेगा। मानो देखो, अन्तरिक्ष में गमन करने वाले प्राणी है, जलचरों में भी गमन करने वाला है मानो जो पृथ्वी पर गमन करने वाले हैं सर्वत्र प्राणियों के लिए वह बेटा! बलिवैश्व याग किया जाता है। मानो देखो, पितररं ब्रह्मणे प्रहा व्रत्यं देवाः तो मेरे पुत्रों! देखो, हमें विचार-विनिमय करना है कि हम मानो अपने में अपनेपन को विचारते रहे और बलिवैश्व क्योंकि राजा के राष्ट्र में प्रत्येक प्राणी, एक-दूसरे

से गुथा हुआ रहना चाहिए, एक-दूसरे से समन्वय रहना चाहिए। जिससे बेटा! देखो, राष्ट्र ऊँचा बन सके। राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए प्रत्येक प्राणी की आवश्यकता होती है। मानो देखो, मछली से ले करके, प्रत्येक प्राणी की रक्षा करना, यह राजा का कर्त्तव्य है। राजा अध्वर्यु कहलाता है जैसे यज्ञमान, अपनी यज्ञशाला में अध्वर्यु का निर्माण करता है, अध्वर्यु का निर्वाचन करता है और कहता है कि मेरा अध्वर्यु, ब्रह्मा, मेरा गृह पवित्र बन जाए और मानो देखो, मेरा याग पवित्र बनें। तो बेटा! देखो, वह इस प्रकार के विचार देता है, तो उस राजा को अध्वर्यु कहते है। क्योंकि जितना भी हम प्रायः दूषित वायुमण्डल करते रहते है प्राणी, उसको मछली बेटा! अपने में ग्रहण करती रहती है।

भगवान मनु के कमण्डलु में मछली

तुम्हें यह प्रतीत होगा, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन भी कराया कि मुनिवरों! देखो, भगवान मनु के कमण्डलु में एक मछली आ गई थी। तो मुनिवरों! देखो, जब वह मछली को दूरी करने लगा, तो उस समय मछली ने अपनी वेदना में यह कहा-हे राजन्! मुझे आप दूरी क्यों कर रहे है, मैं तुम्हारे कमण्डलु में आ गई हूँ, क्योंकि यहाँ समुद्रों का यह नियम है कि बड़ी मछलियाँ प्रायः देखो, सूक्ष्म मछलियों को आहार कर जाती है। इसलिए मैं मानो देखो, तुम्हारी शरण में आई हूँ। भगवान मनु ने यह स्वीकार कर लिया। भगवान मनु के बेटा! देखो, वह कमण्डलु में पनपती रही। जब यह कमण्डलु से प्रबल हो गई, तो उस समय गढेले में उसकी पालना होती रही। मेरे प्यारे! वही मछली थी, जिसने जल प्लावन के समय मानो देखो, भगवान मनु के प्राणों की रक्षा की।

ऋषि

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, मैं विस्तार से, तुम्हें एक परिचय दे रहा हूँ और वह परिचय क्या है कि राजा को अध्वर्यु कहते है-हे राजन! जिसके तू प्राणों की रक्षा करना चाहता है, वह तेरे प्राणों की रक्षा करेंगे। तेरे राष्ट्र की रक्षा हो सकेगी। तो मानो देखो, इस प्रकार का विचार बेटा! देखो, वैदिक साहित्य में प्रायः आता रहता है, हमारे यहाँ यह नियमावली मानी गई है कि राजा के राष्ट्र में मुनिवरों! देखो, अप्रहं अध्वर्यां ब्रह्म लोकाम् बेटा! देखो, ध्रुवा, अध्वर्यु कहते है राजा को, अध्वर्यु कहते है, जो हिंसा से रहित हो। जैसे यज्ञशाला में भी अध्वर्यु होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह, पंच महायागों का वर्णन आता रहता है। सबसे प्रथम ब्रह्मयाग, देव याग, पितरयाग, बलि वैश्व याग और ऋषि याग बेटा! ऋषियों की आज्ञा का हमें पालन करना है। ऋषि कौन होते हैं। जो मेरे पुत्रों! देखो, अनुसन्धान करने वाले होते है। जो तपां में रत्त रहने वाले है, हमें उनकी आज्ञा का पालन करना है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार क्या, यह पंच महाभूतों का यागां ब्रह्मे पंच यागां में हमें रत्त रहना चाहिए। यह संसार भी पंचीकरण कहलाता है। पाँच इन्द्रियाँ है, जिनको ज्ञान इन्द्रिय कहते है। पाँच ही प्राण है, जिन्हें हम प्राण कहते है। बेटा! देखो, पंच महाभूत है, जिनसे यह संसार की रचना होती है और पाँच ही प्रकार के देखो, मानव के क्रियाकलाप होते है। जिनसे मानव का क्रियाकलाप गतिवान हो रहा है। तो बेटा! देखो, इसके ऊपर हमें प्रायः अपने विचार-विनिमय करना चाहिए। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, मानो देखो, समय आज्ञा नहीं दे रहा है, इन सबकी विवेचना की जाए। अब मेरे प्यारे महानन्द जी अब दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् दिव्यां गतं ब्रह्मणाः वायु रथं ब्रह्रि वाचन्नमः नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, पंच महायागां का वर्णन कर रहे थे। जिन पंच महायागों का निर्माण, सृष्टि के प्रारम्भ से चला आ रहा है। यह क्रियाकलाप, प्रत्येक मानव के सहित गमन

करता रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने गागर में सागर की कल्पना की है। इन पाँचों यागों को उन्होंने गागर में भरण कर दिया है। अब मेरा व्रतम् देखो, जहाँ यह हमारी आकाशवाणी या हमारा यह विचार जा रहा है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ और मैं अन्तरात्मा से जहाँ देखो, यागों का कर्मकाण्ड, यागों की प्रतिभा रही है मेरा अन्तरात्मा सदैव प्रसन्न रहता है और मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और मेरी अन्त में यही कामना रहती है कि अन्तं ब्रहे हे यज्ञमान! देखो, यह जो वर्तमान का काल चल रहा है यह केवल देखो, वर्तमान का काल, वाममार्ग का काल है। जहाँ द्रव्यपति और देखो, सुरा और सुन्दरियों में मानो सदैव संलग्न है। तो यह जो काल है यह बड़ा वाममार्ग का काल है, वाममार्ग उसे कहते है जो उल्टे मार्ग पर गमन करने वाला हो।

मानो देखो, इसी प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी देखो, अध्वर्यु की विवेचना की है कि देखो, राजा को अध्वर्यु कहते है। परन्तु देखो, आधुनिक काल का राजा अध्वर्यु नहीं है। वह क्यों नहीं है? क्योंकि अध्वर्यु की विवेचना, पूज्यपाद ने की है, वह यह की है कि वह हिंसा से रहित हो, परन्तु देखो, आधुनिक काल का जो राष्ट्र है, वह हिंसा से युक्त है। मैं यह कहता रहता हूँ क्योंकि वह हिंसा से युक्त है। इसलिए उसे हम अध्वर्यु नहीं कह सकते। अध्वर्यु उसे कहते है, जो पालना करने वाला हो, अध्वर्यु उसे कहते है जो शासन और अपनी मनो प्रवृत्तियों को ऊँचा बनाने वाला हो। परन्तु देखो, यह गमन, यह राजा इसलिए हिंसक नहीं है आधुनिक काल का, क्योंकि यह मृतक प्राणियों को दृष्टिपात करता है। मानो प्राणी मात्र का आहार कर जाता है। तो इसलिए मैं यह कह रहा हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को तो प्रतीत है अथवा नहीं, परन्तु देखो, मैं अपने अन्तर्हृदय की वार्त्ता में यह कह रहा हूँ कि राजा को अध्वर्यु नहीं कह सकते। इस समय, यह जो वर्तमान में गतिवान जगत हो रहा है इसमें देखो, द्रव्यपति और देखो, सुरा और सुन्दरी के गमन में लगा हुआ है। परन्तु हे मानव! तू अपने जीवन को महान बनाने के लिए, सदैव तत्पर हो।

रुढ़िवाद से राष्ट्र पतन

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी मछली की जो एक विचारधारा प्रगट की उन्होंने देखो, भगवान मनु के विचार प्रस्तुत किए, उनके विचार उद्धृत किए है, जिनके विचारां में केवल देखो, अहिंसा और मानवीयता सदैव देखो, अहिंसा में परिवर्तित होता रहा है। हे राजन्! यदि तू ऊँचा बनना चाहता है तो राजा को चाहिए कि वह अध्वर्यु बन करके अपने राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाए और राष्ट्र की परम्परा को ऊँचा बना करके देखो, राष्ट्र तो पितर कहलाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी वर्णन कराया, परन्तु देखो, मैं यह कहता रहता हूँ हे राजन! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो मानो देखो, तुझे नाना प्रकार के रूढ़िवाद को, अपने राष्ट्र से समाप्त करना होगा। रूढ़िवाद उसे कहते है, जो ईश्वर के नाम पर भिन्न-भिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ पनपती रहती है और रूढ़ियों की इच्छा पूरी न करने वाला, राजा के राष्ट्र में वही रूढ़ियाँ देखो, रक्तभरी क्रान्ति का संचार करती रहती है। इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराते हुए कहा था और यह कहा था कि यह राष्ट्र अपने को यदि ऊँचा बनाना चाहता है तो जितनी भी मानो देखो, रूढ़ियाँ है, उनके आचार्यों को एकत्रित करके उनका सम्मेलन होना चाहिए और उनके लिए मानो बुद्धिमान राजा, स्वयं ब्रह्मवेत्ता हो, और ब्रह्म की चर्चा में देखो, ब्रह्म के ऊपर विचार-विनिमय हो। जिससे देखो, राष्ट्र ऊँचा बने और समाज में मानवता का प्रसार हो जाए। ऐसा प्रायः देखो, हमारा कर्त्तव्य अब्रहे रहा है।

तो विचार-विनिमय क्या, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराने जा रहा हूँ कि हे भगवन! देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो प्रजा और राष्ट्र दोनो को एक ही सन्तुलना में गमन कराना है। तो मैं आज विशेष

चर्चा न देता हुआ, केवल मेरा अन्तरात्मा यह कहता रहता है हे यज्ञमान! तू मानो देखो, तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे, ऐसी मेरी सदैव कामना रहती है, मैं उसी में रत्त रहता हूँ मानो देखो, मैं अन्तरात्मा से कहता रहता हूँ तुम्हारा जीवन सौभाग्यशाली बन करके मानो द्रव्य का सदुपयोग किए जाए, गृह में द्रव्य का सदुपयोग होना बहुत अनिवार्य है। हे ब्रह्मा मानो यदि द्वेषाग्नि किसी की जागरूक भी होती है तो होने दीजिए, परन्तु अपने में देखो, तुझे महान बन करके गमन करना है। मेरे पुत्रों! देखो, सम्भव ब्रह्मे मेरे आचार्य ने, पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में यह वर्णन कराया कि हे पुत्रों! तुम मानो देखो, याग में सदैव परिणत होते रहो। तो मैं उसी समय से याग में परिणत रहता हूँ।

तो विचार केवल यह कि आज मैं देखो, विशेषता न देता हुआ, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, ऐसी मेरी कामना रहती है और देखो, यह जो गृह, यह जो एक वाम मार्ग, गतिमान जगत हो रहा है इससे तेरी उपरामता होनी चाहिए। देखो, सुरा, सुन्दरी में इतना संलग्न न रह करके अपने जीवन में महान, पवित्रता को धारयामि बनाते हुए, अपने जीवन को महान बना करके, इस सागर से पार होना है। ऐसी मेरी कामना है, इस कामना के साथ मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः-मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने उद्गार प्रगट किए, इनके उदगारों में कितनी दाह है, विडम्बना है, उस विडम्बना में क्योंकि राष्ट्र के प्रति इनकी कितनी विडम्बना रहती है। इसीलिए मैं भी सदैव यह कामना करता रहता हूँ, कि राष्ट्र सदैव ऊँचा होना चाहिए, राष्ट्र में अपनी आभा निहित रहनी चाहिए। आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है। विचारां का अभिप्राय यह है कि हम अपने जीवन में महान बनें, और जैसा महानन्द जी का एक संदेश है, कि देखो, अपने में वाममार्ग प्रवृत्ति को त्याग करके और देव प्रवृत्ति ला करके और अपने सौभाग्य को अखण्डता में ले जाना यह इनका कर्त्तव्य है और यह आज का विचार अब समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मनु गायन्त्वा रथं आभ्यां गतं वाचन्नमः। ओ३म् सम्प्रियश्चमाः वायु गतं रथप्रायशाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा ४-३-१९८९ प्रातः मालवीय नगर, दिल्ली

१३ प्रकाश के लिए अनुष्ठान ०६ ०४ १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा, अनन्तमयी माने गएं है और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते है। क्योंकि यह जो दृष्टिपात आने वाला जगत है, यह दो रूपों में माना गया है। एक जड़वत में है तो दूसरा चैतन्यवत् में माना गया है। चेतना के स्वरूप में, जहाँ ज्ञान और प्रयत्न है मानो वह चेतना का मौलिक स्वरूप माना गया है। परन्तु जहाँ जड़वत् है, जितना भी यह पिण्ड जगत है, जो ज्ञान और विज्ञान से शून्य है, वह जड़वत् माना गया है परन्तु वे परमपिता परमात्मा दोनों प्रकार के जगत में निहित रहने वाले है, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते है।

तरगों में ब्रह्माण्ड

मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ ब्रह्मचारी यज्ञदत्त ने अन्वेषण करना प्रारम्भ किया और एक वेदमन्त्र के ऊपर जब अन्वेषण करने लगे, तो उन्होंने बेटा! एक परमाणु को विभक्त किया और परमाणु के विभक्त करने मात्र से, उसकी तरंगों में सर्वत्र ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगा। तो विचार आता रहा, वैदिक आचार्यों ने जड़ और चेतना के ऊपर अपना बड़ा अनुसंधान किया और संक्षिप्त विचारों में, उसको उद्बुद्ध किया है। तो हमारे यहाँ जितना भी यह अणु और परमाणुवाद है, यह सर्वत्र मानो ज्ञान और प्रयत्न से जो शून्यवत् है वह एक मानो पिण्ड के रूप में और तरंगों के रूप में विद्यमान रहता है। परन्तु जहाँ चेतना का स्रोत मानवीय मस्तिष्कों में सदैव उद्बुद्ध होता रहा है उसी चेतना के गर्भ में बेटा! आत्म चिन्तन और मनन करने की महापुरुषों में एक महाशक्ति रही है और उसे विचार-विनिमय करते रहे है।

विज्ञान के दो प्रकार

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें इस सम्बन्ध में, विशेष विवेचना प्रगट करने के लिए नहीं आए है। केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है। वेदमन्त्र कहता है कि जितना भी यह जगत मानो हमें दृष्टिपात आ रहा है, यह परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी महिमा है उसकी अनन्तमयी मानो एक अनुपम ज्योति है जिसके ऊपर मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक बेटा! अन्वेषण और विचार-विनिमय करता रहा है। तो आओ मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेद मन्त्र, जहाँ हमें यह प्रेरणा दे रहा है कि जड़ और चेतना के ऊपर विचार-विनिमय किया जाए, वहाँ हमारे यहाँ विज्ञानमयी चर्चाएं भी आती रहती है। हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में मानो ज्ञान और विज्ञान की परम्परागतों से मानव उड़ाने उड़ता रहा है। हमारे यहाँ दो प्रकार का ज्ञान और दो प्रकार का विज्ञान माना गया है मानो एक विज्ञान वह कहलाता है जिसे हम भौतिक विज्ञान कहते है और दूसरा विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान कहलाता है। तो दोनों प्रकार के विज्ञान के मूल में जब मानव प्रवेश करता रहा है तो इस ब्रह्माण्ड को मापता रहता है और विचारता रहता है और त्यागता रहता है, परन्तु अन्त में वह विवेकी बन करके अपने में ही अपने को समाहित कर लेता है।

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं इस सम्बन्ध में, तुम्हें विशेष विवेचना देने के लिए नहीं आया हूँ, कोई

व्याख्याता भी नहीं हूँ, परन्तु केवल विचार-विनिमय यह कि हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, बेटा! देखो, ज्ञान और विज्ञान के ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण और विचार विनिमय करता रहा है। उसी विचार को लाने के लिए, हमारे यहाँ एक-एक वे वेदमन्त्र में बेटा! देखो, अनुभूति विद्यमान होती रही है। मुझे स्मरण आता रहता है, आज का हमारा वेद मन्त्र, माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में विवेचना दे रहा है और यह कह रहा है कि हे मनं ब्रह्म वसुन्धरां दिव्यां लोकं हिरण्यं रथाः मानो देखो, अमृतां ब्रह्वे मेरे प्यारे! हमारे यहाँ यह माना गया है कि दोनों प्रकार का ज्ञान और विज्ञान मानवीय मस्तिष्कों में सदैव निहित रहा है। और विचारता रहा है, अपने में अन्वेषण करता रहा है। विचार विनिमय करता हुआ बेटा! बड़ी ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ता रहा है।

वसुन्धरा का अभिप्रायः

आओ, आज मैं बेटा! तुम्हें माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में, एक विचार विनिमय करने के लिए उपस्थित हुए है। हमारे यहाँ वसुन्धरा के, मैंने तुम्हें कई कालों में ये चर्चाएं भी तुम्हें प्रगट की है कि वसुन्धरा नाम बेटा! परमपिता परमात्मा को माना गया है और वसुन्धरा नाम माता को कहा गया है और वसुन्धरा नाम इस पृथ्वी को कहा गया है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वसुन्धरा का अभिपायः यह है कि जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत रहते है, जिसमें बसते है, उसका नाम वसुन्धरा कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, गौ मेध याग की चर्चाएं भी प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आती रहती है। प्राण सत्ता की चर्चा भी आती रहती है।

प्राण सत्ता

आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में मानो प्राण की बड़ी विशिष्ठता का वर्णन आ रहा था। हमारे ऋषि मुनि बेटा! प्राणों के ऊपर अपना अन्वेषण करते रहते थे। मुनिवरों! प्राण के ऊपर कहीं मानो देखो, एक प्राण चिकित्सा हमारे यहाँ बलवती रही है। महात्मा दधीचि के काल में बेटा! देखो, उन्होंने प्राण विद्या को जानने का प्रायः अपने में प्रयास किया है। तो मुनिवरों! देखो, प्राण विद्या को अच्छी प्रकार, अश्विनी कुमारों ने और महात्मा दधीचि ने जाना है। परन्तु देखो, इसी प्राण विद्या के सम्बन्ध में, क्योंकि वेद के मन्त्रों में, जब इस प्रकार प्राण का वर्णन आता है, यही प्राण को बेटा! अपान और व्यान की प्रतिभा में, जब मानव रत्त कर लेता है, तो मन को अपने में धारयामि बना करके बेटा! प्राण सूत्र में पिरोने का प्रयास करता है। तो मानो देखो, वह हमारे यहाँ, योगेश्वर और ऋषि-मुनि परम्परागतों से ही, मानो इसके ऊपर अन्वेषण करते रहे है।

तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरों! हे माता! तू वसुन्धरा कहलाती है। वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत हो रहे है, हमारे यहाँ वेद के साहित्य में मुनिवरों! देखो, वसुन्धरा नाम, माता को कहा गया है। जिसके गर्भ स्थल में मुनिवरों! देखो, हम सब विद्यमान हो जाते है, और माता के गर्भ स्थल में बेटा! पनपते रहते है और पनपते हुए, मेरे प्यारे! अपने में वह वशीभूत कर लेती है। परन्तु देखो, निर्माणवेत्ता तो निर्माण करता ही रहता है, मेरी भोली माता तो उससे वंचित रहती है, परन्तु एक ऐसा आश्चर्यजनक, एक ऐसा प्रभु का विज्ञान है जिसके ऊपर मानव देखो, अन्वेषण करता हुआ मानव थकित नहीं होता और अपने में यह अनुभव करता है कि यह कितना अनुपम विज्ञान है। बेटा! उस विज्ञान में वह मानव रत्त हो जाता है।

प्रभु द्वारा निर्माण

मेरे प्यारे! मेरी भोली माता के गर्भस्थल में, जब हम जैसे पुत्र, हम जैसे शिशु उसके गर्भ में प्रवेश कर जाते है, तो मानो देखो, उस समय एक बिन्दु है, बिन्दु में शिशु है और उस शिशु के प्रवेश होते ही मुनिवरों! देखो, सर्वत्र देवता अपने क्रियाकलापों में सदैव रत्त हो जाते है। वे क्रियाकलाप बड़े विचित्र माने गएं है। मेरे प्यारे! देखो, वह चन्द्रमा अमृत देने लगता है, सूर्य प्रकाश देता है, अग्नि उष्णा बनाने लगती है, पृथ्वी गुरूतव दे

देती है, और मुनिवरों! देखो, आपोमयी ज्योति उसका आसन बन करके, ओढ़न बन करके, पांशे बन करके मेरे पुत्रों! देखो, उसकी पालना में लगे हुए है, उसके निर्माण में लगे हुए है। मेरे पुत्रों! देखो, वायु प्राण देता है और मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष अवकाश देता है। इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है, अपने में बसा रही है, वह वसुन्धरा बन रही है, परन्तु मेरी भोली माता को यह ज्ञान नहीं हो रहा है, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है, कौन मानो देखो, पुरातत नाम की नाड़ी से समन्वय हो रहा है।

नाडियों से निर्माण

मेरे प्यारे! माता के रसना के निचरले विभाग में, एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है, उस नाड़ी का समन्वय बेटा! पुरातत नाम की नाड़ी से होता है। पुरातत नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है और वहाँ से पंचम नाड़ी बन करके माता की नाभि और बाल्य की, शिशु की नाभि से दोनों का समन्वय हो करके मुनिवरों! देखो, अमृतमयी प्रदान किया जा रहा है। बाल्य, हम जैसे शिशु पनप रहे है। हे भोली माता! तू उस विज्ञान से वंचित रहती है। वह प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी है। मानव बेटा! नाना प्रकार के विज्ञान में रत्त हो जाता है, नाना प्रकार की उड़ाने लगता है। परन्तु यह जो अनुपम विज्ञान मेरे प्यारे प्रभु का है, निर्माण कर रहा है बेटा! देखो, बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार, दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! देवां ब्रह्मणां ब्रहे व्रतम् मुनिवरों! देखो, वह अपने में ही समाहित होता हुआ मेरी भोली माता को यह प्रतीत नहीं, कौन निर्माण कर रहा है, कौन अमृत दे रहा है, कौन प्रकाश दे रहा है, मानो देखो, अपने में निर्माण हो रहा है और वैज्ञानिक तथ्यों से निर्माण हो रहा है। वह विज्ञान, मेरे प्यारे प्रभु का है, वह अनन्तमयी विज्ञान है।

माता पृथ्वी द्वारा पालना

मेरे पुत्रों! देखो, जब हम जैसे शिशु माता के गर्भस्थल से पृथक् हो जाते है, तो पृथ्वी माता अपने में बसा लेती है। वह वसुन्धरा कहलाती है। बेटा! जो खाद्य और खनिज पदार्थों का निर्माण मानो जिसके गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है, वह अन्नं ब्रहे मानो उसी में, अपने में आनन्दमयी को धारण करता हुआ, मुनिवरों! देखो, माता वसुन्धरा की याचना कर रहा है। हे वसुन्धरं ब्रह्मा वसुन्धरं दिव्यां ब्रह्मे व्रता स्वत्तम ब्रीहि वायुः सम्भवं ब्रह्मा वायु रेतं ब्रीह्री व्रतो देवत्वां दिवं ब्रह्मा, मेरे प्यारे! देखो, अपने में धारण करने वाला, वह जो ब्रह्म है, वह पृथ्वी को भी धारण कर रहा है। परन्तु मेरी प्यारी माता जो वसुन्धरा पृथ्वी बेटा! अपने में हमें धारण कर रही है, नाना प्रकार का खाद्यान्न दे रही है, नाना प्रकार के खनिज पदार्थों का निर्माण हो रहा है कहीं स्वर्ण के परमाणुओं का आदान प्रदान हो रहा है, तो कहीं मानो रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, सूर्य की अदिति किरण बन करके, कान्ति बन करके धारयामि बेटा! अपने में धारण कर रही है।

परमात्मा का आनन्दमयी स्रोत

तो विचार आता रहता है हे माँ! तू वसुन्धरा है, तेरे ही गर्भस्थल में यह संसार वशीभूत हो रहा है, बस रहा है, आनन्दवत् को प्राप्त हो रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं मंगलं ब्रहे मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के गर्भ में खाद्यान्न और खनिज पदार्थों का निर्माण हो रहा है, आदान-प्रदान हो रहा है मेरे पुत्रों! देखो, उस माता को हम धेनु के रूप में भी प्रगट किया करते है जिसको मानो दुहा जाता है। वैज्ञानिक इसके गर्भ में जाता है, तो नाना प्रकार के खनिजों को जान करके, यन्त्रों का निर्माण करता है। मानो देखो, जल शक्तिशाली को, जानता हुआ मुनिवरों! देखो, अपने में धारयामि बना लेता है। अग्नि को मानो इस पृथ्वी के गर्भ में दृष्टिपात करता है। अग्नि का सन्निधान मात्र होते ही सूर्य की किरणों के साथ मुनिवरों! देखो, रत्नों का निर्माण हो रहा है। वाह रे मेरे

प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, आज जब हम प्रभु के विज्ञान के ऊपर, जब हम अपना विचार-विनिमय प्रारम्भ करते है तो मानो एक अभ्योदय होने लगता है। विचार आता रहता है कि प्रभु का विज्ञान एक अनुपम है, एक अनूठा है, एक विचार अवृत्ति माना गया है। तो मुनिवरों! देखो, हम माता वसुन्धरा के गर्भ में विद्यमान है, परन्तु देखो, जब हम माता के गर्भ से भी पृथक् हो जाते है, तो वह जो चेतनामयी मानो जो प्रकाशमयी वह अनुपम देव है, परमपिता परमात्मा जो माता के रूप में और पितरों के रूप में भी जो विद्यमान रहता है हम मानो उसके गर्भ में प्रवेश हो जाते है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में रत्त हो करके उसके आनन्दमयी स्रोत को अपने में ग्रहण करने लगते है।

तो विचार आता रहता है कि माता वसुन्धरा के गर्भ में जाने का प्रयास करें और माता को जानने के लिए हम सदैव तत्पर रहे। तो बेटा! हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा है हे वसुन्धरं ब्रह्मा व्रतं देवत्वां दिव्यं ब्रह्मा मानो देखो, माता वसुन्धरा के गर्भ में जाने के लिए हम सदैव तत्पर है, क्योंकि वही हमारी ममतव को धारण करने वाली है। आओ मेरे पुत्रों! इस सम्बन्ध में कोई विवेचना नहीं मानो देखो, विचार आता रहता है क्या, हम एक-एक आभा में सदैव रत्त रहने वाले है।

आओ मेरे प्यारे! मैं वसुन्धरा के गर्भ में चला ही तो गया हूँ। विचार आता रहता है बेटा! ऋषि-मुनियों की उस सभाओं की चर्चाएं आती रहती है जहाँ ऋषि-मुनि बेटा! एक-एक वाक् पर अन्वेषण करते रहे है अथवा विचार-विनिमय करते रहे है क्या, कैसे मानो एक दूसरे में मानव समाहित हो रहा है, अपने में धारयामि बन रहा है आओ मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है हमारे यहाँ जितने भी संसार में, वसुन्धरा की पूजा का और जितने भी अनुष्ठान अथवा प्रभु की उपसना का अभिप्राय है ऐसा मानव क्यों विचारता रहा है परम्परागतों से ही, मानव सृष्टि के प्रारम्भ से मानव समाज इस संसार में आने के पश्चात् बेटा! इन दर्शनों में आने के पश्चात् बेटा! इनमें विचार-विनिमय मानो इनके गर्भ में प्रवेश होता रहा है और विचारता रहा है।

अनुष्ठान का मूल

परन्तु एक समय मुझे स्मरण है बेटा! देखो, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से यह कहा गया कि महाराज! ऐसा क्यों चिन्तन किया जाता है मानो देखो, यही वाक् बेटा! शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ भी यह प्रश्न उत्पन्न हुआ। परन्तु याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ भी प्रायः ऐसे प्रसंग आते रहे है और महर्षि भारद्वाज की विज्ञानशाला में बेटा! जब वैज्ञानिक अपने समूह में विद्यमान होते, तो उन वाक्यों के ऊपर निर्णय मानो निर्णय देना भी और विचार-विनिमय प्रश्न और उत्तर भी होते रहे है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज एक समय अपने आसन पर विद्यमान थे। ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धी मानो ये सब अपने में अनुसन्धान कर रहे थे, एक-एक वेदमन्त्र को ले करके और उसमें से अणु और परमाणु की प्रतिभा में सदैव रत्त हो रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, उस समय उनके समीप ऋषि सोमकेतु मुनि महाराज जो दद्डीय गोत्र में जिनका जन्म हुआ था वह उनके समीप आ पहुंचे और आने के पश्चात् उन्होंने उनका स्वागत किया, ब्रह्मणे बेटा! वह विराजमान हो गये। भारद्वात मुनि बोले कहो, भगवान! आगमन? उन्होंने कहा-भगवन! मैं इसलिए आया हूँ कि मैं यह जानना चाहता हूँ कि जितने संसार में मानव अनुष्ठान कर रहा है वृत्ति बन रहा है, क्योंकि मैं इस समय महर्षि कागभुषुण्ड जी के आश्रम से मेरा आगमन हो रहा है और वह मानो देखो, अपने अनुष्ठान में लगे हुए है उनको मानो बारह-बारह वर्षों के उन्होंने अपने अनुष्ठान किए है और तीन अनुष्ठान कर पायें और भी मानो देखो, करते रहते है। तो भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ यह अनुष्ठान, याग और मानो जितने भी चिन्तन करना है उसके मूल में क्या है? ऐसा क्यों कर रहा है?

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि ऐसा विचार तुम्हारे अन्तर्हृदय में क्यों आया है, क्योंकि तुम भी तो तपस्वी हो और मानो तुम सदैव विज्ञानवेत्ता भी हो, और एक-एक वाक् पर अपना निर्णय देते रहते हो यह तुम्हारे हृदय में विचार क्यों उत्पन्न हुआ। उन्होंने कहा कि प्रभु! मेरे हृदय में यह विचार इसलिए उत्पन्न हुआ है क्या, मैं इस संसार को दृष्टिपात करता रहता हूँ और यह जो नाना प्रकार के अनुष्ठान होते रहते है मानो प्रायः हम भी करते रहते है, हमारे पूर्वजां ने भी किए है, अब मेरे हृदय में यह उत्कृष्ट इच्छा हुई है कि इसकी जानकारी यह ऐसा क्यों कर रहे है।

मृत्युञ्जयी के लिए अनुष्ठान

तो मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा क्या, यह इसलिए किए जाते है क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में यह विचार, यह आकांक्षा लगी रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका बनी रहती है कि मैं मृत्यु से पार हो जाऊं और मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए तो प्रभु! मृत्यु से पार होने के लिए हे ब्रह्मा व्रतो ब्रह्मे मानो देखो, इसलिए मानव अनुष्ठान करता है। और नाना प्रकार के अनुष्ठान करता रहता है। वायु मण्डल को पवित्र बनाता रहता है, जहाँ वह साधना कर सके, क्योंकि साधना को स्रोत सबसे प्रथम यहाँ से प्रारम्भ होता है कि वायु मण्डल पवित्र होना चाहिए, जितना वायु मण्डल पवित्र होगा, उतनी मानो उसकी मनो की ब्रह्मवर्चोसि साधना पवित्र बनी रहेगी।

शब्दों का यान अग्नि

तो इसलिए वह नाना प्रकार के अनुष्ठान करता है। याग करता है, याग इसलिए करता है कि वह अपने हृदय से गान गा सके और अपने हृदय के जो उद्गार है वह वायु मण्डल में, अग्नि की धाराओं पर वह विद्यमान कर सके। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहते है कि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ भी प्रायः ऐसा होता रहा है, वह अग्नि की धाराओं पर अपने शब्दों पर देखो, अन्तरिक्ष में और द्यौ में प्रवेश करते रहे। इसी प्रकार हमारे यहाँ भी नाना प्रकार का अन्वेषण और विज्ञान में सदैव हम रत्त रहे, एक ही वाक् आता रहता है कि इसको जानने के पश्चात् मानवीयतव मानो देखो, एक प्रकाश में जा सके, ऐसी, उसकी मनोनीत इच्छाएं होती है, जितने भी मानव अनुष्ठान करता है, आसन लगाता है, मन को एकाग्र करने के लिए प्रयास करता रहता है, उसे प्राण के सूत्र में मानव पिरोने का प्रयास करता है, और प्राण सूत्र और मन की जब एक धारा बन जाती है, वह आत्मा में प्रवेश होकर मानो वह ब्रह्म की पगडण्डी को ग्रहण करना चाहता है, जिससे वह मोक्ष की आभा में रत्त हो जाए, यहीं संसार के नाना प्रकार के अवयवों से दूरी हो जाए, ऐसी उसकी कामना रहती है।

तो मेरे प्यारे! देखो, सोमकेतु ने कहा प्रभु! वाक् आपका यथार्थ है परन्तु ऐसा इसीलिए, उन्होंने कहा- प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, मृत्यु के सम्बन्ध में नाना प्रकार के विचार और दर्शनों का आश्रय लेता है प्राणी, और यह विचारता रहता है कि मैं मानों देखो, प्रकाश में चला जाऊं, अन्धकार मेरे समीप न रहे, माता वसुन्धरा की इसलिए याचना करता है उसकी उपासना कर रहा है, उस ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो रहा है और वह यह जानना चाहता है कि मेरी मृत्यु न आ जाए, मैं मृत्यु से उपराम हो जाऊं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है प्रभु! वाक् तो यथार्थ है। परन्तु मेरी अब तक सन्तुष्टि नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि विचारों और चिन्तन में चले जाओ, गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो जाओ और चिन्तन करने के लिए तुम तत्पर हो करके यह विचारों मेरे विचार में तो यही आता है कि प्रत्येक मानव, यह चाहता है कि मेरी मृत्यु न आ जाए, मैं मृत्यु से पार हो जाऊं जैसे एक मानो देखो, मेरी प्यारी माता रुदन कर रही है और व्याकुल हो रही है। एक दार्शनिक उसमें समीप जाता है वह जिज्ञासु कहता है विवेकी पुरुष, हे माता! तू व्याकुल क्यों हे

रही है? तो माता उत्तर देती है कि मेरा पुत्र था, परन्तु मेरे समीप न रहा, इसलिए व्याकुल हूँ। उन्होंने माता से यह प्रश्न किया क्या, यह आत्मा तेरा पुत्र है या शरीर तेरा पुत्र है। परन्तु देखो, माता निरुत्तर हो जाती है। वह इतना जानती है कि यदि तू शरीर को पुत्र कहेगी, तो शरीर तो तेरा ज्यों का त्यों, यहीं शव के रूप में विद्यमान है, और आत्मा को जानती नहीं, कि कितना विशाल है, कितना सूक्ष्म है, उसमें क्या क्या, अवयव विद्यमान रहते है माता उसको जानती नहीं।

संकल्प से पुत्र

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है जिससे यह सिद्ध होता है कि अमृतां ब्रह्मे आत्मा का ह्रस नहीं होता। और जिस अवयवों से यह मानव के शरीर का निर्माण हुआ है इसका भी विनाश नहीं होता है, जब उस शव को अग्नि में दाह कर दिया जाता है तो अपने-अपने परमाणु अपने में लय हो जाते है। मानो देखो, वह ब्रह्मणे व्रताम् तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहते है कि मृत्यु क्या है? मानो देखो, उन्होंने उत्तर दिया, क्या एक मानव का मिलन हुआ है और मिलने से विच्छेद हो गया है मानो देखो, माता-पिता का संकल्प तो वह पुत्र कहलाता है, परन्तु उसका विच्छेद हो गया है, उसके साथ जो बरता है वह हमारे समीप मानो देखो, हमारी स्मरण शक्ति में जागरूप आती रहती है।

अज्ञान से मृत्यु

आओ हम विचार करते रहे कि संसार में जितना भी अज्ञान है, उसका नाम मृत्यु है और जितना ज्ञान है वही हमारा जीवन है परन्तु इसलिए देखो, ज्ञान प्रकाश में रत्त रहता है और मृत्यु अन्धकार में रत्त रहती है, तो वेद का ऋषि कहता है याज्ञवल्क्य, हे सोमकेतु! तुम देखो, मृत्यु को त्यागना चाहते है, अन्धकार को दूरी करना चाहते हो, तो मानो तुम्हें प्रकाश होना चाहिए, जैसे वेद रूपी प्रकाश हमारे अन्तःकरण का प्रकाशक बन करके अन्तःकरण को पवित्र बनाता है। इसी प्रकार देखो, मानव का जब अन्तःकरणीय प्रकाश हो जाता है तो अन्तःकरण में जो अन्धकार के संस्कार है, उनका क्षय हो जाते है, वह मानो देखो, उनको वृत्त अप्रताम् देखो, प्रकाश में आ जाते है और प्रकाश का नाम जीवन है, अन्धकार का नाम बेटा! देखो, मृत्यु मानी गई है। तो वेद के ऋषियों ने बेटा! देखो, अपने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और भी नाना ऋषियों ने उदाहरण दिए और यह कहा, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने हे सोमकेतु! हमारे यहाँ नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहता है, और विचार-विनिमय होता रहता है हमने अभी तक यही जाना है कि सृष्टि के प्रारम्भ से जितने भी मानव अनुष्ठान करता रहा है, अन्वेषण करता रहा है विचार-विनिमय करता रहा है उसके गर्भ में केवल एक ही वाक् रहा है, क्या वह प्रकाश में जाना चाहता है, अन्धकार को त्यागना चाहता है। मुनिवरों! देखो, अन्धकार और प्रकाश दोनों की सन्तुलना में वह लगा रहता है। और जितने भी अनुष्ठान करता है मानव, मेरे प्यारे! देखो, केवल वह प्रकाश के लिए और प्रभु के समीप जाने के लिए क्रियाकलाप करता रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ आध्यात्मिक जो विचार धारा है, वह मृत्यु से पार होने के लिए मानो अपने में अन्वेषण और विचार-विनिमय करता रहता है, जिसके ऊपर वह हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, विचार धाराएं, विचारां ब्रह्मणे मेरे पुत्रों! देखो, याग और अनुष्ठानों में से लगा रहता है। सोमकेतु मुनि महाराज ने कहा-हे प्रभु! मेरे हृदय की मानो कुछ भ्रान्तियाँ और समाप्त हुई है, मैं यह और जानना चाहता हूँ क्या, ऐसा मानो देखो, ऐसा क्यों है? उन्होंने कहा ऐसा इसलिए है क्योंकि यह प्राणी का एक स्वाभाविकतव माना गया है जितना भी यह संसार में आता है इसको जितना जान लेता है, उसका पूर्ण रूपेण वह वर्णन नहीं कर सकता। मानो देखो, उसमें मौन हो जाता है और जब तक इसकी इन्द्रियाँ इसमें क्रियाकलाप करती रहती है वह अपनी

लेखनियाँ बद्ध करता रहता है अपने अनुभव देता रहता है, परन्तु जहाँ इन्द्रियों का व्यापार समाप्त हो जाता है वहाँ उसकी लेखनी भी शान्त हो जाती है।

याज्ञिक विज्ञान

तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने यह वर्णन कराया, महर्षि अपने में शान्त हो गएं और शान्त हो करके वह अपने विचार मंगलं ब्रह्वे देखो, उन्होंने कहा चलो, अब याग करें। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की यज्ञशालाएं विद्यमान थी, मानो देखो, वह चौबीस कोणों की यज्ञशाला में याग करने लगे और याग के माध्यम से ही वह विज्ञान की धाराओं में सदैव रत्त रहे, क्योंकि अग्नि की धाराओं को जानने का नाम ही मानो याज्ञिक विज्ञान है। जिस विज्ञान के लिए मानव परम्परागतों से विचारता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज और सोमकेतु देखो, दद्दड गोत्रीय ये नाना और भी ऋषि मुनि देखो, ब्रह्मचारियों के सहित, अपनी यज्ञशाला में मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित करते हुए, उनमें से कोई ब्रह्मा बना, कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना मानो कोई होता बन करके याग प्रारम्भ होने लगा। जब याग प्रारम्भ होने लगा, तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता ने बेटा! एक अव्रतम उन्होंने एक यन्त्र उसमें स्थित किया, भारद्वाज की आज्ञा से, तो मेरे प्यारे! जैसे यज्ञमान स्वाहा दे रहा था, स्वाहा देता हुआ मुनिवरों! देखो, उद्गाता, उद्गीत गाने लगा, अध्वर्यु हिंसा से रहित मानो साकल्य प्रदान करने लगा। तो मुनिवरों! देखो, जैसे उन्होंने याग का प्रारम्भ किया, प्रारम्भ करते समय यन्त्रों में मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वह जो शब्द है, स्वाहा उच्चारण करने वाले, वे बेटा! देखो, द्यौ लोग में जाते हुए दृष्टिपात आने लगे। हे यज्ञमान! तू अपनी यज्ञशाला में, विद्यमान हो करके अपने में मानो देखो, अनुष्ठानी बन करके तेरा द्यौ मानो देखो, पृथ्वी और द्यौ एक तेरा शुद्ध मार्ग बन जाए, जिससे मानो देखो, तेरे हृदयों के शब्द, वह द्यौ लोक में रमण कर जाएं और द्यौ से ऊर्ध्वा में अपने में गमन करके जब भी तुझे इच्छा हो, उन शब्दों और उन धाराओं को तू अपने में ग्रहण कर सके।

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ इस प्रकार का विज्ञान मानो विद्यमान था, ऐसे यन्त्र विद्यमान थे, बेटा! जो अग्नि की धाराओं पर, जो शब्द द्यौ लोक में जाता हुआ अवृत्ति लोकों में रमण करता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, लय होता हुआ दृष्टिपात आ रहा था। भारद्वाज मुनि ने कहा कि हे ब्रह्मचारी! देखो, यह दृष्टिपात करो, सोमकेतु जी, मानो देखो, इस विज्ञानशाला में एक यन्त्र है और यन्त्राणि ब्रह्मे यह चित्रावली कहलाती है। इसमें हमारे शब्द, हमारे क्रियाकलाप मानो देखो, आकार इत्यादि सब हमारा और यज्ञशाला जितने आकार की है, उसका रथ बन करके द्यौ लोक में मानो देखो, द्यौ में प्रवेश होता हुआ, तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में आश्चर्य चकित हो गएं और उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! यह हम मानो देखो, वेद मन्त्रों में अध्ययन करते रहे है। परन्तु आज हम उनका साक्षात्कार प्रभु दर्शन कर रहे है, यह हमारा बड़ा सौभाग्य है।

याज्ञिक हृदय की विशुद्धता

तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, भारद्वाज मुनि की वे विज्ञानशालाएं, जिसमें बेटा! देखो, याज्ञिकों के, शब्दों के साथ में परन्तु हृदय पवित्र होना चाहिए। हे यज्ञमान! जब तू याग करता है, तेरा हृदय इतना विशुद्ध होना चाहिए जिससे मानो देखो, याग और अग्नि में तेरा अन्तर्हृदय मानो उसमें लय होना चाहिए, जिससे तेरा शब्द, तेरा स्वाहा शब्द मानो देखो, द्यौ लाग में प्रवेश हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, जब हृदय अगम ब्रह्वा जब मुनिवरों! देखो, अध्वर्यु से कहा-हे अध्वर्यु मंगलं ब्रहे, मेरे प्यारे! हमारे वैदिक साहित्य में यज्ञशाला में

एक अध्वर्यु होता है, एक अध्वर्यु बेटा! राजा को भी अध्वर्यु कहा गया है। परन्तु परमपिता परमात्मा का नाम भी अध्वर्यु है। अध्वर्यु का अभिप्रायः यह है कि जिसके, जो हिंसा से रहित हो बेटा! देखो, राजा भी वही होता है अध्वर्यु, जो अपने राष्ट्र में हिंसा से रहित, उसका क्रियाकलाप रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, परमपिता परमात्मा तो सर्वज्ञ है, वह तो अध्वर्यु इस संसार का कहलाता है इस ब्रह्माण्ड का क्या मानो देखो, एक-एक कण-कण का वह अध्वर्यु कहलाता है।

द्यौ लोक में चित्र

आओ, मेरे प्यारे! अध्वर्यु के, हम सबके चित्र बेटा! द्यौ लोक में दृष्टिपात करते रहे, यह है बेटा! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है हमारे शब्द, हमारे क्रियाकलाप सब बेटा! देखो, उस माता वसुन्धरा के गर्भ में ओतप्रोत हो जाए, उसी में रत्त हो जाएं, बेटा! देखो, आज मैं प्रारम्भ के कुछ मन्त्रों में माता वसुन्धरा की याचना कर रहा था। हे वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली है, हे वसुन्धरा! तू अपने में बसाने वाली है। तो मानो देखो, यह जितना भी ब्रह्माण्ड है, मानो याग इत्यादि जितने भी क्रियाकलाप है, वह सर्वत्र एक माता वसुन्धरा के रूप में बेटा! विद्यमान रहते है और वह उसी में रत्त हो जाता है, तो प्रत्येक शब्द हमारा द्यौ लोक में रमण करने वाला हो और वह उसी में समाहित हो जाए, मेरे प्यारे! देखो, उसी से हम अपनी आभा को, अपनी आभा में आभा को तन्मय करते हुए उसे हम जान सके ऐसा बेटा! हमारा यह आज का विचार है, आज के विचारों का अभिप्रायः क्या, क्या मुनिवरों! देखो, उद्गाता जब उद्गीत गाता है, वह हृदय से गा रहा है मानो वह शब्दों की, वेदों की ध्वनि में ध्वनित हो रहा है, जब वह माला पाठ में गान गाता है, तो हृदय बेटा! जैसे माला में, नाना प्रकार के मनके होते है और वे मनके एक सूत्र में पिरोने से मुनिवरों! माला बन जाती है। इसी प्रकार प्रत्येक शब्द और वेद मन्त्रों की एक माला बन जाए और वह ब्रह्म सूत्र में पिरो करके बेटा! वह द्यौ में प्रवेश हो जाए।

तो आओ, मेरे प्यारे! इस प्रकार, जब विचार धारा हमारे अन्तर्हृदयों की जब उद्गाता उद्गीत गाता है तो वह गाता ही रहता है बेटा! जहाँ माला पाठ गाता है, घन पाठ गाता है, देखो, उद्गीत रूपों में गा रहा है, गाता ही रहता है। जब माला पाठ गाता है तो बेटा! परमात्मा को उससे तन्मय हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा जो मानो वह वसुन्धरा है, उसके गर्भ में बेटा! देखो, हमारा मन, कर्म, वचन सब उसमें लय हो जाए, उसी में तत्पर हो जाए और हम मुनिवरों! देखो, अन्धकार से प्रकाश में चले जाए और प्रकाश में रत्त हो करके, हम आलस्य और प्रमादी न बन करके, हम सदैव प्रकाश में रत्त हो करके, अपने प्रभु का गुणगान गाते हुए मुनिवरों! देखो, इस सागर से पार हो जाए। आओ मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या, हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में हम विद्यमान है और तू हमारा कल्याण करने वाली है मानो तू पिता के रूप में, परमात्मा के रूप में, कहीं जननी के रूप में, कहीं पृथ्वी के रूप में हमें धारण कर रही है और परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान मानो उसमें अलौकिक रूप में विद्यमान रहता है, यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा में तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां रुद्रा गतं मा रथाः ओ३म् जनिता रथा आभ्यां दधि ब्रह्मणाः अच्छा भगवन्! आज्ञा ०६-०४-१९८९ आर्य समाज खैर, अलीगढ़

१४ आत्म कल्याण का दर्शन ०७ ०४ १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का, गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्रों में, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं होती रहती है। आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के अनन्तमयी ज्ञान की और विज्ञान की प्रतिभा का वर्णन कर रहा था। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक, नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित है, वे सीमा में आने वाले नहीं है। तो इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी, महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते है, और प्रत्येक वेद मन्त्र, उसकी गाथा गाता रहता है, जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, उसी प्रकार, प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है और उसके ज्ञान और विज्ञान की महिमा, मानवीय मस्तिष्कों में सदैव निहित रहती है।

पालक विष्णु

तो मुनिवरों! देखो, जिस समय मानव अपनी गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो जाता है, तो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर वह तत्पर हो जाता है, और उड़ाने उड़ने लगता है, विचित्र उड़ाने उड़ता हुआ, उस परमात्मा के समीप जाना चाहता है, उसकी मनोनीत एक ही इच्छा रहती है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, वेदमन्त्र कहता है सम्भव ब्रह्मे सम्भव विष्णु हमारे यहाँ एक वाक् आता है विष्णु, वैदिक साहित्य में विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द आते रहते है, परन्तु विष्णु नाम परमपिता परमात्मा को कहा गया है और उसके मूल में यह है जो पालन करने वाला है वही विष्णु कहलाता है। मूल केवल एक ही माना गया है और उसके मूल में कितनी आभा और कितने पर्यायवाची शब्द विद्यमान है, इसके ऊपर जब हम विचार-विनिमय करने लगते है तो हृदय गदगद हो जाता है। वेदमन्त्र कहता है विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है जो पालन करने वाला है परन्तु विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द, जो भी पालना में आता है उसी का नाम विष्णु कहा जाता है। मानो विष्णु नाम जैसे परमपिता परमात्मा का है, जो सृष्टि का नियन्ता है, पालन कर रहा है मानो जो निर्माण करने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, वही तो पालना कर रहा है उसका नाम विष्णु है और विष्णु नाम जहाँ पालन करने वाले का है, वहाँ माता का नाम भी विष्णु है, क्योंकि माता भी पालन कर रही है, और माता जब अपने में पालन करने लगती है, तो वह विष्णु कहलाती है। परन्तु विष्णु नाम आत्मा का भी है, जब तक वह मानव शरीर में विद्यमान रहती है, तो वह चेतना में ही रत्त रहता है और वह चेतना में बद्ध हो करके बेटा! देखो, क्रियाकलाप करता है, क्रियाकलाप होता रहता है। तो विष्णु नाम बेटा! देखो, सूर्य को भी कहा गया है, क्योंकि वह ऊर्ज्वा दे रहा है, प्रकाश दे रहा है और उसी ऊर्ज्वा से बेटा! नाना वनस्पतियाँ और मानव अपने में पनप रहा है।

उत्पति का मूल

तो विचार आता रहता है मुनिवरों! देखो, शब्द एक विष्णु है, और पालना करने से उसके अनन्य नाना पर्यायवाची बन जाते है। तो मुनिवरों! देखो, विष्णु नाम उसी को कहते है जो पालन कर रहा है, हे पालना में रत्त रहने वाली मेरी प्यारी मां! तुझे वेद मानो वृणो विष्णु कह रहा है। और क्यों कह रहा है, तू मानो देखो,

पालन कर रही है सतोगुण से पालन हो रहा है, रजोगुण से शासन हो रहा है तमोगुण से उत्पत्ति हो रही है। तो मुनिवरों! देखो, तीन मनके है एक ही सूत्र में पिरोए जाते है, वही रजोगुण है, वही तमोगुण है और वही सतोगुण माना गया है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ये तीनों गुण क्योंकि एक ही सूत्र में पिरोए जाते है, तो इन्हें हमारे यहाँ वृष्यं बृह्ले कृतं देवाः बेटा! वेद का वाक् कहता है ये, एक दूसरे में पिरोएं हुए है, क्योंकि न तो सतोगुण के बिना पालना होती है, न सतोगुण, रजोगुण के बिना मानो शासन होता है, और न मानो देखो, इन तीनों में एक सूत्रान्त बन करके मुनिवरों! वह तमोगुण बन करके, उसको उत्पत्ति का मूल बन जाता है।

मृत्यु स्वरूप

तो विचार आता रहता है ये बड़े गम्भीरतव एक रहस्यमयी शब्द माने गएं है, जिसके ऊपर बेटा! हमारे यहाँ, ऋषि मुनि परम्परागतों से ही, अन्वेषण करते रहे है, और विचार विनिमय करते रहे है। तो आओ बेटा! मैं इन विचारों में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, आज का हमारा वेदमन्त्र वहीं आ रहा है जो आज भी हमारे वैदिक मन्त्रों में बेटा! उद्गीत रूप से गाया जा रहा था, और वह उच्चारणाति प्रह्ला वेद का वाक् कहता था मृत्युञ्जं भवितां ब्रह्मणे वायु सम्भूति ब्रह्मलोकाः मेरे प्यारे! देखो, वही शब्द आ रहा है, हमारे यहाँ नाना वेद के मन्त्रों में बेटा! एक शब्द, एक ही मन्त्र नहीं है उसके नाना मन्त्र माने गएं है, और नाना देवतव से मानो वे पिरोएं हुए हैं। तो वेदमन्त्र कहता है यह मृत्यु क्या है? तो बेटा! देखो, मृत्यु के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की आख्यिकाएं आती रहती हैं। विचार होता रहता है।

तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हें महात्मा जमदग्नि के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ जहाँ महर्षि जमदग्नि आश्रम में बेटा! देखो, ऋषि के हृदय में एक वाक् उत्पन्न हुआ, एक समय बेटा! वह गान गा रहे थे, वेद मन्त्रों का गान गा रहे थे, वह घन पाठ में गान गाते हुए, माला पाठ में चले गये, तो मानो गान चल रहा था, वेदमन्त्र आ रहा था, मृत्युञ्जं ब्रह्मा वर्णो वासवं वृत्ति देवत्वां ब्रह्मा वेद का वाक् कह रहा था, कि यह मृत्यु क्या है? इस मृत्यु के सम्बन्ध में बेटा! उनके विचार जब आने लगे, तो उन्होंने ऋषि मुनियों को निमन्त्रित किया उसमें बेटा! देखो, महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक महर्षि दालभ्य और महर्षि पिप्पलाद, महर्षि सोमकेतु और ब्रह्मचारी कवन्धी और ब्रह्मचारी सुकेता रोहिणीकेतु इत्यादि ऋषि मुनि, मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने निमन्त्रित किया और वे सब निमन्त्रण के कथनानुसार उनके आश्रम में आ विराजे।

जब आश्रम में आ गए तो बेटा! विचार-विनिमय होने लगा और विचार यह मुनिवरों! महात्मा जमदग्नि ने यह वाक् उच्चारण किया कि वेदमन्त्र यह कह रहा है और मैं मानो अपने को बहुत गम्भीर मुद्रा में ले गया हूँ, मैं अपने में कोई निमटारा नहीं कर पाया, मेरे पुत्रों! देखो, वैशम्पायन, देवर्षि नारद, महर्षि वृषि, अन्तकेतु मुनि महाराज बेटा! देखो, वहाँ सर्वत्र विद्यमान थे। विचार-विनिमय होने लगा। मेरे पुत्रों! देखो, विचार होते वहाँ चाक्राणी गार्गी भी विद्यमान थी और भी नाना मेरी पुत्रियाँ और भी मानो देखो, विदुषी गान गाने वाली, वेद मन्त्रों में उद्गीत गाती, मानो देखो, सभा में विद्यमान है। मेरे पुत्रों! देखो, यह विचार होने लगा कि वेदमन्त्र कहता है, कि यह मृत्यु क्या है?

अन्धकार में मृत्यु

तो मुनिवरों! देखो, इस सम्बन्ध में चाक्राणी उपस्थिति हुई और उन्होंने कहा मेरे विचार में यह आता है कि शरीर को त्यागने का नाम शरीर और देखो, आत्मा दोनों का पृथक्-पृथक् हो जाना ही मानो देखो, मृत्यु माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, इसमें सोमकेतु ने कहा-हे दिव्या! यह शब्द बन नहीं पा रहा है। क्योंकि शरीर और आत्मा के पृथक् होने का नाम मृत्यु नहीं कहा जाएगा। मृत्यु उसे कहते है जिसमें अन्धकार होता है, इसमें

अन्धकार सिद्ध नहीं होता। तो मुनिवरों! देखो, यह वाक् उनके विचारों में समाहित हो गया। परन्तु चाक्राणी जितना जानती थी, उतना उन्होंने उद्गीत रूप में गाया और वह अपने आसन पर विद्यमान हो गई सभा शून्य हो गई। मेरे प्यारे! अपना अपना विचार देने के लिए उपस्थित होना था। महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले कि मेरे विचार में यह आता है कि मृत्यु का अभाव है। जब मृत्यु को उन्होंने अभाव में वर्णित किया, तो मुनिवरों! देखो, देवर्षि नारद मुनि ने इसका समर्थन किया और यह कहा कि वास्तव में ऐसा ही सिद्ध होता है। क्या मृत्यु अभाव वृत्तियों में रत्त रहने वाली है।

मेरे प्यारे! देखो, इस विचार को ले करके उनमें नाना प्रकार का विचार-विनिमय, जब होने लगा, होते हुए मुनिवरों! देखो, सायंकाल का समय हो गया, सन्धिकाल आ गया। सन्धिकाल आते ही देखो, सब ऋषि-मुनि अपने-अपने कक्ष में जा पहुँचे और महर्षि पिप्पलाद मुनि को बहुत समय हो गया था, मानो ऋषि मुनियों की सभाओं में विचार विनिमय करते, बेटा! उनका आश्रम भी निकट था, वह मानो देखो, अपने आश्रम में पहुँचे। आश्रम में, जैसे ही रात्रि छा गई थी, मानो देखो, जब आश्रम में पहुँचे तो उनकी पत्नी शंकुतका बेटा! देखो, विद्यमान थी, उन्होंने चरणों की वन्दना करते हुए और व्याकुल होने लगी। महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले-देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होंने कहा-हे प्रभु! मेरा एक सात वर्षीय पुत्र था, वह मेरे समीप नहीं रहा, वह मृत्यु को प्राप्त हो गया, इसलिए मैं व्याकुल हो रही हूँ। मेरे पुत्रों! महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले-हे देवी! मैं तो ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में से मेरा पदार्पण हो रहा है, और मैं यह निर्णय करता रहता हूँ कि मृत्यु अभाव में है, मानो तुम मुझे सिद्ध कर रही हो कि मृत्यु है। यह मेरे विचार में नहीं आ रहा है। उन्होंने कहा-प्रभु! चलो मैंने यह आपके वाक् को स्वीकार कर लिया, यह मृत्यु कोई वस्तु नहीं है, परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि यह मेरा शरीर क्या है?

शरीर

तो मुनिवरों! उन्होंने कहा-हे देवी! यह जो तुम्हारा शरीर है यह परमाणुओं का संघात है। मानो परमाणु एकत्रित होते है तुम्हारा स्थूल वृत्तियों में निर्माण हुआ और वह देखो, स्थूल, तुम्हारा विशाल बन गया है यह परमाणुओं का संघात कहलाता है। उन्होंने कहा-प्रभु! चलो, यह भी मैंने स्वीकार कर लिया। क्या यह परमाणुओं का संघात है। परन्तु मैं संक्षिप्त प्रश्न करना चाहती हूँ कि जब मैं आचार्य कुल में अध्ययन करती थी, तो आचार्य ने मुझे यह निर्णय कराया था, क्या, जो आपने मुझे निर्णय कराया है, क्या यह शरीर परमाणुओं का संघात है। मैं यह जानना चाहती हूँ, जब यह मानव शरीर भी नहीं था तो यह परमाणुवाद कहां रहता था।

उन्होंने कहा-हे देवी! जब यह तुम्हारा शरीर इस रूप में, यह परमाणुवाद इस रूप में नहीं था, यही परमाणुवाद मानो देखो, माता के गर्भस्थल में विद्यमान था, जिससे तुम्हारे शरीर का निर्माण हो रहा था और निर्माणवेत्ता, निर्माण कर रहा था। परन्तु देखो, इन्हीं परमाणुओं से निर्माण हो रहा है और वह निर्माण भी देखो, इस प्रकार नहीं, कि कहीं चित्त के मण्डल का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो देखो, मनस्तव आ रहा है, कहीं मानो देखो, बुद्धि का निर्माण हो रहा है और बुद्धि भी एक प्रकार की नहीं मानो देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी बुद्धियों का निर्माण हो रहा था यह मानो देखो, माता के गर्भस्थल में निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है बुद्धि जानकारी करती है, मेधावी उस ज्ञान कार्य को साकार रूप बनाती है और साकार रूप बना करके मानो देखो, ऋतम्भरा अपने में मौन हो जाती है और प्रज्ञा में जा करके वह प्रभु के मार्ग में मानव देखो, उस मार्ग का पथिक बन जाता है, जहाँ उसे मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त हो जाती है।

अन्तःकरण में ब्रह्माण्ड

ईश्वर मिलन

मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह वर्णन किया, उन्होंने कहा-देवी! मन, बुद्धि और चित्त और अहंकार मानो देखो, यह चतुष का नाम अन्तःकरण कहलाता है, इस अन्तःकरण में मानो देखो, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा निहित रहती है, जब भी ऋषि मुनियों ने मानो इस चित्त के मण्डल में प्रवेश किया है, उसी समय मानो देखो, यौगिकता उसके समीप आई है और यौगिकता को जानने वाला मानो देखो, प्रभु के मण्डल को गणना में लाने लगता है। नाना प्रकार का यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, मानो देखो, एक दूसरा लोक, दूसरे लोक में प्रवेश कर रहा है। एक लोक दूसरे की माला बनी हुई है, इस माला को जानता है, वह मानो प्रभु के ब्रह्माण्ड को अपने में, गणना में लाने का प्रयास करता रहा है। हे देवी! देखो, यही अपने में जानना है, मानो चतुष अन्तःकरण में प्रवेश करते हुए, हमें मौन होना है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा-हे देवी! हे दिव्या! देखो, इन्हीं परमाणुओं से यह निर्माण होता रहता है इन्हीं परमाणुओं से तुम्हारे शरीर का निर्माण हुआ है इसमें नाना प्रकार के जो अवयव है उनकी आभा में वह परिणत हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार निर्णय कराया, तो देवी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा-हे प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ जब माता का गर्भाशय नहीं था, तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता था भगवन!।

ईश्वरीय गान वेद

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा-हे देवी! जब माता का गर्भाशय नहीं था, तो यही परमाणुवाद मानो देखो, कुछ वीरतव के रूप में विद्यमान था, कुछ वीरांगना के रूप में विद्यमान था, देवी! मुझे प्रतीत होता रहता है, एक समय चाक्राणी भयंकर वनों में वीरांगना बन करके वेद मन्त्रों का उद्गीत गा रही थी, सामगान गा रही थी, जब मानव हृदय से गान गाता रहता है तो हृदय की प्रतिभा को संसार में कोई विजय नहीं कर सकता है। हे देवी! तुम्हें तो यह जानकारी होगी, परन्तु देखो, एक समय, जब वह गान गा रही थी तो महर्षि श्वेतकेतु उनके समीप पहुँचे और श्वेतकेतु दृष्टिपात कर रहे थे, जब वह चाक्राणी, वेद का गान गा रही थी, सामगान गा रही थी, तो अपने में मानो देखो, दृष्टिपात कर रही थी, एक पंक्ति में मानो देखो, हिंसक प्राणी विद्यमान है, और सर्वत्र प्राणी मानो इनकी वाणी को श्रवण कर रहे है, जब श्रवण कर रहे है, तो श्वेतकेतु मुनि ने कहा-हे दिव्याम ब्रह्मा श्रोश्वञ्जनं वाचन्नमं ब्रह्वे सर्व सुति, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि दृष्टिपात कर रहा है, सिंहराज विद्यमान है, और सर्पराज भी विद्यमान है। मानो देखो, उस महा दिव्या और वीरांगना के चरणों की वन्दना कर रहे है। क्योंकि वेद का जो मन्त्र है, वेद जो है, यह ईश्वरीय गान कहा जाता है, ईश्वरीय विद्या और ईश्वरीय प्रकाश है, मानो देखो, जब वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है, उसमें प्रभु का गुणगान है, और कौन प्राणी संसार में ऐसा है, जो प्रभु के गुणगान को श्रवण करना नहीं चाहता, प्रत्येक प्राणी के हृदय में, मानो देखो, वेद और प्रकाश की आवश्यकता रहती है, प्रत्येक प्राणी अपने में मानो उद्बुद्ध हो जाता है।

ब्रह्मचारी

तो मुनिवरों! देखो, ऐसा ऋषि ने वर्णन कराया, कि सिंहराज भी वहीं विद्यमान है, सर्पराज भी है, जब गान गाता रहता है तो बेटा! वह चरणों की वन्दना करता रहता है। उन्होंने कहा-हे देवी! वह वीरांगना कहलाती है उन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला, वह वीरांगना, जब देवी इनकी रक्षा करती है तो वीरांगना बन जाती है उन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला ब्रह्मचारी बेटा! देखो, ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है, मेरे प्यारे! देखो, जब इस वीरतव की रक्षा, इन्हीं परमाणुओं की रक्षा करने वाला बेटा! देखो, ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। ब्रह्मचारी कहते किसे है? यह वेद की प्रतिभा का, एक शब्दार्थ रूप माना गया है। ब्रह्मचारी कहते है जो प्रत्येक श्वास को बेटा! जो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है। बेटा! वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म सूत्र में जो

पिरोता है, वही तो ब्रह्मचरिष्यामि बनता है। मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मणाति ब्रह्मणे लोकाम् मुनिवरों! देखो, ब्राह्मण वही कहलाता है जो ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में स्वीकार कर लेता है वह ब्रह्मवेत्ता कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कौन? जो ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है, ब्रह्मचरिष्यामि उसे कहते है, ब्रह्म कहते है परमात्मा को और चरी कहते है प्रकृति को, जो ब्रह्म और चरी को बेटा! अंगों और उपांगों से जानने वाला है, वही तो बेटा! देखो, ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है। हे ब्रह्मचरिष्यामि लोकं वाचन्नमं ब्रह्मे ब्रह्मा लो अवस्ति मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मचारी बन करके, वह देवतव को प्राप्त हो जाता है। हमारे यहाँ इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला ही तो ब्रह्मचारी कहलाता है। वहीं तो देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है।

परमाणुओं की गति

मुनिवरों! देखो, इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला, देवत्तव को प्राप्त और इन परमाणुओं की ऊर्ध्वा गति बनाने वाला बेटा! पितर यागी बनता है। मेरे प्यारे! देखो, पितर यागी वह, जिनके परमाणुओं की गति ध्रुवा है और ऊर्ध्वा में देवता बन जाता है तो महर्षि पिप्पलाद मुनि बोले-हे देवी! तुम्हें यह प्रतीत हो गया, कि इन परमाणुओं की रक्षा जो करता है, वह देवता है, वह वीरांगना है, और मानो देखो, हिंसा से रहित है। वह मानो देखो, अहिंसक बन करके अपने में अपनेपन का ही भान करता हुआ, इस सागर से पार होने का प्रयास कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने यह कहा तो मुनिवरों! देखो, देवी नतमस्तक हो करके बोली-हे प्रभु! मैं यह और जानना चाहती हूँ कि हे प्रभु! जब यह परमाणुवाद मानो देखो, वीरांगना और वीरतव भी नहीं होते, तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है?

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है-हे देवी! देखो, विचार ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से ध्रुवा में गमन करते रहते है। तुम्हें यह प्रतीत है कि जब मानो देखो, वीरांगना वीरतव नहीं होते, तो सृष्टि के पिता ने, जब यह सृष्टि का प्रारम्भ हुआ तो बेटा! सृष्टि के पिता ने सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। वह सात प्रकार का जब अन्न उत्पन्न हुआ तो यह परमाणु, उस अन्न से समाहित रहते है, यह परमाणु मानो देखो, अन्न में ही निहित रहते है। हे देवी! मानो देखो, प्रभु की सृष्टि कितनी अनन्तमयी है, एक ही पौधा है, दो प्रकार के अन्न माने गएं हैं, एक अन्न को बेटा! देखो, मानव मनुष्यतं ब्रह्मे पान कर रहा है, एक को पशु पान कर रहा है। पशु पय दे रहा है, मानव देखो, ओज और तेज की उत्पति कर रहा है।

तो मुनिवरों! देखो, यह परमाणु, एक ही पौधा है, एक ही पौधे में दो प्रकार का अन्न विद्यमान रहता है, एक अन्न को बेटा! देखो, पशुपान कर रहा है, वह देखो, गऊपान कर रही है, तो दुग्ध आहार करा रही है, मानव पान कर रहा है, मेरी प्यारी माता उस अन्न को भोजनालय में तपा करके, अन्नाद प्रदान कर रही है, उससे मानो ओज और तेजस्वी बन करके अपनेपन में अपनी ही आभा में रत्त हो जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है-हे देवी! यह दो प्रकार का अन्न हैं, और तीसरा जो अन्न है उसे कहते है हूत, आहुति देने का नाम भी अन्न कहा गया है। जिससे मानो देखो, देवता प्रसन्न होते है, और देवताओं के प्रसन्न होने पर, वह नाना प्रकार की वृष्टि प्रारम्भ करते है उसी वृष्टि के कारण मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है, यह वसुन्धरा नाना प्रकार के अन्नाद को और नाना वनस्पतियों को प्रदान करने लगती है मेरे प्यारे! देखो, अमृतां ब्रह्मा यह अग्नि मानो देवताओं का मुख कहा गया है और देवताओं के मुख में बेटा! यज्ञमान जब हूत कर रहा है, मानो प्रातः कालीन जब हूत कर रहा है तो वह देवतव को प्राप्त हो रहा है।

देवताओं का मुख

हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के यागों का वर्णन आता रहता है, जैसे हमारे यहाँ देखो, वाजपेयी याग का वर्णन आता है, इसी प्रकार अग्निष्टोम याग का वर्णन है, मानो देखो, रूद्र याग है, ब्रह्मयाग है, और देखो, हमारे यहाँ विष्णु याग का भी वर्णन आया है, कन्या याग का भी वर्णन है, अजामेध याग और देखो, अश्वमेध याग की भी प्रतिभा आती रही है। परन्तु विचार विनिमय यह कि उनका देवता, केवल एक अग्नि है अग्नि के मुखारबिन्दु में बेटा! देखो, वह हूत कर रहा है। हे यज्ञमान! तू अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, तू अग्नि को देवताओं का मुख बना करके मानो उसमें हूत कर रहा है, यह मानो तू देवतव को अपनी भावना दे रहा है, अपना विचार दे रहा है, अपना साकल्य दे रहा है वह मानो देवतव को प्राप्त होते रहते हैं।

वाजपेयी याग

तो मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ एक याग का नाम अग्निष्टोम याग कहा जाता है, अग्निष्टोम याग में बेटा! यह वर्णन आया वाजपेयी याग में भी आया है। क्या एक समय बेटा! देखो, उस याग को काला हिरण ले गया, जब इस याग को काला हिरण ले गया, उसमें अमृतम् मानो देखो, उस याग को काले किरण ने बेटा! वत्रासुर को प्रदान कर दिया और वत्रासुर मानो देखो, अपने में इन्द्र और वत्रासुर दोनों का संग्राम हुआ, जब संग्राम हुआ तो इन्द्र ने अपने वज्र से वत्रासुर का हनन किया और उससे मानो देखो, वृष्टि हो गई, और वृष्टि हो करके देखो, वहाँ देखो, अमृताम् गऊ के बछड़े को ले करके बेटा! देखो, उसकी बलि का वर्णन हमारे यहाँ आता रहा है। उसकी बलि का वर्णन जब आया कि उसमें गऊ के बछड़े को ले करके पृथ्वी के गर्भ में बीडज की स्थापना की। तो मेरे पुत्रों! देखो, याग वेद का मन्त्र कहता है, वाचन्नमं ब्रह्मा गौ हिरणप्रहे वासप्प्रति देवतं गौ व्रताः मेरे प्यारे! यह वेद का मन्त्र आता रहता है, वेद का मन्त्र कहता है क्या, जब याग करता है यज्ञमान, तो मानो देखो, याग की सुगन्ध और याग की प्रतिभा को देखो, काला हिरण ले जाएं, हिरण कहते है बेटा! देखो, याग की धुन्ध को और वह जो याग का जो धुन्ध है उसमें मानो देखो, याग वत्रासुर को प्रदान कर दिया, वत्रासुर कहते है मेघ मण्डलों को, वत्रासुर जब मेध मण्डलों को कहा जाता है, इन्द्र कहते है वायु को, और विद्युत मानो उनकी पत्नी शचि है। वे दोनों जब अपने में संग्राम करते है, वत्रासुर और इन्द्र वह अपने प्राण रूपी वज्र से मानो देखो, उसे छिन्न-छिन्न कर देते है और वृष्टि हो जाती है। मुनिवरों! देखो, वृष्टि से वहाँ बैल देखो, ब्रहे वृषभ का वर्णन आता रहता है, वह गऊ का बछड़ा है बेटा! देखो, उसे कृषक इस पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना करता है।

बलि का अभिप्राय

तो बलि का अभिप्रायः यह बना, कि बलि कहते है, पुरुषार्थ और देखो, उसमें संलग्नता का नाम बलि कहा जाता है। क्या, मैं इसमें संलग्न हो करके, मैंने गृह को ऊर्ध्वा में पहुंचाया है, मैंने अपने जीवन को यौगिकता में ले गया हूँ, तो इसका नाम बेटा! बलि कहा गया है। बलि का अभिप्रायः यह नहीं है कि उसकी मृत्यु हो जाए, मृत्यु का अभिप्रायः यहाँ यह नहीं बन रहा है। तो विचार आता रहता है, मेरे प्यारे! देखो, यहाँ वाजपेयी याग का ऐसा वर्णन आया। आज मैं यागों की विवेचना तो देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह कि मुनिवरों! देखो, यज्ञमान हूत कर रहा है, यज्ञशाला में विद्यमान हो करके और वह अपने याग को देवतव की प्राप्त करा रहा है। अग्नि के मुखारबिन्दु में हूत कर रहा है तो बेटा! देखो, यह भी अन्नाद है, जिससे मुनिवरों! देखो, मानव के जीवन में प्रतिभा और मानव का आध्यात्मिक श्रुतियों को पान करने वाला, अपने में अपनेपन का भान करता हुआ, सागर से पार होने का प्रयास करता रहता है।

प्रहूत-अन्न

तो मेरे प्यारे! देखो, यह तीसरा अन्न हुआ और चतुष जो अन्न है वह प्रहूत कहा जाता है। हमारे यहाँ पुरोहित होने चाहिए। बेटा! पुरोहितों का अभिप्रायः यह है, कि प्रत्येक गृह में मानो देखो, उनका उपदेश हो, और याग इत्यादियों में वह संलग्न हो, जो राष्ट्र और समाज के कल्याण में लगे रहते है, उनका नाम पुरोहित कहा जाता है। बेटा! पुरोहितां ब्रह्मे पुरोहितां अन्नां समावृहिति लोकं वर्णसुति देवाः मेरे पुत्रों! देखो, वह पुरोहित कहे जाते है, जो राष्ट्र और समाज को कल्याण के मार्ग पर ले जाते है, वह अपने विचारों का देखो, अवृत्त दे करके, अमृत दे करके वह अन्नाद को प्राप्त कराते है, समाज को अन्नाद देते रहते है।

धनुर्याग

तुम्हें प्रतीत होगा, बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन भी कराया है, त्रेता के काल में मुनिवरों! देखो, जब महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और महर्षि विश्वामित्र आसन पर विद्यमान थे, तो उन्होंने कहा कि-हे विश्वामित्र! मेरी इच्छा यह है कि तुम देखो, यहाँ एक धनुर्याग का आयोजन करो और धनुर्याग करो इस दण्डक वनों मे, उन्होंने कहा-बहुत प्रियतम! मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा तुम्हें राजकुमार चाहिए कुछ तो मानो देखो, यहाँ अध्ययन करते रहते है।

मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, क्या, महर्षि विश्वामित्र ने बिना सूचना के वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए जब वह अयोध्या में पहँचे, तो मुनिवरों! देखो, अयोध्या में एक समाज में एक कृत हुआ, कि आज ऋषि का आगमन हुआ है, बिना सूचना के इसका कारण क्या है? बेटा! जब वह भ्रमण करते, राजस्थली पर पहुँचे तो राजा ने दृष्टिपात किया, क्या, आज बिना सूचना के ऋषि का आगमन हो रहा है, यह बड़ा आश्चर्य है। तो उन्होंने अमृतम बेटा! अपने स्थान को त्याग दिया, ऋषि को आसन दिया, आईए, भगवन! विराजिए। वह विराजमान हो गये, राजा ने मानो देखो, उनसे कहा-कहो, भगवन! आज कैसे आगमन हुआ है? आप मुझे सूचना दे देते, तो मैं आपको वाहन में लाता, उन्होंने कहा, कोई वाक् नहीं, राजन!

अयोध्या की न्याय-प्रणाली

तो मेरे प्यारे! देखो, उनकी वार्त्ताएं प्रगट होने लगी, ऋषि ने कहा-राजन! मैं इसलिए आया हूँ कि मैं दण्डक वनों में एक याग करने के लिए तत्पर हूँ और मैं याग कर रहा हूँ, मुझे राजकुमार चाहिए, जिससे मैं अपने याग को सम्पन्न कर सकूँ। राजा ने कहा-हे प्रभु! यह बाल्य तो किशोर है, आपके याग को मैं पूर्ण कराऊंगा, क्योंकि यह तो राजा का कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा-नहीं भगवन! मुझे राजकुमार चाहिए। तो बेटा! देखो, रघुवंश में क्या, अयोध्या में ऐसी नियमावली थी, क्या जैसे पुरुषों का न्याय देखो, न्यायालय में न्याय राजा करते थे, राजलक्ष्मियाँ भी, देवियों का न्याय करती रहती, तो मुनिवरों! देखो, जब माता कौशल्या इत्यादियों को यह प्रतीत हुआ, क्या अब्रतम ब्रह्मे देखो, ऋषि का आगमन हुआ है तो बेटा! उन्होंने वहाँ से गमनं ब्रहे, जब वे ऋषि के द्वार पर पहुँची, तो ऋषि के चरणों को ओत-प्रोत अमृत करते हुए, उन्होंने कहा-भगवन! कहिए आप प्रसन्न है। ऋषि ने कहा-दिव्याँ ब्रह्मे प्रह्म मेरे पुत्रों! यह वाक् जब उच्चारण किए गएं तो उन्होंने कहा-कहो भगवन! राजा तुम शान्त क्यों विद्यमान हो? उन्होंने कहा ये राजकुमारों को चाहते हैं। और इन्हें एक धनुर्याग करना है। उन्होंने कहा तो मानो आप इन्हें प्रदान कीजिए, हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाले बाल्य यदि ऋषि की सेवा नहीं कर सकते तो मानो देखो, हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा राजन्! तो मेरे प्यारे! देखो, जब देवियों ने ऐसा कहा तो ऋषि अमृतम् बड़े प्रसन्न हुए, और राजा ने राम, लक्ष्मण इत्यादियों को सब प्रदान किया। भगवन! आप अपने याग को सम्पन्न कीजिए।

भगवान राम का अध्ययन काल

तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे तो स्मरण आता रहता है, उनके विद्यालय में बेटा! देखो, दण्डक वनों में, देखो, एक सौ चौरासी ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, और धनुर्विद्या का अध्ययन होता रहता। मेरे प्यारे! देखो, विजातीय जितने भी मानव थे, उन्हें वह नष्ट भी करते थे, क्योंकि राष्ट्रीय नियम के आधार पर उन्होंने बेटा! देखो, धनुर्विद्या में जब परिणत हो गये, तो महर्षि भारद्वाज मुनि भी देखो, उनके आश्रम में आते रहे। वह नाना प्रकार की परमाणु विद्याएं, और नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता रहता था महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम से भी बेटा! कुछ वैज्ञानिक ब्रह्मचारी वहाँ गमन करते रहते थे, तो विश्वामित्र के यहाँ, मेरे पुत्रों! देखो, धनुर्याग होता रहता। अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या मुनिवरों! देखो, आदान-प्रदान होती रहती, विचार आता रहता है बेटा! छह वर्षों में मुनिवरों! देखो, राम लक्ष्मण और भरत शत्रुघ्न सब ब्रह्मचारी बेटा! देखो, और भी नाना ब्रह्मचारी छह वर्षों में पारायण कर दिए और उनके अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या प्रदान करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, भारद्वाज मुनि के यहाँ तो देखो, अनन्तमयी विज्ञान था, मुझे तो स्मरण आता रहता है, उनके यहाँ ब्रह्मचारी कवन्धी और सुकेता एक बड़े पारायण और पणपेतु मेरे पुत्रों! देखो, अपने में अध्ययन करते रहते थे।

पुरोहित का कर्तव्य

तो आओ मुनिवरों! देखो, मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा न देता हुआ, वेद का ऋषि पिप्पलाद कहता है-हे देवी! वे पुरोहित कहलाते है, जो मानो देखो, परा विद्या को देने वाले है। जो नाना प्रकार की विद्या दे करके राष्ट्र और समाज को पवित्र बनाते है, प्रत्येक गृह में याग और देखो, उनके विचारों की सुगन्धि आती है, वह राष्ट्र और समाज, पवित्र बनता रहता है मानो देखो, वह प्रहूत कहलाते है, वह भी अन्नाद है, इस अन्नाद से ही तो मानव एक ऊर्ध्वा को प्राप्त होता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया। उन्होंने कहा-देवी! तीन अन्न रह गएं है, चार अन्नों की मैंने इस प्रकार विवेचना की है सबका साझा अन्न कहलाता है, इसको सब प्राणी मात्र के लिए अन्नाद है।

आत्म कल्याण के तीन अन्न

परन्तु तीन प्रकार का जो अन्न है, वह मानव का आत्म कल्याण के लिए कहलाता है, जो मन, कर्म और विचार मानो ये तीन अन्न कहलाते हैं, तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा, इन तीन अन्नों को जानने वाला योगेश्वर बन जाता है, हे देवी! देखो, मन, प्राण और देखो, विचार ही से विचार होता है। और विचार-विनिमय करने वाला यह जो पांच ज्ञानेन्द्रियाँ है, इनके विषयों को ले करके, इनका वह साकल्य बनाता है, और साकल्य बना कर, इसको हृदय रूपी यज्ञशाला में वह योगेश्वर याग करता है, और याग करके वे परमपिता परमात्मा को प्राप्त होता रहता है। हे देवी! ये तीन अन्न है, जो आत्म अन्न कहलाते है और यह चार प्रकार का अन्न समाज का साझा अन्न कहलाता है। प्राणी मात्र के लिए कहलाता है, परन्तु देखो, यह मन, कर्म, विचार यह जो अपना आत्मा को शोधन करने के लिए, आत्म तत्त्व को प्राप्त करने के लिए मानो ये तीन अन्न कहलाते हैं। एक ऋषि शान्त मुद्रा में विद्यमान है और वह अपने में मुद्रित हो रहा है और मुद्रित होता हुआ मानो विचार विनिमय कर रहा है। इस मन को मानो प्राण में परिणत कर रहा है और प्राण और मन दोनों की जब एक वृत्ति बन जाती है।

तो विचार आता रहता है ऊर्ध्वा में गमन करने लगता है बेटा! वह विज्ञान में प्रवेश करने लगता है, संसार में प्रभु का विज्ञान जानने के लिए वह अपने आत्म तत्त्वों देखो, यह ज्ञानेन्द्रियाँ है, पांच ज्ञानेन्द्रियों का वह साकल्य बना करके और ब्रह्माण्ड की प्रतिभा को जानने लगता है। मेरे प्यारे! आपो में प्रवेश कर जाता है वह, मुनिवरों! देखो, अग्नि के गर्भ को अपने में धारयामि बना लेता है। तो इनका साकल्य बना करके, हृदय रूपी

यज्ञशाला में बेटा! जो ज्ञान रूपी अग्नि प्रदीप्त हो रही है, उसमें वह स्वाहा कह करके मेरे पुत्रों! देखो, अपने आत्म तत्त्व को प्राप्त कर लेता है।

अन्न में परमाणु

तो विचार विनिमय करने वाले बेटा! महर्षि पिप्पलाद ने कहा-हे देवी! देखो, यह परमाणुवाद मानो यह सात प्रकार के अन्न में विद्यमान रहता है। जब सृष्टि के पिता ने सृष्टि का प्रारम्भ किया तो मानो यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, वर्णन जब करने लगे, शान्त होने लगे तो ऋषि देवी ने कहा-प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ जब यह अन्न भी नहीं होते तो यह परमाणुवाद कहा रहता है भगवन!

मृत्यु का स्वरूप

तो मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि पिप्पलाद अपनी देवी शकुन्तका से बोले-हे देवी! ब्रह्मणे व्रतं ब्रह्वा शम्भु ब्रह्म देवाः हे देवी! देखो, यह परमाणुवाद मानो देखो, अपनी आभा में रत्त रहते है। हे देवी! परमाणुवाद मानो देखो, कुछ पृथ्वी के है, कुछ अग्नि के है, कुछ आपो के है और वायु गमनं बह्वे मानं ब्रह्वे व्रताः ब्रहा अन्तरिक्षाय गमनं प्रहे मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा-देवी! जब यह मानव शरीर मानो देखो, जब यह मानव शरीर से आत्मा निकल जाता है और अपने चित्त के मण्डल को ले करके, अपने मण्डल में प्रवेश कर जाता है तो मानो यह शरीर, एक शव के रूप में विद्यमान हो जाता है और इसको अग्नि में दाह कर देते है, जब अग्नि में यह दाह हो जाता है तो मानो देखो, जल के परमाणु जल में प्रवेश हो जाते है अग्नि के परमाणु अग्नि में प्रवेश हो जाते है, और देखो, यह अमृतम पार्थिव परमाणु पृथ्वी में लय हो जाते है, हे देवी! यह जो आत्मा है मानो देखो, प्राण सत्ता वायु में गमन कर जाता है और अन्तरिक्ष मानो देखो, अवकाश में प्रवेश कर जाता है। तो हे देवी! मैं यह जानना चाहता हूँ आत्मा चित्त के मण्डल को ले करके चला गया है, अपने-अपने अवयवों में लय हो गएं है, तो देवी! मैं जानना चाहता हूँ संसार में मृत्यु है क्या? क्या है मृत्यु, जिसके ऊपर तुम इतनी मानो अपने में वृत्तियों में रत्त हो रही हो। मेरे पुत्रों! देखो, जब महऋष पिप्पलाद ने ऐसा कहा, तो अमृतम् देवी मौन हो गई और वह बोली कि धन्य है प्रभु! वह अपने देव के चरणों में ओत-प्रोत हो गई, उसने कहा-धन्य है प्रभु! आपने मुझे अन्धकार से प्रकाश में पहुँचाया है, और मैं प्रकाश में मानो गमन कर गई हूँ, जब मुनिवरों! देखो, ऋषि ने यह वर्णनं ब्रह्मे देवी ने जब ऐसा कहा, तो ऋषि कहता है हे देवी! मृत्यु भी है। जब ऐसा कहा तो देवी ने कहा-प्रभु! मृत्यु क्या है?

उन्होंने कहा-देवी! एक समय मैं राजा जनक के यहाँ पहुँचा, तो राजा जनक के यहाँ महर्षि अर्धभाग ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया था, कि मृत्यु की मृत्यु क्या है? तो उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा-हे ऋषिवर! मत कहो मृत्यु की मृत्यु नहीं होती, मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है, ब्रह्म के जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने अपनी देवी को यह वर्णन किया। उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! तो वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है वेद का, वेद के मन्त्रों में गमन करने वाला, महर्षि पिप्पलाद मुनि ने कहा-हे देवी! तुम यह जान गई होगी, क्या मानो देखो, आत्मा सदैव तत्त्व ब्रहे कोई भी परमाणुवाद विनाश को प्राप्त नहीं होता है। मेरे प्यारे! देखो, कोई भी नष्ट नहीं होता, देखो, पृथ्वी, पृथ्वी में, अग्नि, अग्नि में और आपो, आपो में प्रवेश कर जाता है। तो देवी! मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती, इसलिए तुम्हारा अज्ञानं ब्रहे तुम अज्ञान में मत प्रवेश करो। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी मौन हो गई, उसने कहा-धन्य है भगवन! उन्होंने कहा-हे देवी! प्रभु के राष्ट्र में सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नहीं होती और जहाँ रात्रि नहीं

होती, वहाँ मानो देखो, आलस्य और प्रमाद भी नहीं होता और जहाँ आलस्य और प्रमाद नहीं होता, वहाँ प्रकाश ही प्रकाश रहता है। शेष अनुपलब्ध ०७-०४-१९८९ खैर, अलीगढ़

१५ आध्यात्मिक याग २० ०४ १९८९

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिसमें परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान ओत प्रोत रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और सर्वज्ञ हैं। मानो संसार की कोई स्थली ऐसी नहीं, जहां वे परमपिता परमात्मा न हो मानो वे यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं, क्योंकि हमारे यहां, परम्परागतों से ही, एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर अन्वेषण होता रहा है। क्योंकि मानव की प्रवृत्ति है कि यह सदैव नवीनता को चाहता है, उसके मनों में यह भाव बने रहते हैं कि मैं प्रत्येक वस्तु को जानने वाला बनूँ और मैं नवीनता में सदैव रमण करता रहूँ।

ज्ञान-विज्ञान की एक रसता

परंतु हमारे यहाँ वैदिक साहित्य वालों ने कहा है-कि संसार में कोई वस्तु नवीन नहीं है मानो वह सर्वत्र एक रस रहने वाला ज्ञान है और कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है मानो जिसके ऊपर मानव नवीनता के लिए अपनी घोषणा कर सके, क्योंकि सदैव मानो उसमें वृद्धपन भी नहीं है। विचार आता है कि वह वृद्धता को भी प्राप्त नहीं होता, जो भी मानवीय ज्ञान है अथवा विज्ञान है, वह सदैव एक रस बना रहता है। तो उसमें न कोई नवीनता है और न उसमें वृद्धपन है।

तो मुनिवरों! वेद का मन्त्र यह कहता है कि वे परमपिता परमात्मा, जो सर्वज्ञ है मानो वह एक रस कहलाते हैं। वह एक ही रसों में रत्त रहने वाले हैं इसलिए प्रत्येक मानव उसकी रसता के ऊपर सदैव मनन और चिंतन करता रहा है और अपने में यह चाहता रहा है कि मेरा कल्याण हो जाए। परंतु मेरी अन्तरात्मा में बलिष्ठता आ जाए और वह जो बलिष्ठता है वह मानवीयता और मानव दर्शन, हमारे साक्षात्कार हो जाए। ऐसा मानो देखो, प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण करता रहा है। प्रत्येक मानव अंधकार को भी नहीं चाहता, वह सदैव प्रकाश को चाहता रहता है और प्रकाश को मानो सदैव अपने हृदय में धारण करना चाहता है।

आनन्द का स्रोत

जैसे हम वेदों का अध्ययन करते रहते हैं, वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते रहते हैं तो हमारे आचार्य मानो जब प्रकाश के लिए, अपना अन्वेषण करने लगे कि यह प्रकाश क्या है, जिसके लिए मानव अपने में नाना प्रकार के अनुष्ठान करता रहता है। बेटा! देखो, हमारे यहां सूर्य को प्रकाश कहा है। परंतु जब प्रकाश के लिए मानव ने अपनी उड़ाने उड़ीं, और विचारा कि प्रकाश क्या है जिससे मैं निर्भय हो जाऊं, मेरे में अंतर्द्वंद्व न रहें, मैं अनुपम प्रकाश में चला जाऊँ। तो बेटा! जब वेदों के मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे तो वेद को बेटा! प्रकाश के रूप में वर्णन किया है। हमारे यहाँ कहा है-कि वेद प्रकाश है। आनंद का स्रोत है। परन्तु जब ऐसा कहा तो आचार्यों ने यह प्रश्न किया कि यह जो सूर्य है यह प्रकाश का द्यौतक है, मानो नेत्रों का प्रकाश, सूर्य के साथ-साथ आता रहता है।

वेद से अन्तःकरण में प्रकाश

तो मेरे प्यारे! ऋषि इसका निराकरण करते हुए कहते हैं कि जैसे सूर्य हमारे नेत्रों का प्रकाश, नेत्रों को प्रकाशित करता रहता है, संसार का जो व्यापार है वह प्रकाशमयी कहलाता है। परंतु जब इसके ऊपर अन्वेषण होने लगा तो ऋषि अपना मन्तव्य देता है कि जैसे बाह्य जगत में सूर्य प्रकाश देता है, ऐसे ही अन्तःकरण में जो

प्रकाश आता है वह वेद रूपी सूर्य कहलाता है। मानो देखो, निराकारण करने वालों ने, वेद कहते हैं विद्या को, और प्रकाश को। जिससे मानव के हृदय से अन्धकार चला जाए और वह प्रकाश में रत्त हो जाए। तो मुनिवरों! देखो, इसलिए हमें वैदिकता में विचारना यह है, कि वेदां ब्रह्मणां ब्रहे कृतं मानो देखो, वह वेद रूपी जो प्रकाश है वह मानव के अन्तःकरण को प्रकाशित करता है और अन्तःकरण जब प्रकाशित हो जाता है तो मानव अपने में महानता के लिए सदैव तत्पर हो जाता है।

अनुपम प्रकाशक

तो मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है, वेदमन्त्र उद्गीत गाता हुआ यही कह रहा है प्रकाशं भवितं ब्रह्मणः मानो देखो, उस प्रकाश के लिए हम सदैव रत्त रहे और उस प्रकाश को अपने में लाने के लिए सदैव तत्पर हो जाएँ। तो मेरे प्यारे! आओ मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें कोई चर्चा देने नहीं आया, विचार यह प्रगट हो रहा था कि वह प्रकाश मानो वे परमपिता परमात्मा जो प्रकाश का भी अनुपम प्रकाश है वह महान कहलाता है। मानो देखो, उसके ऊपर हमें विचार-विनिमय करना चाहिए, जो सर्वज्ञ है। और जो वेदोमयी स्वरूप माना गया है, यज्ञोमयी स्वरूप है क्योंकि याग उसका आयतन है, उसका गृह है और उसका सदन माना गया है, उसी में वास कर रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा के लिए सदैव मानो विचार-विनिमय करते हुए अपनी मानवीयता को भी उसी के आश्रित स्वीकार करके अग्रणीय होना चाहिए।

तो आओ मेरे पुत्रो! यह विचार क्या कहता है, हमें ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए गमन करा रहा है। तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हें उसी आसन पर ले जाना चाहता हूँ, क्योंकि ऋषि-मुनियों के विचार और उनकी गोष्ठियाँ बेटा! बड़ी अनुपम होती हैं, उनके हृदय के जो उद्गार हैं वह बड़े महान और पवित्रता में सदैव गमन करते रहे हैं। तो आओ मुनिवरों! आज मैं तुम्हें उसी आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जिस आसन के लिए सदैव बेटा! हम अपने में विचार-विनिमय करते रहते हैं और हम सदैव मानो एक रस ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं करते रहते हैं।

तो आओ मेरे पुत्रो! मैंने बहुत पुरातन काल हुआ, जब वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए ऋषि मुनियों ने बेटा! अपने में उद्धृता की ओर मुनिवरों! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के संरक्षण में वह जो ऋषि-मुनियों का समाज है, वह बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा! विद्यमान है। मानो सब ऋषि अपने अपने आसनों पर विद्यमान है, तो ऋषि जब अपने में उद्गीत गाने लगे तो बेटा! देखो, उस समय भारद्वाज मुनि महाराज ने अपनी सर्वत्र विज्ञानशाला का दर्शन कराया और विज्ञानशाला का दर्शन कराने के पश्चात् व्रत्तं ब्रह्मणा लोकां वायु संभव ब्रह्वे लोकम् मेरे प्यारे! देखो, जब उसमें अभ्योदय होने लगा तो मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा कि भगवन! उद्गीत गाइए, अब आप क्या चाहते हैं? उन्होंने कहा-हे भगवन! जैसी आपकी इच्छा हो, परन्तु वैसा ही उद्गीत गाया जाए, तो उन्होंने कहा-कि ब्रह्मणं ब्रह्म कृतं भद्रं भवितां रेतु मया वर्णस्स्तुति।

माता की प्रेरणा

तो मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने न्यौदा में से कुछ मन्त्रों का उद्गीत गाया और न्यौदा में मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए, भारद्वाज ने कहा-कि प्रभु! जो आपकी इच्छा हो, वह मुझे वर्णन कराइए, परंतु मैंने तुम्हें अपना आशय प्रगट किया है। कि मानो देखो, मेरी माता की जो प्रेरणा है वह बड़ी भव्य रही है। उन्होंने कहा-कि माता कैसे प्रेरणा देती है? तो मुनिवरों! देखो, इसमें महर्षि दालभ्य भी उपस्थित हुए और दालभ्य जी ने कहा-कि मेरी माता का नाम मलदाल्सा था और माता मलदाल्सा मानो देखो, अपने गर्भ के शिशु से वार्त्ता प्रकट करती रही, मानो देखो, शिशु से कैसे वार्त्ता प्रगट होती है यह बड़ा एक गंभीर विषय कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, प्रथम हमारे यहाँ विद्यालयों में जब ब्रह्मचारीणियाँ अध्ययन करती रही हैं, तो मानो आचार्यों ने उन्हें प्राणविद्या के ऊपर बड़ा बल दिया और यह कहा कि प्राणविद्या प्रत्येक ब्रह्मचारीणियों के हृदय में वास करनी चाहिए। तो बेटा! वह प्राणविद्या क्या है? एक प्राण, होता है, एक अपान होता है। अपान और प्राण दोनों का जब सम्मिलन होता है और उदान के साथ में मानो देखो, जब प्राण और अपान, उदान को साथ ले करके गमन करते हैं तो वह जो अन्तरात्मा है मानो देखो, वह जो शिशु वास कर रहा है, गर्भ में जो विद्यमान है वह अपनी प्रेरणा वहाँ तक प्रेरित करती रही है और उन्होंने वर्णन किया है। हे आत्मा! तूने मेरे गर्भ स्थल में वास क्यों किया है? क्योंकि तू बुद्धिमान है। हे आत्मा! सदैव रहने वाला, निरंजन है, तू अखंडता में परिणत रहने वाला है। तूने यहाँ कैसे वास किया है?

परमात्मा की महती

तो मुनिवरों! देखो, उस समय ब्रह्मणा वह जब यह वार्त्ता प्रगट करता है तो आत्मा ब्रह्मेण आत्मतत्व की एक अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। और वह प्रदीप्त हो करके बेटा! जब वह ब्राह्म जगत में पूर्ण रूपेणता को प्राप्त करता हुआ, जब बाह्य जगत में आता है तो बाह्य जगत में बेटा! माता उससे पुनः यह प्रश्न करती है। परंतु देखो, माता अपने में ममतव को धारण करने वाली है। जितना भी ज्ञान और विज्ञान है वह बेटा! देखो, माताओं के हृदयों में प्रदीप्त रहना चाहिए। क्योंकि विज्ञान की आभा में रत्त रहने वाली कृतियाँ मानी गई हैं। तो मानो देखो, वह इस प्रकार की आभाएँ आध्यात्मिक विज्ञान, अपने में बड़ा परम्परागतों से रहस्यमय रहा है बेटा! मानव आध्यात्मिकवाद के ऊपर क्योंकि आध्यात्मिकवाद एक परमपिता परमात्मा की महती है और अनुपमता मानी गई है। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि प्रवाहण ने कहा-कि माता जब लोरियों का पान कराने लगी बुद्ध, शुद्ध, निरंजन ये तीन शब्द उच्चारण करती रही तो मानो जब हम प्रबल हुए तो माता से प्रश्न करते रहे, आत्मा के सम्बन्ध में प्रश्न करते रहे, तो माता इनका उचित उत्तर देती रही है। तो मानो देखो, माता जब हमें बाल्य को, अपना सखा बना करके और वह मानो आध्यात्मिकवाद में परिणत कर देती है तो मानो बेटा! ऐसा कोई विद्यालय संसार में नहीं है, जैसी माता विचार और माँ की जो संरक्षणता है जो वह विद्यालय है कोई और विद्यालय संसार में ऐसा नहीं है।

माता की इच्छा

तो मेरे प्यारे! देखो, इस विद्यालय की चर्चाएँ महर्षि प्रवाहण ने की तो बेटा! देखो, यह इतना उद्गीत गा करके वह अपने आसन पर विद्यमान हो गए तो मुनिवरों! देखो, इतने में महर्षि श्वेतकेतु उपस्थित हुए और श्वेतकेतु ने कहा कि-जो महर्षि प्रवाहण ने वाक् कहा है यह बड़ा महत्त्वदायक है, परंतु यह विचार का एक विषय है और विचार-विनिमय करना चाहिए। मानो देखो, जब श्वेति ऋषि बोले कि-जब मैं माता के आंगन में विद्यमान था तो वह प्राण और अपान को जानती थीं। प्राण और अपान को जानने वाली, शीतली प्राणायाम में, जब प्रवेश करती रही तो मानो देखो, उससे हमारा जीवन एक महान बनने लगा और संसार की जितनी भी प्रतिभाएँ हैं, वह सर्वत्र मानो देखो, हमारे समीप आने लगी विचार आता रहा, साधक बन गए, माताओं की यह इच्छा रहती है कि मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य, बुद्धिमान बने और वह योगेश्वर भी बने। मानो तेजस्वी बनता चला जाए, जिस तेज के माध्यम से मानवीयता अपनी तेजोमयी धारा को प्राप्त करता रहे। यह माता की प्रवल इच्छा होती है, कि संसार का विज्ञान भी उसी के समीप होना चाहिए।

मेरे पुत्रो! देखो, जब श्वेतमुनि ने ये कहा तो उन्होंने कहा कि मेरी माता भी सदैव यही चाहती थी। श्वेतमुनि ने कहा कि जब मेरे पितर के हृदय में, माता-पिता के हृदय में यह वाक् हुआ कि हमें पुत्र-यागी बनना

चाहिए, तो माता-पिता ने तप किया और तप करने के पश्चात् मानो देखो, पुत्र याग के लिए उन्होंने याग किया और याग करने के पश्चात मानो देखो, उन्होंने पुनः तप किया और तप करके देखो, जब एक पुत्र याग हुआ तो उसके पश्चात् उन्होंने गृह को पुनः त्याग दिया और भयंकर वनों में तपस्या के लिए परिणत हो गए। तो मानो देखो, मानवीय जीवन में तप करना चाहिए, यदि मानव अपने को महान बनाना चाहता है, पवित्र बनाना चाहता है तो तप करना चाहिए।

तप का स्वरूप

बेटा! विचार आता है कि तप किसे कहा जाता है? तो बेटा! देखो, तप के लिए उन्होंने बड़ी मीमांसा की और तप के लिए उन्होंने यह कहा कि तप तब सिद्ध होता है, जब मानव का अन्न पवित्र होता है। अन्न में पवित्रता होनी चाहिए, मेरे पुत्रो! देखो, जब अन्न पवित्र होगा तो मन पवित्र हो जाएगा और जब मन पवित्र हो जाता है, तो मन, प्राण और विचार यह एक देखो, तीन मनके एक ब्रह्मसूत्र में पिरोएं जाते हैं। जब यह ब्रह्मसूत्र में पिरोएं जाते हैं तो मानो देखो, इसका नाम तप कहा जाता है। तपो हिरण्यं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि मेरे जो महापिता थे, मेरे महापिता मानो देखो, पिच्यासी वर्षों तक अपने अन्तःकरण को जानने के लिए, वायु का सेवन करते रहे। तो मुनिवरों! देखो, वायु का सेवन, जल का आहार करते थे और वह पिचासी वर्षों तक वायु से अन्न को ग्रहण करते तो मानो देखो, प्राण के द्वारा उन्होंने मुनिवरों! देखो, लगभग पिचासी हजार जन्मों के अन्तःकरण में जो संस्कार थे उन्होंने उनको साक्षात्कार किया। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा कि-हे भगवन! अन्नादां भूतं ब्रह्मणा लोकाम् मानो देखो, अन्न पवित्र होना है। यदि हम तपस्या में परिणत होना चाहते हैं, तपस्या में रत्त रहें, हम अपना मानो कल्याण चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने यह वाक् उच्चारण करके वह भी अपने आसन पर विद्यमान हो गए।

महर्षि शिलक का चिन्तन

मेरे पुत्रो! देखो, इतने में महर्षि शिलक मुनि उपस्थित हुए और शिलक जी ने कहा कि देखो, पूर्व विचारवेत्ताओं ने जो वार्त्ता प्रगट की है वह अकाट्य है। वह मानो देखो, महानता में रत्त रहने वाली है। परंतु मेरा तो केवल एक ही विचार रहता है कि संसार में तपस्या के सम्बन्ध में मानो देखो, तप उसे कहते हैं जब इन्द्रियां पवित्र हो जाती हैं। जब हम सब एक-एक वस्तु को निश्चय कर लेते हैं कि वह सबसे प्रथम जो भी जिज्ञासु है वह अपने में यह स्वीकार करे कि वे परमपिता परमात्मा है और जब यह निश्चय हो जाता है कि वे परमपिता परमात्मा है तो मानो देखो, वह आगे परमात्मा की कृति में रत्त होना चाहता है। वह ब्रह्मणां ब्रहे मानो देखो, ब्रह्म की प्रतिभा को जान करके वह अपने में रत्त हो करके और ऋत और सत् में गमन करने लगता है। ऋत कहते हैं प्रकृति को, और सत् कहते हैं ब्रह्म को। मानो देखो, जब ऋत और सत् दोनों का सम्मिलन होता है तो मुनिवरों! देखो, एक अमृत हमें प्राप्त होने लगता है। उस अमृत को जब हम प्राप्त करने लगते हैं तो हमारा जो वे परमपिता परमात्मा है, जो सर्वज्ञ है, जिसके आंगन में हम सब विद्यमान रहते हैं। जैसे माता के गर्भस्थल में शिशु का जब निर्माण होता है तो मानो उसके अंग और प्रत्यंगों का निर्माण हो रहा है। मानो देखो, वह माता के गर्भ से ढका हुआ है, मानो उसी में ओत-प्रोत रहने वाला है। जब वह माता के गर्भ से पृथक् हो करके, बाह्य जगत में आता है तो मानो देखो, वह ऋत और सत् में गमन करता हुआ मानो देखो, परमात्मा की महती में रत्त हो करके उसी को अपने में स्वीकार कर लेता है।

कल्याणमयी जीवन

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तो प्रगट नहीं करने आया हूँ,

यहाँ ऋषि-मुनियों का अपना, अपना जो मन्तव्य है, उनका हृदय है जो वह उद्गीत रूप में गाते हैं, उसके ऊपर जाना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिलक जब यह उद्गीत गा करके शान्त हो गए, तो मुनिवरों! देखो, महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के एक शिष्य थे, जिनका नाम ज्ञानश्रुति था, तो ज्ञानश्रुति ने कहा कि-हे भगवन! आप सब महापुरुषों का जो विचार है, वह तपश्चर विचार कहलाता है। परंतु मेरे जीवन का भी एक अनुभव है और मैं अपने जीवन का यह अनुभव देना चाहता हूँ कि संसार में जब हम देखो, प्रभु के अनुगामी बन जाते हैं और प्रभु को यह स्वीकार करते हैं कि प्रभु! हमारे अन्तर्हृदय में विद्यमान है और हम परमात्मा के हृदय में विद्यमान हैं, जब यह निष्ठा हो जाती है तो मानो देखो, कल्याणमयी जीवन बन जाता है, कल्याणमयी आभा बन जाती है। तो मुनिवरों! देखो, ज्ञानश्रुति ने कहा कि मैं सदैव यह जानने के लिए के लिए तत्पर रहा हूँ कि संसार में महापुरुषों की प्रतिभा कैसी है? बेटा! देखो, महाराजा ज्ञानश्रुति ने कहा कि मेरे जो शब्द हैं वह अन्तरिक्ष में गमन करते हैं, द्यौ में प्रवेश हो जाते हैं और मैं मानो देखो, उनको दृष्टिपात भी करता रहा हूँ।

शब्द का मन्तव्य

मेरे प्यारे! देखो, इतने में जब यह वाक् उनका समाप्त हुआ तो बेटा! देखो, भ्रमण करते हुए, उसी समय उद्दालक गोत्र के ऋषि, शिकामकेतु उद्दालक वहाँ आ पहुँचे। मेरे प्यारे! देखो, उद्दालक गोत्र के तपस्वी और वैज्ञानिक, मुनिवरों! देखो, शिकामकेतु उद्दालक और उनकी पत्नी दोनों बेटा! देखो, वह अप्रतम् ऋषि मुनि अपने आसन को त्यागने लगे। आइए, भगवन! पधारिए। मेरे पुत्रो! देखो, वह विद्यमान हो गए और वह जब अपने आसन पर विराज गए, तो उस समय गाड़ीवान अमृतं रेवा श्वन्धनम् गाड़ीवान रेवक ने कहा-हे प्रभु! हम शब्द के ऊपर अन्वेषण कर रहे हैं, आप का शब्द के सम्बन्ध में क्या मन्तव्य है?

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि ने कहा-हे प्रभु! तुम ऐसा क्यों जानना चाहते हो? उन्होंने कहा-प्रभु! यह तो मन का स्वभाव है, यह मन की स्वाभाविकता है कि वह प्रत्येक वस्तु को जानना चाहता है। वह मन की धाराओं को जानना चाहता है। तो उन्होंने कहा-कि तुम ऐसा क्यों जानना चाहते हो? उन्होंने कहा-मानव का स्वभाव है, आत्मा का जो ज्ञान है वह पूर्ण न होने से, वह पूर्णता को चाहता है। अपूर्ण होने से पूर्णता को चाहता है। इसलिए मानो देखो, एक जिज्ञासा बनी रहती है। उन्होंने पुनः कहा-कि ऐसा तुम्हारा अन्तर्हृदय क्यों चाहता है? उन्होंने कहा-कि आत्मा का स्वभाव है और जब तक मानव का हृदय और मानो देखो, हृदय में जो तंतु, तरंगे हैं मानो इन्द्रियों का साकल्य बन करके याग नहीं किया जाता देखो, ज्ञानरूपी अग्नि में जब तक अपनी प्रवृत्तियों को उसमें समर्पित नहीं किया जाता और एक रस हो करके जब तक प्रभु का हृदय और मानव के हृदय का मिलान नहीं हो पाता, तब तक भगवन्! देखो, वह पिपासा बनी रहेगी। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कितने अपने उद्गार प्रगट किए, उन्होंने कहा-धन्य है प्रभु! आप से मानो कुछ सन्तुष्टि हुई है।

सत्यवादी शब्द

तो मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्यालक मुनि अपने आसन पर विद्यमान हो गए, हमारे यहाँ उद्यालक गोत्र में नाना ऋषि हुए हैं, परन्तु उनमें ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मनिष्ठ नाना ऋषि ऋषि हुए हैं, जो अपने में मानो उनकी उँ$ची उड़ानें उड़ती रहे हैं। तो मेरे प्यारे! सबसे प्रथम उनकी पत्नी रम्भेश्वरी से कहा कि-हे दिव्या हे उद्यालक गोत्र में अमृतत्व को पान करने वाली! हम यह जानना चाहते हैं कि यह शब्द क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, रम्भेश्वरी ने कहा-प्रभु! आप ऐसा क्यों जानना चाहते हैं कि यह शब्द क्या है? उन्होंने कहा-शब्द का आकार है, शब्द में चित्र है, शब्द में शब्दं ब्रह्मे मानो देखो, उसकी आभा और क्रियाकलाप विद्यमान रहती है। जब यह मानो देखो, शब्द द्यौ-लोक को प्रवेश कर जाता है, द्यौ-लोक में चला जाता है तो उस समय द्यौ लोक वाले शब्द को

जब हम दृष्टिपात करते हैं तो उसमें उसका चित्र है, उसका मानो क्रियाकलाप है और उसी में मानो देखो, अग्निं ब्रह्म कहलाता है। तो मानो देखो, वह जो शब्द है वह द्यौ-लोक में है, इसीलिए हमारे, यहाँ ऋषि-मुनियों ने कहा है सत्यवादी बनो। क्योंकि जो सत्यवाद का उद्गीत गाने वाला है उसके शब्द मानो देखो, दर्शनों से और मानवीयता से गुँथे हुए, जो शब्द हैं, वह द्यौ-लोक में प्रवेश हो जाते हैं और द्यौ-लोक से ऊर्ध्वा में एक मृचिका अणुवृत्ति वायु गमन करती रहती है मानो देखो, उसमें लय हो जाते हैं और जब उनको हम जानना चाहते हैं मानो विज्ञान के माध्यम से या दर्शनों के या प्राण के माध्यम से तो वह हमारे समीप, हमें दृष्टिपात आने लगते हैं।

व्याकरण का विकास

मेरे प्यारे! देखो, जब रम्भेश्वरी ने अपने यह विचार दे करके और शब्द का यह निर्णय दे करके, अपने आसन पर विद्यमान हो गई। तो मुनिवरों! देखो, उस समय महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने पुनः प्रश्न किया कि महाराज! देखो, जब एक सौ एक वर्ष, मुझे तपस्या करते हो गए तो मेरे स्वरों में, मेरे देखो, श्रोत्रों में स्वर

ध्वनि आने लगी और उस स्वर ध्वनि को जब मैं श्रवण करता था तो उसको अनहद कहते थे मानो उसी को अनाहद कहते थे, सुर संगम कहते थे और वही हमारे यहाँ देखो, आदि ब्रह्मा जो हुए, उन्होंने जब स्वरध्वनि को पाया तो देखो, व्याकरण की धारा और सूत्र का निकास हुआ। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह कहा बारम्ब्रहे व्रतं दिव्यां गतं ब्रह्मा लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, स्वर संगम में स्वरों को अपने में धारण करने लगे।

अभ्यं वाचक मण्डल

तो मुनिवरों! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्यालक ने कहा है-हे ऋषियों! विराजमान हो जाओ, और जितना मैंने जाना है उसका मैं निर्णय दे सवूँ$गा। मैं माता की लोरियाँ पान करता रहा हूँ, तो मेरी माता सुर संगम के सम्बन्ध में वह अपने विचार देती रही थी, और मुझे लोरियों का पान कराती रहती थी। तो माता ने कहा कि यह जो सुर संगम है मानो सुरों का जो संगम होता है वह उदात्त और अनुदात्त में मानो देखो, यह स्वरसंगम एक अभ्योवृत्ति कहलाती है। और वह जो अभ्योवृत्तियाँ है उसका सम्बन्ध अग्नि से होता है और अग्नि में देखो, अग्नि की धाराओं पर वही शब्द विद्यमान हो करके मानो देखो, वह शब्द द्यौ में प्रवेश होता है और द्यौ से ऊर्ध्वा में अभ्यं वाचक मंडल कहलाता है उसमें वह लय हो जाते हैं। मानो देखो, उसे हम यदि पान करना चाहते हैं, पुनः से दृष्टिपात करना चाहते हैं, तो हमें पुनः तपस्या करनी होगी और विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करना होगा और जब विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होंगे, तो विज्ञान मानो हमें यह सिद्ध कराएगा कि अमृतं ब्रह्मे अग्नं धारसुतप्रह्वा वेद का मन्त्र कहता है कि वह धाराओं में रमण कर जाता है और धाराओं में रमण करके मानो देखो, द्यौ से उस शब्द का, अग्नि के माध्यम से मानो देखो, तरंगों के, प्राण के माध्यम से मानो देखो, उसे निकासा जाता है उसी प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होता है और वह निर्माण हो करके, हम अपने पूर्वजों के क्या, हम अपने सौवें इत्यादि नाना देखो, मानव का दर्शन कर लेते हैं।

द्यौ में शब्द की गति

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह वर्णन कराया तो उन्होंने कहा-प्रभु! यह वाक् तो आप पूर्व भी उच्चारण कर गए हैं परन्तु देखो, हम यह जानना और चाहते हैं कि शब्दं ब्रह्मे जब वह शब्द मानों अन्तरिक्ष में, द्यौ में चला जाता है तो द्यौ में उस शब्द की क्या गति होती है? उन्होंने कहा-यह परमाणुओं का संघात है मानो देखो, एक परमाणु है, एक शब्द जब उच्चारण होता है, नामोकरण के साथ परमाणु गमन करते रहते हैं, उन

परमाणुओं का आकार बनता रहता है और आकार बन करके जब भी हमारी दृष्टि यन्त्रों के ऊपर जाएगी, तो एक-एक परमाणु में उस मानव का चित्र दृष्टिपात आने लगेगा। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने जब यह निर्णय दिया, इस निर्णायात्मक को पान करके ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा-प्रभु! वेद मन्त्रों का हम प्रायः अध्ययन करते रहे हैं, परंतु इसका ये विचार जो हमने विज्ञान के माध्यम से अपने को धारयामि बनाया है इससे हमें यह सिद्ध होता है कि आपका अध्ययन बड़ा मार्मिक है, अध्ययन अद्वितीय कहलाता है। प्रभु! आपको धन्य है। मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्यालक जब अपना निर्णय देने लगे, अपने विचार व्यक्त करने लगे तो उन्हीं विचारों में एक महानता की ज्योति जागरूक होने लगी।

तो मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ, विचार बड़े गंभीर रहते हैं, इसलिए वेदमन्त्र कहता है-हे मानव! तू सत्यवादी बन करके प्रभु के विज्ञान को जानने का प्रयास कर और ममतव को धारण करने वाली माता! तू अपने बाल्य को अपने गर्भ में, अपनी लोरियों का पुनः से, गर्भ से पृथक् हो करके, जब तू लोरियों का पान कराती रहती है वही तो आभा कहलाती है। वह तेरे जीवन की जन ज्योति कहलाती है। जिसको पा करके मुनिवरों! एक महानता का गमन करने लगेगा। तो आज का हमारा वेद मन्त्र, वेद का वाक् क्या कहता है कि हम मुनिवरों! देखो, वेदां ब्रह्मा प्रकाशाम् हम प्रकाश को जानने में तत्पर हो जाएँ और प्रकाशवान बन करके इस सागर से पार हो जाएँ। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, विचार यह देने के लिए आया कि ऋषि-मुनियों का अपना अपना कितना गंभीर अध्ययन रहा है और उन्होंने बेटा! उस गंभीर अध्ययन को, अपने में क्रियात्मक बनाया है और क्रियात्मक बना करके बेटा! उसी को अवृत्तां वर्णां वृत्तिका संभव ब्रह्मणे लोकाम् बेटा! वह ब्रह्म को प्राप्त होते रहे हैं क्योंकि ब्रह्म को जानना बहुत अनिवार्य है वह जो परमपिता परमात्मा हमारा सखा है, आनन्दवत् के देने वाला है वही बेटा! सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान के मूल में रहता है। उस मूल को जानने के लिए हम सदैव प्रभु की उपासना करते रहते हैं। तो बेटा! आज का वेदमन्त्र हमें क्या कह रहा है, वेदमन्त्र अपनी-अपनी धारा, एक-एक विषय में बेटा! नाना प्रश्न होते रहे हैं। नाना उद्गीत गाने वाले रहे हैं। मेरे प्यारे! आज देखो, मैं याग में, आध्यात्मिक याग की चर्चा कर रहा था।

याग में अध्वर्यु

बेटा! देखो, महर्षि ने आगे यह प्रश्न किया, गाड़ीवान ब्रह्मे उद्दालक मुनि से की हे प्रभु! हे शिकामकेतु उद्दालक! हम यह ओर जानना चाहते हैं कि आपने बड़े याग किए हैं, आप बड़े याज्ञिक रहे हैं मातेश्वरी और आप भी, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि आपके याग में अध्वर्यु का क्या महत्व माना गया है? तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक मुनि बोले कि-हे ब्रह्मवेत्ताओं! तुम ब्रह्म विज्ञान के माध्यम से जानना चाहते हो या राष्ट्रीय माध्यम से जानना चाहते हो या मानो तुम संसार के माध्यम से जानना चाहते हो? उन्होंने कहा-प्रभु! हमें तो सर्वत्रता में निर्णय दीजिए, मानो देखो, हमें आध्यात्मिक स्वरूप का, आध्यात्मिक याग का भी वर्णन कीजिए कि अध्वर्यु का अपना क्या महत्व रहता है? उन्होंने कहा कि मानो देखो, अघ्वर्यु उसे कहते हैं जो साकल्य का स्वामी होता है, जितना भी साकल्य है, द्रव्य है, वह सबका स्वामित्व कहलाता है। गृह में यदि तुम्हें अध्वर्यु को दृष्टिपात करना तो माता को दृष्टिपात करो। वह जो माता है वह मानो देखो, अपने विचारो में इतनी गंभीर है कि अपने गृह के साकल्य को वह पवित्रता में दृष्टिपात करना चाहती है और मुनिवरों! देखो, ऐसी कोई माता नहीं है, ऐसी मानो कोई पुत्री नहीं है कोई ऐसी पत्नी नहीं वह सदैव यह चाहती है कि मेरे पति के हृदय में सर्वत्र गुण होने चाहिए। मानो वह बुद्धिमान भी हो, गुणी ब्रह्मण वह गुणवान होना चाहिए, गुणों की वृत्तियाँ रहनी चाहिए, सदैव मानो देखो, उनकी यह कामना रहती है वह अध्वर्यु कहलाती है। मानो देखो, आहार जब

बाल्य को कराती है तो उनके जो पवित्र विचार हैं वह अध्वर्यु से सम्बन्धित होने वाले हैं। क्योंकि अध्वर्यु कहते हैं जो हिंसा से रहित होता है, हिंसा से रहित होने का नाम मांगले अस्तुम् मानो देखो, अध्वर्यु कहलाता है। मानो देखो, जब याग में अध्वर्यु को निर्वाचित किया जाता है तो वहां एक बुद्धिमान होता है, जो द्रव्यों का स्वामी होता है और वह अपने याग में हिंसा नहीं होने देता है, ऐसी मानो देखो, यज्ञमान की कामना होती है और यज्ञमान यह चाहता है कि मेरा जो अध्वर्यु है, वह हिंसा से रहित हो करके मानो अपने क्रिया-कलापों में सदैव तत्पर रहे।

राजा-अध्वर्यु

तो मुनिवरों! देखो, अध्वर्यु कहते हैं जो हिंसा से रहित क्रियाकलाप करने वाला हो। मेरे प्यारे! देखो, साकल्य में किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं रहनी चाहिए, वह अध्वर्यु कहलाता है। और राष्ट्र में मानो देखो, राजा को अध्वर्यु कहते हैं, जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, राजा-अध्वर्यु पवित्र होता है मेरे पुत्रो! देखो, उस राष्ट्र का सौभाग्य है, वह राष्ट्र बड़ा सौभाग्यशाली है जो राजा-अध्वर्यु बन करके अपने राष्ट्र में हिंसा नहीं करता। वह सदैव अहिंसा चाहता है, हिंसा के स्वरूप में प्रत्येक प्राणी की रक्षा होनी चाहिए। ऐसी मनोनीत अपने नियमों की नियमावली बनाता है वह अध्वर्यु कहलाता है। और वह राष्ट्र और समाज को उँ$चा बनाने के लिए सदैव तत्पर होता है। तो राजा को हमारे यहाँ अध्वर्यु कहते हैं। जैसे भगवान मनु का नाम अध्वर्यु कहलाया गया, उनके यहाँ मानो देखो, हिंस ब्रह्मा देखो, एक मछली से ले करके प्रत्येक प्राणी की जहाँ रक्षा होती है उसका नाम अध्वर्यु कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा का नाम अध्वर्यु और माता का नाम अध्वर्यु है, और अध्वर्यु नाम आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं ने बेटा! प्राण को अध्वर्यु माना है। यह प्राण सर्वत्र मानो देखो, सखा माना गया है। जब इस प्राण को अपान में मिलान कर देते हैं तो मानो वह दो जन्मों की वार्त्ता को जानने के लिए तत्पर हो जाता है। जब अपान और प्राण में समान प्राण की पुट लगा दी जाती है इन तीनों प्राण का मिलान हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में भूमंडल को जानने लगता है भूःभुवः इनको जानता हुआ जब बेटा! देखो, समान प्राण को मिलान करा दिया जाता है तो वह मुनिवरों! देखो, द्यौ मण्डल को जानने लगता है और मुनिवरों! देखो, जब इसमें उदान प्राण की पुट लगा दी जाती है तो परमात्मा का जितना भी लोक लोकान्तरों का यह मालामयी स्वरूप बना हुआ है बेटा! इसको जानने लगता है। मेरे प्यारे! मैं तुम्हें आज गम्भीरता में ले जाना नहीं चाहता हूँ, वेद का जो मन्तव्य है, वेद का जो ज्ञान है वह बड़ा गम्भीर है। परमात्मा का दिया हुआ अनुपम ज्ञान है। मेरे प्यारे! देखो, पाँचों प्राणों का जब समूह बन जाता है और उदान प्राण के साथ में गमन हो जाता है तो बेटा! देखो, चित्त के जो संस्कार हैं अरे उनको जानने लगता है, चित्त के संस्कारों को जान करके बेटा! वह परमात्मा की, मोक्षमयी पगडंडी को ग्रहण करने लगता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ बेटा! देखो, ऋषि ने अपना मन्तव्य, अपनी तपोमयी विचारधारा बेटा! प्रगट की है। उन्होंने कहा एक एक वेदमन्त्र बेटा! हमें कहाँ तक पहुँचाता है कहाँ तक वह गमन कराता रहता है, मां ब्रह्वे व्रतम् मेरे पुत्रो! देखो, नाना लोक लोकान्तरों में गमन करता है, विचारों से गमन करता है वह प्राण के माध्यम से गमन करता है और वही मानो देखो, प्राण अध्वर्यु बन करके मेरे प्यारे! देखो, हम में किसी में एक दूसरे के विचारों में विभक्तता आ गई है जब उनका मिलान करना चाहते हैं कि दोनों एक सूत्र में आ जाए, तो निर्णय देने वाले को भी अध्वर्यु कहते हैं।

धृष्ट-प्राणी

मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था कि जब राम और रावण दोनों का अमृत्तम् मानो दोनों को वह एक सूत्र में लाना चाहते थे तो उन्होंने कहा वह प्राण सखा मेरे प्यारे! परमब्रह्मे कृतम् वह अध्वर्यु बन करके राजदूत को भी अध्वर्यु कहते हैं। जहां मुनिवरों! देखो, एक दूसरे का विचारों में जो विभाजन हो गया है उसको सम्मिलन करना उनको एक सूत्र में लाना मेरे पुत्रो! आए न आए वह तो दूसरा विषय है परंतु देखो, एक सूत्र में लाने के लिए वह अध्वर्यु बनता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब राजा रावण का, राम का, दोनों का संग्राम होने के लिए तत्पर हुआ तो मुनिवरों! देखो, बालि पुत्र, अंगद को कहा कि जाओ, देखो, तुम रावण से कहो कि दोनों का विचार एक हो जाए, और यह संग्राम न हो, तो जब वह उस सभा में पहुँचे, अध्वर्यु बन करके तो मेरे पुत्रो! देखो, राजा रावण ने उसे आसन दिया और वह आसन पर जब विद्यमान हो गए तो उन्होंने कहा-कहो, दूत कैसे तुम्हारा आगमन हुआ है? उन्होंने कहा राजन! तुम राजा हो और तुम अध्वर्यु कहलाते हो, परन्तु अब तो मैं तुम्हें अध्वर्यु कहूँगा नहीं क्योंकि तुम हिंसक बन गए हो। मेरे प्यारे! रावण ने कहा-मैं कैसे हिंसक बना हूँ? अंगद ने कहा कि सबसे महान हिंसक वह राजा होता है जो देखो, परायी देवी को अपने गृह में लाना चाहता है। तो ऐसा कोई भी प्राणी हो संसार में, वह मानो अपने में देखो, धृष्ट-प्राणी होता है जो इस प्रकार के क्रियाकलापों में तत्पर हो जाता है।

प्राण का अध्वर्यु रूप

मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण ने कहा और आगे उच्चारण करो, जो तुम्हें कहना है। उन्होंने कहा-मैं इसलिए आया हूँ कि तुम्हारा और राम दोनों का मिलान हो जाए और यह मानो देखो, रक्त की धारा न बहे। उन्होंने कहा-हे ब्रहे दूत। मैं इस वाक् को स्वीकार नहीं करूँगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा-क्यों नहीं करोगे? क्योंकि मेरे राष्ट्र में बड़े महारथी हैं, बलिष्ठ हैं, और राम जैसो को नष्ट कर सकते हैं कइयों को नष्ट कर सकते हैं। उन्होंने कहा-बहुत प्रियतम। परंतु उस समय उस प्राण सखा अध्वर्यु ने, मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है राजसभा में सर्वत्र शरीर के प्राण को बेटा! प्राण को अपान में अपान को व्यान में, व्यान को समान में और समान को उदान में ला करके बेटा! एक पग में बेटा! सर्वत्र प्राण को ले आए। और प्राणों को ला करके उसने ये कहा कि हे रावण! यदि तुम्हारे यहाँ इतनी बलिष्ठता है तो मेरे पग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले आओ। मानो देखो, वही अप्रता वही प्राण था वह प्राणं ब्रहे कृतम् मानो देखो, जब सर्वत्र बलिष्ठ और देखो, महारथी आने लगे तो वह पग प्राण का वृत्त था क्योंकि प्राण को अध्वर्यु कहते हैं और क्रियाकलाप करने वाले का नाम भी अध्वर्यु था। मेरे प्यारे! जब वह प्राण ब्रह्मणे वह पग एक स्थान से दूसरे स्थान न हो सका तो मुनिवरों! सर्वत्र जितने मानो महारथी थे सब हृस हो गए और जब रावण उनके पगों के लिए गमन करने लगा तो उन्होंने कहा-आप को अधिकार है कि आप राम के चरणों को स्पर्श करो, जब यह वाक् कहा तो रावण का जो वह स्वाभिमंगलं ब्रहे वह जो अभिमान था, जो परमात्मा को अपने से दूरी किए था। तो मेरे प्यारे! वह शांत ही गया।

तो मुनिवरों! विचार विनिमय क्या हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्द हैं अध्वर्यु के लिए, तो यह बेटा! आज मैं अध्वर्यु की चर्चा करने वाले कौन, ऋषि शिकामकेतु उद्दालक ने बेटा! अध्वर्यु की चर्चा की। ऋषिवर बड़े प्रसन्न हो गए और उन्होंने कहा कि सबसे प्रथम मानो देखो, अध्वर्यु परमपिता परमात्मा है। जो संसार का नियंता है, शासन करने वाला है मानो देखो, जो निर्माण करता है और वह मानो देखो, हिंसा से रहित है उस परमपिता परमात्मा को हम अपना सखा स्वीकार करके जब गमन करते हैं तो हमारे हृदयों से हिंसा दूर हो जाती है। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं

कल प्रगट करूँगा, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, इस सागर से पार हो जाएँ। दिनांक २०/४/८९ मोदी नगर